शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

महाराष्ट्र

दूरशिक्षा और ऑनलाईन शिक्षा केंद्र

बी. ए. भाग–3 (हिंदी)

सत्र 5 Minor III

व्यावहारिक हिंदी और निबंध–III

सत्र 6 Minor IV

व्यावहारिक हिंदी और एकांकी–IV

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पुनर्रचित पाठ्यक्रम
(शैक्षिक वर्ष 2026-27 से)

© **कुलसचिव,** शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2026

सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रती : 50

■

प्रकाशक
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विद्यापीठ,
कोल्हापूर : 416 004

■

मुद्रक
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विद्यापीठ मुद्रणालय,
कोल्हापूर : 416 004

■

ISBN-

❑ दूरशिक्षा और ऑनलाईन शिक्षा केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी– शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर–416 004. (महाराष्ट्र)

दूरशिक्षा और ऑनलाईन शिक्षा केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर

सल्लागार समिती

प्रा. (डॉ.) आर. के. कामत
कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) ज्योती जाधव
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) प्रकाश पवार
राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) एस. विद्याशंकर
कुलगुरू, केएसओयू,
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

डॉ. राजेंद्र कांकरिया
जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

प्रा. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं.२,
११३९ साईक्स एक्स्टेंशन, कोल्हापूर-४१६००१

डॉ. संजय रत्नपारखी
डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

प्रा. (डॉ.) कविता ओझा
संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) चेतन आवटी
तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) एम. एस. देशमुख
अधिष्ठाता, मानवविज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) व्ही. व्ही. मैंदरगी
प्र. अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) आर. व्ही. गुरव
प्र. अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) ए. बी. साळी
प्र. अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. ए. एन. जाधव
संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्रीमती सुहासिनी सरदार पाटील
वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रा. (डॉ.) पी. एस. पाटणकर (सदस्य सचिव)
संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

दूरशिक्षा और ऑनलाईन शिक्षा केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर

हिंदी अध्ययन मंडल

अध्यक्ष

प्रो. (डॉ.) साताप्पा शामराव सावंत

विलिंग्डन कॉलेज, सांगली

- **प्रो. (डॉ.) नितीन चंद्रकांत धवडे**
  मुधोजी कॉलेज, फलटण, जि. सातारा

- **डॉ. मनिषा बाळासाहेब जाधव**
  आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, ११७, शुक्रवार पेठ, सातारा-४१५ ००२.

- **प्रो. (डॉ.) श्रीमती वर्षाराणी निवृत्ती सहदेव**
  श्री विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठ वडगाव, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. (डॉ.) हणमंत महादेव सोहनी**
  सदाशिवराव मंडलीक महाविद्यालय, मुरगुड, ता. कागल, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. (डॉ.) अशोक विठोबा बाचूळकर**
  आजरा महाविद्यालय, आजरा, जि. कोल्हापुर

- **डॉ. भास्कर उमराव भवर**
  कर्मवीर हिरे आर्टस, सायन्स, कॉमर्स ॲण्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापुर

- **डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे**
  आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, ता. जावळी, जि. सातारा

- **प्रो. (डॉ.) अनिल मारुती साळुंखे**
  यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, करमाळा, जि. सोलापूर-४१३२०३

- **डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण**
  श्रीमती जी.के.जी. कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपूर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. (डॉ.) सिद्राम कृष्णा खोत**
  प्रा. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापुर, जि. कोल्हापुर

- **प्रो. (डॉ.) उत्तम लक्ष्मण थोरात**
  आदर्श कॉलेज, विटा, जि. सांगली

- **डॉ. परशराम रामजी रगडे**
  शंकरराव जगताप आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा

अपनी बात

लेखकाचे नाव	सत्र ५ घटक क्रमांक	सत्र ६ घटक क्रमांक
डॉ. जितेंद्र बनसोडे, श्रीमंत भैय्यासाहेब राजेमाने कॉलेज, म्हसवड, ता. माण, जि. सातारा	1	
डॉ प्रकाश कांबळे, महावीर महाविद्यालय, ७ ई भाऊसिंगजी रोड, कोल्हापूर जि. कोल्हापूर	2	
प्रो. (डॉ.) नितीन धवडे, मुधोजी कॉलेज फलटण, जि.सातारा	3	
डॉ. अशोक उघडे, आदर्श कॉलेज, विटा, ता. खानापूर, जि. सांगली	4	
डॉ. सुधाकर इंडी, श्रीमती आक्काताई रामगौंडा पाटील कन्या महाविद्यालय इचलंकरजी, ता. हातकणंगले जि. कोल्हापूर ४१६ ११५		1
प्रो. (डॉ.) उत्तम थोरात, आदर्श कॉलेज, विटा, ता. खानापूर, जि. सांगली		2
डॉ. मच्छिंद्र कुंभार, मातोश्री बयाबाई श्रीपतराव कदम कन्या महाविद्यालय, कडेगाव, ता. कडेगाव, जि. सांगली		3
डॉ. विठ्ठल शंकर नाईक, श्रीमती आक्काताई रामगौंडा पाटील कन्या महाविद्यालय इचलंकरजी, ता. हातकणंगले जि. कोल्हापूर ४१६. ११५		4

■ **सम्पादक** ■

प्रो. (डॉ.) नितीन धवडे,
मुधोजी कॉलेज फलटण, जि.सातारा

प्रो. (डॉ.) एस. एस. सावंत
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली
जि. सांगली

अनुक्रमणिका

इकाई		पृष्ठ
	सत्र–5	
1.	निवेदन कौशल	1
2.	मुद्रित शोधन	24
3	निबंध	41
4	निंबध	83
	सत्र–6	
1.	वेब पत्रकारिता	129
2.	ब्लॉग लेखन	143
3	एकांकी	159
4	एकांकी	196

हर इकाई की शुरूआत उद्देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे-

(१) इकाई में क्या दिया गया है।

(२) आपसे क्या अपेक्षित है।

(३) विशेष इकाई के अध्ययन के उपरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है।

स्वयं-अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं-अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्ध होगी।

इकाई–1

निवेदन कौशल

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 निवेदन कौशल्य स्वरूप, व्यक्ति एवं आवश्यकता

1.3.2 निवेदन के गुण

1.3.3 मंचीय समारोह और निवेदन

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन

1.1 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद छात्र –

1. प्रभावी संप्रेषण कौशल से परिचित होंगे ।
2. मंचीय आत्मविश्वास और सहजता समझ सकेंगे ।
3. भाषा कौशल में सुधार जान सकेंगे ।
4. मंच संचालन की तकनीकों से परिचित होंगे ।
5. समय प्रबंधन और अनुशासन जान सकेंगे ।

6. शारीरिक भाषा और प्रस्तुति कौशल से परिचित होंगे ।

7. रचनात्मकता और नवाचार को जान सकेंगे ।

8. सामाजिक और पेशेवर व्यवहार से परिचित होंगे ।

9. प्रसंगानुसार सोच और समस्या समाधान की क्षमता निर्माण करना ।

10. करियर अवसरों के लिए क्षमता निर्माण करना ।

1.2 प्रस्तावना

आधुनिक समय में संप्रेषण कौशल (Communication Skills) किसी भी व्यक्ति की सफलता का आधार बन चुके हैं। शिक्षा, मीडिया, व्यवसाय, सामाजिक जीवन तथा सार्वजनिक मंचों पर प्रभावी संवाद स्थापित करने की आवश्यकता निरंतर बढ़ रही है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में निवेदन कौशल (Narration Skills) का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। यह केवल कला नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व, भाषा, विचार और प्रस्तुति का समन्वित रूप है, जो किसी भी कार्यक्रम को सफल, आकर्षक और प्रभावशाली बनाता है। निवेदन कौशल अर्जित करने से विद्यार्थियों को मंच पर आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत होने, स्पष्ट एवं प्रभावी भाषा में संवाद स्थापित करने तथा विभिन्न प्रकार के आयोजनों को सफल करने के लिए एक संजीवनी मिल जाती है। इस के माध्यम से छात्रों को न केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त होता है, बल्कि व्यावहारिक प्रशिक्षण के द्वारा उनकी प्रस्तुति क्षमता, तुरंत सोच, समस्या समाधान और रचनात्मकता का भी विकास होता है।

निवेदन कौशल से निवेदन के विभिन्न आयामों जैसे भाषा एवं संप्रेषण कौशल, व्यक्तित्व विकास, शारीरिक भाषा, समय प्रबंधन तथा पेशेवर आचरण को समग्र रूप से समझने का अवसर मिलता है। इसके अंतर्गत साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं कॉर्पोरेट कार्यक्रमों में निवेदन की विशेषताओं का भी समावेशन है, जिससे विद्यार्थी विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार अपनी शैली और दृष्टिकोण को विकसित कर सकें। डिजिटल युग में, जहाँ ऑनलाइन मंचों, सोशल मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है, वहाँ निवेदन कौशल की उपयोगिता और भी अधिक उपयुक्त हो गई है। विद्यार्थियों को इन आधुनिक माध्यमों के अनुरूप स्वयं को ढालना होगा।

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 निवेदन कौशल का स्वरूप, व्याप्ति एवं आवश्यकता

निवेदन का स्वरूप

निवेदन का स्वरूप बहुआयामी और संप्रेषण-केंद्रित होता है। यह विचारों, भावनाओं और सूचनाओं को एक संगठित ढाँचे में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है। एक कुशल निवेदक कार्यक्रम की रूपरेखा को स्पष्ट

करता है, विभिन्न चरणों को तार्किक क्रम में जोड़ता है। निवेदन का स्वरूप परिस्थितियों के अनुसार बदलता है। औपचारिक समारोहों में इसकी भाषा और प्रस्तुति गंभीर व मर्यादित होती है, जबकि सांस्कृतिक कार्यक्रमों में यह अधिक जीवंत और मनोरंजक हो सकता है।

निवेदन में वक्ता की आवाज, हाव-भाव, आत्मविश्वास और विषय की समझ महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह एक ऐसी कला है जिसमें तात्कालिक निर्णय क्षमता और रचनात्मकता दोनों आवश्यक हैं। इस प्रकार, निवेदन का स्वरूप गतिशील, प्रभावी और दर्शक-केंद्रित होता है, जो कार्यक्रम की सफलता में निर्णायक योगदान देता है। निवेदन केवल सूचना देने तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसमें भावनात्मक जुड़ाव, अभिव्यक्ति की कला और संप्रेषण कौशल भी शामिल होते हैं। निवेदन का अर्थ व्यापक है । यह केवल औपचारिक भाषण नहीं, बल्कि संवाद की एक सजीव प्रक्रिया है।

निवेदन में मौखिक संप्रेषण का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि यह श्रोताओं पर सीधे प्रभाव डालता है। निवेदक की आवाज, उच्चारण, लय, गति और स्पष्टता श्रोताओं के अनुभव को निर्धारित करती है। प्रभावी मौखिक संप्रेषण के माध्यम से निवेदक न केवल जानकारी देता है, बल्कि भावनाओं और ऊर्जा का संचार भी करता है। यदि मौखिक प्रस्तुति स्पष्ट और आकर्षक हो, तो श्रोता कार्यक्रम में अधिक रुचि लेते हैं। इसके विपरीत अस्पष्ट या एकरस प्रस्तुति श्रोताओं को उबाऊ लग सकती है। इसलिए सही शब्द चयन, उचित विराम और आत्मविश्वासपूर्ण आवाज अत्यंत आवश्यक है। मौखिक संप्रेषण केवल बोलने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सुनने की क्षमता भी शामिल है। निवेदक को परिस्थिति के अनुसार तुरंत प्रतिक्रिया देने की क्षमता होनी चाहिए। इस प्रकार, मौखिक संप्रेषण निवेदन का आत्मा है, जो कार्यक्रम को जीवंत और प्रभावशाली बनाता है।

निवेदन की भाषा शैली सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली होनी चाहिए। इसमें औपचारिकता के साथ-साथ सहजता भी आवश्यक होती है, ताकि श्रोता आसानी से समझ सकें और कार्यक्रम से जुड़ाव महसूस करें। भाषा में शुद्धता, स्पष्टता और उपयुक्त शब्द चयन अत्यंत महत्वपूर्ण है। सही भाषा शैली और संतुलित संरचना निवेदन को प्रभावी और आकर्षक बनाती है।

निवेदन की व्याप्ति (Scope)

निवेदन की व्याप्ति अत्यंत व्यापक है और यह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगी है। यह केवल मंच तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा, मीडिया, व्यवसाय और सामाजिक जीवन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम जैसे शैक्षिक, सांस्कृतिक, कॉर्पोरेट और सार्वजनिक सभी में निवेदन की आवश्यकता होती है। हर क्षेत्र में इसकी शैली और उद्देश्य अलग-अलग होते हैं, लेकिन मूल कार्य समान रहता है, कार्यक्रम को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना। डिजिटल युग में इसकी व्याप्ति और भी बढ़ गई है। ऑनलाइन कार्यक्रम, वेबिनार और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी निवेदन की आवश्यकता महसूस की जाती है। इस प्रकार निवेदन एक बहुपयोगी कौशल है, जिसकी मांग हर क्षेत्र में बनी और निरंतर बढ रही है।

अ) शैक्षिक संस्थानों में उपयोग

शैक्षिक संस्थानों में निवेदन का उपयोग विभिन्न कार्यक्रमों जैसे वार्षिक उत्सव, सेमिनार, कार्यशालाएँ और प्रतियोगिताएँ में किया जाता है। यहाँ निवेदक कार्यक्रम को व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करता है और छात्रों एवं शिक्षकों के बीच संवाद स्थापित करता है। निवेदन छात्रों के व्यक्तित्व विकास में भी सहायक होता है। इससे उनके आत्मविश्वास, भाषा कौशल और मंच पर प्रस्तुति की क्षमता में वृद्धि होती है। यह उन्हें नेतृत्व और संगठनात्मक कौशल भी सिखाता है। शैक्षिक वातावरण में निवेदन का उद्देश्य केवल कार्यक्रम प्रस्तुति नहीं, बल्कि सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को सशक्त बनाना भी होता है। इस प्रकार, यह शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाता है।

ब) मीडिया में भूमिका

मीडिया जैसे रेडियो, टेलीविजन और डिजिटल प्लेटफॉर्म में निवेदन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ निवेदक दर्शकों और श्रोताओं को आकर्षित करने का कार्य करता है। रेडियो में आवाज और अभिव्यक्ति ही मुख्य साधन होते हैं, जबकि टीवी में दृश्य और हाव-भाव भी महत्वपूर्ण होते हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे यूट्यूब पर निवेदन की शैली अधिक अनौपचारिक और इंटरैक्टिव होती है। मीडिया में सफल निवेदन के लिए रचनात्मकता, आत्मविश्वास और तकनीकी समझ आवश्यक होती है। इस प्रकार, निवेदन मीडिया की प्रभावशीलता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

क) कॉर्पोरेट और सामाजिक कार्यक्रमों में महत्व

कॉर्पोरेट और सामाजिक कार्यक्रमों में निवेदन एक पेशेवर और व्यवस्थित वातावरण बनाने में सहायक होता है। कॉर्पोरेट क्षेत्र में यह मीटिंग, सम्मेलन और पुरस्कार समारोहों को प्रभावी बनाता है। सामाजिक कार्यक्रमों जैसे विवाह, सांस्कृतिक आयोजन और उत्सव में निवेदक कार्यक्रम को रोचक और यादगार बनाता है। यहाँ निवेदक मनोरंजन और औपचारिकता के बीच संतुलन बनाए रखता है। इस प्रकार निवेदक इन कार्यक्रमों की गुणवत्ता और प्रभाव को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ड) सार्वजनिक जीवन में उपयोगिता

सार्वजनिक जीवन में निवेदन की उपयोगिता अत्यंत व्यापक और प्रभावशाली है। राजनीतिक सभाओं, सामाजिक अभियानों, सांस्कृतिक आयोजनों और जनजागरूकता कार्यक्रमों में एक कुशल निवेदक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। निवेदन के माध्यम से जटिल विचारों और नीतियों को सरल, स्पष्ट और प्रभावी रूप में जनता तक पहुँचाया जा सकता है। यह केवल सूचना का आदान-प्रदान नहीं करता, बल्कि लोगों की भावनाओं को भी प्रभावित करता है और उन्हें किसी उद्देश्य के प्रति प्रेरित करता है।

सार्वजनिक कार्यक्रमों में भीड़ प्रबंधन, उत्साह बनाए रखना और कार्यक्रम की गति को नियंत्रित करना निवेदक की जिम्मेदारी होती है। यदि निवेदन प्रभावी हो, तो यह लोगों को कार्यक्रम में जोड़ के रख सकता है और कार्यक्रम को सफल बना सकता है। इसके अलावा सामाजिक एकता और सामूहिक चेतना को

मजबूत करने में भी निवेदन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस प्रकार सार्वजनिक जीवन में निवेदन एक सशक्त संप्रेषण माध्यम है, जो विचारों को जन-जन तक पहुँचाने और समाज को संगठित करने में सहायक होता है।

निवेदन की आवश्यकता

निवेदन किसी भी कार्यक्रम की सफलता के लिए एक अनिवार्य तत्व है। यह कार्यक्रम को सुव्यवस्थित, प्रभावी और आकर्षक बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाता है। बिना एक सक्षम निवेदक के कार्यक्रम में अव्यवस्था, समय की बर्बादी और दर्शकों की रुचि में कमी आ सकती है। निवेदन का महत्व इस बात में निहित है कि वह कार्यक्रम के विभिन्न हिस्सों को तार्किकता से प्रस्तुत करें। इसके अलावा यह समय प्रबंधन और अनुशासन बनाए रखने में भी सहायक होता है। आज के स्पर्धात्मक और व्यस्त जीवन में जहाँ हर कार्यक्रम को प्रभावशाली और यादगार बनाना आवश्यक है, निवेदन की भूमिका और भी बढ़ जाती है। यह केवल एक माध्यम नहीं, बल्कि कार्यक्रम की गुणवत्ता और प्रभाव को बढ़ाने वाला महत्वपूर्ण कौशल भी है।

अ) कार्यक्रम को व्यवस्थित और आकर्षक बनाना

निवेदन का एक प्रमुख उद्देश्य कार्यक्रम को व्यवस्थित और आकर्षक बनाना है। एक कुशल निवेदक कार्यक्रम के सार को स्पष्ट करता है और विभिन्न गतिविधियों को तार्किकता से प्रस्तुत करता है। इससे कार्यक्रम में रोचकता बनी रहती है और किसी प्रकार की अव्यवस्था उत्पन्न नहीं होती। आकर्षण की दृष्टि से निवेदक अपनी भाषा, शैली और प्रस्तुति के माध्यम से कार्यक्रम को रोचक बनाता है। वह उचित उदाहरण, उद्धरण या हल्के-फुल्के हास्य का प्रयोग करके दर्शकों की रुचि बनाए रखता है। इसके साथ ही, कार्यक्रम के विभिन्न हिस्सों के बीच सहज संक्रमण स्थापित करना भी उसकी जिम्मेदारी होती है। यदि कार्यक्रम व्यवस्थित और आकर्षक हो, तो दर्शकों का अनुभव सकारात्मक होता है और कार्यक्रम अधिक सफल माना जाता है। इस प्रकार निवेदन कार्यक्रम की गुणवत्ता को बढ़ाने और उसे प्रभावशाली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ब) दर्शकों को जोड़कर रखना

दर्शकों को पूरे कार्यक्रम में सक्रिय और रुचिपूर्ण बनाए रखना निवेदन की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। यदि दर्शकों का ध्यान भटकता है तो कार्यक्रम का प्रभाव कम हो जाता है। इसलिए निवेदक को अपनी प्रस्तुति शैली में विविधता और ऊर्जा बनाए रखनी होती है। एक प्रभावी निवेदक श्रोताओं के साथ संवाद स्थापित करता है, उनकी प्रतिक्रियाओं को महत्व देता है और उन्हें कार्यक्रम का हिस्सा बनाता है। इससे दर्शकों में सहभागिता की भावना विकसित होती है और वे कार्यक्रम में अधिक रुचि लेते हैं। इसके अलावा, निवेदक को श्रोताओं की मानसिकता को समझकर अपनी भाषा और प्रस्तुति को उसी के अनुसार ढालना चाहिए। इस प्रकार, निवेदन दर्शकों को जोड़कर रखने का एक प्रभावी माध्यम है, जो कार्यक्रम की सफलता को सुनिश्चित करता है।

क) समय प्रबंधन और अनुशासन बनाए रखना

समय प्रबंधन और अनुशासन किसी भी कार्यक्रम की सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक हैं और निवेदन इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। निवेदक को गतिविधि के लिए निर्धारित समय का ध्यान रखना होता है और यह सुनिश्चित करना होता है कि कार्यक्रम समयानुसार आगे बढ़े। यदि समय प्रबंधन सही न हो तो महत्वपूर्ण गतिविधियाँ अधूरी रह सकती हैं। एक कुशल निवेदक वक्ताओं को समय सीमा का पालन करने के लिए प्रेरित करता है। अनुशासन बनाए रखने के लिए निवेदक को संयमित और स्पष्ट निर्देश देने होते हैं। वह दर्शकों और प्रतिभागियों को उचित दिशा-निर्देश देकर कार्यक्रम में शालीनता और व्यवस्था बनाए रखता है। इस प्रकार निवेदन कार्यक्रम को समयबद्ध और अनुशासित बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण साधन है।

ड) वक्ताओं और दर्शकों के बीच सेतु का कार्य

निवेदन वक्ताओं और दर्शकों के बीच सेतु का कार्य करता है। निवेदक वक्ताओं का परिचय देता है, उनके विचारों की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करता है और श्रोताओं को उनके विषय से जोड़ता है। इससे दर्शकों को वक्ता के विचारों को समझने में आसानी होती है। इसके साथ ही, निवेदक दर्शकों की प्रतिक्रियाओं को भी वक्ताओं तक पहुँचाता है। यदि कहीं कोई भ्रम या असमंजस हो, तो वह उसे स्पष्ट करने का प्रयास करता है। इस प्रकार वह दोनों पक्षों के बीच संवाद को सशक्त बनाता है। एक सेतु के रूप में निवेदक कार्यक्रम को अधिक सहभागितापूर्ण और जीवंत बनाता है। यह केवल सूचना का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि विचारों और भावनाओं का समन्वय भी करता है। इस प्रकार निवेदक निवेदन संप्रेषण की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और सार्थक बनाता है।

1.3.2 निवेदक के गुण

अ) व्यक्तित्व संबंधी गुण

निवेदक के व्यक्तित्व संबंधी गुण उसकी सफलता की आधारशीला होते हैं। निवेदन केवल शब्दों का खेल नहीं, बल्कि व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है। एक प्रभावी निवेदक का व्यक्तित्व संतुलित, आत्मविश्वासी और आकर्षक होना चाहिए, जिससे वह श्रोताओं पर सकारात्मक प्रभाव डाल सके। व्यक्तित्व में बाहरी रूप-रंग के साथ-साथ आंतरिक गुण भी शामिल होते हैं, जैसे आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच, विनम्रता और सामाजिक व्यवहार। निवेदक का व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए कि वह मंच पर सहजता से संवाद स्थापित कर सके और किसी भी परिस्थिति में संतुलन बनाए रखे। यदि व्यक्तित्व प्रभावशाली है, तो श्रोता स्वयं ही उसकी ओर आकर्षित होते हैं और कार्यक्रम में रुचि बनाए रखते हैं।

इस प्रकार व्यक्तित्व संबंधी गुण निवेदन की प्रभावशीलता को बढ़ाते हैं और कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

1. आत्मविश्वास और मंच पर सहजता

आत्मविश्वास एक निवेदक का सबसे महत्वपूर्ण गुण है। यह उसके बोलने के तरीके, हाव–भाव और प्रस्तुति में स्पष्ट रूप से झलकता है। आत्मविश्वासी निवेदक मंच पर बिना झिझक के अपनी बात रखता है और श्रोताओं के साथ सहज संवाद स्थापित करता है। मंच पर सहजता का अर्थ है घबराहट या तनाव के बिना स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत होना। जब निवेदक सहज होता है तो उसकी भाषा, आवाज और अभिव्यक्ति अधिक प्रभावी होती है। इसके विपरीत आत्मविश्वास की कमी से प्रस्तुति कमजोर हो सकती है और श्रोताओं का ध्यान भटक सकता है। आत्मविश्वास अभ्यास, तैयारी और अनुभव से विकसित होता है। इस प्रकार यह गुण निवेदन को प्रभावशाली और सफल बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2. सकारात्मक दृष्टिकोण

सकारात्मक दृष्टिकोण निवेदक को हर परिस्थिति में संतुलित और प्रेरणादायक बनाए रखता है। कार्यक्रम के दौरान कई बार अप्रत्याशित परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। जैसे तकनीकी समस्या या समय में बदलाव। ऐसे समय में सकारात्मक सोच रखने वाला निवेदक स्थिति को संभाल सकता है और कार्यक्रम को सुचारु रूप से आगे बढ़ा सकता है। सकारात्मक दृष्टिकोण का प्रभाव श्रोताओं पर भी पड़ता है। यदि निवेदक उत्साहपूर्ण और आशावादी है तो दर्शकों में भी ऊर्जा और रुचि बनी रहती है। यह वातावरण को हल्का और आनंददायक बनाता है। इस प्रकार सकारात्मक दृष्टिकोण न केवल व्यक्तिगत गुण है, बल्कि कार्यक्रम की सफलता के लिए भी आवश्यक है।

3. शिष्टाचार और विनम्रता

शिष्टाचार और विनम्रता किसी भी निवेदक के व्यक्तित्व को गरिमामय बनाते हैं। कार्यक्रम के दौरान निवेदक को विभिन्न लोगों – जैसे अतिथियों, वक्ताओं और दर्शकों से संवाद करना होता है। ऐसे में शिष्ट व्यवहार और विनम्र भाषा का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। विनम्रता से श्रोताओं में सम्मान और विश्वास उत्पन्न होता है। यह वातावरण को सकारात्मक और सहयोगपूर्ण बनाता है। इसके विपरीत अहंकार या असभ्य व्यवहार कार्यक्रम की गरिमा को कम कर सकता है। इस प्रकार शिष्टाचार और विनम्रता निवेदन की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं और सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाते हैं।

4. परिधान और व्यक्तित्व प्रस्तुति

उचित परिधान और प्रस्तुति निवेदक की छवि को प्रभावशाली बनाते हैं। यह श्रोताओं पर पहला प्रभाव डालता है। इससे निवेदक में सहजता और आत्मविश्वास आ जाता है।

5. समन्वयात्मक दृष्टिकोन

टीम के साथ अच्छा समन्वय कार्यक्रम को सफल बनाता है। निवेदक को तकनीकी और प्रबंधन टीम के साथ तालमेल बनाए रखना चाहिए। यह कार्य को सुचारु बनाता है।

ब) भाषा संबंधी गुण

निवेदन की सफलता का मूल आधार भाषा एवं संप्रेषण कौशल है। एक निवेदक केवल सूचना नहीं देता, बल्कि वह विचारों, भावनाओं और ऊर्जा का संप्रेषण करता है। प्रभावी संप्रेषण के लिए भाषा का स्पष्ट, सुसंगत और श्रोता-उपयुक्त होना आवश्यक है। भाषा में सरलता और प्रवाह होने से संदेश आसानी से समझ में आता है, जबकि जटिल या अस्पष्ट भाषा श्रोताओं की रुचि कम कर सकती है। संप्रेषण कौशल में केवल बोलना ही नहीं, बल्कि सक्रिय श्रवण प्रतिक्रिया देना और संवाद स्थापित करना भी शामिल है। एक अच्छा निवेदक श्रोताओं की प्रतिक्रिया को समझकर अपनी शैली में आवश्यक बदलाव करता है। इसके साथ ही गैर-मौखिक संकेत जैसे हाव-भाव और नेत्र संपर्क भी संप्रेषण को सशक्त बनाते हैं। इस प्रकार भाषा एवं संप्रेषण कौशल निवेदन को प्रभावी, जीवंत और श्रोता-केंद्रित बनाते हैं।

1. स्पष्ट उच्चारण और शुद्ध भाषा

स्पष्ट उच्चारण और शुद्ध भाषा निवेदन की विश्वसनीयता और प्रभावशीलता को निर्धारित करते हैं। यदि शब्दों का उच्चारण अस्पष्ट हो या भाषा में त्रुटियाँ हों, तो संदेश का अर्थ बदल सकता है या श्रोता भ्रमित हो सकते हैं। इसलिए प्रत्येक शब्द का सही उच्चारण, उचित विराम और स्पष्ट ध्वनि अत्यंत आवश्यक है। शुद्ध भाषा का प्रयोग कार्यक्रम की गरिमा को बनाए रखता है। विशेषकर औपचारिक कार्यक्रमों में व्याकरणिक शुद्धता और मानक भाषा का उपयोग श्रोताओं में विश्वास उत्पन्न करता है। साथ ही, भाषा को श्रोताओं के स्तर और संदर्भ के अनुसार सरल रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, ताकि सभी वर्ग के लोग संदेश को समझ सकें। नियमित अभ्यास, शब्दों की सही ध्वनियों का ज्ञान और पढ़ने की आदत से यह कौशल विकसित किया जा सकता है। इस प्रकार स्पष्ट उच्चारण और शुद्ध भाषा निवेदन को प्रभावी, स्पष्ट और पेशेवर बनाते हैं।

2. प्रभावी शब्द चयन

प्रभावी शब्द चयन निवेदन की गुणवत्ता और प्रभाव को सीधे प्रभावित करता है। सही शब्दों का चयन संदेश को सटीक, स्पष्ट और आकर्षक बनाता है जबकि गलत या अनुपयुक्त शब्द भ्रम उत्पन्न कर सकते हैं। एक कुशल निवेदक परिस्थिति, श्रोताओं और कार्यक्रम के स्वरूप के अनुसार अपने शब्दों का चयन करता है। औपचारिक कार्यक्रमों में गरिमामय और मर्यादित भाषा का प्रयोग आवश्यक होता है, जबकि सांस्कृतिक या मनोरंजन कार्यक्रमों में हल्के-फुल्के और जीवंत शब्द अधिक उपयुक्त होते हैं। इसके साथ ही अनावश्यक जटिल शब्दों से बचना चाहिए और सरल, प्रभावी एवं अर्थपूर्ण भाषा का उपयोग करना चाहिए। शब्द चयन में संवेदनशीलता भी महत्वपूर्ण है। इस प्रकार प्रभावी शब्द चयन निवेदन को सटीक, प्रभावशाली और श्रोता-अनुकूल बनाता है।

3. स्वर, लय और गति का नियंत्रण

स्वर, लय और गति का नियंत्रण निवेदन की प्रस्तुति को जीवंत और आकर्षक बनाता है। यदि निवेदक एक ही स्वर में बोलता है, तो श्रोता जल्दी ही ऊब सकते हैं। इसके विपरीत स्वर में उतार-चढ़ाव और लयात्मकता प्रस्तुति को रोचक बनाती है और श्रोताओं का ध्यान बनाए रखती है। गति का संतुलन भी अत्यंत आवश्यक है। बहुत तेज बोलने से श्रोता संदेश को समझ नहीं पाते, जबकि बहुत धीमा बोलने से कार्यक्रम की ऊर्जा कम हो जाती है। उचित स्थानों पर विराम लेने से विचारों को स्पष्टता मिलती है और प्रभाव बढ़ता है। स्वर का भावानुकूल होना भी महत्वपूर्ण है गंभीर विषयों में गंभीर स्वर और उत्सव के अवसरों पर उत्साहपूर्ण स्वर उपयुक्त होता है। इस प्रकार, स्वर, लय और गति का संतुलित उपयोग निवेदन को प्रभावी और श्रोता-केंद्रित बनाता है।

4. शारीरिक भाषा (Body Language) का उपयोग

शारीरिक भाषा निवेदन में मौन संप्रेषण का महत्वपूर्ण माध्यम है। इसमें हाव-भाव, नेत्र संपर्क, चेहरे के भाव और शरीर की मुद्रा शामिल होती है, जो संदेश को अधिक प्रभावी बनाते हैं। एक आत्मविश्वासी और सकारात्मक बॉडी लैंग्वेज श्रोताओं पर गहरा प्रभाव डालती है और उन्हें अधिक जुड़ाव महसूस कराती है। नेत्र संपर्क से श्रोताओं के साथ सीधा संवाद स्थापित होता है, जबकि उचित हाव-भाव संदेश को स्पष्ट और रोचक बनाते हैं। इसके विपरीत झुकी हुई मुद्रा या असहज हरकतें आत्मविश्वास की कमी को दर्शाती हैं और प्रभाव को कम कर सकती हैं। शारीरिक भाषा को संतुलित और नियंत्रित रखना आवश्यक है, ताकि यह स्वाभाविक लगे और अतिनाटकीय न हो। इस प्रकार बॉडी लैंग्वेज निवेदन को सजीव, प्रभावशाली और संवादात्मक बनाती है।

5. तकनीकी साधनों का ज्ञान

माइक, स्क्रिप्ट और टेलीप्रॉम्प्टर का ज्ञान निवेदक को आत्मनिर्भर बनाता है। यह तकनीकी समस्याओं से बचने में सहायक होता है और प्रस्तुति को प्रभावी बनाता है।

क) बौद्धिकता संबंधी गुण

बौद्धिक एवं व्यावहारिक गुण निवेदक को जटिल परिस्थितियों में भी प्रभावी ढंग से कार्य करने में सक्षम बनाते हैं। इसमें तर्कशीलता, समस्या-समाधान क्षमता, त्वरित निर्णय लेने की योग्यता और व्यावहारिक समझ शामिल होती है। एक कुशल निवेदक को कार्यक्रम के दौरान उत्पन्न होने वाली अप्रत्याशित परिस्थितियों को संभालना होता है। इसके लिए उसे न केवल ज्ञानवान होना चाहिए, बल्कि व्यावहारिक दृष्टिकोण भी रखना चाहिए। ये गुण निवेदन को केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक और प्रभावी बनाते हैं।

1. समय या मौके की सूझ–बूझ (Presence of Mind)

निवेदक के लिए अत्यंत आवश्यक गुण है। कार्यक्रम के दौरान कई बार अचानक परिस्थितियाँ बदल जाती हैं जैसे तकनीकी समस्या, वक्ता की अनुपस्थिति या समय में बदलाव। ऐसे में रखने वाला निवेदक स्थिति को तुरंत समझकर समाधान प्रस्तुत करता है। यह गुण अनुभव, अभ्यास और आत्मविश्वास से विकसित होता है। निर्णय लेने की क्षमता कार्यक्रम की निरंतरता बनाए रखने में सहायक होती है और श्रोताओं को किसी भी असुविधा का अनुभव नहीं होने देती। इस प्रकार, निवेदन को सुचारु और प्रभावी बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2. परिस्थिति अनुसार प्रतिक्रिया देने की क्षमता

परिस्थिति अनुसार प्रतिक्रिया देने की क्षमता निवेदक को लचीला और अनुकूलनीय बनाती है। हर कार्यक्रम की प्रकृति और श्रोताओं की अपेक्षाएँ अलग होती हैं। इसलिए निवेदक को अपनी प्रस्तुति को उसीके अनुसार ढालना पड़ता है। यदि कोई अप्रत्याशित स्थिति उत्पन्न होती है, तो निवेदक को संयम बनाए रखते हुए उचित प्रतिक्रिया देनी चाहिए। यह गुण कार्यक्रम में संतुलन और अनुशासन बनाए रखने में सहायक होता है। इस प्रकार यह क्षमता निवेदन को प्रभावी और परिस्थितिजन्य बनाती है।

3. विषय की समझ और तैयारी

विषय की गहरी समझ और उचित तैयारी निवेदन की सफलता का आधार है। यदि निवेदक को कार्यक्रम के विषय, उद्देश्य और प्रतिभागियों की जानकारी है तो वह आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुति कर सकता है। तैयारी में स्क्रिप्ट बनाना, जानकारी एकत्र करना और संभावित परिस्थितियों के लिए तैयार रहना शामिल है। इससे त्रुटियों की संभावना कम होती है और प्रस्तुति अधिक प्रभावी बनती है। इस प्रकार विषय की समझ और तैयारी निवेदन को सशक्त और पेशेवर बनाते हैं।

4. हास्य और रोचकता बनाए रखने की कला

हास्य और रोचकता निवेदन को जीवंत और आकर्षक बनाते हैं। निरस कार्यक्रम श्रोताओं को उबाऊ लग सकता है। इसलिए बीच–बीच में हल्का हास्य और रोचक तत्व शामिल करना आवश्यक होता है। हालांकि हास्य का प्रयोग संतुलित और मर्यादित होना चाहिए, ताकि किसी की भावनाएँ आहत न हों। सही समय पर किया गया हास्य वातावरण को हल्का और आनंददायक बनाता है। इस प्रकार यह गुण निवेदन को प्रभावी और यादगार बनाता है।

5. समय की पाबंदी

समय की पाबंदी कार्यक्रम को व्यवस्थित और अनुशासित बनाए रखती है। निवेदक को गतिविधि को निर्धारित समय में पूरा करना होता है। यह गुण कार्यक्रम की सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। अतः निवेदक को समय की ओर अधिक ध्यान रखना चाहिए।

1.3.3 मंचीय समारोह और निवेदन

अ) साहित्यिक समारोह में निवेदन

साहित्यिक समारोहों में निवेदन एक संवेदनशील और सौंदर्यपरक प्रक्रिया है, जहाँ भाषा और भाव दोनों का संतुलित उपयोग आवश्यक होता है। काव्य पाठ, पुस्तक विमोचन और साहित्यिक गोष्ठियों जैसे आयोजनों में निवेदक केवल कार्यक्रम को प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि वह साहित्यिक वातावरण का निर्माण भी करता है। यहाँ निवेदन का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि श्रोताओं को साहित्यिक अनुभव से जोड़ना होता है।

निवेदक को साहित्यिक भाषा का ज्ञान होना चाहिए, ताकि वह कवियों और लेखकों के विचारों को उचित सम्मान और प्रभाव के साथ प्रस्तुत कर सके। इसके साथ ही कार्यक्रम में भावनात्मक जुड़ाव बनाए रखना भी आवश्यक होता है, जिससे श्रोता रचनाओं के सौंदर्य का अनुभव कर सकें। इस प्रकार साहित्यिक समारोहों में निवेदन कला, संवेदना और भाषा का संगम होता है, जो कार्यक्रम को गरिमामय और प्रभावशाली बनाता है।

1. काव्य पाठ, पुस्तक विमोचन, साहित्यिक गोष्ठी

साहित्यिक आयोजनों जैसे काव्य पाठ, पुस्तक विमोचन और गोष्ठियों में निवेदन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना और रचनाकारों को सम्मान देना होता है। काव्य पाठ में निवेदक को कविताओं के भाव और विषय को समझते हुए श्रोताओं को उसके लिए तैयार करना होता है। पुस्तक विमोचन में लेखक, पुस्तक की विषयवस्तु और उसकी विशेषताओं का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक होता है। साहित्यिक गोष्ठियों में विचार-विमर्श को संतुलित और व्यवस्थित बनाए रखना निवेदक की जिम्मेदारी होती है। इस प्रकार इन आयोजनों में निवेदन केवल निवेदन नहीं, बल्कि साहित्यिक संवाद को सशक्त बनाने का माध्यम होता है।

2. साहित्यिक भाषा का प्रयोग

साहित्यिक समारोहों में भाषा का स्तर सामान्य कार्यक्रमों की तुलना में अधिक परिष्कृत और भावपूर्ण होता है। यहाँ निवेदक को शुद्ध, सुसंस्कृत और सौंदर्यपूर्ण भाषा का प्रयोग करना चाहिए, जिससे कार्यक्रम की गरिमा बनी रहे। साहित्यिक भाषा में अलंकार, मुहावरें और भावात्मक अभिव्यक्ति का संतुलित उपयोग किया जाता है। इससे प्रस्तुति में गहराई और आकर्षण आता है। इस प्रकार साहित्यिक भाषा का प्रयोग निवेदन को प्रभावी और सौंदर्यपूर्ण बनाता है।

3. कवियों/लेखकों का परिचय देने की शैली

कवियों और लेखकों का परिचय देना साहित्यिक निवेदन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहा केवल औपचारिक जानकारी देना नहीं, बल्कि उनकी रचनात्मकता और योगदान को उजागर करना भी होता है। परिचय संक्षिप्त, सटीक और प्रभावशाली होना चाहिए। इसमें लेखक की प्रमुख रचनाएँ, उपलब्धियाँ और

उनकी साहित्यिक शैली का उल्लेख किया जा सकता है। इस प्रकार सही परिचय श्रोताओं में रुचि उत्पन्न करता है और कार्यक्रम को अधिक प्रभावी बनाता है।

4. भावनात्मक जुड़ाव और सौंदर्य

साहित्यिक कार्यक्रमों में भावनात्मक जुड़ाव अत्यंत आवश्यक होता है। निवेदक को अपनी भाषा, स्वर और प्रस्तुति के माध्यम से ऐसा वातावरण बनाना चाहिए, जिससे श्रोता रचनाओं के भाव को महसूस कर सकें। सौंदर्य का तत्व प्रस्तुति में मधुरता और संतुलन लाता है। यह कार्यक्रम को केवल औपचारिक न बनाकर एक अनुभव में बदल देता है। इस प्रकार, भावनात्मक जुड़ाव और सौंदर्य साहित्यिक निवेदन की आत्मा हैं।

ब) राजनीतिक समारोह में निवेदन

राजनीतिक समारोहों में निवेदन अत्यंत जिम्मेदारीपूर्ण और संवेदनशील कार्य है, क्योंकि यहाँ श्रोताओं की संख्या अधिक होती है और विषय अक्सर जनहित, नीतियों तथा सामाजिक मुद्दों से जुड़े होते हैं। ऐसे कार्यक्रमों में निवेदक केवल प्रस्तुतिकर्ता नहीं, बल्कि संवाद का माध्यम भी होता है, जो संदेश को स्पष्ट, संतुलित और प्रभावी रूप से जनता तक पहुँचाता है। राजनीतिक मंचों पर निवेदन करते समय भाषा की मर्यादा, तथ्यों की सटीकता और प्रस्तुति की गंभीरता अत्यंत आवश्यक होती है।

निवेदक को विभिन्न नेताओं और वक्ताओं के बीच समन्वय स्थापित करना होता है। इसके साथ ही, किसी भी प्रकार के विवाद या असंवेदनशील टिप्पणी से बचना भी आवश्यक होता है। एक कुशल निवेदक परिस्थिति को समझते हुए अपनी भाषा और शैली को नियंत्रित करता है, जिससे कार्यक्रम की गरिमा बनी रहती है। इस प्रकार राजनैतिक समारोहों में निवेदन नेतृत्व, संतुलन और जिम्मेदारी का उत्कृष्ट उदाहरण होता है।

1. सभाएँ और रैलियाँ

राजनीतिक सभाओं और रैलियों का प्रस्तुतिकरण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, क्योंकि इसमें बड़े जनसमूह को नियंत्रित करना और कार्यक्रम को व्यवस्थित रखना शामिल होता है। निवेदक को भीड़ की मानसिकता को समझते हुए ऊर्जा और अनुशासन के बीच संतुलन बनाए रखना पड़ता है। निवेदक को वक्ताओं को सही समय पर आमंत्रित करना, उनके भाषण के लिए वातावरण तैयार करना और दर्शकों को संलग्न रखना पड़ता है। इसके अतिरिक्त रैलियों में संदेश को स्पष्ट और प्रभावी रूप में प्रस्तुत करना भी महत्वपूर्ण होता है। इस प्रकार सभाओं और रैलियों का सफल निवेदन निवेदक की सावधानी और अनुभव पर निर्भर करता है।

2. औपचारिक भाषा और मर्यादा

राजनीतिक समारोहों में औपचारिक भाषा और मर्यादा का विशेष महत्व होता है। यहाँ प्रयुक्त भाषा न केवल श्रोताओं पर प्रभाव डालती है, बल्कि कार्यक्रम की गरिमा और विश्वसनीयता को भी निर्धारित करती है। निवेदक को ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जो स्पष्ट, संतुलित और सम्मानजनक हो। किसी भी

प्रकार की कटु या विवादास्पद भाषा से बचना आवश्यक है। मर्यादा का पालन केवल भाषा में ही नहीं, बल्कि व्यवहार और प्रस्तुति में भी होना चाहिए। यह श्रोताओं में विश्वास और सम्मान उत्पन्न करता है। इस प्रकार औपचारिक भाषा और मर्यादा राजनीतिक निवेदन की गुणवत्ता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

3. नेताओं का परिचय और प्रोटोकॉल

राजनीतिक कार्यक्रमों में नेताओं का परिचय देना एक संवेदनशील और महत्वपूर्ण कार्य है, जिसमें प्रोटोकॉल का पालन अनिवार्य होता है। प्रत्येक नेता का परिचय उनके पद, अनुभव और उपलब्धियों के अनुसार देना चाहिए, जिससे उनके सम्मान और गरिमा को बनाए रखा जा सके। प्रोटोकॉल के अनुसार वरिष्ठता और पदक्रम का ध्यान रखना आवश्यक होता है। यदि इसमें त्रुटि हो तो यह असम्मानजनक माना जा सकता है और कार्यक्रम की छवि प्रभावित हो सकती है। परिचय संक्षिप्त, स्पष्ट और प्रभावशाली होना चाहिए, जिससे श्रोता वक्ता के महत्व को समझ सकें। इस प्रकार नेताओं का सही परिचय और प्रोटोकॉल का पालन निवेदन को पेशेवर और गरिमामय बनाता है।

4. संवेदनशील विषयों में संतुलन

राजनीतिक समारोहों में कई बार ऐसे विषय उठाए जाते हैं जो सामाजिक, धार्मिक या आर्थिक दृष्टि से संवेदनशील होते हैं। ऐसे में निवेदक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि उसे इन विषयों को संतुलित और सावधानीपूर्वक प्रस्तुत करना होता है। संतुलन का अर्थ है न तो किसी पक्ष का पक्षपात करना और न ही ऐसी भाषा का प्रयोग करना जो विवाद उत्पन्न करे। निवेदक को तटस्थ रहकर प्रस्तुति को सकारात्मक दिशा में ले जाना चाहिए। इस प्रकार, संवेदनशील विषयों में संतुलन बनाए रखना निवेदन की परिपक्वता और जिम्मेदारी को दर्शाता है।

क) सांस्कृतिक समारोह में निवेदन

सांस्कृतिक समारोहों के निवेदन में उत्साह, रचनात्मकता और मनोरंजन का समन्वय होता है। ऐसे कार्यक्रमों में निवेदक का कार्य केवल निवेदन करना नहीं, बल्कि वातावरण को जीवंत और आनंददायक बनाना भी होता है। नृत्य, संगीत और नाटक जैसी विविध प्रस्तुतियों के बीच संतुलन बनाए रखते हुए कार्यक्रम को रोचक बनाए रखना आवश्यक है। निवेदक को अपनी भाषा, शैली और प्रस्तुति में लचीलापन रखना पड़ता है, ताकि प्रस्तुति के साथ तालमेल हो। इसके साथ ही, दर्शकों की सहभागिता सुनिश्चित करना और कार्यक्रम में उत्साह बनाए रखना भी महत्वपूर्ण होता है। इस प्रकार सांस्कृतिक समारोहों में निवेदन रचनात्मकता और ऊर्जा का प्रतीक होता है।

1. नृत्य, संगीत, नाटक कार्यक्रम

नृत्य, संगीत और नाटक कार्यक्रमों में निवेदन का कार्य विभिन्न प्रस्तुतियों को एक सूत्र में जोड़ना होता है। निवेदक प्रत्येक प्रस्तुति का संक्षिप्त परिचय देता है और दर्शकों को उसके लिए तैयार करता है। प्रत्येक

कला की प्रकृति अलग होती है, इसलिए निवेदक को उसके अनुरूप भाषा और शैली अपनानी होती है। उदाहरण के लिए, शास्त्रीय संगीत के लिए गंभीर भाषा और लोकनृत्य के लिए उत्साहपूर्ण शैली उपयुक्त होती है। इस प्रकार इन कार्यक्रमों में निवेदक विविधता को संतुलित करते हुए कार्यक्रम को प्रभावी बनाता है।

2. कार्यक्रमों के बीच सहज संक्रमण

सहज संक्रमण किसी भी सांस्कृतिक कार्यक्रम की निरंतरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। यदि प्रस्तुति के बीच अंतराल असंगत हो, तो दर्शकों का ध्यान भटक सकता है। निवेदक को ऐसा संक्रमण तैयार करना होता हैं जो कार्यक्रम के प्रवाह को बनाए रखें। इस प्रकार, सहज संक्रमण कार्यक्रम को व्यवस्थित और आकर्षक बनाते हैं।

3. दर्शकों का मनोरंजन और सहभागिता

सांस्कृतिक समारोहों में दर्शकों का मनोरंजन और सहभागिता अत्यंत आवश्यक है। निवेदक को अपनी प्रस्तुति के माध्यम से दर्शकों को सक्रिय बनाए रखना होता है। वह प्रश्न पूछकर या हल्के संवाद के माध्यम से दर्शकों को कार्यक्रम का हिस्सा बना सकता है। इससे कार्यक्रम अधिक जीवंत और रोचक बनता है। इस प्रकार यह निवेदन की सफलता का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

4. विविधता और उत्साह बनाए रखना

सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विविधता और उत्साह बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह दर्शकों की रुचि को बनाए रखता है। निवेदक को अपनी शैली में नवीनता लानी चाहिए और प्रस्तुति के अनुसार ऊर्जा बनाए रखनी चाहिए। इससे कार्यक्रम में उत्साह बना रहता है। इस प्रकार विविधता और उत्साह निवेदन को आकर्षक और यादगार बनाते हैं।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

अ. वस्तुनिष्ठ प्रश्न : सही विकल्प का चयन कीजिए ।

1. निवेदन का मुख्य उद्देश्य क्या है?

   A) केवल उत्तर देना B) कार्यक्रम को प्रस्तुत करना

   C) मनोरंजन करना D) केवल परिचय देना

2. निवेदन में सबसे महत्वपूर्ण कौशल क्या है?

   A) लेखन B) संप्रेषण

   C) गणना D) चित्रकला

3. निवेदन में क्या आवश्यक है?

A) स्पष्ट संवाद B) मौन रहना

C) केवल पढ़ना D) धीमी गति

4. Presence of Mind का अर्थ है–

A) समय या मौके की सूझ–बूझ B) तैयारी

C) भाषण D) लेखन

5. निवेदन में किसका महत्व अधिक है?

A) आवाज B) हाव–भाव

C) दोनों D) कोई नहीं

6. शुद्ध भाषा का उपयोग क्यों आवश्यक है?

A) दिखावे के लिए B) स्पष्टता के लिए

C) समय बचाने के लिए D) अभ्यास के लिए

7. कार्यक्रम को व्यवस्थित रखने में कौन सहायक है?

A) दर्शक B) निवेदक

C) लेखक D) गायक

8. मंच पर आत्मविश्वास कैसे आता है?

A) अभ्यास से B) डर से

C) मौन से D) भागने से

9. सांस्कृतिक कार्यक्रम में क्या आवश्यक है?

A) गंभीरता B) उत्साह

C) मौन D) उदासिनता

10. राजनीतिक कार्यक्रम में क्या आवश्यक है?

A) मजाक B) गीत

C) नृत्य D) औपचारिक भाषा

11. Body Language का क्या अर्थ है?

A) लिखित भाषा
B) शारीरिक संकेत
C) मौखिक भाषा
D) तकनीकी भाषा

12. समय प्रबंधन का उद्देश्य क्या है?

A) समय बढ़ाना
B) समय बर्बाद करना
C) समय पर कार्य पूरा करना
D) धीमा करना

13. निवेदन में कौन-सा गुण आवश्यक है?

A) बोलते रहना
B) आत्मविश्वास
C) अति उत्साह
D) समय की ओर ध्यान

14. श्रोताओं को जोड़कर रखने के लिए क्या आवश्यक है?

A) लंबा भाषण
B) रोचक प्रस्तुति
C) मौन
D) कठोर भाषा

15. तकनीकी ज्ञान क्यों आवश्यक है?

A) उपकरणों के सही उपयोग के लिए
B) समय काटने के लिए
C) दिखावे के लिए
D) अभ्यास के लिए

16. निवेदन में हास्य का प्रयोग कैसा होना चाहिए?

A) अधिक
B) कठोर
C) कम
D) संतुलित

17. निवेदक का मुख्य कार्य क्या है?

A) बोलते रहना
B) कार्यक्रम को जोड़ना
C) संपर्क करना
D) लिखना

18. औपचारिक कार्यक्रम में भाषा कैसी होनी चाहिए?

A) अनौपचारिक
B) मर्यादित
C) क्लिष्ट
D) बोल-चाल की

19. निवेदन में किसका उपयोग होता है?

A) केवल भाषा B) केवल हाव-भाव

C) दोनों का D) कोई नहीं

20. एक सफल निवेदक का गुण क्या है?

A) अनुशासन B) अति आत्मविश्वास

C) बाते करना D) अति उत्साह

ब. वस्तुनिष्ट प्रश्न : सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ती कीजिए ।

1. निवेदन का अर्थ ..... है।

A) बोलना B) विचार या सूचना प्रस्तुत करना

C) बातें बनाना D) अभिनय करना

2. दूरदर्शन ..... प्रकार का माध्यम है।

A) दृश्य माध्यम B) श्रव्य माध्यम

C) दृश्य- श्राव्य माध्यम D) चित्र माध्यम

3. निम्न में से ..... भाषिक कौशल नहीं है?

A) श्रवण B) लेखन

C) चित्रकला D) वाचन

4. आँखों देखा हाल ..... को कहा जाता है।

A) वार्तापत्र B) समाचार

C) समालोचन D) प्रतिवेदन

5. तुरंत सूचना पहुँचाने के लिए ..... का उपयोग होता है।

A) वार्तापत्र B) प्रतिवेदन

C) उद्घोषणा D) लेखन

6. समाचार वाचन में ..... शैली आवश्यक होती है।

A) हास्यपूर्ण B) तटस्थ

C) क्रोधपूर्ण D) भावुक

7. आकाशवाणी ..... प्रकार का माध्यम है ।

A) दृश्य माध्यम B) श्रव्य माध्यम

C) लिखित माध्यम D) चित्र माध्यम

8. दूरदर्शन पर ..... का महत्व अधिक होता है?

A) केवल आवाज़

B) केवल लेखन

C) आवाज़ और व्यक्तित्व दोनों

D) केवल संगीत

9. अच्छे निवेदक में ..... गुण आवश्यक है?

A) गंभीरता B) आत्मविश्वास

C) आलस्य D) क्रोध

10. उद्घोषणा सामान्यतः ..... पर की जाती है।

A) रेलवे स्टेशन B) बस स्थानक

C) हवाई अड्डा D) उपरोक्त सभी

11. समाचारों में सबसे पहले ..... प्रस्तुत किया जाता है।

A) खेल समाचार B) मौसम समाचार

C) मुख्य समाचार D) विज्ञापन

12. निवेदन ..... कौशल से संबंधित है ।

A) चित्रकला कौशल B) भाषण कौशल

C) गायन कौशल D) अभिनय कौशल

13. निवेदन के लिए ..... आवश्यक है ।

A) विषय का ज्ञान B) स्पष्ट भाषा

C) निरीक्षण क्षमता D) उपरोक्त सभी

14. निवेदन का मुख्य उद्देश्य ..... है ।

A) मनोरंजन करना

B) सूचना और विचार प्रस्तुत करना

C) बातें करना

D) अभिनय करना

1.5 **पारिभाषिक शब्द एवं उनके शब्दार्थ ।**

1. निवेदन (Narration) - कार्यक्रम को प्रस्तुत करते हुए श्रोताओं से संवाद स्थापित करने की प्रक्रिया।
2. पेशेवर आचरण (Professional Ethics) - कार्य के प्रति जिम्मेदारी और नैतिक व्यवहार।
3. संप्रेषण (Communication) - विचारों, भावनाओं और सूचनाओं का आदान-प्रदान।
4. मौखिक संप्रेषण (Verbal Communication) - बोलकर संदेश देने की प्रक्रिया।
5. अमौखिक संप्रेषण (Non-verbal Communication) - हाव-भाव, संकेत और शरीर की भाषा द्वारा संदेश देना।
6. प्रस्तुति कौशल (Presentation Skills) - विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता।
7. त्वरित सोच (Presence of Mind) - अचानक परिस्थिति में तुरंत सही निर्णय लेने की क्षमता।
8. समय प्रबंधन (Time Management) - निर्धारित समय में कार्यों को पूरा करने की क्षमता।
9. अनुशासन (Discipline) – नियमों और समय का पालन करना।
10. संक्रमण (Transition) - एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में सहज बदलाव।
11. समापन (Conclusion) - कार्यक्रम का अंतिम भाग या निष्कर्ष।
12. शिष्टाचार (Etiquette) - सभ्य और विनम्र व्यवहार के नियम।
13. औपचारिक भाषा (Formal Language) - मर्यादित और नियमबद्ध भाषा।

14. अनौपचारिक भाषा (Informal Language) - सहज और सामान्य बोलचाल की भाषा।

15. सहभागिता (Participation) - दर्शकों या श्रोताओं की सक्रिय भागीदारी।

16. समन्वय (Coordination) - टीम के साथ तालमेल बनाए रखना।

17. प्रोटोकॉल (Protocol) - औपचारिक नियम और प्रक्रिया।

18. रचनात्मकता (Creativity) - नई और रोचक प्रस्तुति करने की क्षमता।

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर।

अ. वस्तुनिष्ठ प्रश्न : सही विकल्प का चयन।

1. B) कार्यक्रम को प्रस्तुत करना 2. B) संप्रेषण 3. A) स्पष्ट संवाद

4. A) त्वरित सोच 5. C) दोनों 6. B) स्पष्टता के लिए

7. B) निवेदक 8. A) अभ्यास से 9. B) उत्साह

10. D) औपचारिक भाषा 11. B) शारीरिक संकेत

12. C) समय पर कार्य पूरा करना 13. B) आत्मविश्वास 14. B) रोचक प्रस्तुति

15. A) उपकरणों के सही उपयोग के लिए 16. D) संतुलित

17. B) कार्यक्रम को जोड़ना 18. B) मर्यादित 19. C) दोनों का

20. A) अनुशासन

ब. वस्तुनिष्ठ प्रश्न : सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ती।

1. B) विचार या सूचना प्रस्तुत करना 2. C) दृश्य- श्राव्य माध्यम

3. C) चित्रकला 4. C) समालोचन 5. C) उद्घोषणा

6. B) तटस्थ 7. B) श्रव्य माध्यम

8. C) आवाज़ और व्यक्तित्व दोनों 9. B) आत्मविश्वास

10. D) उपरोक्त सभी 11. C) मुख्य समाचार 12. B) भाषण कौशल

13. D) उपरोक्त सभी 14. B) सूचना और विचार प्रस्तुत करना

1.7 सारांश

1. निवेदन कौशल आधुनिक संप्रेषण कला का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है, जो किसी भी कार्यक्रम की प्रभावी प्रस्तुति और श्रोताओं से संवाद स्थापित करने में केंद्रीय भूमिका निभाता है। यह केवल मंच तक सीमित नहीं है, बल्कि भाषा, व्यक्तित्व, अभिव्यक्ति, आत्मविश्वास और त्वरित निर्णय क्षमता का समन्वित रूप है।

2. वर्तमान समय में विभिन्न सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक तथा डिजिटल मंचों पर कुशल निवेदकों की आवश्यकता निरंतर बढ़ रही है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए स्नातक स्तर पर निवेदन कौशल पाठ्यक्रम को विशेष महत्व प्रदान किया गया है।

3. निवेदन केवल सूचना प्रदान करने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि श्रोताओं को कार्यक्रम से जोड़ने, उनमें रुचि उत्पन्न करने तथा संवाद स्थापित करने की कला है। इसके अंतर्गत मौखिक एवं अमौखिक संप्रेषण के विभिन्न आयामों का अवलंब कराया जाता है।

4. स्पष्ट उच्चारण, शुद्ध एवं प्रभावशाली भाषा, उपयुक्त शब्द चयन, स्वर, लय, गति तथा विराम का संतुलित प्रयोग एक सफल निवेदन की पहचान माने जाते हैं। साथ ही, शारीरिक भाषा, नेत्र संपर्क, चेहरे के भाव और मंच पर आत्मविश्वासपूर्ण उपस्थिति जैसे तत्वों का भी विशेष महत्व है।

5. एक सफल निवेदक के लिए आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच, शिष्टाचार, विनम्रता और धैर्य जैसे गुण आवश्यक माने जाते हैं। मंच पर सहजता से प्रस्तुत होना, श्रोताओं के साथ प्रभावी संवाद स्थापित करना तथा विभिन्न परिस्थितियों में संतुलन बनाए रखना इन बातों पर भी बल दिया जाता है।

6. निवेदन कौशल में प्रत्येक कार्यक्रम की प्रकृति और उद्देश्य के अनुसार भाषा, प्रस्तुति और व्यवहार में परिवर्तन आवश्यक होता है। उदाहरणस्वरूप, साहित्यिक कार्यक्रमों में भावनात्मक एवं सौंदर्यपूर्ण भाषा का प्रयोग किया जाता है, जबकि कॉर्पोरेट या राजनैतिक कार्यक्रमों में औपचारिकता, मर्यादा और स्पष्टता को अधिक महत्व दिया जाता है।

7. समय प्रबंधन, अनुशासन, टीमवर्क तथा पेशेवर आचरण जैसे व्यावहारिक गुणों का निवेदन कौशल में विशेष महत्व होता है।

8. प्रत्येक कार्यक्रम की प्रकृति और उद्देश्य के अनुसार भाषा अवलंबित की जाए। आधुनिक तकनीकी युग को ध्यान में रखते हुए माइक्रोफोन, टेलीप्रॉम्प्टर, ध्वनि प्रणाली तथा अन्य तकनीकी उपकरणों के उपयोग को महत्वपूर्ण माना जाता है।

9. डिजिटल युग में निवेदन कौशल की उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है। आज ऑनलाइन कार्यक्रम, वेबिनार, ब्रॉडकास्ट, यूट्यूब प्रस्तुति तथा सोशल मीडिया के माध्यम से संप्रेषण के नए आयाम विकसित हुए हैं।

10. निवेदन कौशल से निवेदक के समग्र व्यक्तित्व का विकास होता है। यह कला केवल कुशल मंच प्रस्तुति ही नहीं बल्कि प्रभावशाली वक्ता, आत्मविश्वासी व्यक्तित्व तथा जिम्मेदार संप्रेषक के रूप में भी निवेदक को विकसित करती है।

1.8 स्वाध्याय।

अ. लघुत्तरीय प्रश्न ।

1. निवेदन का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
2. मौखिक संप्रेषण का महत्व समझाइए।
3. स्पष्ट उच्चारण और शुद्ध भाषा का महत्व बताइए।
4. प्रभावी शब्द चयन की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
5. स्वर, लय और गति के नियंत्रण की आवश्यकता स्पष्ट कीजिए।
6. निवेदन में शारीरिक भाषा का महत्व विषद कीजिए।
7. निवेदक की समय तथा मौके पर सूझ-बूझ सोच का महत्व स्पष्ट कीजिए।
8. समय प्रबंधन और अनुशासन की आवश्यकता बताइए।
9. सांस्कृतिक कार्यक्रमों में निवेदन की विशेषताएँ समझाइए।
10. निवेदन कौशल की आवश्यकता को स्पष्ट कीजिए।

ब. दीर्घोत्तरीय प्रश्न –

1. निवेदन कौशल का स्वरूप, व्याप्ति और आवश्यकता का विश्लेषण कीजिए।
2. निवेदक के व्यक्तित्व संबंधी, भाषा एवं संप्रेषण तथा पेशेवर गुणों का वर्णन कीजिए।
3. निवेदन और सामान्य भाषण में अंतर स्पष्ट करते हुए, प्रभावी निवेदक की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।
4. साहित्यिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक समारोहों में निवेदन की पद्धती का परिचय दीजिए।
5. आधुनिक डिजिटल युग में निवेदन कौशल की प्रासंगिकता तथा करियर अवसरों का विश्लेषण कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य।

1. प्रत्यक्ष कार्यक्रम अवलोकन (Field Observation) ।
   किसी स्थानीय कार्यक्रम (जैसे विद्यालय/महाविद्यालय समारोह, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामाजिक आयोजन) में प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित होकर निवेदन का अवलोकन कीजिए।
2. लघु कार्यक्रम का आयोजन एवं प्रस्तुति।

अपने समूह (3-5 विद्यार्थियों) के साथ एक छोटा कार्यक्रम आयोजित करें (जैसे कविता पाठ, वाद-विवाद, सांस्कृतिक प्रस्तुति)।

3. मीडिया विश्लेषण (Media Presentation Study)।
   किसी टीवी कार्यक्रम, रेडियो शो या यूट्यूब प्रस्तुति का चयन करें और उसका विश्लेषण करें।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

1. सूत्र-संचालन एक प्रयत्न साध्य कला - डॉ. श्यामसुंदर मिरजकर, नाग - नालंदा प्रकाशन, इस्लामपूर।
2. संवाद कौशल्ये - प्रा. मानकर, डॉ. मोहिते, फडके प्रकाशन, कोल्हापूर ।
3. मुद्रित आणि श्राव्य माध्यमे लेखन व संवाद - डॉ. केशव तुपे, अथर्व पब्लिकेशन, धुळे।
4. मुद्रित शोधन व सृजनशील लेखन - प्रा. पुरुषोत्तम महाजन, अथर्व पब्लिकेशन, धुळे ।

❑❑❑

इकाई– 2

मुद्रित शोधन

अनुक्रम

2.1. उद्देश्य

2.2. प्रस्तावना

2.3. विषय विवेचन

2.3.1 मुद्रित शोधन : अर्थ, स्वरुप एवं विशेषताएँ।

2.3.2 मुद्रित शोधन : महत्त्व एवं आवश्यकता।

2.3.3 मुद्रित शोधन के चिह्न एवं उनका महत्त्व।

2.4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

2.5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

2.6. स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।

2.7. सारांश।

2.8. स्वाध्याय।

2.9. क्षेत्रीय कार्य।

2.10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

2.1. **उद्देश्य** :

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद छात्र–

1. मुद्रित शोधन के अर्थ एवं स्वरुप को से परिवर्तन होंगे।
2. मुद्रित शोधन के विविध क्षेत्रों से अवगत होंगे।
3. मुद्रित शोधन के महत्त्व और आवश्यकता को समझेंगे।
4. मुद्रित शोधन के चिह्नों की जानकारी पाकर उनके प्रयोग के बारे में सचेत होंगे।

2.2. **प्रस्तावना**

भाषा विचार विनिमय का सशक्त साधन है। मानव अपने भावों, विचारों, कल्पनाओं को भाषा के द्वारा ही अभिव्यक्त करता है। हम जिस समाज में रहते है उस समाज के निर्माण में भाषा का सबसे बड़ा योगदान रहा है। मानव या समाज की उन्नति में भाषा ही महत्त्वपूर्ण रही है। इसी कारण भाषा आद्यंत सामाजिक वस्तु मानी गई है। मानव जीवन के इतिहास से पता चलता है कि जब तक लिपि का विकास नहीं हुआ था तब तक मानव व्यवहार मात्र मौखिक रूप से ही संभव था। जैसे लिपि का उद्भव हुआ मानव जीवन में क्रांति सी आ गई। इससे मनुष्य अपने विचारों, सूचनाओं, ज्ञान को मुद्रित रूप में सहजता से संकलित कर अगली पीढ़ी तक पहुँचाने लगा। शुरूआती दौर में यह यह ज्ञान पांडुलिपियों में सुरक्षित किया जाता था। लेकिन जैसे ही मुद्रित यंत्रों का विकास हुआ, भाषा की शुद्धता की ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। इससे मुद्रित शोधन का जन्म हुआ। इससे स्पष्ट है कि मुद्रित शोधन का संबंध लिखित भाषा से ही है। लिखित सामग्री या संहिता में स्थित लेखन विषयक सभी प्रकार के दोषों और त्रुटियों को दूर करने की प्रक्रिया को मुद्रित शोधन कहा जाता है। इस प्रक्रिया से लिखित सामग्री की भाषा सभी प्रकार के दोषों एवं त्रुटियों से मुक्त होकर अपने शुद्ध व्याकरणिक रूप में संचलित होती है।

2.3. **विषय विवेचन**

प्रस्तुत इकाई में हम मुद्रित शोधन के अर्थ एवं स्वरुप के साथ मुद्रित शोधन के उद्भव एवं विकास का अध्ययन करेंगे। साथ ही मुद्रित शोधन की आवश्यकता एवं महत्त्व को समझेंगे। मुद्रित शोधन के चिह्न, उनका प्रयोग और महत्त्व से परिचित होनेवाले हैं।

2.3.1 **मुद्रित शोधन : अर्थ, स्वरुप एवं विशेषताएं**

सरल शब्दों में कहें तो छपाई से पूर्व किसी भी पाठ या संहिता की लेखन से संबंधित त्रुटियों, दोषों को दूर करने की प्रक्रिया को मुद्रित शोधन कहा जाता है। पाठ या सामग्री के मुद्रित शोधन से सही अर्थ को अभिव्यक्ति मिल पाती है। किसी गलत विराम चिह्न, अनुस्वार, शब्द की ऱ्हस्व या दीर्घ मात्रा या व्याकरण के नियमों की अनदेखी करने पर अर्थ में बहुत बड़ा बदलाव आ सकता है। शब्द के इधर-उधर होने से अर्थ में गड़बड़ी पैदा हो सकती है। गलत भाषा के प्रयोग से सुनने और पढ़ने वाले के मन में अर्थ को लेकर दुविधा पैदा होती है। कभी-कभी तो यह बहुत घातक सिद्ध होता है। इससे बचने और अपने विचारों, भावनाओं को सुचारू, सटीक और सार्थक रूप में अभिव्यक्त करने के लिए मुद्रित शोधन की आवश्यकता होती है। मुद्रित शोधन में भाषा के व्याकरण, विराम चिह्न, वर्तनी के नियम, भाषा की प्रकृति, शब्दों के सटीक और उचित प्रयोग की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। संक्षेप में कहें तो पाठ में त्रुटियों को खोजने और उन्हें सही प्रारूप में सुधारने की प्रक्रिया ही मुद्रित शोधन है।

हम जानते हैं कि जब मुद्रण कला का विकास नहीं हुआ था, तब शब्दों के माध्यम से लिखित रूप में ज्ञान को संकलित करने का माध्यम पांडुलिपियाँ थी। इसमें भाषा शुद्धि की ओर ध्यान दिया जाता था। लेकिन जब मुद्रण कला का आविष्कार हुआ, तभी से सही मायने में मुद्रित शोधकों की आवश्यकता महसूस होने लगी। मुद्रण कला का इतिहास बताता है कि लगभग दो हजार साल पहले चीन में मुद्रण यंत्र का आविष्कार हुआ। चीन में लकड़ी के ब्लॉकों (Woodblock printing) से छपाई की जाती थी। इस यंत्र में एक समय में एक ही प्रति को मुद्रित किया जाता था। लेकिन इस क्षेत्र में यूरोप में पंद्रहवीं सदी में गुटेनबर्ग ने बड़ी खोज की। उसने धातु के मूवेबल टाइप और मैकेनिकल प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किया। सन् 1455 में उन्होंने इस प्रेस पर अपनी प्रसिद्ध 'गुटेनबर्ग बाइबिल' छापी। इससे यूरोप में वैज्ञानिक क्रांति को गति मिली। इसका प्रचार बड़ी तेजी के साथ हुआ। नए यंत्रों के आविष्कार से ग्रंथ निर्माण या छपाई में क्रांति हुई। इस क्रांति ने विचारों की दुनिया के दरवाजे खोल दिए। किताबें दूर-दूर तक फैल गईं। इसने पुनर्जागरण के दौरान अद्भुत नए विचारों को साझा करने में मदद हुई। कम समय में किताब की छपाई होने लगी। पहले पाण्डुलिपि के रूप में बनायीं जाने वाली एक किताब के निर्माण के लिए जितना समय लगता था उतने समय में किताब की कई प्रतियाँ तैयार होने लगी। खर्चे की कमी और पढ़ने में सहज बनी किताब की ओर समाज आकर्षित हुआ। मुद्रण कला से दुनियाभर में सिमटा हुआ ज्ञान सभी के लिए खुला हो गया।

भारत में पहला प्रिंटिंग प्रेस सन् 1556 में गोवा में ईसाई मिशनरियों द्वारा स्थापित किया गया था। शुरुआती दौर में मुख्य रूप से इसमें पुर्तगाली और अन्य भाषाओं में छपाई हुई। लेकिन इसमें प्रकाशित अधिकाधिक किताबें धार्मिक विषयों की रही। इसके पश्चात भारत में पुनर्जागरण या नव-जागरण का आंदोलन जोर पकड़ता है। इसे तत्कालीन भारतीय पत्र पत्रिकाओं का साथ मिलता है। पं. जुगल किशोर शुक्ल द्वारा कोलकत्ता से निकाला गया 'उदंत मार्तण्ड' (1826) हिंदी का पहला समाचार पत्र था। हिंदी की मुद्रित (प्रकाशित) पहली पुस्तक 'प्रेम सागर' है जिसकी रचना लल्लू लाल ने सन् 1803 में की थी। यह कोलकता के फोर्ट विलियम कॉलेज से प्रकाशित हुई थी। मुद्रण कला के विकास ने साहित्य को सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय चेतना का सशक्त माध्यम बना दिया। साहित्य की विविध विधाओं का विकास भी मुद्रण कला का ही परिणाम है। आज डिजिटल मुद्रण (Digital Printing) और ई-पुस्तकों (E-books) के रूप में मुद्रण कला का आधुनिक स्वरूप हिंदी साहित्य को नई ऊँचाइयों पर ले जा रहा है।

मुद्रित शोधन के विविध क्षेत्र:

मुद्रित शोधन के इतिहास से हमने जाना कि शुरूआती दौर में टंक और किल का उपयोग कर अक्षरों को बनाया जाता था। इस काम में बहुत समय लगता था, साथ ही यह बड़ा जटील कार्य था। आगे संगणक के आविष्कार ने इस कार्य को सहज और सरल बनाया। संगणक के आधार से सिर्फ अक्षर ही नहीं बल्कि चित्र, आकृतियाँ, स्तम्भ निकालना संभव हुआ। आज संगणक मुद्रण क्षेत्र में एक प्रकार की क्रांति सी आई है। कईं सारे नए क्षेत्र खुल गए हैं। पुस्तक प्रकाशन संस्था, वृत्तसंस्था, विज्ञापन कंपनियाँ, छोटे-बड़े काम करने वाले प्रेस आदि में मुद्रित शोधक की भूमिका महत्त्वपूर्ण रहती है।

हम जानते हैं कि मुद्रित शोधन का सबसे बड़ा क्षेत्र प्रकाशन संस्थाएँ हैं। यहाँ किताबों के प्रकाशन का कार्य चलता है। किताबें सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं होती बल्कि विशेष समाज, जाति, देश के लोगों की जीवन पद्धति, विचारधारा की अभिव्यक्ति होती है। किताबें मानव जीवन की संभावनाओं को दर्शाती हैं। किताबों के माध्यम से दुनियाभर के लोग एक-दूसरे से वैचारिक, भावात्मक और बौद्धिक रूप से जुड़ जाते हैं। किताबों के इस असाधारण महत्त्व की उनकी दृष्टि से छपाई निर्दोष, सटीक, उचित होनी आवश्यक है। इसके लिए मुद्रित शोधक की भूमिका या कार्य विशेष महत्वपूर्ण होता है। यही बात जनसंचार माध्यमों में भी नजर आती है। आज तकनीक के विकास के चलते दुनिया के हर कोने में जनसंचार माध्यम पहुँच रहे हैं। इनका सीधा संबंध मानव तथा समाज जीवन के साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों से रहता है। इसी कारण इनमें प्रकाशित होने वाली खबरें, समाचार, सूचना, जानकारी की अचूकता और सटीकता का होना अनिवार्य होता है। किसी एकाध समाचार में एकाध शब्द, संदर्भ के भी गलत होने से जनभावनाओं को ठेस पहुँचकर जनता में असंतोष निर्माण हो सकता है। यहाँ मुद्रित शोधक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। यही बात हम विज्ञापन संस्थाओं में भी देखते हैं। आज का युग विज्ञापन का युग है। किसी उत्पाद, वस्तु या सामग्री को कम समय में अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाने का सबसे सशक्त माध्यम विज्ञापन है। इन सभी क्षेत्रों में मुद्रित शोधन की आवश्यकता होती है। बड़ी-बड़ी प्रकाशन संस्थाओं और समाचार एजेंन्सी में तो स्वतंत्र रूप से मुद्रित शोधक कार्यरत होते हैं। प्रकाशित सामग्री की लेखन संबंधी त्रुटियाँ, अभिव्यक्ति के दोष, व्याकरण की गलतियाँ, विराम चिह्नों का सही प्रयोग, संदर्भों की क्रमबद्धता, लेखन संबंधी नियमों का पालन, पृष्ठ संख्या आदि सभी बातों में नजर आने वाली त्रुटियों को दूर कर सामग्री को शुद्ध रूप से लोगों या पाठकों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी मुद्रित शोधक की होती है। पुस्तक प्रकाशन के लिए प्रकाशक के पास विविध विषयों और विधाओं की पांडुलिपियाँ आती रहती हैं। प्रकाशक किताब का विषय, कथ्य और शैली की नवीनता, उपयोगिता, बाजर की माँग जैसी बातो का विचार कर किताब के प्रकाशन के लिए स्वीकृति देता है। इसके पश्चात पाण्डुलिपि के टंकित करने के बाद संपादक और मुद्रित शोधक किताब की सभी प्रकार की त्रुटियों और दोषों को दूर कर किताब को वाचकों के लिए प्रस्तुत करते हैं। मुद्रित शोधक किताब की पाण्डुलिपि को सामने रखकर लेखन विषयक नियमों के अनुसार किताब का परीक्षण करता है। उसमें स्थित सभी प्रकार के दोषों को दूर करते हुए आवश्यक सुधारों के लिए बदलाव के संकेत चिह्नों के निर्देश देते हुए सुधार के लिए सामग्री को डीटीपी ऑपरेटर के पास देता है। एक किताब को सभी प्रकार के दोषों से मुक्त करने के लिए यह कार्य उसे साधारणतया तीन बार करना पड़ता है। यहाँ उसे हर शब्द, वाक्य, पदक्रम, विराम चिह्न, शब्द की शुद्धता जैसी बातों का विशेष ध्यान रखते हुए सामग्री को शुद्ध करते हुए अंतिम छपाई के लिए देना होता है। इस दृष्टि से सभी प्रकार के दोषों से मुक्त और अच्छी किताबों को वाचकों तक पहुँचाने के लिए मुद्रित शोधक की भूमिका महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती है।

इस भूमिका को सुचारू रूप से संपन्न करने के लिए मुद्रित शोधक के पास विशेष क्षमताओं का होना आवश्यक है।

मुद्रित शोधक के गुण या क्षमताएँ :

चाहे किताब हो या किसी भी प्रकार की लिखित सामग्री हो, उसकी शुद्धता अनिवार्य होती है। किताबों में सिर्फ लेखक के विचार, भाव या अनुभवों की अभिव्यक्ति नहीं होती बल्कि वह समाज मन के गठन में सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में कार्य करती हैं। यही कारण है कि दुनियाभर में प्राचीन काल से ही बड़े-बड़े ग्रंथालयों के निर्माण का इतिहास नजर आता है। आज सूचना क्रांति के दौर में किताबें कितनी भी डिजिटल बने फिर भी अधिकतर वाचक आज भी छापी हुई किताबों को पढ़ना पसंद करते हैं। यही बात समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के संबंध भी नजर आती है। समाचार पत्रों को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना गया है। दुनिया के किसी भी कोने में घटित घटना को तथ्यों के साथ जनता तक पहुँचाने का काम समाचार-पत्र करते हैं। समाज के लिए इतना महत्व रखने वाली किताबें हो, समाचार पत्र या पत्रिकाएँ हो, इनका सटीक, शुद्ध और स्तरीय होना आवश्यक ही नहीं तो अनिवार्य भी है। इसकी जिम्मेदारी मुद्रित शोधक की रहती है। इसके लिए मुद्रित शोधक के पास कुछ विशेष गुणों और क्षमताओं का होना आवश्यक होता है।

वैसे मुद्रित शोधक के लिए विशेष शैक्षिक योग्यताएँ निर्धारित नहीं की है। फिर भी कम-से-कम स्नातक स्तर तक की शिक्षा आवश्यक है। क्योंकि जितनी शैक्षिक अर्हता अधिक होगी उतना हा विविध विषयों का ज्ञान भी अधिक रहने की संभावना बढती है। पाठ्यक्रम की तैयारी करते समय विषय से संबंधित संदर्भ पुस्तकों की भी पढाई होती है। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के वाचन से सामान्य ज्ञान की जानकारी मिलती है।

मुद्रित शोधक के लिए सबसे महत्वपूर्ण अर्हता भाषा का विशेष ज्ञान है। वह जिस भाषा की सामग्री का शोधन कर रहा है उस भाषा का स्वरुप, संरचना, वर्णमाला, उच्चार, लेखन, शब्द, शब्दों के प्रकार, शब्दों के अर्थ, व्याकरण, विराम चिह्न, व्याकरण, वर्तनी के नियम, भाषा की बोलियाँ आदि बातों का ज्ञान आवश्यक है। इसके साथ ही उस भाषा के पारिभाषिक शब्द, मुहावरें, कहावतें, लोकोक्तियों की जानकारी आवश्यक है। कभी-कभी हिंदी भाषा की सामग्री का मुद्रित शोधन करते समय उसमें अंग्रेजी, संस्कृत, अरबी, फारसी, उर्दू, कन्नड़ जैसी भाषाओं के शब्द, वाक्यांश, कविताओं की पंक्तियों का उल्लेख मिलता है। ऐसे समय अंग्रेजी या विदेशी भाषा के शब्दों को देवनागरी में लिखते समय उसकी लिखावट उच्चारण के अनुसार करना आवश्यक है। यह करते समय उसे अपने आपको भाषिक बदलावों की दृष्टि से अद्यतन रहना आवश्यक है। क्योंकि समय के अनुसार भाषा और लेखन में बदलाव किए जाते हैं। भाषा के 'कठिनता से सरलता की ओर' वाले तत्त्व के अनुसार उसे सभी प्रकार के बदलावों को आत्मसात करना होगा।

मुद्रित शोधक के पास आवश्यक संदर्भ साधन होने चाहिए। उसमें शब्दकोश, लेखन कोश, व्युत्पति कोश, पर्यायी कोश, समान्तर कोश, परिभाषा कोश, मुहावरे-कहावतें कोश, सूक्ति कोश, परिभाषा कोश, लेखन कोश, विश्व कोश, संकल्पना कोश जैसे कोशों का होना आवश्यक है। इसके साथ व्याकरण की मानक किताबें होनी चाहिए। मुद्रित शोधक को इन साधनों का प्रयोग और वाचन हमेशा करते रहना चाहिए।

जहाँ आवश्यक हो वहाँ अपनी मर्जी से नहीं बल्कि इन साधनों का आधार लेकर अपने कार्य को स्तरीय, सुचारू रूप से संपन्न करना है।

मुद्रित शोधन का कार्य जटील और बहुत ज्यादा समय की माँग करता है। इसके लिए मुद्रित शोधक परिश्रमी, संयमी और कार्य के प्रति निष्ठा रखने वाला चाहिए। मुद्रित शोधक परिश्रमी नहीं होगा तो केवल पैसों के लिए और कार्य का निपटारा करने के लिए वह अपने कर्तव्य को भूल जाएगा। उसके दिमाग में हमेशा इस बात का ख्याल होना चाहिए कि मुझे समाज के लिए एक स्तरीय, सुचारू, सटीक और सभी प्रकार के दोषों से मुक्त किताब देनी है। क्योंकि किताब केवल कागज के पन्ने नहीं है बल्कि इसका अपना एक सांस्कृतिक महत्त्व है। इसके लिए मुद्रित शोधक को संयम के साथ काम करना होगा। क्योंकि मुद्रित शोधन एक गंभीर सांस्कृतिक कार्य है। इसके लिए आपको आवश्यक समय देना ही होगा। गड़बड़ी या जाते-जाते किया गया कार्य किसी एकाध रचना के सभी प्रकार के मूल्य को बाधित कर सकता है।

मुद्रित शोधक एक अच्छा वाचक होना चाहिए। उसके वाचन में सभी प्रकार के ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाओं के साथ अन्य भाषाओं के अच्छे ग्रंथ भी शामिल होने चाहिए। उसे अपनी भाषा औए साहित्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी जैसे- साहित्य का इतिहास, भाषा का विकास, साहित्य के महत्वपूर्ण आंदोलन, महत्वपूर्ण साहित्यकार, साहित्यिक रचनाएँ, साहित्यिक संस्थाएँ और सरकार की ओर से पारित भाषा से संबंधित नियम, अधिनियमों की जानकारी आवश्यक है। नए शब्दों को ध्यानपूर्वक, सावधानी से पढ़ना चाहिए। अलग-अलग विधाओं की रचनाओं के पढ़ने से शब्द संग्रह के बढ़ने में मदद होती है।

साहित्यिक क्षेत्र में लेखक-समीक्षक-प्रकाशक के जितना ही मुद्रित शोधक को विशेष महत्त्व है। अच्छे मुद्रित शोधक के पास व्यावसायिक और सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए। इसके लिए उसे 'समय सीमा' का विशेष ध्यान रखना चाहिए। किसी किताब को निश्चित समय पर प्रकाशित करने के लिए उसे व्यवसायिक दृष्टिकोण से काम करते हुए समय पर अपने कार्य को पूरा करना होगा। इस बारे में अनदेखी करने पर लेखक, प्रकाशक को आर्थिक नुकसान सहना पड सकता है साथ ही वाचक भी महत्वपूर्ण रचना को पढ़ने से वंचित रह सकते हैं। उसका सकारात्मक दृष्टिकोण रचना को अधिक स्तरीय बनाने में मददगार साबित होता है। उसे इस कार्य के लिए अर्थ प्राप्ति के साथ ही ज्ञान की भी प्राप्ति होती है। उसका अनुभव विश्व व्यापक बनता है। इससे आनंद की प्राप्ति होती है।

वर्तमान समय में प्रकाशन के कार्य में सर्वाधिक संगणक का उपयोग किया जा रहा है। अतः मुद्रित शोधक के पास डीटीपी की जानकारी आवश्यक है। डीटीपी की जानकारी के बिना मुद्रित शोधक ऑपरेटर को सूचनाएँ तथा निर्देश नहीं दे सकता है। ऑपरेटर को सूचना देते समय उसे पारिभाषिक शब्दों के साथ अक्षर विषयक चिह्नों की जानकरी आवश्यक है। साथ ही यदि उसे ऑन स्क्रीन मुद्रित शोधन करना हो तो संगणक पर टायपिंग का काम सीखना चाहिए।

मुद्रित शोधन की विशेषताएँ

1. मुद्रित शोधन का संबंध लिखित पाठ से है। जब कोई साहित्यकार, पत्रकार अपनी पांडुलिपि को प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक या समाचार पत्र के दफ़्तर में देता है तो उसे शुद्ध, स्तरीय और पठनीय बनाने के लिए पाठ या सामगी का मुद्रित शोधन करना आवश्यक होता है।

2. मुद्रित शोधन के क्षेत्र व्यापक हैं। पुस्तक प्रकाशन संस्था, समाचार पत्र एवं वृत्त संस्थाएँ, विज्ञापन कंपनियाँ, सरकारी प्रतिष्ठान एवं मुद्रणालय, टेलीवीजन चैनल, छोटे-बड़े काम करने वाले प्रेस आदि में मुद्रित शोधक की भूमिका महत्त्वपूर्ण रहती है।

3. इस कार्य के लिए मुद्रित शोधक के पास कुछ विशेष गुणों और योग्यताओं की आवश्यकता होती है। उसे अपने विषय का विशेष ज्ञान तो होना ही चाहिए साथ ही उसकी भाषा पर जबरदस्त पकड़ होनी चाहिए। भाषा का विशेष ज्ञान अनिवार्य है।

4. मुद्रित शोधन एक प्रक्रिया है। इसकी अपनी एक विशेष प्रविधि है। इस प्रविधि के अनुसार प्रथम ड्राफ्ट की जाँच से लेकर अंतिम स्वीकृति तक सावधानीपूर्वक हर चरण में कार्य किया जाता है। मुद्रित शोधन केवल एक तकनीकी प्रक्रिया नहीं है बल्कि इसके द्वारा पाठ की गुणवत्ता, विश्वसनीयता और पठनीयता बढती है।

5. मुद्रित शोधन में मुद्रित चिह्न एवं प्रतीकों को विशेष महत्त्व रहता है। मुद्रित शोधन एक प्रकार की सांकेतिक भाषा है जिसके प्रतीकों और चिह्नों के प्रयोग द्वारा पाठ को शुद्ध और स्तरीय बनाने के लिए निर्देश दिए जाते हैं।

6. मुद्रित चिह्नों में विराम चिह्नों, देवनागरी लिपि के लेखन संबंधी चिह्नों के साथ पाठ में विविध प्रकार के सुधार या संस्कार करने के लिए आवशयक मानक चिह्न निर्धारित है।

7. मुद्रित शोधन एक प्रतिष्ठित और ज्ञान प्रदान करने वाला व्यवसाय है।

2.3.2 **मुद्रित शोधन : महत्त्व एवं आवश्यकता** :

किसी छपे हुए पाठ में दोषों को दूर करके उसे मुद्रण योग्य बनाने की प्रक्रिया को प्रूफ रीडिंग या मुद्रित शोधन कहते हैं। यह कार्य करने वाले व्यक्ति को प्रूफरीडर या मुद्रित शोधक कहते हैं। यह प्रक्रिया लेखक और पाठक दोनों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मुद्रण की त्रुटि के कारण लेखक जो कहना चाहता है वह विकृत हो जाता है। उसके लेखन में अचूकता और स्पष्टता का अभाव रहेगा, कई प्रकार की लेखन संबंधी त्रुटियाँ नजर आएगी तो पढ़ने वाले पाठक की रूचि नहीं बढ़ेगी। साथ ही उस ग्रंथ या किताब का साहित्यिक मूल्य भी कमजोर नजर आएगा। जब कोई लेखक किसी एकाध रचना का निर्माण करता है तो वह चाहता है कि उसकी रचना सभी दृष्टियों से सार्थक और स्तरीय रूप में पाठकों के पास चली जाए। वह चाहता है कि उसने

जो पाठ या पाण्डुलिपि लिखी है वह ठीक वैसे ही छपे। क्योंकि साहित्य का संबंध समाज से है। सामाजिक परिवर्तन से हैं। साहित्य में समाज का प्रतिबिंब झलकता है। साहित्य समाज का दिशादर्शक होता है। साहित्य व्यक्ति तथा समाज जीवन के विविध प्रकार की संभावनाओं को दर्शाता है। साहित्य दीर्घ समय तक समाज पर अपना प्रभाव बनाए रखता है। अच्छे समाज के लिए अच्छे साहित्य की आवश्यकता होती है। साहित्य के इस महत्त्व को ध्यान में रखें तो इसके अभिव्यक्ति पक्ष की, लेखक की स्तरीयता और गुणवत्ता भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती है। ऐसे में समाज या पाठकों के लिए गलत छापी गई किताबें, पत्र-पत्रिकाएँ, विज्ञापन, सरकारी पत्र या सूचनाएं देने से समाज में गलत जानकारी पहुँचाने की संभावना निर्माण होती है। इसे शुद्ध और सार्थक रूप से अभिव्यक्त करने की जिम्मेदारी प्रकाशक की होती है। प्रकाशक इस जिम्मेदारी को टाईपराइटर के साथ-साथ उस सामग्री को संपादित करने वाले संपादक और मुद्रित शोधक के ऊपर सौंपता है।

लेखक के समान ही पाठक भी ऐसे पाठ की अपेक्षा करता है जो त्रुटिरहित, सार्थक और शुद्ध हो। लेखन में ह्रस्व, दीर्घ, अल्पविराम, पूर्ण विराम, अनुस्वार और शब्द निर्माण का अर्थ की दृष्टि से बहुत महत्व है। इसके साथ ही व्याकरण, वर्तनी, विराम चिह्न, और वाक्य-विन्यास के स्तर पर गलती हो जाती है या अशुद्धियाँ रह जाती है तो अर्थ में परिवर्तन या दोष नजर आते हैं। यह बातें लेखन सामग्री को अर्थ की दृष्टि से प्रभावित करती है या पूरी तरह से बदलती है। इससे बहुत बड़ी हानि होने की संभावनाएं निर्माण होती है। मुद्रण सही ढंग से न हो तो अशुद्धियाँ रह जाती हैं। इससे मुद्रित सामग्री की रोचकता तथा सहजता कम हो जाती है। कभी-कभी किसी शब्द के अशुद्ध रहने से अर्थ बदल जाता है या किसी शब्द के रह जाने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इस दृष्टि से मुद्रण प्रक्रिया में मुद्रित शोधन का अत्यधिक महत्त्व है। जिस प्रकार मन की सुंदरता न हो तो तन की सुंदरता अर्थहीन हो जाती है। उसी प्रकार पुस्तक बाहर से भले ही कितनी ही आकर्षक हो; भाषा की अशुद्धता के कारण वह प्रभावहीन हो जाती है। विशेष रूप से प्रकाशन संस्थाएं, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, विज्ञापन एजेंसियाँ, छोटे- मोटे प्रेस या छापखाने आदि के द्वारा छापे गए विविध प्रकार के प्रकाशनों की स्तरीयता, शुद्धता को बनाए रखने के लिए मुद्रित शोधन आवश्यक है।

मुद्रित शोधन किताबों जैसे ही समाचार पत्रों के लिए महत्वपूर्ण होता है। समाचार पत्र में दिनभर में घटित विविध प्रकार की स्थानीय-राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय घटनाओं, समाचारों, सूचनाओं को संकलित कर प्रकाशित किया जाता है। यहाँ प्रकाशक के पास किताब के जैसा समय नहीं मिलता है। बल्कि दिनभर की खबरों को संकलित कर, टंकित कर, गति के साथ समय पर छापना पड़ता है। समाचार पत्र के लिए हर दिन की खबर समय पर लोगों तक पहुँचाना आवश्यक होता है। इसके साथ ही समाचार पत्र में विज्ञापन के साथ- साथ कई सरकारी ज्ञापन, आदेश आदि को भी छापा जाता है। यह भी सच है कि समाचार पत्र केवल एक ही दिन पढ़ा जाता है, दूसरे दिन उसका महत्त्व कम हो जाता है। इसलिए यहाँ जो कुछ छापते हैं उसको व्याकरण, आशय, वर्तनी, विरामचिह्नों की दृष्टि से चौकन्ना रहते हुए शुद्धता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ एकाध गलती भी समाचार पत्र की विश्वसनीयता को बाधित कर सकती है। कभी-कभी छोटी छोटी बैटन की ओर अनदेखी करने से समाचार पत्र में गड़बड़ी पैदा होती है। जल्दबाजी या अनुवाद की

त्रुटियों के कारण व्याकरण, वर्तनी और वाक्य-विन्यास से जुड़ी भाषिक अशुद्धियाँ देखने को मिलती हैं। जैसे- 'आचार संहिता के चलते मंत्री को स्थगित करनी पढी बैठी।' 'सिर्फ वह ही नकारात्मक खबर, जो आपको जानना जरूरी है'। 'एलपीजी नंबर लिंक कराने की डेडलाइन कल ख़त्म'। पहले वाक्य में बैठक शब्द होना चाहिए था। दूसरे वाक्य में वह ही की जगह वही शब्द सही है। तीसरे वाक्य में ख़त्म शब्द नहीं चाहिए क्योंकि डेडलाइन का अर्थ कल है। साथ ही कभी-कभी समाचार का शीर्षक अलग होता है और नीचे दी गई जानकारी अलग होती है। ऐसे में यह समाचार हास्यास्पद तो होता ही है साथ ही समाचार पत्र की विश्वसनीयता पर संदेह पैदा करता है। यहाँ पर मुद्रित शोधक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। वह अपने सभी प्रकार के अनुभवों का आधार लेकर सामग्री को शुद्ध और पठनीय बनाने में योगदान देता है।

मुद्रित शोधक का संबंध न केवल मुद्रित पाठ्य सामग्री जैसे पत्रिकाएँ, किताबें, समाचार पत्र और ब्रोशर से है, बल्कि यह टेलीविजन चैनलों के सभी प्रकार के भाषाई लेन-देन से भी है। यहाँ तो किसी भी प्रकार की गलती के लिए थोड़ी सी भी जगह नहीं रहती है। क्योंकि समाचार एजेंसी के द्वारा खबर या समाचार प्राप्त होते ही उसे समाचार के सिद्धांतों के आधार पर लिखकर निवेदक को देना पड़ता है। यहाँ किताब की तरह आपके पास ज्यादा समय नहीं होता है। आपको अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर कम समय में खबर को भाषिक, व्याकरणिक और सभी प्रकार के संदर्भों के साथ शुद्ध, दोष मुक्त करके निवेदक के पास देनी पड़ती है।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर सक्षेप में मुद्रित शोधन के महत्त्व एवं आवश्यकता को निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है।

1. **अशुद्धियों का निवारण:** टाइपिंग या लेखन के दौरान मात्राओं, अक्षरों, और शब्दों की वर्तनी (Spelling) में गलतियाँ होना स्वाभाविक है। मुद्रित शोधन इन सभी अशुद्धियों को दूर कर भाषा को शुद्ध बनाता है।

2. **व्याकरण के नियमों का पालन:** वाक्य की संरचना, लिंग, वचन, कारक और काल (Tense) के अनुसार वाक्य सही हैं या नहीं, इसकी जाँच शोधन के माध्यम से ही संभव है।

3. **विराम-चिहनों का सही उपयोग:** सही जगह पर पूर्णविराम, अल्पविराम (Comma), या प्रश्नवाचक चिह्न होने से वाक्य का पूरा अर्थ बदल जाता है। मुद्रित शोधन इसे ठीक कर भाषा को अर्थपूर्ण बनाता है।

4. **सटीक अभिव्यक्ति:** एक छोटी सी चूक पूरे वाक्य का अर्थ बदल सकती है। उदाहरण के लिए, उसे रोको मत, जाने दो। और उसे रोको, मत जाने दो। दोनों वाक्यों में केवल एक अल्पविराम (Comma) का स्थान बदलने से अर्थ पूरी तरह उलट जाता है।

5. **प्रामाणिकता:** मुद्रित शोधन से गुजरी सामग्री को समाज में अधिक प्रामाणिक, गंभीर और आदरणीय माना जाता है। इससे पाठकों का भरोसा बढ़ता है।

6. **बाधा रहित पठन:** जब किसी लेख में अशुद्धियाँ नहीं होती हैं, तो पाठक उसे बिना रुके एक प्रवाह में पढ़ सकता है। पाठक की रूचि को बनाए रखने के लिए सामगी का शुद्ध होना आवश्यक है।

7. **पुनः मुद्रण** (Re-printing) **के खर्च से बचाव:** यदि कोई पुस्तक या दस्तावेज़ हजारों–लाखों की संख्या में गलत छप जाए, तो उसे वापस लेकर दोबारा छापना पड़ता है। इससे कागज, स्याही, श्रम और समय का भारी नुकसान होता है।

8. **कानूनी विवादों से सुरक्षा:** समाचार पत्रों या सरकारी दस्तावेजों में किसी गलत तथ्य या अंक (Figures) के छपने से भारी आर्थिक नुकसान या मानहानि के मुकदमे हो सकते हैं। मुद्रित शोधन इस जोखिम को समाप्त करता है।

3.3 मुद्रित शोधन के चिह्न एवं उनका महत्त्व

इसके पूर्व हमने मुद्रित शोधन के स्वरुप का अध्ययन किया है। जिसमें मुद्रित शोधन के अर्थ, स्वरुप, महत्त्व एवं उपयोगिता पर चर्चा की है। इससे हमने जाना है कि मुद्रित शोधक का कार्य महत्त्वपूर्ण है। किसी पुस्तक, पत्र–पत्रिका, विज्ञापन या किसी भी लिखित सामग्री को व्याकरण, विराम चिह्न, वाक्य रचना और वर्तनी की सभी त्रुटियों को सुधारना है। तो मुद्रित शोधन आवश्यक है। इसके लिए लेखक द्वारा भेजी गई पाण्डुलिपि को जब टंकित किया जाता है तब टंकण की अशुद्धियों को शुद्ध करने की जिम्मेदारी मुद्रित शोधक की होती है। इसके लिए मुद्रित शोधक मूल सामग्री को समग्रता के साथ पढ़ते हुए मुद्रित चिह्न और संकेतों का आधार लेकर टंकित सामग्री की गलतियाँ, त्रुटियाँ या दोषों को दर्शाता है। यहाँ एक बात विशेष महत्त्वपूर्ण है कि मुद्रित शोधक को इन चिह्नों और संकेतों के बारे में विशेष जानकारी होनी आवश्यक है। उसे इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि पाण्डुलिपि या मुद्रित सामग्री को पढ़ते समय कौन से चिह्न या संकेत किस बदलाव के लिए देने हैं, उन्हें कहाँ और कैसे सूचित करना है। क्योंकि प्रत्येक मुद्रित चिह्न या संकेतों का अपना विशिष्ट अर्थ है। उनके द्वारा यह निर्देश दिया जाता है कि आपको इस प्रकार का बदलाव करना है। यह चिह्न या संकेत पांडुलिपि के हाशिये और पाठ में दिखाई देते हैं। त्रुटि वाली पंक्ति के बगल में, बाएँ या दाएँ हाशिये में दिखाई देते हैं। यह बहुत कठिन, जटील न होने के कारण आप इसे आसानी से ग्रहण कर सकते हैं। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि मुद्रित शोधक जिन संकेतों के निर्देश देता है उन्हीं के आधार पर डीटीपी ऑपरेटर को आवश्यक सुधार या बदलाव करने है। इसके लिए डीटीपी ऑपरेटर को भी इन चिह्नों के अर्थ या संकेत पता होने चाहिए। एक प्रकार से मुद्रित शोधन चिह्नों या संकेतों की भाषा ही है। इससे मुद्रण संबंधी कार्य की गति बढती है। यदि यह संकेत या चिह्न नहीं होते तो मुद्रित शोधक को वह सारे बदलाव लिखित रूप में देने पड़ते। इससे बचने और पाठ को शुद्ध रूप में प्रस्तुत करने के लिए मुद्रित चिह्नों या संकेतों का निर्माण किया गया है।

इस दृष्टि से मराठी के सुप्रसिद्ध मुद्रित शोधक य. ए. धायगुड़े जी द्वारा लिखित 'मुद्रित शोधन' ग्रंह के दो खण्ड अत्यंत उपयोगी तथा महत्वपूर्ण हैं। इस ग्रंथ के प्रथम खंड की शुरुआत में ही उन्होंने 'इंडियन स्टैण्डर्ड इंस्टीट्यूट' संस्था की सूचनाओं के आधार पर मुद्रित शोधन के लगभग 88 चिह्नों या संकेतों की सूची दी है। अध्ययन की सुविधा के लिए उन्होंने इन चिह्नों या संकेतों को छह भागों में विभाजित किया है। इनमें से कुछ संकेतों को यहाँ तालिका में दिया जा रहा है।

देवनागरी लिपि संबंधी चिह्न

स्वर	मात्रा का नाम
आ	आ की मात्रा (ा)
इ	छोटी इ की मात्रा (ि)
ई	बड़ी ई की मात्रा (ी)
उ	छोटा उ की मात्रा (ु)
ऊ	बड़ा ऊ की मात्रा (ू)
ऋ	ऋ की मात्रा (ृ)
ए	ए की मात्रा (े)
ऐ	ऐ की मात्रा (ै)
ओ	ओ की मात्रा (ो)
औ	औ की मात्रा (ौ)
अं	अनुस्वार (ं)
अः	विसर्ग (ः)

विराम चिह्नों के लिए संकेत या मुद्रित शोधन चिह्न

वाक्य में जिस किसी विराम चिह्न का प्रयोग करना है उस जगह पर तिरछी रेखा खीचकर हाशिए (समास) में उस विराम चिह्न को दर्शाकर उसको गोल कर दीजिये। जैसे वाक्य में पूर्ण विराम देना रह गया हैं तो उस जगह पर तिरछी रेखा खींचकर हाशिए में चिह्न निकाले.

1. (।) पूर्णविराम- वाक्य के अंत में गलती से या गड़बड़ी में पूर्ण विराम देना रह जाता है। जहाँ पूर्ण विराम देना है वहाँ तिरछी रेखा खींचकर हाशिए में पूर्ण विराम के चिह्न को दर्शाना है। (राम स्कूल जाता है।)

2. (,) अल्पविराम- वाक्य में जहाँ अल्प विराम देना है वहाँ तिरछी रेखा खींचकर हाशिए में अल्प विराम के चिह्न को दर्शाना है। (राम, श्याम और मोहन दोस्त हैं।)

3. (;) अर्धविराम- वाक्य में जहाँ अर्धविराम देना है वहाँ तिरछी रेखा खींचकर हाशिए में अर्धविराम के चिह्न को दर्शाना है। (सूर्यास्त हो गया; पक्षी घोंसलों में लौट आए।)

4. (:) कोलन - कोलन और विसर्ग में अंतर यही है कि कोलन देते समय उसके पहले और बाद में स्पेस दिया जाता है। (महात्मा गांधी ने कहा था : सत्य और अहिंसा ही मेरे ईश्वर हैं।)

5. (?) प्रश्नचिह्न- जहाँ प्रश्नचिह्न देना है वहाँ तिरछी रेखा खींचे और हाशिए में उसे दर्शाए। (तुम कहाँ जा रहे हो?)

6. (!) विस्मयादिबोधक चिह्न- किसी भी प्रकार की भावनाओं को दर्शाने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। ध्यान रहें कि इसे दर्शाते समय उसके नीचे की बिंदु को स्पष्ट दर्ज करें, नहीं तो यह पूर्ण विराम नजर आएगा। (अरे! कितना सुंदर फूल है।)

7. (-) निर्देशक चिह्न- यह योजक चिह्न से आकर में लम्बा होता है। (अध्यापक ने कहा- कल छुट्टी रहेगी।)

8. (-) योजक चिह्न- यह निर्देशक चिह्न से आकर में छोटा होता है। (माता-पिता हमारे मार्गदर्शक होते हैं।)

9. (''--'') दुहरा उद्धरण चिह्न-(नेताजी ने कहा था, तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा।)

10. ('-') इकहरा उद्धरण चिह्न-किसी विशेष शब्द, उपनाम, रचना (जैसे-पुस्तक का नाम) या शीर्षक पर विशेष बल देने के लिए। (सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी के एक महान कवि थे।)

11. (()) कोष्ठक चिह्न-कोष्ठक चिह्न का प्रयोग अर्थ को अधिक स्पष्ट करने के लिए शब्द अथवा वाक्यांश को कोष्ठक के अंदर लिखकर किया जाता है। (धर्मराज (युधिष्ठिर) सत्य और धर्म के संरक्षक थे।)

12. (०) लाघव चिह्न- इसका उपयोग किसी भी बड़े या विस्तृत शब्द को संक्षिप्त (छोटा) रूप में लिखने के लिए किया जाता है। (डॉ० (डॉक्टर), पं० (पंडित) के लिए।)

13. (:-) विवरण चिह्न- किसी बात, विषय या घटना का विस्तार से वर्णन या स्पष्टीकरण देने (विवरण देने) के लिए किया जाता है। इसे आदेश चिह्न भी कहते हैं।

14. रेखांकन चिह्न (Underline) - किसी भी वाक्य, लेख या परिभाषा में किसी विशेष शब्द, शीर्षक, या महत्वपूर्ण वाक्यांश पर जोर देने (highlight) के लिए उसके नीचे एक सीधी रेखा (अंडरलाइन) खींची जाती है। (गोदान उपन्यास, प्रेमचंद द्वारा लिखित सर्वश्रेष्ठ कृति है।)

15. (...) पदलोप चिह्न- जब वाक्य विवरण में पूरा उदाहरण न देकर कुछ अंश ठीक किया जाता है तब, लोप चिह्न का प्रयोग किया जाता है। (गांधी जी ने कहा, ------- ''परीक्षा की घड़ी आ गई है हम रहेंगे या मरेंगे''।)

16. (=) तुल्यता सूचक चिह्न- इसका प्रयोग दो, वस्तुओं, संख्याओं या कथनों के बीच समानता, बराबरी या समकक्षता प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है।

मुद्राक्षर विषयक चिह्न :

अ. क्र.	चिह्न	मुद्रित चिह्न का नाम और अर्थ	चिह्न को कैसे दर्शाए

2.4. **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।**

अ) बहुविकल्पी प्रश्न।

1. भाषा आद्यंत ------- वस्तु है।

   अ) आर्थिक　　ब) वैयक्तिक

   क) सामाजिक　　ड) कठिन

2. दो हजार साल पहले ------ में मुद्रण यंत्र का आविष्कार हुआ।

   अ) भारत　　ब) अमेरिका

   क) चीन　　ड) जर्मनी

3. 1455 में -------- ने धातु के मूवेबल टाइप और मैकेनिकल प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किया।

   अ) गुटेनबर्ग　　ब) बेल

   क) गिलक्रिस्ट　　ड) पोवेल

4. भारत में पहला प्रिंटिंग प्रेस 1556 में ------- ईसाई मिशनरियों द्वारा स्थापित किया गया था।

अ) गोवा ब) केरल

क) राजस्थान ड) मुंबई

5. पं. जुगल किशोर शुक्ल द्वारा कोलकता से निकाला गया ----- हिंदी का पहला समाचार पत्र था।

अ) पहल ब) उदंत मार्तण्ड

क) नवभारत टाइम्स ड) दैनिक समाचार

ब) एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1. मुद्रित शोधन क्या है?
2. मुद्रित शोधक के तीन महत्त्वपूर्ण गुण लिखिए?
3. लाघव चिह्न का प्रयोग कब किया जाता है?
4. निर्देशक चिह्न और योजक चिह्न में क्या अंतर है?
5. मुद्रित शोधन के दो महत्त्व लिखिए?

क) उचित मिलन कीजिए

चिह्न	त्रुटी या शोधन का विवरण
अ) ∂	1. गलती से अक्षर को हटाने के निर्देश देने पर पुनः उसे यथावत रखने का निर्देश
ब) stet	2. अक्षर को बदले
क) ?	3. हटाना या डिलीट करना
ड) $\pm$	4. पाठ के शब्द या अक्षर संबंधी आशंका
ई) $\times$	5. दो शब्दों या अक्षरों के बीच स्पेस

2.5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ ।

1. संकेत चिह्न (Proofreading Marks): अक्षरों, शब्दों या वाक्यों को सुधारने के लिए हाशिए पर बनाए जाने वाले मानक प्रतीक।

2. हाशिया (Margin): कागज के चारों तरफ खाली छोड़ी गई जगह, जहाँ प्रूफरीडर सुधार के चिह्न लिखता है।

3. अंतराल/स्पेस (Space): दो शब्दों या अक्षरों के बीच की खाली जगह।

4. पांडुलिपि/मूल प्रति (Manuscript / Copy): लेखक द्वारा लिखी गई वह मूल रचना (हाथ से लिखी या टाइप की हुई), जिसे छपने के लिए भेजा जाता है।

5. गुटेनबर्ग– जर्मन आविष्कारक योहानेस गुटेनबर्ग (Johannes Gutenberg) ने लगभग १४४० ईस्वी में आधुनिक 'टाइप आधारित मुद्रण यंत्र' (Movable-type Printing Press) का आविष्कार किया था।

6. टाइपोग्राफी: टेक्स्ट के लिए सही फॉन्ट, आकार और स्टाइल का चयन करना।

7. डीटीपी ऑपरेटर– वह कंप्यूटर विशेषज्ञ होता है, जो किताबें, पत्रिकाएं, ब्रोशर, विजिटिंग कार्ड और शादी के कार्ड जैसी मुद्रित या डिजिटल सामग्री को डिज़ाइन करने और उसका लेआउट तैयार करने के लिए विशेष सॉफ्टवेयर का उपयोग करता है।

2.6 **स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।**

अ) 1– क, 2– क, 3– अ, 4– अ, 5– ब

ब) 1. पाठ में त्रुटियों को खोजने और उन्हें सही प्रारूप में सुधारने की प्रक्रिया ही मुद्रित शोधन है।

2. भाषा का विशेष ज्ञान, वाचन और मेहनती होना।

3. इसका उपयोग किसी भी बड़े या विस्तृत शब्द को संक्षिप्त (छोटा) रूप में लिखने के लिए किया जाता है।

4. यह योजक चिह्न से आकर में लंबा होता है।

5. पाठ की अशुद्धियों का निवारण और रचना की स्तरीयता को बनाए रखना

क) अ–3, ब– 1, क– 4, ड– 5, इ– 2

2.7. **सारांश।**

1. प्रूफ या मुद्रित शोधन एक प्रक्रिया है, जिसमें लिखित सामग्री को प्रकाशन के पूर्व भाषा, व्याकरण, शैली, वर्तनी या प्रस्तुति की शैली की दृष्टि से शुद्ध, स्तरीय, विश्वसनीय, पठनीय बनाया जाता है।

2. इसका क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। पुस्तक प्रकाशन से लेकर समाचार पत्र या समाचार एजेंसियों के साथ-साथ विज्ञापन एजेंसियाँ, छोटे-मोटे मुद्रक आदि का कार्य मुद्रित शोधन से ही स्तरीय और पठनीय बनता है।

3. वैसे मुद्रित शोधन का इतिहास प्राचीन है। भारत में पहला प्रिंटिंग प्रेस सन् 1556 में गोवा में ईसाई मिशनरियों द्वारा स्थापित किया गया था। आज डिजिटल मुद्रण (Digital Printing) और ई-पुस्तकों (E-books) के रूप में मुद्रण कला का आधुनिक स्वरूप नई ऊंचाइयों पर ले जा रहा है।

4. मुद्रित शोधन एक प्रतिष्ठित व्यवसाय है, साथ ही रोजी-रोटी का महत्वपूर्ण माध्यम भी है।

5. प्रकाशन के क्षेत्र में मुद्रित शोधन का महत्त्व असाधारण है। इससे पाठ या सामग्री को सभी प्रकार की गलतियों या त्रुटियों से दूर कर शुद्ध बनाकर, अर्थ की स्पष्टता को सुनिश्चित किया जाता है। इसके लिए मुद्रित शोधक के पास विशेष गुणों और योग्यताओं का होना आवश्यक है।

6. मुद्रित शोधन में मुद्रित चिह्नों का विशेष महत्त्व होता है।

2.8. **स्वाध्याय।**

अ) लघुत्तरी प्रश्न।

1. मुद्रित शोधन के अर्थ को स्पष्ट करें।
2. मुद्रित शोधन के चिह्नों के महत्त्व को लिखिए।
3. मुद्रित शोधन के विकास को संक्षेप में लिखें।
4. मुद्रित शोधन के विविध क्षेत्रों का विवरण दीजिये।
5. मुद्रित शोधन की विशेषताएँ लिखिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न।

1. मुद्रित शोधन के अर्थ को बताकर उसके महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।
2. मुद्रित शोधक के गुणों एवं योग्यताओं की चर्चा करें।
3. मुद्रित शोधन के विरामचिह्न संबंधी नियमों को लिखिए।
4. विराम चिह्न

2.9. **क्षेत्रीय कार्य।**

2.10. **अतिरिक्त अध्ययन के लिए।**

1. धायगुड़े य. ए.–मुद्रित शोधन (खण्ड 1 और 2), दि पूना प्रेस ओनर्स असो. पूना, तृतीय संस्करण, 1994।
2. पाण्डेय छबीनाथ, मुद्रण कला, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना, संस्करण 1968।
3. संपा. सुनील कुलकर्णी, देवनागरी लिपि एवं हिंदी वर्तनी का मानकीकरण, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली, संशोधित संस्करण 2024।
4. कमल कमलेश, भाषा संशय शोधन, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2022।
5. भाटिया कैलाशचंद्र, हिंदी की मानक वर्तनी, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2002।
6. https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/74460/1/Unit-10.pdf
7. https://vishwakosh.marathi.gov.in/30290/

❑❑❑

इकाई– 3

निबंध

3.1 विश्वास – प्रतापनारायण मिश्र

3.1.1 उद्देश्य

3.1.2 प्रस्तावना

3.1.3 विषय विवेचन

3.1.3.1 प्रतापनारायण मिश्र जी का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

3.1.3.2 'विश्वास' निबंध का परिचय।

3.1.3.3 'विश्वास' निबंध का आशय एवं विषय विवेचन।

3.1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

3.1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

3.1.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।

3.1.7 सारांश।

3.1.8 स्वाध्याय।

3.1.9 क्षेत्रीय कार्य।

3.1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

3.1.1 **उद्देश्य :**

इस इकाई का अध्ययन करने से आप -

1. प्रतापनारायण मिश्र जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
2. निबंधकार के रूप में प्रतापनारायण मिश्र जी के साहित्यिक योगदान से अवगत होंगे।
3. 'विश्वास' निबंध के विषय एवं आशय से परिचित होंगे।
4. 'विश्वास' की महिमा तथा विश्वास संबंधी लेखक के विचारों से परिचित होंगे।
5. 'विश्वास' निबंध के उद्देश्य से अवगत होंगे।

3.1.2 **प्रस्तावना :**

भारतेंदु युगीन साहित्यकारों में से प्रतापनारायण मिश्र एक प्रसिद्ध एवं चर्चित निबंधकार हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र के प्रति उनकी अत्यधिक श्रद्धा होने के कारण उनकी रचनाओं पर भारतेंदु हरिश्चंद्र की रचना शैली, विषय वस्तु और भाषा का अत्यधिक प्रभाव दिखाई देता है। हिंदी गद्य साहित्य के विकास में प्रताप नारायण मिश्र का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। देशप्रेम का प्रसार, समाज सुधार, नैतिक शिक्षा और जनसामान्य का मनोरंजन आदि उदेश्यों को सामने रखकर उन्होंने अपना साहित्य लेखन किया है। उन्होंने उस समय की जन-प्रचलित खड़ीबोली को अपने लेखन का माध्यम बनाया। मिश्र भारतेंदु युग के प्रमुख लेखकों में से एक थें। उन्होंने हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में लेखन किया है। कवि होने के साथ-साथ वे उच्च कोटि के निबंधकार और नाटककार भी थें। हिंदी गद्य के विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसीलिए तो आ. रामचंद्र शुक्ल ने पंडित बालकृष्ण भट्ट के साथ मिश्र को भी महत्व देते हुए अपने 'हिंदी साहित्य के इतिहास' में लिखा है-''पंडित प्रतापनारायण मिश्र और पंडित बालकृष्ण भट्ट ने हिंदी गद्य साहित्य में वही काम किया, जो अंग्रेज़ी गद्य साहित्य में एडीसन और स्टील ने किया।'' शुक्ल के इस कथन से हिंदी साहित्य में प्रतापनारायण मिश्र का होनेवाला महत्वपूर्ण स्थान अधोरेखित होता है 'विश्वास' प्रतापनारायण मिश्र जी का एक प्रसिद्ध विचारात्मक निबंध है। इसमें उन्होंने भारतीय संस्कृति और परंपरा के सामने पाश्चात्य विद्या, सभ्यता और सिद्धांत को सामान्य सिद्ध करने का प्रयास किया है। लेखक के अनुसार विश्वास में बड़ी भारी शक्ति है। अतः भारतीयों को अपनी शक्ति, धर्म, संस्कृति, भाषा, राष्ट्र आदि सभी पर विश्वास करना चाहिए। विश्वास की महिमा को प्रत्यक्ष रूप से देखने के लिए हमें अपने अस्तित्व पर ही सच्चा और अचल विश्वास करने की सलाह लेखक इस निबंध के माध्यम से देते हैं

3.1.3 **विषय विवेचन :**

3.1.3.1 **प्रतापनारायण मिश्र का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व :**

जीवन परिचय :

हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि, गद्यकार और संपादक प्रतापनारायण मिश्र का जन्म सन् 24 सितंबर, 1856 इ. को उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले के बैजे नामक गाँव में हुआ था। उनके पिताजी का नाम पंडित संकटाप्रसाद मिश्र था, जो एक विख्यात ज्योतिषी थे। वे अपने बेटे प्रतापनारायण जी को भी ज्योतिषी बनाना चाहते थें। परंतु इनका मन उसमें नहीं रमा। अंग्रेजी शिक्षा के लिए इन्होंने स्कूल में प्रवेश लिया, लेकिन उनका मन वहाँ भी नहीं लगा। साहित्य के प्रति अत्यधिक रूचि के कारण प्रतापनारायण ने स्वयं अध्ययन के माध्यम से हिंदी, उर्दू, फारसी, संस्कृत और बंगाली भाषा का गहन ज्ञान प्राप्त कर अपने आप को हिंदी साहित्य में एक साहित्यकार के रूप में स्थापित किया। कहा जाता है कि एक बार ईश्वरचंद्र विद्यासागर इनसे मिलने आए तो उनके साथ इन्होनें पूरी बातचीत बंगाली भाषा में की। वास्तव में प्रतापनारायण मिश्र ने स्वाध्याय और अच्छी संगति से जो ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त किए, उसे ही अपने साहित्य के माध्यम से पाठकों

के सामने प्रस्तुत किए हैं। हिंदी के प्रतिभाशाली साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र के प्रति उनकी अत्यधिक श्रद्धा होने से उनकी रचना शैली, विषयवस्तु और भाषा पर भारतेंदु का व्यापक प्रभाव दिखाई देता है। इसी कारण उन्हें 'प्रति भारतेंदु' और 'द्वितीय चंद्र' भी कहा जाता था। उनकी पहली काव्य-रचना 'प्रेम पुष्पांजलि' वर्ष 1883 ई. में प्रकाशित हुई। सन् 1883 ई. में ही होली के दिन उन्होंने मित्रों के साथ मिलकर 'ब्राह्मण' नामक मासिक पत्र की शुरुआत की थी। जो भारतेंदु युग के प्रतिनिधि पत्रों में से एक था और उनकी रचनात्मक गतिविधियों का प्रमुख माध्यम था। वे सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक कार्यों में भी बड़े उत्साह के साथ सम्मिलित होते थें और उसके बारे में अपने पत्र में लेख लिखते थें। उन्होंने कानपुर में एक 'रसिक समाज' की भी स्थापना की थी। दि. 6 जुलाई, सन् 1894 ई. को मात्र 38 वर्ष की अल्पायु में 'भारतेंदुमंडल' के इस प्रतिभाशाली साहित्यकार की मृत्यु हुई।

व्यक्तित्व:

सजीवता, सादगी, बाँकपन और फक्कड़पन के कारण भारतेंदु कालीन साहित्यकारों में प्रतापनारायण मिश्र का अपना एक अलग स्थान था। वे हास्य, विनोद प्रिय और स्वच्छंद स्वभाव के व्यक्ति थें। सामाजिक, राजनीतिक, और धार्मिक कार्यों में बड़े उत्साह के साथ सम्मिलित होना उनकी रूचि का विषय था। भारतेंदु हरिश्चंद्र जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होने के कारण भारतेंदु के व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप उनके व्यक्तित्व और उनके साहित्य पर दिखाई देती है। भारतेंदु जी की तरह वे एक कुशल अभिनेता भी थें । पारसी थिएटर के समानांतर वे हिंदी का अपना रंगमंच खड़ा करना चाहते थें। प्रतापनारायण मिश्र जितने परिहास प्रिय और जिंदादिल व्यक्ति थें, उतने ही अनियमित, अनियंत्रित और लापरवाह स्वभाव के भी थें। रोग के कारण उनका शरीर युवावस्था में ही जर्जर हो गया था। फिर भी उन्होंने उसकी ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। इससे उनका स्वास्थ्य दिन-प्रति-दिन ख़राब होता गया और सन् 1892 ई. के अंत में वे गंभीर रूप से बीमार पड़े और उसी में उनकी मृत्यु हुई ।

कृतित्व :

शुरुआत में प्रतापनारायण मिश्र की रूचि लोक-साहित्य के सृजन में थी। अत: उनकी साहित्यिक जीवन की शरुआत ख्याल एवं लावनियों के लेखन से हुई। बाद में उन्होंने गद्य के क्षेत्र में लेखन कार्य आरंभ किया वे भारतेंदु जी को अपना गुरु मानते थें। अत: उनकी जैसी ही व्यावहारिक भाषा-शैली को अपनाकर मिश्र ने अनेक मौलिक एवं अनूदित रचनाओं का सृजन किया। उनके गद्य-पद्य लेखन का उद्देश्य देश-प्रेम का प्रसार, समाज-सुधार, नैतिकता की शिक्षा, भाषा का प्रसार एवं विकास और जनसामान्य का मनोरंजन था। हिंदी गद्य के विकास में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान माना जाता है। उन्होंने जन-प्रचलित खड़ी बोली का प्रयोग अपने लेखन में किया है । तत्सम और तद्भव शब्दों के साथ ही अरबी, उर्दू, फ़ारसी और अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्दों को उनकी लेखन की भाषा में देखा जा सकता है। कहावतों और मुहावरों का प्रयोग भी उन्होंने अपनी रचनाओं में अत्यंत कुशलता किया है। उनकी साहित्यिक विशेषता यह थी कि 'दांत', 'भौ', 'धोखा', 'वृद्ध', 'बात', 'मुच्छ', जैसे साधारण विषयों पर भी उन्होंने चमत्कारपूर्ण और असाधारण निबंधों की रचना की है अपनी अल्पायु में ही उन्होंने लगभग 40 पुस्तकों का लेखन किया। कविता, नाटक,

निबंध, अनुवाद आदि से संबंधित उनकी रचनाएँ निम्नांकित हैं –

काव्य–कृतियाँ– 'प्रेम पुष्पांजलि', 'मन की लहर', 'लोकोक्तिशतक', 'कानपुर महात्मय', 'तृप्यंताम', 'दंगल खंड', 'ब्रेडला स्वागत', 'तारापात पचीसी', 'दीवाने बरहमन', 'शोकाश्रु', 'बेगारी विलाप', 'प्रताप लहरी' उनकी प्रमुख काव्य–कृतियाँ हैं । उनकी प्रमुख काव्य–रचनाओं को 'प्रतापनारायण मिश्र कवितावली' में संकलित किया गया है।

निबंध– 'प्रताप पीयूष', 'निबंध नवनीत', 'प्रताप समीक्षा' आदि उनके मौलिक निबंध संग्रह हैं उनके निबंधों को 'प्रतापनारायण ग्रंथावली भाग' के अंतर्गत संकलित किया गया है ।

नाट्य–रचनाएँ– 'कलि–कौतुक रूपक', 'हठी–हमीर', 'भारत दुर्दशा रूपक', 'दूध का दूध पानी का पानी', 'जुआरी–खुआरी', 'संगीत शाकुंतलम्' आदि उनकी प्रसिद्ध नाट्य–रचनाएँ हैं ।

अनुवाद –उन्होंने अनुवाद के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 'अमरसिंह', 'इन्दिरा', 'कपाल कुंडला', 'देवी चौधरानी', 'युगलांगुलीय' और 'राजसिंह राधारानी' आदि बंकिमचन्द्र के उपन्यासों अनुवाद किया है ।

भाषा–शैली – सामान्य पाठकों की दृष्टि से खड़ीबोली के रूप में प्रचलित जनभाषा का प्रयोग प्रतापनारायण मिश्र ने अपनी रचनाओं में किया। प्रचलित मुहावरों, कहावतों तथा विदेशी शब्दों का प्रयोग इनकी रचनाओं दिखाई देता है। मिश्र ने भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी की तरह साधारण की भाषा का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। उनके रचनाओं की भाषा कृत्रिमता से दूर स्वाभाविक भाषा है । उसमें ग्रामीण शब्दों का प्रयोग स्वच्छंदता पूर्वक किया गया है। संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, उर्दू, अंग्रेज़ी, आदि के प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग दिखाई देता है। भाषा विषय के अनुकूल है। गंभीर विषयों के लेखन में उन्होंने गंभीर भाषा का प्रयोग किया है। कहावतों और मुहावरों का प्रयोग भी मिश्र ने बड़ी कुशलता से किया है। वर्णनात्मक, विचारात्मक तथा हास्य विनोद शैलियों का उन्होंने अपने लेखन कार्य में बड़ी सफलतापूर्वक प्रयोग किया है ।

3.1.3.2 **'विश्वास' निबंध का परिचय :**

प्रतापनारायण मिश्र का 'विश्वास' यह एक प्रसिद्ध विचारात्मक निबंध है। इसमें लेखक ने भारतीय संस्कृति और परंपरा के सामने यूरोप की विद्या, सभ्यता और सिद्धांत को साधारण सिद्ध करने का प्रयास किया है। निबंध में लेखक हमारी संस्कृति पर विश्वास होने की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं उनके अनुसार 'विश्वास' में बड़ी भारी शक्ति है । अतः निबंध में लेखक भारतीयों को अपनी शक्ति, धर्म, संस्कृति, भाषा, राष्ट्र आदि सभी पर विश्वास करने की बात करते हैं। लेखक के अनुसार विश्वास की महिमा वेदशास्त्र, पुराण, बाइबल, कुरान आदि सभी में देखने को मिलेगी। इस विश्वास की महिमा को प्रत्यक्ष रूप से देखने के लिए हमें अपने अस्तित्व पर ही सच्चा और अचल विश्वास करने की सलाह लेखक इस निबंध के माध्यम से देते हैं

लेखक का कहना है कि हम यूरोप की विद्या, सभ्यता और सिद्धांतों के प्रति अत्यधिक आकर्षित है । तथा उसी को ज्यादा महत्व देते हैं और उसीका अनुकरण करते हैं । भारतीय दर्शन, संस्कृति, सभ्यता और

विद्या की ओर हम ध्यान नहीं देते। वास्तव में भारतीय दर्शन, संस्कृति, सभ्यता और विद्या का अनुसरण हमारे प्राकृतिक जीवन को मंगलमय बना सकता हैं। आजकल का शिक्षित समुदाय 'विश्वास' जैसे दिव्य गुण से वंचित है। इसका प्रमुख कारण है कि हम पाश्चात्य बातों को ज्यादा महत्व देते हैं। निबंध में लेखक विश्वास को दैवी शक्ति मानते है। जिसके कारण हमारे लिए जो असाध्य है, वह भी साध्य बन जाता है इतना विश्वास का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान हैं। विश्वास के होने से हम कोई भी कठिन-सा-कठिन काम कर सकते हैं। अत: हमें विश्वास के साथ ईश्वर पर विश्वास जमाने का अभ्यास करना चाहिए। क्योंकि जहाँ बुद्धि काम नहीं करती, शक्ति नष्ट हो जाती है और विपदा और भी कठिन रूप धारण कर लेती है, उस समय केवल विश्वास एक अनिर्वचनीय रूप धारण करके युक्ति बतलाता है। वह शक्ति का निर्माण करता है और हमारी सहायता करता है ।

लेखक के अनुसार विश्वास एक अलौकिक शक्ति है। जब चारों ओर निराशा छा जाती है। तब विश्वास देव केवल आशा ही नहीं बल्कि आशा से कहीं अधिक सहायता प्रदान करते हैं इसलिए निबंध में लेखक हमें उस दैवी शक्ति की उपेक्षा न करने की सलाह देते हैं। निबंध में लेखक पाठकों से बहुत महत्वपूर्ण बात कहते हैं कि अगर आपको किसीने धोखा दिया हो, या आपका किसी ने विश्वासघात किया हो तो ऐसा निर्णय कभी नहीं लेना चाहिए कि मैं अब कभी किसी का विश्वास नहीं करूँगा। बल्कि अपने अस्तित्व पर सच्चा और अचल विश्वास करके विश्वास की महिमा प्रत्यक्ष देखनी चाहिए । क्योंकि विश्वास में बड़ी शक्ति है, बड़ा आनंद है । लेखक चाहते हैं कि समस्त भारतवासी विश्वास करना सिखते हैं और परस्पर एक दूसरे के विश्वासी और विश्वासभाजन बन जाते हैं, तो हम हमारे देश की गौरवशाली परंपरा संसार भर को दिखला सकते हैं ।

3.1.3.3 **'विश्वास' निबंध का आशय एवं विषय विवेचन :**

पं. प्रतापनारायण मिश्र का निबंध 'विश्वास' एक वैचारिक निबंध है । इसमें लेखक मिश्र ने भारतीय संस्कृति और परंपरा के सामने पाश्चात्य विद्या, सभ्यता और सिद्धांत को सामान्य सिद्ध करने का प्रयास किया है । लेखक के अनुसार हमारी संस्कृति पर हमारा विश्वास होना आवश्यक है । उनका कहना है कि जो मन, वचन और कर्म से अंग्रेजी रंग-ढंग का अभ्यास करते हैं, वे वास्तव में विश्वास को जानते ही नहीं। अगर विश्वास को यदि जानते भी है, तो एक पागलपन की तरह। विश्वास में बड़ी भारी शक्ति है अतः भारतीयों को अपनी शक्ति, धर्म, संस्कृति, भाषा, राष्ट्र आदि सभी पर विश्वास करना चाहिए । विश्वास की महिमा वेद, पुराण, बाइबल, कुरान, सभी में देखने को मिलेगी । विश्वास की महिमा प्रत्यक्ष रूप से देखनी है, तो हमें अपने अस्तित्व पर ही सच्चा और अचल विश्वास करना चाहिए । इसी बात को लेखक ने प्रस्तुत निबंध के माध्यम से पाठकों के सामने रखा है ।

लेखक का कहना है कि हम यूरोप की विद्या, सभ्यता और सिद्धांतों के प्रति अत्यधिक आकर्षित है और उसी को अधिक महत्व देते हैं । भारतीय दर्शन, संस्कृति, सभ्यता और विद्या की ओर हम ध्यान नहीं देते । वास्तव में भारतीय ज्ञान परंपरा पाश्चात्य ज्ञान परंपरा से प्राचीन होकर अधिक विकसित और स्थायी गुणों से युक्त है । हमारे दैनिक व्यवहार के स्नान, भोजन, वस्त्र परिधान, आदि में तथा स्वास्थ्य संबंधी

औषध आदि छोटे विषयों में अगर हम हमारी प्राचीन आर्य रीति का ठीक प्रकार से अवलंबन करते हैं, तो पता चलेगा कि पाश्चात्य बातों की अपेक्षा कितने कम व्यय में कितना अधिक और दृढ स्थायी गुण हमें देखने में मिलेगा । लेकिन जो पूरी तरह पाश्चात्य जगत् का अनुकरण कर रहा है और उसी को महत्व देता है उसकी समझ में यह बातें कभी नहीं आएगी । सांसारिक और परमार्थिक नियमों संबंधी भारत के जलवायु जितनी स्वाभाविकय अनुकूलता हमारे ऋषियों ने बताई है, उतनी विदेशी नियमों में कभी नहीं हो सकती । हमारे लोक-परलोक संबंधी सुख-सुविधा, सौभाग्य केवल प्राचीन लोगों के द्वारा बताए गए रीति-नीति पर निर्भर है । उसीका अनुसरण कर हम हमारे प्राकृतिक जीवन को मंगलमय बना सकते हैं । परंतु जितना इस विषय का हम विरोध करेंगे या उसकी उपेक्षा करेंगे उससे उतनी ही हमारी हानि हो सकती है । आत्मा से संबंध रखने वाली बातें धर्म, प्रेम, ज्ञान, वैराग्य, ध्यान-धारणा आदि सभी विषयों में हम पूरी तरह विकसित है । परंतु दुर्भाग्य की बात यह है कि आज कल का शिक्षित समुदाय 'विश्वास' जैसे दिव्य गुण से वंचित रहा है । इसका प्रमुख कारण यह है कि हम हमसे ज्यादा पाश्चात्य बातों को महत्व देते हैं ।

निबंध में आगे विश्वास को लेकर बात करते हुए लेखक लिखते हैं, लौकिक और अलौकिक मन के इच्छाओं की सिद्धि विशेष रूप से इसी दैवी शक्ति के अधीन है, जिसे 'विश्वास' कहते हैं। विश्वास क्या है; किसमें क्यों करना चाहिए और उसके करने से क्या होता है? इसे हमारे पूर्वज ही अच्छी तरह समझते थें और समझा सकते थें। अंग्रेजी रंग-ढंग के अभ्यास के कारण जो पूरी तरह से पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण कर रहे हैं, वे विश्वास को कभी नहीं जान सकते । उनकी दृष्टि से तो यह अशिक्षित लोगों का पागलपन है। लेकिन लेखक उन लोगों को बताना चाहते हैं कि विश्वास वास्तव में वह गुण है, जो सही तरीके से काम में लाया जाए तो कोई भी बात हमारे लिए असाध्य नहीं रह सकती । इतना विश्वास का महत्व है ।

महात्मा मसीह ने अपने शिष्यों को एक बार उपदेश दिया था कि यदि तुम में से किसी को अणु मात्र भी विश्वास हो तो वह उसके माध्यम से पर्वत को भी इस ओर से उस ओर ले जा सकता है । तात्पर्य विश्वास होने पर हम कोई भी कठिन-सा-कठिन काम कर सकते हैं । ईश्वरीय सामर्थ्य में कभी निर्बलता नहीं हो सकती। ईश्वर जो पहले था, वही आज भी है। वह अपने विश्वासियों की मनोकामना पूर्ण करने के लिए हमेशा प्रस्तुत रहता है । परंतु एक अच्छा और दृढ़ विश्वासी होना हर एक का काम नहीं है हम ईश्वर के कमजोर और दुनियादारी जानने वाले लोग हैं। हमें पर्वत हटाने लायक विश्वास कहाँ से आएगा? परंतु लेखक का कहना है कुछ दिन हम स्वयं अभ्यास करके परीक्षा लीजिए तो विश्वास हो जाएगा कि, विश्वास में बड़ी भारी शक्ति है । विश्वासी के लिए पर्वत हटा देना तो एक छोटी सी बात है । अगर वह चाहे तो पहाड़ क्या पूरे संसार को अपनी इच्छा के अनुसार संचालित कर सकता है । परंतु उसके लिए विश्वासी होना चाहिए सच्चे विश्वास से पूर्ण विश्वासी। अगर कोई व्यक्ति आपके साथ विश्वासघात करता है, तो आप समझ सकते हैं विश्वास कोई चीज नहीं है । परंतु इसमें विश्वास का कोई दोष नहीं है । वह दोष तो उस विश्वासघाती व्यक्ति का है । जीवन में कुछ सज्जन और कुछ दुर्जन लोग होते ही हैं और इसीलिए उन दुर्जन लोगों से हमें धोखा दिया जाएगा । इससे इस निष्कर्ष पर नहीं आना है कि हमारे अनेक महापुरुषों ने तथा महात्माओं ने जो अच्छा कहा है, वस्तुत: अच्छा नहीं है । विश्वास की महिमा तो वेद शास्त्र, पुराण, बाइबल, कुरान सभी में देखने को मिलेगी। इसलिए कोई इसे ऐसा सिद्ध नहीं कर सकता कि विश्वास

ग्रहणीय गुण नहीं है । हम संसार में अपवाद स्वरूप कभी-कभी बहुत सोचे समझे विषयों तथा भली-भांति जाने-बुझे लोगों से भी धोखा खा जाते हैं । लेकिन इतना समझ जाना चाहिए कि संसार में किसी पुरुष या पदार्थ की गति सदा निश्चित रूप में नहीं रहती। किसी से धोखा देने पर हम दोबारा दुनिया में विश्वास करते समय हिचकिचाते हैं । परंतु ऐसी दशा में भी विश्वास के साथ ईश्वर पर विश्वास जमाने का अभ्यास करना चाहिए । क्योंकि वह स्वयं विश्वासमय एवं केवल विश्वास ही का विषय है । तात्पर्य विश्वास करने से हम उस ईश्वर को चौराहे की ईंट में भी प्रत्यक्ष रूप से पा सकते हैं । आवश्यकता इस बात की है कि अपनी रुचि के अनुसार सच्चे मन से उसके बन जाइए। उसे अपना जो जी चाहे वह सचमुच और दृढ़ता के साथ बना लीजिए। तब आपको पता चलेगा कि विश्वास में कैसा गुण, कैसी शक्ति, कैसा आनंद है? जहाँ बुद्धि काम नहीं करती, शक्ति नष्ट हो जाती है तथा विपदा और भी कठिन रूप धारण कर लेती है, उस समय केवल विश्वास एक अनिर्वचनीय रूप धारण करके युक्ति बतलाता है । वह शक्ति का निर्माण करता है और हमारी सहायता करता है । इसे वही व्यक्ति समझ सकता है जिसने इसका प्रत्यक्ष अनुभव लिया हो । ऐसे में ऐसी जादू जैसी शक्ति को बीना जाने झूठ समझकर उसकी उपेक्षा करना अज्ञानी है । अतः हमें चाहे कितनी भी बड़ी विपदा क्यों ना आए, विश्वास रखते हुए उसका सामना करना चाहिए। निश्चित रूप से उस विश्वास के कारण ही हम उस विपदा पर विजय हासिल कर सकते हैं ।

लेखक के अनुसार विश्वास एक अलौकिक शक्ति है जब चारों ओर निराशा छा जाती है, तब विश्वास देव केवल आशा ही नहीं बल्कि आशा से कहीं अधिक सहायता प्रदान करते हैं। इसलिए हमें उस दैवी शक्ति की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। चाहे हम कितने भी बड़े विद्वान क्यों ना हो । आवश्यकता केवल इस बात कि है, स्वयं को स्थिर, स्वच्छ, धैर्यवान बनाने का अभ्यास करना। फिर देखिए हमें निश्चित सफलता मिलती है इसलिए ऐसे दिव्य गुण विश्वास से वंचित रहना कोई बुद्धिमानी नहीं है। यदि सच्चाई के साथ मंगलमय परमात्मा का विश्वासी ही बन जाए, तो विश्व भर में कहीं भी कोई पुरुष और पदार्थ अनिष्टकारक अथवा अविश्वास प्रसारक रह ही नहीं सकता।

निबंध के अंतिम चरण में लेखक कहते हैं कि अगर आप ईश्वर पर विश्वास नहीं करते तो केवल उन लोगों का विश्वास मत कीजिए, जिन्होंने कभी आपके साथ धोखा या कपट का व्यवहार किया हो या वैसा करने की संभावना है। लेकिन कभी ऐसा निर्णय नहीं लेना चाहिए कि मैं कभी किसी का विश्वास नहीं करूँगा। अपने अस्तित्व पर सच्चा और अचल विश्वास करके विश्वास की महिमा प्रत्यक्ष देखनी चाहिए । क्योंकि विश्वास में बड़ी शक्ति है, बड़ा आनंद है पर यह बातें केवल कहने से कुछ नहीं होता। जो अपने कर्ता, भर्ता और संहर्ता पर विश्वास करने का अभ्यास करेगा उसे कुछ ही दिनों में पता चलेगा कि कैसे-कैसे बड़े विघ्न सहज में नष्ट होते हैं और कैसे कठिन काम भी आसानी से बनते हैं । इस विश्वास में बड़ी ताकत है। वह हमें विश्वनाथ विश्वंभर से सहज ही मिला सकता है तो विश्व की आशा-अपेक्षाओं को पूर्ण करना उसके लिए कौन सी बड़ी बात है । लेखक चाहते हैं कि समस्त भारतवासी विश्वास करना सिखते हैं और परस्पर एक दूसरे के विश्वासी और विश्वासभाजन बन जाते हैं, तो हम हमारे देश की गौरवशाली परंपरा संसार भर को दिखला सकते हैं । यह परंपरा प्राचीन काल में हमारे देश में पूर्ण रूप से विराजमान थी । जिनका स्मरण करना हमारे लिए गर्व की बात है ।

इस तरह प्रस्तुत निबंध में लेखक ने विश्वास संबंधी अपने विचारों को व्यक्त करते हुए विश्वास की महिमा का वर्णन किया है । साथ ही अपने अस्तित्व पर सच्चा और अचल विश्वास करके विश्वास की महिमा का प्रत्यक्ष अनुभव करने का संदेश भी दिया है । निबंध के माध्यम से लेखक भारतीय संस्कृति, दर्शन, ज्ञान परंपरा आदि की ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं ।

3.1.4 **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।**

अ) निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कीजिए ।

1) 'विश्वास' निबंध के लेखक कौन है ?

अ) विद्यानिवास मिश्र　　ब) पं.प्रतापनारायण मिश्र

क) ओमप्रकाश मिश्र　　ड) भगीरथ मिश्र

2) 'विश्वास' यह किस विधा की रचना है?

अ) निबंध　　ब) एकांकी

क) कहानी　　ड) रेखाचित्र

3) पं. प्रतापनारायण मिश्र किस युग के रचनाकार हैं?

अ) भारतेंदु　　ब) द्विवेदी

क) छायावादी　　ड) प्रगतिवादी

4) पं. प्रतापनारायण मिश्र जी को सर्वाधिक प्रसिद्धि किस रूप में मिली?

अ) नाटककार　　ब) कहानीकार

क) निबंधकार　　ड) एकांकीकार

5) पं. प्रतापनारायण मिश्र जी ने कौन-सी पत्रिका निकाली?

अ) ब्राह्मण　　ब) ऋग्वेद

क) पल्लव　　ड) हंस

6) किसने अपने शिष्यों को विश्वास संबंधी उपदेश दिया था?

अ) महात्मा गांधी　　ब) महात्मा बुद्ध

क) महात्मा मसीह　　ड) महात्मा फुले

7) किस पर विश्वास जमाने का अभ्यास करना उचित है?

अ) ईश्वर ब) गुरु

क) काम ड) शिष्य

8) विश्वास की महिमा कहाँ देखने को मिलेगी?

अ) गुरु ग्रंथों में ब) पाक ग्रंथों में

क) धर्म ग्रंथो में ड) वैचारिक ग्रंथों में

9) कौन एक अनिर्वचनीय रूप धारण करके युक्ति बतलाता है?

अ) मित्र ब) गुरु

क) विश्वास ड) समय

10) विश्वास करने से हम किसे चौराहे की ईंट में भी प्रत्यक्ष रूप से पा सकते हैं?

अ) गुरु को ब) ईश्वर को

क) विद्या को ड) ज्ञान को

11) जब निराशा छा जाती है तो कौन आशा प्रदान करता है?

अ) विश्वास ब) गुरु

क) ज्ञानी ड) अभ्यास

12) 'विश्वास' निबंध में लेखक कौन-सा प्रण न करने की सलाह देते हैं?

अ) अभ्यास न करने का ब) विश्वास न करने का

क) सत्य न बोलने का ड) ज्ञानी न बनने का

ब) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए पर्यायों में से उचित पर्याय का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) 'विश्वास' यह एक ---------- निबंध है ।

अ) विचारात्मक ब) भावात्मक

क) हास्यात्मक ड) सामाजिक

2) शुरुआत में प्रतापनारायण मिश्र की रूचि ---------- के सृजन में थी ।

अ) बाल-साहित्य ब) लोक-साहित्य

क) हास्य-साहित्य ड) व्यंग्य-साहित्य

3) सन् 1894 को मात्र ---------- वर्ष की अल्पायु में प्रतापनारायण मिश्र जी की मृत्यु हुई।

अ) 48 ब) 39

क) 38 ड) 42

4) ---------- जी की तरह प्रतापनारायण मिश्र एक कुशल अभिनेता भी थें ।

अ) प्रसाद ब) भारतेंदु

क) दिनकर ड) अज्ञेय

5) लेखक के अनुसार ---------- की महिमा वेदशास्त्र, पुराण, बाइबल, कुरान आदि सभी में देखने को मिलेगी

अ) विश्वास ब) गुरु

क) ज्ञान ड) दर्शन

6) आजकल का ---------- समुदाय 'विश्वास' जैसे दिव्य गुण से वंचित रहा है ।

अ) अशिक्षित ब) देहाती

क) शहरी ड) शिक्षित

7) ---------- के कारण ही हम विपदा पर विजय हासिल कर सकते हैं ।

अ) विश्वास ब) ज्ञान

क) गुरु ड) दर्शन

8) लेखक के अनुसार पूरे भारत वासियों को क्या ---------- करना सीखना चाहिए

अ) अध्ययन ब) यात्रा

क) मेहनत ड) विश्वास

3.1.5 **पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।**

1) सिद्धांत - किसी विषय, घटना या विचार के बारे में वह व्यवस्थित, तार्किक और स्थापित नियम, जो किसी सत्य को प्रमाणित करता है ।

2) फिलासफी (दर्शन) -जीवन, जगत, ईश्वर, आत्मा, और नैतिकता से जुड़े मूलभूत प्रश्नों का तार्किक और व्यवस्थित अध्ययन तथा उससे संबंधित ज्ञान।

3) परमार्थ - परोपकार, भलाई, या दूसरों की सेवा ।

4) लोक-परलोक - लोक का अर्थ है संसार, पृथ्वी या हमारा वर्तमान भौतिक जीवन और परलोक

का अर्थ है दूसरा संसार, मृत्यु के बाद आत्मा का स्थान, जैसे स्वर्ग या नर्क ।

5) प्रकृत मंगल – प्राकृतिक या जन्मजात स्वभाव।

6) वैराग्य – सांसारिक मोह–माया, इच्छाओं और वासनाओं से मानसिक रूप से मुक्त होने की अवस्था।

7) मनोरथ – मन की इच्छा, अभिलाषा, या मनोकामना ।

8) अनभिज्ञ – किसी बात से अनजान।

9) नसीहत – सलाह, सीख या चेतावनी ।

10) इंजील – मूल अरबी भाषा का शब्द जिसका अर्थ है – शुभ संदेश या सुसमाचार

11) एतिकाद – विश्वास, भरोसा, आस्था ।

12) तहरीर – लिखावट, लिखी हुई बात या लिखित रूप ।

13) मजहब – धर्म, संप्रदाय, पंथ ।

14) खेलुल्ली – छोटा या सामान्य खेल ।

15) हिचकिचाना – किसी कार्य को करने, निर्णय लेने या कुछ बोलने से पहले मन में अनिश्चितता या घबराहट के कारण कुछ पल के लिए रुकना या संकोच करना।

16) आस्तिक – ईश्वर में विश्वास करनेवाला ।

17) अनिर्वचनीय – वह जिसे वाणी या शब्दों द्वारा व्यक्त न किया जा सके ।

3.1.6 **स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।**

अ) उचित विकल्प का चयन।

1) ब) पं.प्रतापनारायण मिश्र 2) अ) निबंध 3) अ) भारतेंदु 4) क) निबंधकार

5) अ) ब्राह्मण 6) क) महात्मा मसीह 7) अ) ईश्वर 8) क) धर्म ग्रंथो में

9) क) विश्वास 10) ब) ईश्वर को 11) अ) विश्वास 12) ब) विश्वास न करने का

ब) उचित पर्याय का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति।

1) अ) विचारात्मक 2) ब) लोक–साहित्य 3) क) 38 4) ब) भारतेंदु

5) अ) विश्वास 6) ड) शिक्षित 7) अ) विश्वास 8) ड) विश्वास

3.1.7 **सारांश ।**

1) पं. प्रतापनारायण मिश्र भारतेन्दु युग के प्रमुख लेखकों में से एक थें । उन्होंने हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में लेखन किया है । कवि होने के साथ-साथ वे उच्च कोटि के निबंधकार और नाटककार भी थें । हिंदी गद्य के विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

2) निबंध में लेखक ने भारतीय संस्कृति और परंपरा के सामने यूरोप की विद्या, सभ्यता और सिद्धांत को साधारण सिद्ध करने का प्रयास किया है। लेखक हमारी संस्कृति पर विश्वास होने की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। उनके अनुसार 'विश्वास' में बड़ी भारी शक्ति है ।

3) लेखक पाठकों से महत्वपूर्ण बात कहते हैं कि, अगर आपको किसी ने धोखा दिया हो, या आपका किसी ने विश्वासघात किया हो तो ऐसा निर्णय कभी नहीं लेना चाहिए कि मैं अब कभी किसी का विश्वास नहीं करूँगा। बल्कि अपने अस्तित्व पर सच्चा और अचल विश्वास करके विश्वास की महिमा प्रत्यक्ष देखनी चाहिए ।

4) आजकल का शिक्षित समुदाय 'विश्वास' जैसे दिव्य गुण से वंचित रहा है। इसका प्रमुख कारण यह है कि हम पाश्चात्य बातों को ज्यादा महत्व देते हैं ।

5) लेखक के अनुसार विश्वास एक अलौकिक शक्ति है । जब चारों ओर निराशा छा जाती है तब विश्वास देव केवल आशा ही नहीं बल्कि आशा से कहीं अधिक सहायता प्रदान करते हैं। इसलिए हमें उस दैवी शक्ति की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। चाहे हम कितने भी बड़े विद्वान क्यों ना हो ।

3.1.8 **स्वाध्याय।**

अ) लघुत्तरी प्रश्न।

1) 'विश्वास' निबंध के आधार पर जीवन में विश्वास की आवश्यकता स्पष्ट कीजिए ।

2) 'विश्वास' निबंध के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए ।

3) विश्वास को लेकर लेखक के विचारों को संक्षेप में लिखिए ।

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न ।

1) 'विश्वास' निबंध का आशय अपने शब्दों में लिखिए ।

2) 'विश्वास' निबंध के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहते हैं ? विस्तार से विवेचन कीजिए ।

3) पं. प्रतापनारायण मिश्र जी मनुष्य जीवन में विश्वास का होना क्यों आवश्यक मानते हैं? स्पष्ट कीजिए।

क) टिप्पणियाँ लिखिए।

1) पं. प्रतापनारायण मिश्र का जीवन परिचय।

2) 'विश्वास' की महिमा।

3) विश्वास एक अलौकिक शक्ति ।

4) पं. प्रतापनारायण मिश्र का कृतित्व ।

3.1.9 **क्षेत्रीय कार्य ।**

1) विश्वास संबंधी अपने परिवेश के लोगों के साक्षात्कार लेकर उस पर एक रिपोर्ट लिखिए ।

2) विश्वास संबंधी अपने क्षेत्र की लोक-मान्यताओं का संकलन कीजिए ।

3) 'विश्वास' निबंध का मराठी में अनुवाद कीजिए ।

3.1.10 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।**

1) साहित्य संचयन - सं. डॉ. नीलम गुप्ता, डॉ. सविता गोविल, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लि., दिल्ली, पहला संस्करण - 2000 ।

2) निबंध सौरभ - सं. प्रा. सौ. उमा जाधव, परंपरा पब्लिकेशन, शाहदरा, दिल्ली, संस्करण - 2010 ।

3) हिंदी निबंध और निबंधकार - डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण - 2013 ।

4) निबंधों की दुनिया : प्रतापनारायण मिश्र - सं. निर्मला जैन, दिविक रमेश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

इकाई– 3

निबंध

3.2 मजदूरी और प्रेम – सरदार पूर्णसिंह

3.2.1 उद्देश्य

3.2.2 प्रस्तावना

3.2.3 विषय विवेचन

3.2.3.1 सरदार पूर्णसिंह का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

3.2.3.2 'मजदूरी और प्रेम' निबंध का परिचय ।

3.2.3.3 'मजदूरी और प्रेम' निबंध का आशय एवं विषय विवेचन।

3.2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

3.2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

3.2.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।

3.2.7 सारांश ।

3.2.8 स्वाध्याय।

3.2.9 क्षेत्रीय कार्य।

3.2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

3.2.1 **उद्देश्य –**

इस इकाई का अध्ययन करने से आप -

1. सरदार पूर्णसिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
2. निबंधकार के रूप में सरदार पूर्णसिंह के साहित्यिक योगदान से अवगत होंगे ।
3. 'मजदूरी और प्रेम' निबंध के विषय एवं आशय से परिचित होकर श्रम के महत्व को समझेंगे ।
4. 'मजदूरी और प्रेम' निबंध के उद्देश्य से अवगत होंगे ।

3.2.2 **प्रस्तावना :**

सरदार पूर्णसिंह जी द्विवेदी युग के एक प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण निबंधकार हैं। उनके निबंधों में परिवर्तन और भावुकता को एक साथ देख सकते हैं । वर्तमान जीवन की विसंगतियों को उन्होंने अपने निबंधों के माध्यम से उजागर किया है । प्रस्तुत निबंध 'मजदूरी और प्रेम' में लेखक ने श्रमजीवी वर्ग एवं किसानों और मजदूरों का महत्व चित्रित किया है । मनुष्य जीवन में श्रम का कितना मूल्य है, इसे श्रम न करने वाले लोगों को खेत, गाँव जाकर देखना चाहिए उसके वास्तविकता की अनुभूति करनी चाहिए। लेखक का कहना है उससे जो साहित्य निर्माण होगा, वही जीवन का वास्तविक स्वरूप माना जाएगा उससे धर्म, योग, शुद्धाचरण, सभ्यता और कविता आदि के फूल प्रफुल्लित होते हुए नजर आएँगे। लेखक ने श्रम की अत्यंत भावपूर्ण व्याख्या करते हुए श्रम के मूल में होने वाली आत्मीयता, स्नेह और कोमलता की भावना को प्रमुख माना है। वे श्रम के माध्यम से अर्थ-अर्जन को मूल नहीं मानते। इस निबंध में लेखक ने विविध विषयों के माध्यम से अपनी बात प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । उन विषयों में हल चलाने वाले का जीवन, गडरिये का जीवन, मजदूर की मजदूरी, मजदूरी और कला, मजदूरी और फकीरी और समाज का पालन करने वाली दूध की धारा आदि विषयों के माध्यम से लेखक ने श्रम की प्रतिष्ठा करने का प्रयास किया है । श्रम के समान उन्होंने पवित्रता को भी मानवता की दृष्टि से व्याख्यायित किया है । स्वतंत्र चिंतन, स्पष्ट, सरस, भावप्रवण अभिव्यक्ति तथा लाक्षणिकता और व्यंजकता का प्रयोग करते हुए, पूर्णसिंह जी ने अपने निबंध को सर्वथा एक नवीन रूप में पाठकों के सामने रखा है।

3.2.3 **विषय विवेचन**

3.2.3.1 **सरदार पूर्णसिंह का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व :**

जीवन परिचय:-

द्विवेदी युग के प्रसिद्ध निबंधकार सरदार पूर्णसिंह का जन्म सीमा प्रांत जो अब पाकिस्तान में है, एबटाबाद के सलहद गाँव में 17 फरवरी, 1981 ई. में हुआ था। उनके पिताजी का नाम सरदार करतार सिंह भागर था। उनके पिता एक सरकारी कर्मचारी थें । उनकी प्रारंभिक शिक्षा तहसील हवेलियाँ में हुई। हाईस्कूल की शिक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे लाहौर चले गए लाहौर के डी. ए. वी. कॉलेज से उन्होंने स्नातक की उपाधि उत्तीर्ण की । इसके बाद उन्हें विशेष छात्रवृत्ति मिलने से सन् 1900 ई. में वे रसायन शास्त्र के विशेष अध्ययन के लिए जापान गए। सन् 1901 ई. में टोकियो के ओरिएंटल क्लब में भारत की स्वतंत्रता के लिए सहानुभूति प्राप्त करने हेतु उन्होंने अनेक भाषण दिए । कुछ जापानी मित्रों के साथ मिलकर भारत-जापानी क्लब की स्थापना की । वहीं पर उनकी स्वामी रामतीर्थ के साथ भेंट हुई । स्वामी रामतीर्थ से प्रभावित होकर उन्होंने वही सन्यास ले लिया और स्वामी जी के साथ ही वे भारत लौट आए । स्वामी जी की मृत्यु के बाद उनके विचारों में परिवर्तन आया और उन्होंने विवाह करके गृहस्थ जीवन आरंभ कर दिया। देहरादून के विश्वविद्यालय में उन्हें अध्यापक की नौकरी मिल गई । यही से उनके नाम के आगे अध्यापक शब्द जुड़ गया । सरदार पूर्ण सिंह स्वतंत्र प्रवृत्ति के व्यक्ति थें। इसलिए वे इस नौकरी में अधिक समय तक टिक नहीं

पाए। और उन्होंने उसका त्यागपत्र देकर वे ग्वालियर चले गए। वहाँ उन्होंने सिखों के 10 गुरु और स्वामी रामतीर्थ की जीवनी को अंग्रेजी में लिखा। उसके बाद वे पंजाब के गाँव में खेती करने लगे। खेती में सफल न होने पर वे फिर से नौकरी की तलाश में इधर-उधर भटकने लगे। एक केस के सिलसिले में न्यायालय में झूठा बयान देने से उनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और वे भीतर ही भीतर पश्चाताप के अग्नि में जलते रहे इस घटना का उनके जीवन पर गहरा असर हुआ, जिसके कारण वे अपने जीवन को अच्छी तरह से जी नहीं सके । सन् 1930 ई. में वे बीमार पड़े और उसी बीमारी में दि. 31 मार्च, 1931 ई. में देहरादून में उनकी मृत्यु हुई।

व्यक्तित्व:-

सरदार पूर्णसिंह का जीवन अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय था। उनकी विचारधारा में गांधीवाद और साम्यवाद का तालमेल दिखाई देता है । उनका व्यक्तित्व देशप्रेम की भावना से युक्त था। अत: इसी देशप्रेम के कारण उन्होंने टोकियो में भारत की आजादी के लिए अनेक भाषण दिए थें। भारतीय सभ्यता और संस्कृति प्रति उन्हें गहरी आस्था थी। अपने निबंधों के माध्यम से उन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति के रक्षा की बात की है । उनके हृदय में भारतीयता की विचारधारा कूट-कूटकर भरी हुई थी। धार्मिक आडंबर के वे विरोधी थें। उनकी रचनाओं में इसके विरोध में तीव्र आक्रोश दिखाई देता है । पूर्णसिंह आस्तिक और मानवता प्रेमी व्यक्ति थें। भाव ओर विचार का अद्भुत संगम उनके व्यक्तित्व में देखने को मिलता है । वे स्वच्छंदतावादी एवं स्वतंत्र प्रवृत्ति के व्यक्ति थें।

कृतित्व:-

भावात्मक निबंधों के जन्मदाता सरदार पूर्णसिंह एक उत्कृष्ट गद्यकार थें। उनका संपूर्ण साहित्य भारतीय संस्कृति और सभ्यता से प्रेरित होकर लिखा गया है । उन्होंने अपनी रचनाओं में चयनित विषयों का बहुत सोच-समझकर चित्रण किया है । सामाजिक और आचरण संबंधी विषयों पर उन्होंने निबंध लिखे हैं। उनके निबंधों में विचारशीलता के साथ भावुकता के तत्व भी मिलते हैं । केवल छ: निबंध लिखने पर भी उन्होंने हिंदी साहित्य में अपनी अमिट छाप छोड़ दी वैसे विभिन्न विषयों पर उनकी पचास पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू और पंजाबी भाषा पर उनका असाधारण अधिकार था उनके निबंध तत्कालीन प्रसिद्ध पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित हुए थें । वे निबंध इस प्रकार हैं - 'सच्ची वीरता', 'मजदूरी और प्रेम', 'पवित्रता', 'कन्यादान', 'आचरण की सभ्यता', 'अमरीका का मस्त योगी वाल्ट हिटमैन' आदि इन निबंधों में भावात्मक आदर्श के दर्शन होते हैं अ यह भावात्मकता सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित है ।

पूर्णसिंह ने उर्दू में स्वामी रामतीर्थ महाराज की जिंदगी पर 'तैराना नजर' यह रचना लिखी है । पंजाबी में उनका साहित्य पर्याप्त मात्रा में मिलता है । पंजाबी में लिखे उनके कुछ प्रमुख ग्रंथ इस प्रकार हैं - अविचल जोत, खुले मैदान, खुले घुंड, मेरा साईकविदा दिल कविता, चुप प्रीतदा, शहंशाह विओपारी, खुले लेख, निबंध आदि । पूर्णसिंह ने सबसे अधिक रचनाएँ अंग्रेजी भाषा में लिखी हैं। अंग्रेजी में वैज्ञानिक विषयों से संबधित उन्होंने अनेक शोधपूर्ण लेख लिखे । उनके इन प्रकाशित लेखों की संख्या पचास से ऊपर हैं ।

अंग्रेजी में लिखी उनकी उल्लेखनीय रचनाएँ इस प्रकार हैं:-'द स्टोरी ऑफ स्वामी राम', 'दि स्केचेज फ्राम सिख हिस्ट्री', 'ऐट हिज फीट'; 'शॉर्ट स्टोरीज़', 'वीणाप्लेयर्स', 'सिस्टर्स ऑफ दि स्पिनिंग व्हील', 'गुरु गोविंदसिंह', 'दि लाइफ एंड टीचिंग्स ऑफ श्री गुरु तेगबहादुर', 'ऑन दि पाथ्स् ऑफ लाइफ' आदि।

3.2.3.2 **'मजदूरी और प्रेम' निबंध का परिचय :**

सरदार पूर्णसिंह द्वारा लिखित निबंधों में 'मजदूरी और प्रेम' यह एक उल्लेखनीय निबंध है। इसमें किसान तथा श्रमिकों को ईश्वर का सच्चा प्रतिनिधि मानते हुए श्रम की महत्ता तथा प्रतिष्ठा प्रतिपादित की है । निबंध का संक्षिप्त परिचय निम्नलिखित है ।

हल चलाने वाले (किसान) का जीवन – लेखक का कहना है कि हल चलाने वाले तथा भेड़ चराने वाले स्वभाव से ही सज्जन होते हैं । वे खेत की हवन शाला में अपने श्रम की आहुति देते हैं । विश्व का निर्माण करनेवाले ब्रह्मा की तरह किसान भी अन्न पैदा करने में ब्रह्मा के समान है । अन्न तथा फलों में उसका ही श्रम दिखाई देता है । वह तथा उसका परिवार प्राकृतिक जीवन जीते हैं। किसान साग-पात खाता है । ठंडे चस्मों तथा नदियों का पानी पीता है । वह पढ़ा-लिखा नहीं है । जप-तप नहीं करता, खेती ही उसके लिए ईश्वरीय प्रेम का केन्द्र है । वह पशु-पालन करता है । उसकी आवश्यकताएँ बहुत सीमित हैं। तात्पर्य लेखक को किसान के सरल जीवन में ईश्वर के दर्शन होते हैं ।

गड़रिये का जीवन – एक बार लेखक ने एक बूढ़े गड़रिये को देखा। वह पेड़ के नीचे बैठा ऊन कात रहा था। उसकी भेड़े वहाँ चर रही थीं । उसके सिर के बाल सफेद थें किन्तु मुँह पर स्वास्थ्य की लालिमा थी । उस गडरिये का कोई स्थायी घर नहीं था । जहाँ जाता, वहीं घास की झोंपड़ी बनाकर रहता । उसकी स्त्री उनके लिए रोटी पकाती थी । उसकी दो जवान कन्यायें थीं । वे भी भेड़ चराते समय पिता के साथ रहती थीं। उन्होंने अपने माता-पिता के अलावा किसी को नहीं देखा था । गड़रिया तथा उसका परिवार भी पवित्र प्राकृतिक जीवन जीते थें। उसकी युवा पुत्रियों की पवित्रता सूर्य, बर्फ और वन की सुगंध के समान थी । वे सभी अपनी भेड़ों की प्रेमपूर्वक देखभाल करते थें । किसी भेड़ के बीमार होने पर चिन्तित होते थें तथा उसकी सेवा करते थें । स्वस्थ होने पर खुश और प्रसन्न होते थें। लेखक के अनुसार वे ईश्वर की वाणी को सुनते नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष देखते थें । इससे उनको ब्रह्मानंद की प्राप्ति होती थी । लेखक को यह देखकर लगता है कि अनपढ़ लोग ही ईश्वर को साक्षात् देख सकते हैं-पंडितों के उपदेश निरर्थक हैं । पुस्तकों द्वारा दिया जानेवाला ज्ञान अपूर्ण है । गड़रिये के परिवार की प्रेम मजदूरी का मूल्य कोई नहीं चुका सकता है ।

मजदूर की मजदूरी – लेखक का कहना है दिन-भर श्रम करने वाले मजदूर की मजदूरी कुछ पैसों में नहीं दी जा सकती । उस मजदूरी का मोल पैसे में नहीं हो सकता। मजदूर के शरीर के सभी अंग ईश्वर द्वारा निर्मित हैं और पैसे जिस धातु से बने हैं, उसका निर्माण भी ईश्वर ने किया है । अन्न, धन एवं जल सभी ईश्वर की देन हैं । मजदूर की मजदूरी प्रेम-सेवा से ही दी जा सकती है । एक जिल्दसाज ने लेखक के एक किताब की जिल्द बनाई थी । जिससे वह उसका आमरण मित्र बन गया था । पुस्तक हाथ में लेते ही लेखक का मन भरत-मिलाप के आनंद को महसूस करता था । एक अनाथ विधवा ने गाढ़े की कमीज रातभर जागकर

सिली ! भूखी, दु:खी वह विधवा थककर थोड़ी देर के लिए रुक जाती और फिर 'हे राम' कहकर सीना आरंभ करती । लेखक के अनुसार इस कमीज में उस विधवा के सुख, दु:ख और पवित्रता मिली हुई है । इस कमीज को पहनकर लेखक को तीर्थयात्रा का पुण्य मिलता है । मानो यह उसके शरीर का नहीं, आत्मा का वस्त्र है । इस श्रम को ईश्वर की प्रार्थना ही कहा जा सकता है । प्रार्थना शब्दों में नहीं होती । ऐसी प्रार्थना को ईश्वर तुरंत सुनते है ।

मजदूरी या श्रम का महत्व एवं प्रतिष्ठा – श्रम आनंद देने वाला होता है । उसे पैसों से नहीं खरीदा जा सकता। श्रम करने वाले की पूजा एक दृष्टि से ईश्वर की ही पूजा होती है । लेखक के अनुसार भगवान मंदिर-मस्जिद में नहीं, बल्कि मनुष्य की अनमोल आत्मा में मिलते हैं । मनुष्य और उसके श्रम का तिरस्कार करना एक दृष्टि से नास्तिकता है । बिना श्रम के सारे कला-कौशल, विचार और चिंतन बेकार है । बिना श्रम किए दान के धन पर आराम से रहने से धर्म में अनाचार फैलता है । हाथ से काम करने वाला मजदूर ही सच्चा महात्मा और योगी होता है । बिना श्रम से जीवन तथा चिंतन बासी बन जाता है। मशीनी सभ्यता मनुष्य जीवन के लिए हानिकारक है । अत: नई सभ्यता श्रमिकों के श्रम से ही फलेगी-फूलेगी । ऐसा लेखक को विश्वास है ।

3.2.3.3 **'मजदूरी और प्रेम' निबंध का आशय एवं विषय विवेचन :**

निबंध में लेखक ने विभिन्न विषयों के माध्यम से अपने विचारों को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है यहाँ पर भी निबंध का आशय उन्हीं विषयों के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है ।

हल चलाने वाले का जीवन:–

लेखक ने बहुत ही मार्मिक ढंग से मेहनतकश मजदूर किसान की बात प्रस्तुत निबंध में की हैं । किसान का जीवन प्राकृतिक संसाधनों से जुड़ा हुआ है । नदी, झरने, तालाब, गाय, बैल, खेत- खलियान, खुले आसमान, बरसता हुआ बादल और मेहनत से उपजी लहलहाती हुई फसल में किसान देखा जा सकता है । लेखक कहते हैं कि वृक्षों की तरह उसका भी जीवन एक प्रकार का मौन जीवन है । किसान जीवन संबंधी निबंध में लेखक ने लिखी हुई बात कितनी मर्मस्पर्शी है -''यदि कोई इसके घर आ जाता है तो यह उसको मृदु वचन, मीठे जल और अन्न से तृप्त करता है । धोखा यह किसी को नहीं देता । यदि इसको कोई धोखा दे भी दे तो इसका इसे ज्ञान नहीं होता। क्योंकि इसकी खेती हरी-भरी है, गायें इसकी दूध देती है, स्त्री इसकी आज्ञाकारिणी है, मकान इसका पुण्य और आनंद का स्थान है, पशुओं का चराना, नहलाना, खिलाना, पिलाना, उसके बच्चों की अपने बच्चों की तरह सेवा करना, खुले आकाश के नीचे उसके साथ रातें गुजार देना, क्या स्वाध्याय से कम है ? दया, वीरता, और प्रेम जैसा इन किसानों में देखा जाता है, अन्यत्र मिलने का नहीं। ''

गडेरिया का जीवन:–

लेखक एक ऐसे पहाड़ी गडेरिया की जीवन शैली को देखते हैं, जहाँ प्रपंच, छल-कपट बिल्कुल नहीं है। वहाँ लेखक को सिर्फ जीवन ही जीवन दिखाई देता है । बूढा गडेरिया उसकी पत्नी और दो बेटियों के

साथ रहता है । लेखक लिखते हैं कि ''उसकी प्यारी स्त्री उसके पास रोटी पका रही है । उसकी दो जवान कन्याएँ उसके साथ जंगल में भेड चराती घूमती है । अपने माता-पिता और भेड़ों को छोड़कर उन्होंने किसी और को नहीं देखा मकान इनका बेमकान है घर इनका बेघर है । यह लोग बेनाम और बेपता हैं।'' लेखक कहते हैं इसे आप भारतीय मजदूर किसान जीवन की त्रासदी के रूप में भी समझ सकते हैं।

बनावटी दुनिया से दूर भेड़ और प्रकृति ही इनका जीवन है । भेड़ों की सेवा ही इनकी पूजा है । जब एकाद भेड़ बीमार हुई तो मानो पूरे परिवार पर विपत्ति आ जाती है । दिन-रात उसके पास बैठे रहते हैं । उसे अधिक पीड़ा हुई तो इन सभी की आँखें शून्य आकाश में किसी को देखने लग जाती है । पता नहीं पर मानो ऐसा लगता है की वे किसी को तो बुलाती हैं । हाथ जोड़ने तक कि इन्हें फुर्सत नहीं है । पर हाँ इन सब की आँखें किसी के आगे शब्द रहित, संकल्प रहित, मौन प्रार्थना में खुली दिखाई देती है । इस तरह अभाव में भी जीवन की मिठास से लेखक अत्यधिक प्रभावित हो जाते हैं और लिखते हैं कि पंडितों की ऊटपटांग बातों से मेरा जी उकता है । प्रकृति की मंद मंद हँसी में यह अनपढ़ लोग ईश्वर के हँसते हुए ओंठ देख रहे हैं । पशुओं के अज्ञान में गंभीर ज्ञान छिपा हुआ है । इन लोगों के जीवन में अद्भुत आत्मानुभव भरा हुआ है । गडेरिया के परिवार की प्रेम-मजदूरी का मूल्य कौन दे सकता है? लेखक इस एक निश्चल जीवन रूपी प्रेम-मजदूरी को सर्वोपरि मानते हैं । इसीलिए कहते हैं पंडितों का तिकड़म और गडेरिया का जीवन को समझने के लिए आदमी को पहले आदमी होना आवश्यक है ।

मजदूर की मजदूरी:-

लेखक एक जिल्दसाज के श्रम का उल्लेख करते हुए यह बताने की कोशिश करते हैं कि किसी भी श्रमिक के श्रम का मोल पैसे से नहीं चुकाया जा सकता। उसके श्रम में उसका पूरा जीवन मिला हुआ होता है । यहाँ पर लेखक श्रम और श्रमिक को महसूस करने की ओर संकेत करते हुए लिखते हैं की ''गाढे की एक कमीज को एक अनाथ विधवा सारी रात बैठकर सीती है । साथ ही साथ वह अपने दु:ख पर रोती भी है। एक दिन को खाना न मिला। रात को भी कुछ नहीं मिला अब वह एक-एक टाँके पर आशा करती है की कमीज कल तैयार हो जाएगी, तब कुछ तो खाने के लिए मिलेगा । जब वह थक जाती है, तब ठहर जाती है । सुई हाथ में लिए हुए, कमीज घुटने पर बिछी हुई है, उसकी आँखों की दशा उस आकाश की जैसी है, जिसमें बादल बरस कर अभी-अभी बिखर गए हैं।'' लेखक यहाँ पर एक अनाथ विधवा के जीवन संघर्ष को रेखांकित करते हुए उसके प्रति होनेवाली संवेदना प्रकट करते हैं ।

मजदूरी और कला:-

लेखक के अनुसार मनुष्य के विवेक और उसके श्रम या कला को समाज की ओर से जो आदर मिलना चाहिए, वह नहीं मिलता। वास्तव में वह मिलना चाहिए । लेखक का कहना हैं कि ''बिना काम, बिना मजदूरी, बिना हाथ के, कला-कौशल के विचार और चिंतन किस काम के? सभी देशों के इतिहास से सिद्ध है कि निकम्मे में पादरियों, मौलावियों, पंडितों और साधुओं का, दान के अन्न पर पला हुआ ईश्वर चिंतन अंत में पाप, आलस्य और भ्रष्टाचार में परिवर्तित हो जाता है ।'' तात्पर्य यह कि जिन देशों में हाथ और मुँह पर मजदूरी की धूल नहीं पड़ती वे धर्म और कला-कौशल में कभी उन्नति नहीं कर सकते। भारत

ही एक ऐसा महान देश है, जहाँ जो जितना श्रम करता है, उसे उतना ही नीच समझा जाता है और श्रम न करने वाला साहब होता है । यहाँ लेखक श्रम के प्रति होनेवाली हमारी उदासीनता को उजागर करते हुए, श्रम को प्रतिष्ठा देना चाहते हैं।

मजदूरी और फकीरी :-

निबंध में लेखक फकीरी से अधिक मजदूरी को महत्व देते हैं। उनका मानना है कि बिना मजदूरी किए फकीरी का उच्च भाव शिथिल हो जाता है । फकीरी अपने आसन से गिर जाती है बुद्धि बासी पड़ जाती है । और बासी चीज अच्छी नहीं होती ऐसे बहुत सारे होते हैं, जो उम्र भर बासी बुद्धि और बासी फकीरे में मग्न रहते हैं। परंतु इस तरह मग्न होना कोई मायने नहीं रखता । सारे प्राकृतिक क्रियाकलाप निरंतर जारी है और ऐसे में फकीरी और बुद्धि का बासी रहना अच्छा नहीं होती। तात्पर्य हमारा मन और शरीर निरंतर कार्यरत होना चाहिए। लेखक के अनुसार फकीरे से अधिक मजदूरी अर्थात् श्रम की आवश्यकता है । निकम्मे लोग ही फकीरी सीखते हैं और अपनी तिकड़मबाजी से मजदूर, किसान को फकीर बना देते हैं लेखक का आग्रह है कि मनुष्य को श्रम करके अपना पेट भरना चाहिए लेखक कहते हैं की मजदूरी से पेट भरता है, जबकि फकीरे से आप दूसरों को बेवकूफ बनाते हो। केवल धार्मिक क्रिया-कलाप करने से तुम्हारी प्रार्थना सफल नहीं होगी। मजदूर के अनाथ नयन, अनाथ आत्मा, और अनाश्रित जीवन की बोली सीखो, फिर देखोगे कि तुम्हारा यही साधारण जीवन ईश्वर का भजन हो गया है । इसलिए लेखक कहते हैं कि मजदूरी करना मनुष्य जीवन यात्रा का आध्यात्मिक नियम है । लेखक ढोंग को फकीरी नहीं मानते उनके लिए तो मजदूरी और फकीरी एक ही सिक्के के दो पहलू है । हमने ही फकीरी का गलत अर्थ निकाला है ।

समाज का पालन करने वाली दूध की धारा:-

लेखक शोषण को मजदूरी से अलग करके देखते हैं । लेखक भारतीय समाज व्यवस्था में सामंतों का वर्चस्व का विरोध करते हुए भाई लालों की मोटी रोटी में जीवन की मिठास और मजदूर रूपी दूध की धारा महसूस करते हैं। जो धारा भाई लालो की मोटी रोटी से निकली थी वही समाज का पालन करने वाली दूध की धारा है। यही धारा शिवजी की जटा से और यही धारा मजदूरों की ऊँगलियों से निकलती है । लेखक कहते है कि जापान में मैंने कन्याओं और स्त्रियों को ऐसी कलावती देखा है कि वे रेशम के छोटे-छोटे टुकड़ों को अपनी दस्तकारी की बदौलत हजारों की कीमत का बना देती है । नाना प्रकार के प्राकृतिक पदार्थ और दृश्यों को अपनी सुई से कपड़े के ऊपर अंकित कर देती है । तात्पर्य यह की सच्चे मन से की जानेवाली मजदूरी में ही मानव कल्याण की धारा बहती रहती है ।

निष्कर्षता: कह सकते हैं कि, 'मजदूरी और प्रेम' यह निबंध भारतीय श्रमिकों की जन-भावना पर आधारित है । लेखक ने श्रम और श्रमिक के जीवन को समझाने के लिए अनेक घटनाओं के माध्यम से अपनी बात को स्पष्ट किया है । निबंध में हल चलाने वाले का जीवन, गडेरिया का जीवन और विसंगतियों का मार्मिक वर्णन करते हुए तथा मजदूरी और मजदूर की चर्चा करते हुए मजदूर के ऊँगलियों में होनेवाली श्रम की ताकत को लेखक ने रेखांकित किया है । लेखक श्रम करती ऊँगलियों से दूध की धारा की संकल्पना करते हैं। मेहनत में मिठास लेखक के लिए सर्वप्रिय है लेखक भारतीय मजदूर और उसकी कला

को बहुत ही सूक्ष्मता से अंकित करते हैं । लेखक का मानना है कि श्रमिक का श्रम उस जिल्दसाज की तरह होता है, जब भी वह आप किताब उठाते हैं उसकी मेहनत आपको महसूस होने लगती है । लेखक श्रम को जितना महत्व देते हैं, उतना ही पाखंड का विरोध करते हैं ।

3.2.4 **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।**

अ) निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कीजिए ।

1) सरदार पूर्णसिंह किस युग के निबंधकार हैं ?

अ) भारतेंदु ब) द्विवेदी

क) छायावादी ड) प्रगतिवादी

2) सरदार पूर्णसिंह किसके विरोधी थें?

अ) मजदूरी ब) धार्मिक आडंबर

क) हल चलाने ड) गड़ेरिया

3) सरदार पूर्णसिंह रसायनशास्त्र में विशेष अध्ययन करने के लिए कौन-से देश गए थें ?

अ) अमरिका ब) जापान

क) चीन ड) ब्रिटन

4) सरदार पूर्णसिंह ने हिंदी में कुल कितने निबंध लिखे हैं ?

अ) पाँच ब) सात

क) नौ ड) छः

5) 'मजदूरी और प्रेम' निबंध में किसकी भावपूर्ण व्याख्या की गई है ?

अ) खेती ब) प्रकृति

क) श्रम ड) प्रेम

6) कौन साग-पात खाकर ही अपनी भूख का निवारण कर लेता है ?

अ) मजदूर ब) फकीर

क) किसान ड) प्रेमी

7) किसके परिवार को कूटी की जरूरत नहीं ?

अ) गड़ेरिया ब) किसान

क) मजदूर ड) प्रेमी

8) गाढ़े की कमीज को कौन सीती है ?

अ) किसान की स्त्री　　ब) गड़ेरिया की बेटी

क) एक अनाथ विधवा　　ड) किसान की बेटी

9) किसकी मजदूरी का मोल पैसे में नहीं हो सकता ?

अ) गड़ेरिया　　ब) किसान

क) मजदूर　　ड) प्रेमी

10) श्रम क्या देने वाला होता है ?

अ) पैसा　　ब) आनंद

क) पीड़ा　　ड) प्रेम

ब) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए पर्यायों में से उचित पर्याय का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) 'मजदूरी और प्रेम' निबंध के लेखक ---------- जी हैं ।

अ) पं. प्रतापनारायण मिश्र　　ब) सरदार पूर्णसिंह

क) रामधारी सिंह 'दिनकर'　　ड) वासुदेवशरण अग्रवाल

2) हल चलाने वाले और भेड़ चराने वाले प्राय: स्वभाव से ही ---------- होते हैं।

अ) साधु　　ब) फकीर

क) गरीब　　ड) शांत

3) ---------- प्रकृति के जवान साधु होते हैं।

अ) फकीर　　ब) मजदूर

क) किसान　　ड) गड़ेरिया

4) ---------- लोग ही फकीरी सीखते हैं ।

अ) साधु　　ब) निकम्मे

क) मजदूर　　ड) अनपढ़

5) मनुष्य और उसके श्रम का तिरस्कार करना एक दृष्टि से ---------- है ।

अ) नास्तिकता ब) कृतघ्नता

क) मूर्खता ड) गंवारपन

6) बनावटी दुनिया से दूर भेड़ और प्रकृति ही ---------- का जीवन हैं ।

अ) फकीर ब) मजदूर

क) किसान ड) गड़ेरिया

7) ---------- रहकर मनुष्यों की चिंतन शक्ति थक गई है ।

अ) फकीर ब) मजदूर

क) किसान ड) निकम्मे

8) आजकल की कविता में ---------- नहीं है ।

अ) नयापन ब) सौंदर्य

क) माधुर्य ड) तुकबंदी

9) नया साहित्य ---------- के हृदय से निकलेगा।

अ) फकीरों ब) मजदूरों

क) किसानों ड) गड़ेरियों

10) 'मजदूरी और प्रेम' यह निबंध भारतीय---------- की जन-भावना पर आधारित है ।

अ) फकीरों ब) श्रमिकों

क) कवियों ड) साधुओं

3.2.5 **पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।**

1. रुधिर - शरीर का रक्त, खून।
2. आहुति - यज्ञ हवन के समय अग्नि में डाली जानेवाली सामग्री।
3. साग-पात - हरी सब्जियाँ, खाने योग्य पत्ते, साधारण या रूखा-सूखा भोजन ।
4. गिरजाघर - ईसाइयों का एक पवित्र पूजा स्थान, चर्च ।
5. भेड़ - बकरी के समान एक पालतू पशु, जो दूध या मांस के लिए पाला जाता है ।
6. गड़ेरिया - भेड़-बकरी या अन्य मवेशी चराने वाला व्यक्ति, चरवाहा ।
7. कूटी - झोपड़ी, कुटिया या छोटा घर ।

8. फुरसत – खाली समय ।
9. ऊटपटांग बातें – निरर्थक बातें जिनका कोई मतलब नहीं ।
10. जिल्दसाज – किताबों या कागजों को सुरक्षित रखने के लिए उन पर जिल्द (गत्ता या कवर) चढ़ाना या बाँधना।
11. गाढ़े की कमीज – मोटे और मामूली सूती कपड़े से बनी कमीज ।
12. मयस्सर – उपलब्ध, प्राप्त या आसानी से मिलने वाला।
13. छलनी – आटा, चाय या अन्य चीजें छानने का छेद या जाली वाला बर्तन ।
14. तिजारत – व्यापार, वाणिज्य और सौदागरी ।

3.2.6 **स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।**

अ) उचित विकल्प का चयन ।

1) ब) द्विवेदी 2) ब) धार्मिक आडंबर 3) ब) जापान 4) ड) छः 5) क) श्रम

6) क) किसान 7) अ) गड़ेरिया 8) क) एक अनाथ विधवा

9) क) मजदूर 10) ब) आनंद

ब) उचित पर्याय का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति ।

1) ब) सरदार पूर्णसिंह 2) अ) साधु 3) क) किसान 4) ब) निकम्मे

5) अ) नास्तिकता 6) ड) गड़ेरिया 7) ड) निकम्मे 8) अ) नयापन

9) ब) मजदूरा 10) ब) श्रमिकों

3.2.7 **सारांश ।**

1) निबंध में लेखक ने विविध विषयों के माध्यम से अपनी बात प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । उन विषयों में हल चलाने वाले का जीवन, गडेरिया का जीवन, मजदूर की मजदूरी, मजदूरी और कला, मजदूरी और फकीरी और समाज का पालन करने वाली दूध की धारा आदि विषयों के माध्यम से लेखक ने श्रम की महत्ता और प्रतिष्ठा प्रतिपादित करने का प्रयास किया है ।

2) किसी भी श्रमिक के श्रम का मोल पैसे से नहीं चुकाया जा सकता । उसके श्रम में उसका पूरा जीवन मिला हुआ होता है ।

3) दान के अन्न पर पला हुआ ईश्वर चिंतन अंत में पाप, आलस्य और भ्रष्टाचार में परिवर्तित हो जाता है । तात्पर्य यह कि जिन देशों में हाथ और मुँह पर मजदूरी की धूल नहीं पड़ती वे धर्म

और कला–कौशल में कभी उन्नति नहीं कर सकते ।

4) सच्चे मन से की जानेवाली मजदूरी में ही मानव कल्याण की धारा बहती रहती है ।

5) 'मजदूरी और प्रेम' यह निबंध भारतीय श्रमिकों की जन–भावना पर आधारित है । मजदूरी और मजदूर की चर्चा करते हुए मजदूर के ऊँगलियों में होनेवाली श्रम की ताकत को लेखक ने रेखांकित किया है ।

6) लेखक का मानना है कि श्रमिक का श्रम उस जिल्दसाज की तरह होता है, जब भी आप किताब उठाते हैं, उसकी मेहनत आपको महसूस होने लगती है ।

3.2.8 **स्वाध्याय ।**

अ) लघुत्तरी प्रश्न ।

1) हल चलाने वाले की जीवन पर संक्षेप में प्रकाश डालिए ।

2) गड़ेरिया के जीवन का लेखक ने किस प्रकार चित्रण किया है ?

3) श्रमिक के श्रम का मोल रुपयों से क्यों नहीं चुकाया जा सकता?

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न।

1) 'मजदूरी और प्रेम' निबंध का आशय अपने शब्दों में लिखिए ।

2) 'मजदूरी और प्रेम' निबंध में लेखक ने विविध विषयों के माध्यम से श्रम के महत्व को किस प्रकार उजागर किया है?

3) 'मजदूरी और प्रेम' निबंध में लेखक ने किसान और गड़ेरिया के जीवन का जो चित्रण किया है, उसका विस्तार से विवेचन कीजिए ।

क) टिप्पणियाँ लिखिए।

1) सरदार पूर्णसिंह जी का कृतित्व ।

2) 'मजदूरी और प्रेम' निबंध में श्रम की प्रतिष्ठा ।

3) मजदूर की मजदूरी ।

4) 'मजदूरी और प्रेम' निबंध का उद्देश्य ।

3.2.9 **क्षेत्रीय कार्य ।**

1) अपने क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों में काम करनेवाले मजदूरों की सूचि बनाकर उनके जीवन पर एक रिपोर्ट बनाइए।

2) श्रम के महत्व को अधोरेखित करने के लिए लिखे गए साहित्य का संकलन कीजिए।

3) अपने परिवेश के किसान या मजदूरों के जीवन पर मराठी में निबंध लिखिए ।

3.2.10 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए**

1) निबंध सौरभ – सं. प्रा. सौ. उमा जाधव, परंपरा पब्लिकेशन, शाहदरा, दिल्ली, संस्करण – 2010।

2) प्रतिनिधि हिंदी निबंधकार – प्रो. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।

3) हिंदी निबंध – प्रभाकर माचवे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

❑❑❑

इकाई– 3

निबंध

3.3 नेता नहीं, नागरिक चाहिए – रामधारी सिंह 'दिनकर'

3.3.1 उद्देश्य

3.3.2 प्रस्तावना

3.3.3 विषय विवेचन

3.3.3.1 रामधारी सिंह 'दिनकर' का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

3.3.3.2 'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' निबंध का परिचय ।

3.3.3.3 'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' निबंध का आशय एवं विषय विवेचन ।

3.3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

3.3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ ।

3.3.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर ।

3.3.7 सारांश ।

3.3.8 स्वाध्याय।

3.3.9 क्षेत्रीय कार्य ।

3.3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

3.3.1 **उद्देश्य –**

इस इकाई का अध्ययन करने से आप -

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
2. निबंधकार के रूप में रामधारी सिंह 'दिनकर' के साहित्यिक योगदान से अवगत होंगे।
3. 'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' निबंध के विषय एवं आशय से परिचित होंगे ।
4. देश की उन्नति के लिए योग्य नागरिकों की आवश्यकता से अवगत होंगे ।
5. 'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' निबंध के उद्देश्य से अवगत होंगे।

3.3.2 **प्रस्तावना –**

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा के सबसे सशक्त कवि के रूप में रामधारी सिंह 'दिनकर' जितने प्रसिद्ध हैं, उतने ही एक निबंधकार के रूप में भी उल्लेखनीय हैं। उन्होंने काव्य, गद्य रचनाएँ, निबंध, आलोचना, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, लघु कथा, गद्य गीत आदि सभी विधाओं में लेखन कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है । उनकी रचनाओं में संवेदना और विचार का सुंदर समन्वय दिखाई देता है । दिनकर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपने देश और युग सत्य के प्रति जागृत थें । अतः देश और काल के सत्य को अनुभूति और चिंतन के स्तरों पर ग्रहण करने में वह सफल हुए हैं । उन्होंने राष्ट्र को उसकी तात्कालिक घटनाओं, यातनाओं, विषमताओं आदि के रूप में ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक परंपरा के रूप में भी पहचाना और उसके प्राचीन मूल्यों का नए जीवन संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में आकलन कर, उन्हें एक जीवंत रूप में प्रस्तुत किया । वर्तमान की समस्याओं और आकांक्षाओं को महत्व देते हुए उन्हें अपने प्राचीन परंतु जीवंत मूल्यों से जोड़ने का प्रयास किया ।

निबंधकार के रूप में दिनकर का हिंदी साहित्य में अपना एक अलग स्थान है। उनके अधिकतर निबंधों में उनका विचारक पक्ष ही अधिक उभर कर सामने आया है । परंतु उनके कुछ ऐसे भी निबंध मिलते हैं, जो उनके अंतरंग को उद्घाटित करते हैं । उनके निबंधों में मानवीय आस्था को देखा जा सकता है, जिसका मूल आधार मनोवैज्ञानिक या सांस्कृतिक है । अपने निबंधों के माध्यम से अपनी बात को पूर्ण विश्वसनीयता के साथ पाठकों तक संप्रेषित करने में वे सफल रहे हैं ।

3.3.3 **विषय विवेचन**

3.3.3.1 **रामधारी सिंह 'दिनकर' का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व :**

जीवन परिचय :

रामधारी सिंह 'दिनकर' हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि के रूप में प्रसिद्ध है । उनका जन्म दि. 23 सितंबर, सन् 1908 ई. को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में एक सामान्य किसान परिवार में हुआ था । उनके पिताजी का नाम रवि सिंह और माता जी का नाम मनरूप देवी था । उनके बचपन में ही पिताजी की मृत्यु होने से उनका तथा उनके भाई–बहनों का पालन–पोषण उनकी माँ ने बहुत ही संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में किया । उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में हुई । पटना विश्वविद्यालय से बी. ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद उन्होंने आजीविका के लिए पहले अध्यापक की नौकरी की। उसके बाद बिहार सरकार में सब रजिस्टार के पद पर कार्य किया । स्वतंत्रता के बाद मुजफ्फरपुर कॉलेज में हिंदी के विभागाध्यक्ष, वर्ष 1952 में राज्यसभा के मनोनीत सदस्य, उसके बाद भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति और उसके उपरांत भारत सरकार में हिंदी सलाहकार आदि पदों पर कार्य करते हुए उन्होंने अपना योगदान दिया है । आजादी के आंदोलन के समय में ही उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से देश के युवाओं में देशभक्ति और क्रांति की भावना जगाई थी । भारतीय संस्कृति और परंपरा के

प्रति बचपन से ही उनके मन में आस्था होने से, उन्होंने उसका गहनता से अध्ययन किया था । देश का राष्ट्रीय गौरव उनके साहित्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता है । उनकी कविता में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना की भावना को देखकर उन्हें 'राष्ट्रकवि' के रूप में पहचाना जाता है । गद्य और पद्य दोनों क्षेत्रों में दिनकर जी ने अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय दिया है । 'संस्कृति के चार अध्याय' उनका एक प्रसिद्ध और चर्चित ग्रंथ है, जिसमें उन्होंने भारतीय संस्कृति संबंधी अनेक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया है । उनके गहन अध्ययन और चिंतन को उनकी गद्य रचनाओं में देखा जा सकता है । उनकी काव्य रचनाओं में विद्रोह, आक्रोश और क्रांति के स्वर के साथ-साथ कोमल शृंगारिक भावनाओं की भी अभिव्यक्ति हुई है । दिनकर जी को उनकी रचना 'उर्वशी' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। भारत सरकार द्वारा उन्हें 'पद्मभूषण' पुरस्कार से भी अलंकृत किया गया है । दि. 24 अप्रैल, सन् 1974 ई. को उनकी मृत्यु हुई ।

व्यक्तित्व :-

रामधारी सिंह 'दिनकर' स्वभाव से सौम्य और मृदुभाषी थें । लेकिन जब बात देश के हित और अहित संबंधी होती, तो वे बेबाक टिप्पणी करने से डरते नहीं थें। राज्यसभा में मनोनीत सदस्य के रूप में उनका चुनाव तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने किया था। इसके बावजूद नेहरू की नीतियों का विरोध करने में वे कतराते नहीं थें । हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए वे अत्यधिक आग्रही थें । हिंदी भाषा के प्रति अत्यधिक लगाव और प्रेम होने के कारण हिंदी भाषा की होने वाली निंदा उनके लिए असहनीय थी । अतः राज्यसभा में उन्होंने कहा था, ''मैं इस सभा और खासकर प्रधानमंत्री जी से कहना चाहता हूँ कि, हिंदी की निंदा करना बंद की जाए । हिंदी की निंदा से इस देश की आत्मा को गहरी चोट पहुँचती है । 'वे सभी प्रकार के शोषण के खिलाफ थें । उन्होंने हमेशा सामाजिक और आर्थिक समानता के साथ मानवतावाद का समर्थन किया । उनके व्यक्तित्व को निम्नांकित विशेषताओं के माध्यम से उजागर किया जा सकता है।

1) **विद्रोही स्वभाव –** दिनकर जी के विद्रोही स्वभाव की झलक उनकी कई रचनाओं में देखने को मिलती है । अंग्रेजों की नौकरी करते हुए भी उन्होंने राष्ट्र प्रेम और बगावत की कविता लिखी है । उनकी कविता में अन्याय के खिलाफ तीखा आक्रोश और विद्रोह विद्यमान है ।

2) **देशभक्त और जन कवि –** दिनकर उनकी रचनाओं के माध्यम से एक निर्भिक देशभक्त और जन कवि के रूप में हमारे सामने आते हैं । उनकी कविता देश प्रेम की भावना से ओतप्रोत है । आजादी के आंदोलन में उन्होंने युवाओं में देश प्रेम की भावना को जागृत करने हेतु कविताएँ लिखी । सामान्य जनता पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार का उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से तीखा विरोध किया । वे सामाजिक और आर्थिक समानता के आग्रही थें।

3) **गांधीवादी और कार्ल मार्क्स के विचारों से प्रभावित –** दिनकर महात्मा गांधी और कार्ल मार्क्स के विचारों से प्रभावित थें । उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से मानवतावाद की स्थापना करते हुए, युवाओं में अन्याय-अत्याचार के विरोध में आक्रोश और प्रतिकार की भावना को जागृत करने का प्रयास किया ।

4) **स्वाभिमानी और निर्भीक –** दिनकर का स्वभाव स्वाभिमानी और निर्भीक था । अतः उन्होंने देश के हित और हिंदी भाषा के सम्मान पर कभी कोई समझौता नहीं किया । उन्होंने संसद में तत्कालीन प्रधानमंत्री

नेहरू जी की नीतियों पर भी तीखा प्रहार किया था ।

5) **लोक समर्पित –** एक सामान्य किसान परिवार से आने के कारण वह आम जनता की पीड़ा और भावनाओं को गहराई से जानते थें और उसी की अभिव्यक्ति उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से की है ।

6) **भारतीय संस्कृति एवं परंपरा प्रेमी –** भारतीय संस्कृति और उसकी गौरवशाली परंपरा के प्रति उनमें बहुत ही प्रेम, आस्था एवं श्रद्धा थी । अत: यह उनके व्यक्तित्व की एक महत्वपूर्ण विशेषता मानी जाती है । राष्ट्र की गौरवशाली परंपरा का गौरवगान तथा राष्ट्रीय चेतना उनकी कविता का एक मुख्य विषय रहा है अत: उन्हें 'राष्ट्रकवि' के रूप में भी संबोधित किया जाता है।

कृतित्व :–

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर को साहित्यिक प्रतिभा जन्मजात प्राप्त थी । उनकी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना की अधिकता को देखकर उन्हें 'राष्ट्रकवि' के रूप में संबोधित किया गया । उनकी कविता ओजस्वी, क्रांतिकारी और राष्ट्रीय भावनाओं से युक्त है । उसमें वीर और शृंगार रस का अद्भुत संगम दिखाई देता है । दिनकर जी को कवि रूप में प्रतिष्ठा 'हिमालय के प्रति' इस कविता से प्राप्त हुई । दिनकर जी ने गद्य और पद्य दोनों क्षेत्र में अपना लेखन कार्य किया है । उनके निबंध सुबोध, सुगठित और प्रेरणादाई हैं । भाव, विचार और भाषा पर जबरदस्त अधिकार रखने वाले दिनकर जी ने हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है । उनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय निम्नांकित है –

काव्य रचनाएँ – रेणुका, हुंकार, सामधेनी, रसवंती, द्वंद्व गीत, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा आदि उनकी प्रसिद्ध एवं चर्चित काव्य रचनाएँ हैं ।

गद्य रचनाएँ – संस्कृति के चार अध्याय, काव्य की भूमिका, शुद्ध कविता की खोज, आदि उनकी प्रसिद्ध गद्य रचनाएँ हैं ।

निबंध संग्रह – मिट्टी की ओर, अर्धनारीश्वर, रेती के फूल, वेणुवन, वट–पीपल, साहित्यमुखी, हमारी सांस्कतिक एकता, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय साहित्य आदि उनके प्रसिद्ध निबंध संग्रह हैं ।

इसी के साथ दिनकर ने आलोचना, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, लघु कथा, गद्य गीत, आदि विधाओं को भी अपनी लेखनी से समृद्ध किया है ।

भावात्मकता, अनौपचारिकता, सहजता, सजीवता और प्रवाहमयता उनके निबंधों की विशेषताएँ हैं । भावात्मक और वैचारिक उलझन दिनकर जी के न गद्य में दिखाई देती है, और न पद्य में । अभिव्यंजना की प्रसन्नता और प्रसादात्मकता उनकी समस्त रचनाओं में विद्यमान है ।

पुरस्कार एवं सम्मान –

1) साहित्य अकादमी का पुरस्कार, सन् 1959 ई. 'संस्कृति के चार अध्याय' इस ग्रंथ के लिए ।

2) ज्ञानपीठ पुरस्कार, सन् 1972 ई. 'उर्वशी' इस रचना के लिए।

3) पद्मभूषण पुरस्कार, सन् 1959 ई. भारत सरकार की ओर से सम्मानित ।

4) सन् 1952 ई. से लगातार तीन बार राज्यसभा के सदस्य ।

5) सन् 1999 ई. में भारत सरकार की ओर से उनकी स्मृति में डाक टिकिट जारी किया गया ।

3.3.3.2 **'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' निबंध का परिचय :**

रामधारी सिंह 'दिनकर' का 'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' यह निबंध उनके निबंध संग्रह 'रेती के फूल' से लिया गया है । इसका प्रकाशन सन् 1954 ई. में हुआ था। यह निबंध स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के दशक में ही लिखा गया है । प्रस्तुत निबंध में लेखक देश की उन्नति के लिए नेता नहीं। बल्कि योग्य नागरिकों की आवश्यकता को उजागर करते हैं । लेखक के अनुसार किसी भी देश की प्रगति केवल नेताओं से नहीं होती, बल्कि उस देश के नागरिकों की सक्रियता से होती है । अगर देश का हर नागरिक अपना योगदान ईमानदारी से दे, तो देश की सारी समस्याएँ अपने आप दूर हो जाएगी और हमें किसी विशेष नेता की आवश्यकता नहीं पड़ेगी । इसलिए लेखक कहते हैं कि हमें 'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' इस सिद्धांत को अपनाकर एक जागरूक और जिम्मेदार नागरिक होने का कर्तव्य निभाना चाहिए।

आजादी के पहले भारत में अंग्रेजों के खिलाफ भाषण देकर जो लोग अपनी जान जोखिम में डालते थें, उन्हें आदर देने के लिए एवं आदर पूर्वक संबोधित करने के लिए जनता नेता शब्द का प्रयोग करती थी । भाषण देने वाले इन लोगों को देने के लिए उस समय की जनता के पास कुछ और था भी नहीं । स्वतंत्रता के बाद देश की सत्ता नेताओं के हाथ में आ गई । आजाद देश में नेता बनना जोखिम का काम नहीं था । बल्कि वह तो लाभ का काम बन गया । परिणाम स्वरूप आजाद भारत में नेता ही नेता पैदा हो गए। हर कोई नेता बनना चाहने लगा । नेता बने हर कोई चाहने लगे कि उनकी संतानें भी उन्हीं की तरह किसी-न-किसी क्षेत्र में नेता बन जाए । किसी ने इस पर विचार नहीं किया कि अगर सभी नेता बन जाएँगे तो श्रम करके देश के लिए उत्पादन कौन करेगा? देश की उन्नति देश में अच्छे उत्पादन से ही होती है । इसी समस्या को सामने लाते हुए लेखक प्रश्न उपस्थित करते हैं कि यदि भारत का हर आदमी जवाहरलाल नेहरू बन जाए तो लोगों की खाने, पहनने और रहने की समस्याएँ कैसे हल होगी?

निबंध में लेखक ने 'समता के सिद्धांत' की बात भी प्रस्तुत की है । इसका अर्थ है सबको आगे बढ़ने के लिए समान अवसर मिले । व्यक्ति अपनी योग्यता, अध्यावसाय, अनुभव, तत्परता आदि के द्वारा धीरे-धीरे आगे बढ़ेगा । इसके लिए अनुभव, धैर्य और संगठन क्षमता की आवश्यकता होती है । परंतु नेता बनने की लालसा में व्यक्ति खुद को अधिक योग्य और दूसरों को कम योग्य मानता है । लेखक का कहना है कि मनुष्य बुद्धिमान और विवेकशील प्राणी है, उसे दूसरों को कुचलकर आगे बढ़ने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

निबंध में लेखक दिनकर ने सच्चे नेता के गुणों की चर्चा करते हुए लिखा है, सच्चे नेता की कथनी और करनी एक होती है । अतः हमें अपनी सोच में बदलाव करना होगा । जिन बातों को हम समाज के लिए उपयोगी मानते हैं, उन्हें पहले अपने जीवन में उतारना चाहिए । नागरिकों संबंधी बात करते हुए वे कहते

हैं, जिस समाज में अच्छे नागरिक होंगे वह समाज भी अपने आप अच्छा होगा । समाज का विकास नेताओं से नहीं, बल्कि अच्छे नागरिकों से होता है । अतः समाज को अच्छे नागरिकों की आवश्यकता है, नेताओं की नहीं । नागरिक अगर योग्य होंगे तो समाज में योग्य नेताओं का निर्माण अपने आप हो जाएगा । नेताओं की वास्तविकता को उजागर करते हुए लेखक कहते हैं आजाद भारत में नेता बनना सबसे अधिक लाभ की वस्तु बन गई है । जो धूर्त है, चालबाज है, तथा जोड़-तोड़ की कला को अच्छी तरह से जानता है वही नेता बन जाता है । इससे राजनीति में अपराध बढ़ रहे हैं । प्रशासन में अयोग्यता का समावेश हो रहा है । समाज में भ्रष्टाचार की समस्या बढ़ती जा रही है । अतः समाज जीवन में असंतोष और अक्षमता बढ़ती हुई दिखाई देती है । इन सभी समस्याओं का एकमात्र समाधान यह है कि नेताओं को अतिरिक्त सम्मान, महत्व नहीं देना चाहिए । समाज में परिश्रम, ईमानदारी तथा योग्यता को सम्मान और महत्व देना चाहिए ।

3.3.3.3 **'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' निबंध का आशय एवं विषय विवेचन :**

रामधारी सिंह 'दिनकर' का 'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' यह निबंध वर्तमान समय में बहुत ही प्रासंगिक निबंध है । प्रस्तुत निबंध के माध्यम से लेखक हमें बताना चाहते हैं कि हर देश की उन्नति एवं विकास उसके नागरिकों पर निर्भर करता है, न कि उस देश के नेताओं पर । यदि नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति सजग हो, तो समाज की बहुत सारी समस्याएँ अपने आप दूर हो जाती है और वह समाज अपनी उन्नति के पथ पर अग्रेसर होगा । निबंध के माध्यम से लेखक कहना चाहते हैं कि एक सशक्त राष्ट्र के लिए नेताओं से अधिक जागरूक और जिम्मेदार नागरिकों की आवश्यकता होती है ।

नेता सरकार चलाते हैं, नीतियाँ बनाते हैं, और प्रशासनिक कार्यों का संचालन करते हैं। लेकिन नागरिक वे लोग हैं, जो सरकारी नीतियों का पालन करते हैं और समाज को सही दिशा में अग्रेसर करते हैं। अगर नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति उदासीन होंगे तो सबसे अच्छा नेता भी देश को प्रगति की ओर नहीं ले जा सकता । निबंध में लेखक जागरूक और नैतिकता का पालन करने वाले नागरिकों के महत्व को उजागर करते हैं । उनके अनुसार केवल नेताओं के होने से कोई देश महान नहीं बनता, बल्कि किसी राष्ट्र की उन्नति वहाँ के ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और परिश्रमी नागरिकों पर निर्भर करती है और इसीलिए लेखक का आग्रह है, देश की उन्नति के लिए नेता नहीं, अच्छे नागरिक चाहिए ।

लेखक कहते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में हमारे देश में नेताओं की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है । आजादी के पहले देश में नेता बनना एक जोखिम भरा काम था । क्योंकि अंग्रेजों के खिलाफ बोलना अपनी जान और माल को संकट में डालने जैसा था । परंतु आजादी के बाद ऐसी स्थिति नहीं रही, बल्कि आजादी के बाद तो देश के सारे काम नेताओं के हाथ में आ गए । साथ ही इस बात का भी पता चला कि अभी तक देश ने केवल नेता ही पैदा किए हैं, नागरिक नहीं । व्याख्यान सुनते-सुनते इस देश ने व्याख्यान देने की आदत डाल दी है । पहले व्याख्यान सुनने पर उस पर वैसा ही अमल किया जाता था। लेकिन वह बात आजादी के बाद समाप्त हो गई लोग कर्म से ज्यादा वाणी को अधिक महत्व देने लगे। हर कोई दूसरों को कुछ उपदेश देने के लिए तत्पर हुआ लेकिन खुद उस उपदेश पर अमल करने के लिए तैयार नहीं था । परिणाम स्वरूप देश के नवनिर्माण के काम वैसे ही ठप पड़ गए। क्योंकि जो सचमुच देश के नेता है, वह काम करना नहीं जानते और जो काम करना जानते हैं उन्हें हाथ-पैर हिलाने की अपेक्षा केवल बातें करने में

अधिक आनंद आता है। नेता बनने की इस प्रवृत्ति के दुष्परिणाम हिंदुस्तान आज भी भुगत रहा है । फिर भी देश के नेता, देश के शिक्षा विशेषज्ञ और हर माता-पिता सभी चाहते हैं कि उनके बच्चे और नौजवान किसी-न-किसी क्षेत्र में नेता बनने की तैयारी करें । लेखक कहना चाहते हैं इनमें से किसी ने नहीं सोचा कि अगर सारा समाज नेता बन जाएगा तो नेताओं के पीछे चलने वाले लोग कौन रह जाएँगे ? और क्या नेताओं से भरा हुआ देश कोई अच्छा देश होगा?

लेखक कहना चाहते हैं कि अगर सभी लोग नेता बन जाएँगे तो हमारे सार्वजनिक व्यवहार के काम कौन करेगा? वास्तव में सार्वजनिक एवं सामाजिक क्रियाकलापों का निर्वाह करने के लिए अच्छे नागरिकों की ही आवश्यकता है । एक प्रसिद्ध कहावत है 'बड़ों की बात सुनो, उनकी नकल मत करो' लेकिन समाज में नकल करने की प्रवृत्ति ही बढ़ रही है और इसी कारण हर कोई नेता बनने के प्रयास में जुटा हुआ दिखाई देता है । हर कोई जहाँ पर वह काम कर रहा है, उससे वह असंतुष्ट नजर आता है । अतः अपने से बड़े पद पर बैठे हुए की जगह लेना चाहता है ।लोगों ने समानता का गलत अर्थ निकाला है वास्तव में सबको विकास का समान अवसर मिलना यह समानता का अर्थ है । इसका अर्थ यह नहीं की अवसर की प्रतीक्षा किए बिना, जो चाहे वह केवल इच्छा मात्र से प्राप्त करें । अवसर कोई ऐसी चीज नहीं है जो रोटी-दाल की तरह सबके सामने परोसी जाए। उसे पाने के लिए हमें अपने गुणों का विकास करना होता है उसके लिए तत्परता, धैर्य, आदि बातें सीखनी होती है । साथ ही उम्र तथा अनुभव का भी इंतजार करना पड़ता है । परंतु समाज में नेतागिरी का चस्का लग जाने के कारण लोगों के पास इंतजार करने के लिए समय नहीं है इसलिए जिस जगह पर आदमी धीरे-धीरे और बड़ी मेहनत के बाद पहुँचता था, उस जगह को पाने के लिए लोग छलांग मारकर पहुँच जाना चाहते हैं। लेखक के अनुसार यह स्थितियाँ किसी भी देश की उन्नति की दृष्टि से अच्छी नहीं है ।

लोगों में छलांगे लगाने की प्रवृत्ति बढ़ने का कारण बताते हुए लेखक ने लिखा है, इन लोगों ने दूसरों को छलांगें मारकर आगे बढ़ते देखा है और वे सोचते हैं कि जिंदगी का असली मजा मेहनत करने में नहीं, बल्कि अपने अधीन काम करनेवालों को आदेश देने में है । परंतु वे इस बात को भूल जाते हैं की आदेश देने की योग्यता काम करने से आती है और आदेश देने का काम इतना आसान नहीं है । जिसे जो चाहे पूरा कर सके योजना बनाने और आदेश भेजने की सही जिम्मेदारी को वहीं निभा सकता है जो उन सभी कामों के अनुभव प्राप्त कर चुका है । इसलिए जो आदमी अनुभव के दौर से होकर गुजरने से इन्कार करता है और बिना मेहनत के आराम की जगह पर पहुँचने के लिए बेचैन है, उसकी यह बेचैनी ही इस बात का सबूत है कि वह अपने संगठन का अच्छा नेता नहीं बन सकता । जिनके चरित्र में धीरता नहीं है, उससे बड़े दायित्व को योग्यता पूर्वक निर्वाह की आशा नहीं की जा सकती। इसलिए लेखक का कहना है जो समय से पूर्व नेता बन जाने के लिए बेचैन है, उसे नेता की जगह पर कभी भी आने नहीं देना चाहिए।

लोगों में यह भी भ्रम है कि नेता का पद आराम का पद है । वास्तव में यह बिल्कुल आराम का पद नहीं है । बल्कि उसकी जिम्मेदारी तो और अधिक बढ़ जाती है और उसे हमेशा चौकन्ना रहना पड़ता है। लेकिन जो आदमी मेहनत और धीरज से भागता है, उससे जिम्मेदारी और सावधानी की कैसी उम्मीद की जा सकती है । वास्तव में हम तो परिणाम देखना चाहते हैं, उस परिणाम के पीछे किसका आदेश था या किसके

हस्ताक्षर थें इसे कोई पूछता भी नहीं । अत: नागरिकों को इस बात को समझना चाहिए ।

आगे लेखक ने परिश्रमी और ईमानदार होने का महत्व बताते हुए लिखा है, जिसे अपने काम के प्रति प्रेम है वह कभी नाखुश नहीं रह सकता और न ही उसे कभी ऐसा लगता है कि बार-बार उसका अपमान हो रहा है । जो मेहनती और ईमानदार होता है, अधिकार अपने आप उसके पास चले आते हैं । पूरी दुनिया मेहनती और ईमानदार व्यक्ति की खोज में है । क्योंकि हर नेता भी चाहता है कि वह अपनी थोड़ी बहुत जिम्मेदारी किसी ईमानदार व्यक्ति पर डालें । अधिकार भोगने का जो असली सुख है, वह नेताओं में नहीं बल्कि मेहनती सहायकों के हाथ में है । जो भी परिश्रमी और ईमानदार है दफ्तर के अधिकार उसी के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं । इसीलिए लेखक पाठकों से कहते हैं, जब अधिकार भोगने का यह सीधा रास्ता मौजूद है, तब लोग नेता बनने की चक्कर में क्यों पड़ते है ।

विश्व की मानवता का कल्याण किसमें है? इसे बताने के लिए लेखक ने दो तस्वीरें हमारे सामने प्रस्तुत की है । एक तस्वीर यह है कि कारखाने के मैनेजर को अपने अधीन करके कई लोग उसकी कुर्सी पर अधिकार जमाना चाहते हैं । दूसरी तस्वीर यह है कि बहुत से कार्यकर्ता कड़ी मेहनत करके अधिक से अधिक अधिकारों को अपने कब्जे में रखना चाहते हैं । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि देश की जनता और विश्व की मानवता का कल्याण किसमें है ? अर्थात् दूसरी तस्वीर में, जिसमें हर आदमी सच्चाई और परिश्रम के बल पर अधिकार और आदर पाना चाहते हैं। केवल रौब और अधिकार ज़माने से आदर एवं सम्मान नहीं मिलता । उसके लिए व्यक्ति में वैसी योग्यता भी होनी चाहिए ।

नेतागिरी के अत्यधिक लोभ के कारण आए दिन हम नैतिक मूल्यों का पतन देख रहे हैं। सभी जगहों पर हमें हर कोई नेता बनने की अभिलाषा का शिकार हुआ दिखाई देता है । जो व्यापार में है वे मुनाफाखोरी और चोर-बाजारी कर धन-संपत्ति में सबसे आगे निकल जाना चाहते हैं जो नौकरी में है वे अपने से ऊपर वाले अफसर की जगह लेने के लिए बेचैन है । जो सामाजिक या राजनीतिक क्षेत्र में काम कर रहे हैं, वे भी ऊपर के नेताओं को हटाकर खुद उनकी जगह लेना चाहते हैं । भाषण, तिकड़म और छद्म, झूठे वादों और धोखे की कसमों से पूरा सार्वजनिक जीवन कोलाहल से पूर्ण बन गया है । लेखक के अनुसार यह सारे नेतृत्व की अभिलाषा के दोष हैं । जब मनुष्य यह ठान लेता है कि अपने क्षेत्र में मुझे सबसे आगे बढ़ना है, तब साध्य का आकर्षण उसके भीतर प्रबल होता है और साधन का महत्व उसके लिए कोई मायने नहीं रहता। वह तो किसी भी तरह (गलत तरीके से भी) अपने साध्य को पाना चाहता है इससे स्पष्ट है कि नेतृत्व का लोभ साधन की महिमा को कम करता है अपनी रेखा को बड़ी करने के बदले, हम दूसरे की रेखा को छोटी बनाने की कोशिश करते हैं और इस कोशिश में सभी लोग आसानी से लग जाते हैं अपनी योग्यता के बारे में जिनकी भावना अतिरंजित होती है अथवा वे यह सोचकर जलते रहते हैं कि, जिनके हाथ में अधिकार है असल में उन्हीं लोगों के कारण उनकी बढ़ती नहीं हो रही है।

आए दिन हम समाज के विचारकों, चिंतकों और नेताओं से यह बात सुनते रहते हैं कि समाज का स्तर बहुत ही गिरता जा रहा है । अतः उसमें तुरंत सुधार करना चाहिए । परंतु स्तर क्यों गिर रहा है, इस पर कोई भी गहराई से विचार नहीं करता । लेखक के अनुसार मनुष्य में प्रतिद्वंद्विता की भावना स्वाभाविक है । इसीलिए समाज में हर कोई दूसरे से बड़ा बनना चाहता है । परंतु मनुष्य के पास दिमाग है, जिससे वह सोच

सकता है । सही और गलत में अंतर कर सकता है । हृदय और आत्मा के कारण अपने विचार निर्मल कर सकता है । जिससे समाज के गिरे हुए स्तर को वह और कुरूप बनाने से रोक सकता है केवल पशु प्रवृत्ति को लेकर आगे बढ़ेंगे तो हम मानवता से दूर और पशुता के समीप पहुँच जाएँगे। जो भी मनुष्य मानवीय आनंद में वृद्धि करना चाहता है, उसे आवश्यकता है कि वह मनुष्य में जो गुण हैं, उनकी प्रशंसा में वृद्धि करें और जहाँ भी ईर्ष्या, द्वेष है उसे दूर करने का प्रयास करें। व्यक्ति का आगे बढ़ना यह न तो अस्वाभाविक है और न ही निंदनीय । सिर्फ उसे यह देखते चलना चाहिए कि खुद को आगे बढ़ाने की कोशिश में कहीं वह उन मूल्यों को तो नहीं कुचल रहा, जो एक मनुष्य के विकास की दृष्टि से कई गुना अधिक मूल्यवान है।

निबंध के अंत में लेखक ने मनुष्य योग्यता संबंधी वास्तविक बात करते हुए लिखा है, केवल नेता बनने की कोशिश में लगे रहने से हर आदमी नेता नहीं बन सकता जिसमें जितनी मौलिक शक्ति है, योग्यता है वही आदमी वहाँ तक पहुँच सकता है । जो छलांगे लगाकर नेता के पद पर पहुँच जाता है, वह एक-न-एक दिन लुढ़ककर उस पद से नीचे आ जाता है उसका नेता बना रहना मनुष्य जीवन के लिए हानिकारक साबित होता है । समाज की सुंदरता केवल दो चार नेताओं पर नहीं, बल्कि उस समाज में रहने वाले लाखों नागरिकों के सुधार पर निर्भर करती है । समाज के नागरिकों के अच्छे या बुरे होने से ही समाज को बुरा या भला कहा जाता हैं। इसलिए दूसरों का सुधारने का उपदेश देने से पहले वह सुधार संबंधी बातें हमें अपने चरित्र और स्वभाव पर लागू करनी चाहिए। हर कोई अगर ऐसा करता है तो वह समाज अपने आप सुंदर बन जाएगा और अपनी उन्नति के पथ पर अग्रेसर रहेगा वास्तव में जिन मूल्यों की समाज को जरूरत होती है, उन मूल्यों को जो नेता पहले अपने चरित्र और व्यक्तित्व में व्यावहारिक रूप में ढालते है वही नेता कहने के अधिकारी हैं । परंतु जो ऐसा नहीं करते, उन्हें समाज का सम्मान प्राप्त नहीं होता और न ही वे नेता बन सकते हैं । इसलिए आवश्यकता इस बात की है, समाज की जिन कुरीतियों से हम नाराज है, उन्हें सबसे पहले हम छोड़ दे और जिन मूल्यों को हम समाज में लाना चाहते हैं, उन्हें पहले अपने व्यक्तिगत जीवन में लाने का प्रयास करें । तात्पर्य समाज को योग्य नागरिकों की जरूरत है, नेताओं की नहीं ।

इस तरह लेखक दिनकर जी ने प्रस्तुत निबंध में देश की उन्नति एवं विकास में नेताओं से अधिक अच्छे नागरिकों की आवश्यकता को रेखांकित किया है । नागरिक अगर योग्य होंगे तो समाज में योग्य नेताओं का निर्माण अपने आप हो जाएगा । इसी बात को लेखक प्रस्तुत निबंध के माध्यम से अधोरेखित करते हैं ।

3.3.4 **स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।**

अ) निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प का चयन कीजिए।

1) 'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' निबंध के लेखक कौन है?

अ) पं. प्रतापनारायण मिश्र ब) रामधारी सिंह 'दिनकर'

क) वासुदेवशरण अग्रवाल ड) सरदार पूर्णसिंह

2) 'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' यह निबंध किस निबंध-संग्रह से लिया गया है?

अ) रेती के फूल ब) बाग के फूल

क) वन के फूल ड) गाँव के फूल

3) रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म किस गाँव में हुआ था?

अ) सिमरिया ब) टिमरिया

क) झुमरिया ड) मूमलिया

4) रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म किस परिवार में हुआ था?

अ) व्यापारी ब) मजदूर

क) किसान ड) वकील

5) 'संस्कृति के चार अध्याय' इस प्रसिद्ध ग्रंथ के लेखक कौन हैं?

अ) पं. प्रतापनारायण मिश्र ब) रामधारी सिंह 'दिनकर'

क) वासुदेवशरण अग्रवाल ड) सरदार पूर्णसिंह

6) 'उर्वशी' इस रचना के लिए दिनकर को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया है?

अ) साहित्य अकादमी ब) प्रेमचंद

क) कबीर ड) ज्ञानपीठ

7) किस लेखक ने संसद में तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू जी की नीतियों पर तीखा प्रहार किया था?

अ) पं. प्रतापनारायण मिश्र ब) रामधारी सिंह 'दिनकर'

क) वासुदेवशरण अग्रवाल ड) सरदार पूर्णसिंह

8) दिनकर जी का स्वभाव कैसा था?

अ) स्वाभिमानी ब) क्रोधी

क) भुलक्कड़ ड) शर्मिला

9) पिछले 30 वर्षों से अपने देश में लगातार क्या बरस रहे हैं?

अ) व्याख्यान ब) फुल

क) शोले ड) ओले

10) आजादी के बाद देश के सारे काम किसके हाथ में आ गए?

अ) अफसरों के　　ब) बाबूओं के

क) नेताओं के　　ड) नागरिकों के

11) अवसर को पाने के लिए किसका विकास करना होता है?

अ) नागरिकों का　　ब) जनता का

क) गुणों का　　ड) परिवार का

12) मेहनत न करने वाले लोग कैसे आगे बढ़ना चाहते हैं?

अ) टांग अडाकर　　ब) छलांग मारकर

क) धकेलकर　　ड) दौड़कर

13) आदेश देने की योग्यता कैसे आती है?

अ) रौब दिखाने से　　ब) काम करने से

क) बड़ी-बड़ी बातें करने से　　ड) गुस्सा करने से

14) सारी दुनिया कैसे व्यक्ति की खोज में है?

अ) मेहनती और ईमानदार　　ब) छलांग मारने वाले

क) आराम करने वाले　　ड) नेतागिरी करने वाले

15) नेतागिरी का लोभ मनुष्य को क्या बनाता है ?

अ) महान　　ब) पतित

क) विद्वान　　ड) लोभी

ब) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए पर्यायों में से उचित पर्याय का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ती कीजिए।

1) दिनकर ने ---------- विश्वविद्यालय से बी. ए. की उपाधि प्राप्त की थी।

अ) पटना　　ब) दिल्ली

क) मुंबई　　ड) शिवाजी

2) 'राष्ट्रकवि' के रूप में ---------- को पहचाना जाता है ।

अ) पं. प्रतापनारायण मिश्र ब) रामधारी सिंह 'दिनकर'

क) वासुदेवशरण अग्रवाल ड) सरदार पूर्णसिंह

3) 'रेती के फूल' ---------- का निबंध संग्रह है ।

अ) पं. प्रतापनारायण मिश्र ब) रामधारी सिंह 'दिनकर'

क) वासुदेवशरण अग्रवाल ड) सरदार पूर्णसिंह

4) आजादी के बाद सत्ता ---------- के हाथों में आ गई ।

अ) नागरिकों ब) अफसरों

क) नेताओं ड) वक्ताओं

5) दिनकर ने निबंध में ---------- की बात की है ।

अ) समता के सिद्धांत ब) काव्य के सिद्धांत

क) धर्म के सिद्धांत ड) साहित्य के सिद्धांत

6) समाज को योग्य ---------- की आवश्यकता होती है ।

अ) नेताओं ब) नागरिकों

क) अफसरों ड) ज्ञानियों

7) जो अपने ---------- को प्यार करता है, वह कभी भी नाखुश नहीं होता ।

अ) परिवार ब) संतान

क) काम ड) आप

8) समाज को ---------- की जरूरत होती है ।

अ) मूल्यों ब) नेताओं

क) ज्ञान ड) अध्ययन

9) पशु प्रवृत्ति को लेकर चलने से मनुष्य ---------- दूर चला जाएगा ।

अ) मानवता से ब) नेताओं से

क) नागरिकों से ड) समाज से

10) समाज को ---------- नागरिकों की जरूरत है ।

अ) लोभी ब) भोले-भाले

क) योग्य ड) सीधे-सादे

3.3.5 **पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।**

1. मजमून - मूल अर्थ ।
2. परिपाटी - वह विचार, प्रथा या क्रम जो बहुत दिनों से प्राय: एक ही रूप में चला आया हो ।
3. तंगनजरी - दृष्टि की संकीर्णता या संकुचित दृष्टिकोण ।
4. वाजिब - योग्य या ठीक ।
5. मुस्तैदी - तत्पर होने की क्रिया या भाव।
6. लियाकत - लायक या योग्य होने की अवस्था ।
7. मातहत - वह कर्मचारी ज किसी के अधीन हो ।
8. हिदायत - आदेश देना ।
9. दायित्व - जिम्मेदारी।
10. विकेन्द्रित - अलग-अलग खंडों में बाँटना।
11. तत्परता - तीव्रता, आगे बढ़ने की ललक ।
12. अपदस्थ - पद से हटाना ।
13. छलछदम - धोखाधड़ी ।
14. कोलाहलपूर्ण - शोर-शराबे से युक्त ।
15. कुत्सित - घृणित, बुरा ।

3.3.6 **स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर** ।

अ) उचित विकल्प का चयन

1) ब) रामधारी सिंह 'दिनकर' 2) अ) रेती के फूल 3) अ) सिमरिया 4) क) किसान

5) ब) रामधारी सिंह 'दिनकर' 6) ड) ज्ञानपीठ 7) ब) रामधारी सिंह 'दिनकर'

8) अ) स्वाभिमानी 9) अ) व्याख्यान 10) क) नेताओं के 11) क) गुणों का

12) ब) छलांग मारकर 13) ब) काम करने से 14) अ) मेहनती और ईमानदार 15) ब) पतित

ब) उचित पर्याय का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति ।

1) अ) पटना 2) ब) रामधारी सिंह 'दिनकर' 3) ब) रामधारी सिंह 'दिनकर'

4) क) नेताओं 5) अ) समता के सिद्धांत 6) ब) नागरिकों 7) क) काम

8) अ) मूल्यों 9) अ) मानवता से 10) क) योग्य

3.3.7 **सारांश।**

1) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा के सबसे सशक्त कवि के रूप में रामधारी सिंह 'दिनकर' जितने प्रसिद्ध हैं, उतने ही एक निबंधकार के रूप में भी उल्लेखनीय हैं । उनकी रचनाओं में संवेदना और विचार का सुंदर समन्वय दिखाई देता है । दिनकर जी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपने देश और युग सत्य के प्रति जागृत थें ।

2) आजादी के आंदोलन के समय में ही दिनकर ने अपनी कविताओं के माध्यम से देश के युवाओं में देशभक्ति और क्रांति की भावना जगाई थी । भारतीय संस्कृति और परंपरा के प्रति बचपन से ही उनके मन में आस्था होने से, उन्होंने उसका गहनता से अध्ययन किया था । देश का राष्ट्रीय गौरव उनके साहित्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता है । उनकी कविता में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना की भावना को देखकर उन्हें 'राष्ट्रकवि' के रूप में पहचाना जाता है ।

3) दिनकर ने गद्य और पद्य दोनों क्षेत्र में अपना लेखन कार्य किया है । उनके निबंध सुबोध, सुगठित और प्रेरणादाई हैं । भाव, विचार और भाषा पर जबरदस्त अधिकार रखने वाले दिनकर ने हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

4) 'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' निबंध में लेखक देश की उन्नति के लिए नेता नहीं, बल्कि योग्य नागरिकों की आवश्यकता को उजागर करते हैं । लेखक के अनुसार किसी भी देश की प्रगति केवल नेताओं से नहीं होती, बल्कि उस देश के नागरिकों की सक्रियता से होती है । अगर देश का हर नागरिक अपना योगदान ईमानदारी से दे, तो देश की सारी समस्याएँ अपने आप दूर हो जाएगी और हमें किसी विशेष नेता की आवश्यकता नहीं पड़ेगी ।

5) नेतागिरी के अत्यधिक लोभ के कारण आए दिन हम नैतिक मूल्यों का पतन देख रहे हैं। सभी जगहों पर हमें हर कोई नेता बनने की अभिलाषा का शिकार हुआ दिखाई देता है ।

6) निबंध में लेखक जागरूक और नैतिकता का पालन करने वाले नागरिकों के महत्व को उजागर करते हैं। उनके अनुसार केवल नेताओं के होने से कोई देश महान नहीं बनता, बल्कि किसी राष्ट्र की उन्नति वहाँ के ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और परिश्रमी नागरिकों पर निर्भर करती है और इसीलिए लेखक का आग्रह है, देश की उन्नति के लिए नेता नहीं, अच्छे नागरिक चाहिए ।

3.3.8 **स्वाध्याय ।**

अ) लघुत्तरी प्रश्न ।

1) अच्छे नागरिकों के गुणों पर संक्षेप में प्रकाश डालिए ।

2) देश की उन्नति में अच्छे नागरिकों का किस प्रकार योगदान होता है ?

3) लेखक 'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' ऐसा क्यों कहते हैं ?

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न।

1) 'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' निबंध का आशय अपने शब्दों में लिखिए ।

2) 'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' निबंध के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहते हैं ? विस्तार से विवेचन कीजिए ।

3) लेखक दिनकर देश की उन्नति के लिए नेताओं से ज्यादा योग्य नागरिकों को क्यों आवश्यक मानते हैं? पठित निबंध के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

क) टिप्पणियाँ लिखिए ।

1) रामधारी सिंह 'दिनकर' जी का कृतित्व।

2) 'नेता नहीं, नागरिक चाहिए' निबंध का उद्देश्य ।

3) नेता बनने के लोभ में होनेवाला अध:पतन ।

3.3.9 **क्षेत्रीय कार्य ।**

1) अपने क्षेत्र के कुछ प्रातिनिधिक नागरिकों का 'नागरिकों के कर्तव्य' इस विषय पर साक्षात्कार लेकर उसका संकलन कीजिए ।

2) प्रस्तुत निबंध का मराठी भाषा में अनुवाद कीजिए।

3) 'अच्छे समाज के निर्माण में नागरिकों की भूमिका' इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए ।

3.3.10 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए**

1) हिंदी साहित्य का इतिहास –डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, इकतीसवां संस्करण – 2005।

2) साहित्य संचयन – सं. डॉ, नीलम गुप्ता, डॉ. सविता गोविल, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लि.,

दिल्ली, पहला संस्करण – 2000 ।

3) हिंदी के प्रमुख निबंधकार और उनका निबंध साहित्य – डॉ. जीवनभाई आर. डांगर, शांति प्रकाशन, संस्करण– 2016।

4) रामधारी सिंह 'दिनकर' : संकलित निबंध – विरेश कुमार, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, संस्करण– 2007 ।

❑❑❑

इकाई– 4

निंबध

4.1 राष्ट्र का स्वरूप – वासुदेवशरण अग्रवाल

अनुक्रम

4.1.1 उद्देश्य

4.1.2. प्रस्तावना

4.1.3. विषय विवेचन

4.1.3.1 वासुदेवशरण अग्रवाल का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

4.1.3.2 'राष्ट्र का स्वरूप' निबंध का परिचय।

4.1.3.3 'राष्ट्र का स्वरूप' निबंध का आशय एवं विषय विवेचन।

4.1.4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

4.1.5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

4.1.6. स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर ।

4.1.7. सारांश ।

4.1.8. स्वाध्याय ।

4.1.9. क्षेत्रीय कार्य ।

4.1.10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

4.1.1. उद्देश्य

इस निबंध का अध्ययन करने के बाद विद्यार्थी–

1. वासुदेवशरण अग्रवाल के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
2. निबंध में व्यक्त लेखक के विचारों से अवगत होंगे।
3. उन्हे सांस्कृतिक एकता का महत्त्व समझकर उनमें राष्ट्रीय चेतना जागृत होगी।

4. उनमें राष्ट्र के प्रति निष्ठा, अनुराग और उसके प्रति कर्तव्य की भावना जागृत होगी।

4.1.2 प्रस्तावना

राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमाओं में बँधा हुआ भू-भाग नहीं होता बल्कि वह एक जीवंत सांस्कृतिक और आध्यात्मिक इकाई है। इसके अंतर्गत लोगों की भावनाएँ, परंपराएँ, इतिहास, भाषा और जीवनमूल्य समाहित होते हैं। वासुदेवशरण अग्रवाल ने अपने निबंध 'राष्ट्र का स्वरूप' में इसी व्यापक और गहन दृष्टि को प्रस्तुत किया हैं।

लेखक के अनुसार राष्ट्र का निर्माण सिर्फ राजनीतिक व्यवस्था या शासन से नहीं होता बल्कि उसकी आत्मा उसकी संस्कृति, सभ्यता और जनता की एकता में निहित होती है। राष्ट्र एक ऐसी चेतना है जो लोगों को आपसी संबंध में जोड़ने का काम करती है और एक साझा पहचान देती है।

इस निबंध में वासुदेवशरण अग्रवाल ने राष्ट्र की संकल्पना को केवल बाहरी रूप से नहीं बल्कि आंतरिक और आध्यात्मिक दृष्टि से समझाने का प्रयास किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सच्चा राष्ट्र वही है जहाँ जन-जीवन, संस्कृति और नैतिक मूल्यों का समन्वय होता है।

4.1.3 विषय विवेचन

वासुदेवशरण अग्रवाल के निबंध 'राष्ट्र का स्वरूप' में राष्ट्र की अवधारणा को अत्यंत व्यापक, गहन और सांस्कृतिक दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। निबंध का मुख्य विषय यह है कि राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमा या राजनीतिक विभाग नहीं बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और मानवीय संगठन है। लेखक के अनुसार राष्ट्र का वास्तविक स्वरूप उसकी संस्कृति, परंपराओं, भाषा, इतिहास और मान्यताओं में निहित होता है। केवल एक ही भू-भाग में रहना राष्ट्र होने की शर्त नहीं है, बल्कि लोगों के बीच भावनात्मक एकता, जीवनमूल्य और आपसी लगाव आवश्यक है।

निबंध में यह भी स्पष्ट किया गया है कि राष्ट्र की आत्मा उसकी संस्कृति और सभ्यता होती है। अगर संस्कृति नष्ट हो जाए, तो राष्ट्र भी अपना अस्तित्व खो देता है। इसी वजह से लेखक सांस्कृतिक एकता को राष्ट्र की आधारशिला समझते हैं।

वासुदेवशरण अग्रवाल यह भी बताते हैं कि राष्ट्र का निर्माण जनता की चेतना और नैतिक मूल्यों से होता है। जब जन अपने राष्ट्र के प्रति कर्तव्य और त्याग की भावना रखते हैं, तभी राष्ट्र सशक्त और जागृत बनता है। राष्ट्र एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक एकता है, जिसमें भौतिक तत्वों के साथ-साथ भावनात्मक और नैतिक तत्वों का समन्वय महत्वपूर्ण है। यही समन्वय राष्ट्र को स्थायी, मजबूत और महान बनाता है।

4.1.3.1 वासुदेवशरण अग्रवाल का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

जीवन परिचय:

वासुदेवशरण अग्रवाल हिंदी साहित्य और भारतीय साहित्य के प्रमुख विद्वान, निबंधकार तथा इतिहासवेत्ता थें। उन्होंने अपने लेखन और शोध के माध्यम से भारतीय संस्कृति की गहराई, व्यापकता और मौलिकता को उजागर किया है।

डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म सन् 1904 ई. को उत्तर प्रदेश राज्य के मेरठ जिले में'खेड़ा' नामक छोटे से देहात में हुआ। वे बचपन से ही मेधावी और अध्ययनशील थें। भारतीय साहित्य और संस्कृति के गंभीर अध्येता थें। उनकी आरंभिक तथा उच्च शिक्षा क्रमशः हापुड़ तथा लखनऊ में हुई। हिंदी भाषा के साथ-साथ संस्कृत, पाली, और अंग्रेजी भाषा में उन्होंने असाधारण योग्यता अर्जित की थी। उन्हे डी.लिट्. की उपाधि से भी सम्मानित किया जा चुका है।

अग्रवाल नें 'पाणिनिकालीन भारतवर्ष' शीर्षक से शोध प्रबंध प्रस्तुत कर पीएच.डी. की उपाधी प्राप्त की। 'सेंट्रल एशियन ऐंटिक्स म्यूजियम' के अधीक्षक पद पर तथा भारत सरकार के पुरातत्व विभाग में अनेक पदों पर उन्होंने बरसों तक काम किया। वाराणसी के भारती विश्वविद्यालय के व्याख्याता पद पर भी उन्होंने काम किया। वासुदेवशरण अग्रवाल जी का निधन सन् 1967 ई. में हुआ।

व्यक्तित्व:

वासुदेवशरण अग्रवाल का व्यक्तित्व अत्यंत विद्वतापूर्ण, गंभीर और चिंतनशील था। वे एक महान संस्कृति चिंतक, शोधकर्ता और राष्ट्रवादी विचारक थें। उनके विचारों में भारतीयता की गहरी छाप दिखाई देती है। वह सरल, विनम्र और अनुशासित स्वभाव के थें। उनमें प्राचीन और आधुनिक विचारों का सुंदर समन्वय था। वे राष्ट्र और संस्कृति के प्रति अत्यंत संवेदनशील थें।

कृतित्व:

वासुदेवशरण अग्रवाल ने निबंध, शोध और आलोचना के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति, इतिहास और कला का व्यापक चित्रण मिलता है।

उनके मौलिक एवं संपादित ग्रंथ इस प्रकार हैं:

'पृथ्वीपुत्र', 'उरुज्योति', 'कला और संस्कृति', 'कल्पवृक्ष', 'माता भूमि', 'पोद्दार अभिनंदन ग्रंथ', 'भारत की मौलिक एकता', 'हिंदू सभ्यता', 'भारत सावित्री', 'कादंबरी', 'जायसीकृत पद्मावत', 'शब्द का स्वरूप', 'भारत की सांस्कृतिक एकता', 'भारतीय संस्कृति के मूल तत्व' आदि।

अग्रवाल के निबंध बहुज्ञता, विद्वता और अनुसंधान पद्धति के गुणों से युक्त हैं। उनकी मूल दृष्टि भारत की भावनात्मक एकता के संयोजक स्रोतों और तत्वों के उद्घाटन पर अधिक रही है। प्राचीन साहित्य, संस्कृति, सभ्यता, दर्शन, विज्ञान और कला का मर्म उन्होंने अपनी रचनाओं में गहनतापूर्वक स्पष्ट किया है।

वासुदेवशरण अग्रवाल का गद्य विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। उनकी रचनाओं का प्रतिपाद्य विषय अधिकांशतः पुरातत्व और सांस्कृतिक संदर्भों से युक्त है। भाषा संस्कृतनिष्ठ, परिमार्जित और सुव्यवस्थित है। इस प्रकार अग्रवाल ने भारतीय संस्कृति और राष्ट्रवाद को सशक्त रूप से प्रस्तुत किया है। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व आज भी प्रेरणादायक है। अतः हिंदी साहित्य में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

4.1.3.2 'राष्ट्र का स्वरूप' निबंध का परिचय :

वासुदेवशरण अग्रवाल के प्रसिद्ध निबंध 'राष्ट्र का स्वरूप' में राष्ट्र के प्रति व्यापक और गहन दृष्टि प्रस्तुत की गई है। इस निबंध में लेखक ने राष्ट्र को केवल भौगोलिक सीमा या राजनीतिक इकाई न मानकर एक जीवंत सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सत्ता के रूप में व्याख्यायित किया है। उनके मतानुसार राष्ट्र भूमि, जन और संस्कृति इन तीनों के समन्वय से निर्मित होता है। अग्रवाल विशेष रूप से भारतीय राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता पर बल देते हैं। वे बताते हैं कि भारत में भले ही भाषा, धर्म, वेशभूषा और परंपराओं की विविधता है, फिर भी एक गहरी सांस्कृतिक एकसूत्रता सभी को जोड़ती है। यही एकता राष्ट्र की वास्तविक शक्ति है।

इस निबंध का उद्देश्य पाठकों में राष्ट्र के प्रति सही समझ विकसित करना और राष्ट्रीय चेतना को जागृत करना है। लेखक ने सरल और प्रभावशाली भाषा में राष्ट्र के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए यह सिद्ध किया है कि राष्ट्र केवल भूमि नहीं बल्कि उसमें रहने वाले लोगों की सामूहिक चेतना और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। यह निबंध एक विचार प्रधान निबंध है। राष्ट्र के स्वरूप को समझाने के लिए लेखक ने तीन मुख्य अंग बताए हैं वे इस प्रकार हैं–

1) भूमि 2) भूमि पर रहने वाला जन 3) जन समुदाय की संस्कृति

भूमि: राष्ट्र का पहला अंग भूमि है। राष्ट्र को समझने के लिए वहाँ की भूमि को समझना महत्वपूर्ण है। भूमि से अभिप्राय है वहाँ के खेत, खलिहान, मैदान, पर्वत, जंगल, नदी, सागर आदि। भूमि के इन रूपों की सुंदरता, उपयोगिता और महिमा को पहचानना। अपने राष्ट्र के गौरव को जानना। भूमि का आंतरिक रूप और भी मूल्यवान है। समस्त खनिज, छोटे–खेत, स्वर्ण, कोयला, विभिन्न धातुएँ और वनस्पतियाँ आदि।

जन: राष्ट्र का दूसरा अंग जन समुदाय है। जन–समुदाय की अनेक पीढ़ियाँ बदल जाती हैं, परंतु जन–जीवन नदी के प्रवाह के समान सदा चलता रहता है। कर्म और पौरुष जीवन प्रवाह को लक्ष्य की ओर बढ़ाते हैं।

संस्कृति: राष्ट्र का तीसरा अंग जन की संस्कृति है। राष्ट्र की भूमि पर रहने वाले मानव समाज की संस्कृति विश्वास, आचार–विचार के साथ वैश्विक आपसी मेलजोल, समरसता का भाव और सह अस्तित्व की भावना राष्ट्र की अखंडता को साकार करती है।

प्रस्तुत निबंध का उद्देश्य पाठकों के मन में अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठा, अनुराग और उसके प्रति कर्तव्य की भावना जागृत करना है। हमारा राष्ट्र जो अपनी राष्ट्रीय सीमाओं को लाँघकर जीवंत हो जाता है। अपने आपको समृद्ध करता है। यहाँ प्रत्येक जन प्रत्येक स्तर वासियों के मन में मातृभूमि के प्रति श्रद्धा, भावना, लगन मुखरित करता है। भूमि पर रहने वाले मानव को राष्ट्र रूपी पुरुष का प्राण बताया है। एकता, सौहार्द, बंधुत्व, परोपकार का वर्णन किया है। तभी राष्ट्र की शक्ति निवास पा सकती है। आचार-विचार, चर्चा-विवाद, खान-पान, पहनावा, कला-साहित्य आदि के द्वारा संस्कृति का विकास होता है। 'विविधता में एकता' इस निबंध का प्रतिपाद्य है।

4.1.3.3 'राष्ट्र का स्वरूप' निबंध का आशय एवं विषय विवेचन :

भूमि

भूमि, भूमि पर बसनेवाला या रहनेवाला जन और उस जन की संस्कृति, इन तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बन जाता है। कहते हैं कि प्राचीन काल में भूमि का निर्माण देवी देवताओं ने किया है, जो अनंत काल से हम देखते है। पृथ्वी के भौतिक रूप, सौंदर्य और समृद्धि के प्रति सावधान होना हमारा परम कर्तव्य है। भूमि के पार्थिव स्वरूप के प्रति हम जीतने अधिक मात्रा से जागृत होंगे उतनी मात्रा में हमारी राष्ट्रीयता ताकतवर या बलवान हो सकती है। सच कहा जाए तो यह पृथ्वी समस्त राष्ट्रीय विचारधाराओं की जननी है। जो राष्ट्रीयता उनके साथ नहीं जुट जाती यह पूरी तरह से नष्ट या निर्मूल हो जाती है। राष्ट्रीयता की मूल या जड़े पृथ्वी में जितनी गहरी होंगी उतना ही राष्ट्रीय भावों का बीज या अंकुर पल्लवित होगा। इसलिए पृथ्वी के भौतिक स्वरूप की आदि से अंत तक जानकारी हासिल करना, उसकी सुंदरता, उपयोगिता, महिमा से परिचित होना या ज्ञान प्राप्त करना हमारा सच्चा धर्म है।

इस कर्तव्य की, किसी काम को पूरा करने की (पूर्ति) को सैकड़ों-हजारों प्रकार से होनी चाहिए। पृथ्वी का जिस वस्तु से संबंध आता है, चाहे वह वस्तु छोटी हो या बड़ी, उसका कुशल सवाल पूछने के लिए हमें अच्छी तैयारियाँ करनी चाहिए। पृथ्वी का सभी अंगों और उपांगों सहित गहरा अध्ययन करना जागरणशील राष्ट्र के लिए बहुत ही आनंददायक अनुभूति या कर्तव्य माना जाता है। सच कहा जाए तो देहातों या महानगरो में भी विविध केंद्रों द्वारा उसका गहराई से अध्ययन होना नितांत आवश्यक है। उदाहरण के लिए कहे तो पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाने लिए हर साल बारिश के मौसम में बारिश गिरती है । वह खेती में फसल को अपने अमृत जल से हरी भरी बनाती है।

इस प्रकार जब चारों ओर से हमारे ज्ञान के कपाट खुल जाएगे तब सैंकडो बरसों से जीवन में जो अंधकार छाया हुआ है, उस जीवन के विविध क्षेत्रों मे परिवर्तन होगा या नया उजाला दिखाई देगा।

धरती माँ की कोख बहुत बडी है । जिसमें अमूल्य निधियाँ भरी हुई है । जिसकी वजह से वह वसुंधरा कहलाती है। उसका गहराईयों से अध्ययन करने से किसे रूची नही होगी? लाखों करोडों बरसों से अनेक प्रकार के जीव जंतु एवं धातुओं पृथ्वी के गर्भ में पोषण मिला है। दिन रात बहनेवाली विविध नदियों ने

पहाडों को पीस-पीसकर विविध प्रकार की मिट्टीयों से पृथ्वी की देह को सजाने का काम किया है। हमारी भविष्य की आर्थिक उन्नति के लिए इन सबका अध्ययन होना बहुत महत्त्वपूर्ण है। पृथ्वी की गोद में पैंदा होनेवाले पत्थर जड होते है, लेकिन वह शिल्पियों द्वारा सजाने के बाद सौंदर्य का प्रतिक बन जाते हैं। इतना ही नही तो विविध तरह विंध्य पर्वतों में पत्थर बिना पॉलिश किए हुए नदियों के प्रवाह में सूर्य की धूप से निकलते रहते हैं। उन्हें जब चतुर कारीगर हीरा काँच या धातु की तरह कटाव कर लाते हैं तो तब प्रत्येक घाट से नई शोध और सुंदरता झलकती रहती हैं। वे अनमोल कीमती हो जाते है। देश के नर और नारी के मूर्तिकला और सौंदर्य प्रसाधन में मूर्तिकार पत्थरों का उपयोग करते हैं। इसकी यह हमेशा योगदान रहा है इसका भी हमें ज्ञान होना आवश्यक है।

पृथ्वी और आकाश के बीच में जो साधन सामग्री है, पृथ्वी के चारों ओर फैले सागर में जो जलचर और रत्नों की राशियाँ है, उन सबके प्रति स्वागत एवं कृतज्ञता के भाव राष्ट्र में बढना चाहिए। राष्ट्र के नवयुवकों के हृदय में जब तक उन सबके प्रति जिज्ञासा की नई किरणें उत्पन्न नहीं होगी, तब तक हमारा विकास या परिवर्तन संभव नही। अतः हम सोए हुए के समान माने जाएगे।

अब विज्ञान युग आ गया है। विज्ञान और उद्यम (मेहनत) दोनों को मिलाकर राष्ट्र के भौतिक स्वरूप का नया ढाँचा खडा करना है। यह कार्य प्रसन्नता, उत्साह और बहुत परिश्रमपूर्वक हर दिन आगे बढना चाहिए। हमें यह निश्चय करना चाहिए कि देश के सभी नागरिकों ने इसमें सम्मिलित होना चाहिए। तभी मातृभूमि की पवित्रता, सुंदरता, समृद्धि और समग्र रूप मंडल प्राप्त किया जा सकता है।

जन

अपनी मातृभूमि में रहनेवाले मनुष्य राष्ट्र का दूसरा अंग हैं। इस पृथ्वी पर मनुष्य का अस्तित्व नहीं है, तो राष्ट्र की कल्पना असंभव है। पृथ्वी और जन (मनुष्य) दोनों के संयोग से ही राष्ट्र का स्वरूप संपादित हो जाता है। जन के कारण ही पृथ्वी को महत्व प्राप्त होता है और पृथ्वी मातृभूमि की संज्ञा प्राप्त करती है। पृथ्वी माता है और सही मायने में मनुष्य या जन इस पृथ्वी का पुत्र है।

''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।

भूमि माता है, मैं उसका पुत्र हूँ।''

मनुष्य के हृदय में इस सूत्र का अनुभव ही राष्ट्रीयता की कुंजी है। इसी भावना को ध्यान में रखकर राष्ट्र निर्माण या राष्ट्रीय एकता के बीज बढने के लिए सहायता मिलती हैं। जन का भाव जब बडे रूप में जागृत होता है, तब राष्ट्र निर्माण के स्वर गूँजकर उनमें चारों ओर फैले गैस, जल बाष्प और सूक्ष्म धुलकणों (वायुमंडल) में भरने लगते हैं। इन दोनों के प्रेम भाव के कारण ही वह अपने संबंध सच्चे निर्माण करते हैं। जिस जगह पर भाव नहीं है वहाँ पर जन और भूमि का संबंध अचेतन और जड़ बन जाता है। जिस समय मनुष्य या जन भूमि के साथ माता और पुत्र के संबंध को अच्छी तरह से जानता है। उसी समय हर्ष और श्रद्धा से भरा हुआ उसका वंदनीय या प्रणाम भाव अपनी मातृभूमि के लिए इस प्रकार प्रकट होता है-

''नमो मात्रे पृथिव्यै। नमो मात्रे पृथिव्यै।''

माता पृथ्वी को प्रणाम है या वंदन है । यह वंदनीय भाव ही भूमि और जन का मजबूत (दृढ) बंधन है। इस पर ही राष्ट्र का महल बन जाता है। इसी मजबूत चट्टान पर राष्ट्र का जीवन निर्भर रहता है। इसी मर्यादा को मानते हुए मनुष्य के मन में राष्ट्र के प्रति कर्तव्य और अधिकारों का उदय होता है। जो जन पृथ्वी को सच्ची माता के रूप में स्वीकार करता है, उसे ही पृथ्वी का आशिर्वाद पाने का अधिकार प्राप्त हो जाता है। माता को प्रेम दिलाना और उनकी सेवा करना प्रत्येक पुत्र का कर्तव्य है। यह एक निष्कारण धर्म होता है। पुत्र अगर अपने माता पर स्वार्थ को ध्यान में रखकर प्रेम करता है, तो वह अंधःपतन को सूचित करता है। जो मनुष्य अपनी मातृभूमि के साथ संबंध बढाना चाहता है तो उसे सबसे पहले अपने कर्तव्य के प्रति ध्यान देना चाहिए। पृथ्वी के विशाल प्रांगन में सभी जातियों के लिए समान क्षेत्र है। समन्वय के मार्ग से भरपूर प्रगति और उन्नति करने का सबको एक जैसा अधिकार है। किसी जन को पीछे छोडकर राष्ट्र आगे नहीं बढ सकता। राष्ट्र के शरीर के एक भाग में यदि अंधकार और निर्बलता का विकास है तो समग्र राष्ट्र का स्वास्थ उनके अशं में असमर्थ रहेगा। इस प्रकार समग्र राष्ट्र को जागरण और प्रगति की एक जैसी उदार भावना संचलित होना चाहिए।

जन का प्रवाह विशाल होता है। हजारो बरसों से मनुष्यों ने पृथ्वी के साथ अभेद संबंध प्राप्त किया है। जब तक सूर्य की रश्मियाँ नित्य प्रातः काल वेणुवन को अमृत से भर देती है तब तक राष्ट्रीय जन का जीवन भी अमर है। इतिहास के बहुत सारे उतार चढाव पार करने के बाद भी राष्ट्र निवासी जन नई उठती लहरों से आगे बढने के लिए आज भी अजरामर है। मनुष्य का हमेशा बहनेवाला जीवन नदी के प्रवाह की तरह है, जिसमें कर्म और श्रम के द्वारा उत्थान के अनेक घाटों का निर्माण करना होता है।

संस्कृति

राष्ट्र का तीसरा अंग संस्कृति है। मनुष्यों ने युगों-युगों में जिस सभ्यता का निर्माण किया है, वही उसके जीवन के श्वास-प्रश्वास है। बिना संस्कृति के जन की कल्पना बिना सर का धड (कबन्धमात्र) जैसी है। संस्कृति यह मनुष्य का मस्तिष्क है। संस्कृति के विकास और उन्नति के द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि संभव है। राष्ट्र के सबल रूप में भूमि और जन के साथ संस्कृति का बडा स्थान है। अगर भूमि और जन को संस्कृति से अलग कर दिया जाए तो राष्ट्र का विनाश अवश्य हो सकता है।

जीवन के विटप (वृक्ष) का पुष्प संस्कृति है। संस्कृति के सौंदर्य और सुगंध में ही मनुष्य के जीवन का सौंदर्य और यश समाविष्ट है। ज्ञान और कर्म दोनों के पारंपरिक प्रकाश की संज्ञा संस्कृति को दी गई है। भूमी पर रहनेवाले ज्ञान के क्षेत्र के संदर्भ में जो विचार किया है और कर्म के क्षेत्र में जो है दोनों के रूप में हमें राष्ट्रीय संस्कृति के दर्शन देखने को मिलते हैं। जीवन का विकास संस्कृति में निहित है। मनुष्य की प्रत्येक जाति अपनी विशेषताओं के साथ इस युक्ति को निश्चित करती है और संस्कृति का विकास करती है। इस दृष्टि से हर मनुष्य की अपनी-अपनी भावना के अनुसार अलग-अलग संस्कृतियाँ राष्ट्र में विकसित हो जाति है। इन सबका मूल आधार पारस्परिक सहिष्णुता और समन्वय पर आधारित है।

जंगल में जिस प्रकार से अनेक लता वृक्ष और वनस्पति अपने अदम्य भाव से उठते हुए पारस्परिक सम्मिलन से अवरोधी स्थिति प्राप्त करते हैं। ठिक उसी प्रकार मनुष्य अपनी संस्कृतियों के द्वारा एक-दूसरे के साथ समानता या भाईचारे से रहते हैं। जिस प्रकार जल अनेक नदियों के प्रवाह के साथ अंत मे सागर से जा मिलता है और एकरूपता या समानता का संदेश देता है। उसी प्रकार राष्ट्रीय जीवन की अनेक विधिया राष्ट्रीय संस्कृति में समन्वय स्थापित करती है। समन्वययुक्त जीवन ही राष्ट्र का सुखदायी रूप है। हमारे देश में प्रत्येक व्यक्ति साहित्य, कला, नृत्य आमोद-प्रमोद अनेक रूपों में अपने-अपने रूचियों के अनुसार अपने मानसिक भावों को प्रकट कर देते हैं। आत्मा का जो विश्वव्यापी भाव है, यह सबसे श्रेष्ठ आनंदभाव है । वह आनंद भाव विविध रूपों में साकार होता है। वैसे देखा जाए तो बाह्य रूप की दृष्टि से समाज में संस्कृति के विभिन्न रूप में लक्षण दिखाई देते हैं । लेकिन आनंद की दृष्टि से उन सभी रूपों में समानता दिखाई देती है । जो मनुष्य दयालु स्वभाव का है, वह व्यक्ति वह विभिन्न रूप के संस्कृति में से आनंद पक्ष को राजहंस की तरह स्वीकार करता है। वह उस क्षण से आनंद विभोर हो जाता है। इस प्रकार की उदार मन की भावना विविध जाति धर्म के व्यक्तियों के लिए हितकारी साबित होता है।

गाँवों और जंगलों में मुक्त रूप से तैयार होनेवाले विभिन्न गीतों में, तारों के नीचे विकसित लोक कथाओं में संस्कृति का बहुत बडा भंडार भरा हुआ है । जहाँ से आनंद की मात्रा बहुत मिल सकती है। राष्ट्रीय संस्कृति के इस परिचय काल में हमें उन सबका स्वागत करने की बहुत जरूरत है।

हमारे पूर्वजों ने प्राचीन काल में चरित्र, धर्मविज्ञान, साहित्य, कला और संस्कृति इस क्षेत्र में अमूल्य पराक्रम किया है। देश के लिए जरूरत पडने पर उन्होनें जान भी गँवा दी है। उन महापुरूषों को, उनके शौर्य को हम गौरव के साथ धारण करते हैं। उनकी शूर वीरता, पराक्रम का चित्रण हमारे भावी पीढियों में साक्षात् रूप में देखना चाहते हैं। यही राष्ट्र-संवर्धन का स्वाभाविक प्रकार है। जहाँ प्राचीन काल (अतित) वर्तमान काल के लिए भार रूप नहीं है। जहाँ भूतकाल वर्तमानकाल को पकडकर रखना नहीं चाहता तो अपने आशिष या वरदान से बलवान करके उसे आगे बढाने के लिए प्रेरित करता है, उस शब्द का हम दिल से स्वागत करते है।

इस निबंध में वासुदेवशरण अग्रवाल ने राष्ट्र की संकल्पना को केवल बाह्य रूप से नही बल्कि आंतरिक और आध्यात्मिक दृष्टि से हमें समझाने का प्रयास किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सच्चा प्यार वही है जहाँ जन-जीवन, संस्कृति और नैतिक मूल्यों का समन्वय होता है।

4.1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

(अ) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1) डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म उत्तर प्रदेश राज्य के मेरठ जिले में .... नामक देहात में हुआ।

अ) लमही ब) खीरी

क) खेड़ा ड) अल्मोड़ा

2) डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल की उच्च शिक्षा ..... में हुई।

अ) बदायूं ब) लखनऊ

क) आगरा ड) अलीगढ़

3) सच्चा राष्ट्र वही है जहाँ जन-जीवन, संस्कृति और ..... मूल्यों का समन्वय होता है।

अ) नैतिक ब) सामाजिक

क) अनैतिक ड) धार्मिक

4) राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमाओं में बँधा हुआ ..... नहीं होता।

अ) पठारी भाग ब) भू-भाग

क) प्राकृतिक भाग ड) सीमा भाग

5) अगर संस्कृति नष्ट हो जाए तो ..... भी अपना अस्तित्व खो देता है।

अ) राष्ट्र ब) राज्य

क) समाज ड) शहर

6) वासुदेवशरण अग्रवाल हिंदी साहित्य और भारतीय साहित्य के प्रमुख विद्वान तथा ..... थें।

अ) उपन्यासकार ब) कहानीकार

क) आलोचक ड) निबंधकार

7) वासुदेवशरण अग्रवाल को हिंदी भाषा के साथ-साथ ..... भाषा का भी असाधारण ज्ञान था।

अ) मराठी ब) पाली

क) बंगाली ड) फ़ारसी

8) वासुदेवशरण अग्रवाल का निधन ..... ई. में हुआ।

अ) सन् 1955 ब) सन् 1969

क) सन् 1967 ड) सन् 1971

9) 'राष्ट्र का स्वरूप' यह वासुदेवशरण अग्रवाल जी का ..... है।

अ) निबंध ब) उपन्यास

क) कहानी ड) नाटक

10) वासुदेवशरण अग्रवाल का गद्य विवेचनात्मक एवं ..... है।

अ) समीक्षात्मक ब) आलोचनात्मक

क) विश्लेषणात्मक ड) वैशिष्ट्यपूर्ण/व्याख्यात्मक

11) भूमि, भूमि पर बसने वाला जन और जन की ..... इन तीनों के सम्मिश्रण से राष्ट्र का स्वरूप बनता है।

अ) संस्कृति ब) प्रकृति

क) प्रणालि ड) पुनरावृत्ति

12) पृथ्वी का समग्र अध्ययन जागरणशील राष्ट्र के लिए ..... माना जाता है।

अ) आवश्यक ब) आनंददायक

क) स्मरणशील ड) अभूतपूर्व

13) ..... पर निवास करने वाले मनुष्य राष्ट्र का दूसरा अंग है।

अ) स्वर्ग ब) पाताल

क) मातृभूमि ड) रणभूमि

14) जन के हृदय में इस सूत्र का अनुभव ही राष्ट्र की ..... है।

अ) पूँजी ब) कुँजी

क) संपत्ति ड) संस्कृति

15) जन का प्रवाह ..... होता है।

अ) संथ　　ब) संपन्न

क) शांत　　ड) अनंत

16) राष्ट्र का ..... अंग जन की संस्कृति है।

अ) पहला　　ब) सातवां

क) तीसरा　　ड) दूसरा

17) समन्वय युक्त ..... ही राष्ट्र का सुखदायी रूप है।

अ) कला　　ब) जीवन

क) सुख　　ड) दुःख

18) ज्ञान और ..... दोनों के पारस्परिक प्रकाश की संज्ञा संस्कृति है।

अ) कर्म　　ब) मर्म

क) धर्म　　ड) अधर्म

19) जीवन के वृक्ष का ..... ही संस्कृति है।

अ) पत्ता　　ब) फल

क) पुष्प　　ड) डाली

20) वासुदेवशरण अग्रवाल विशेष रूप से भारतीय राष्ट्र की ..... एकता पर बल देते हैं।

अ) सांस्कृतिक　　ब) सामाजिक

क) धार्मिक　　ड) आर्थिक

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए।

1) वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म कौन-से राज्य में हुआ?
2) वासुदेवशरण अग्रवाल मथुरा के प्रसिद्ध पुरातत्व संग्रहालय के कौन-से पद पर नियुक्त हुए?
3) अग्रवाल ने पीएच.डी. करते समय कौन-सा शोध प्रबंध प्रस्तुत किया था?
4) 'राष्ट्र का स्वरूप' यह निबंध किसने लिखा है?
5) वासुदेवशरण अग्रवाल का व्यक्तित्व कैसा है?
6) अग्रवाल वाराणसी के भारती विद्यालय में कौन-से पद पर आसीन हुए?

7) वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म कौन-से वर्ष में हुआ?

8) वासुदेवशरण अग्रवाल ने कौन-से क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया?

9) वासुदेवशरण अग्रवाल ने इस निबंध को केवल बाहरी रूप से ही नहीं तो कौन-से रूप से देखा है?

10) राष्ट्र का निर्माण किससे होता है?

11) बचपन से ही मेधावी और अध्ययनशील कौन थें?

12) डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने कौन-से ग्रंथ की रचना की है?

13) किस रचनाकार ने डी.लिट. यह उपाधि प्राप्त की?

14) किन तीनों के सम्मिश्रण से राष्ट्र का स्वरूप बनता है?

15) भूमि का निर्माण किसने किया?

16) पृथ्वी है पर उस पर मनुष्य नहीं है तो राष्ट्र की कल्पना कैसी है?

17) माता अपने सभी बच्चों के साथ कैसे प्रेम करती है?

18) किसे जन का मस्तिष्क कहा गया है?

19) संस्कृति के विकास और अभ्युदय द्वारा किसकी वृद्धि संभव है?

20) किन लोगों ने चरित्र, धर्म विज्ञान, साहित्य, कला और संस्कृति में पराक्रम किया है?

4.1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

सम्मिलन - मेल।

अनन्त - अन्तहीन, शाश्वत।

भौतिक - बाहरी, ऊपरी, पार्थिव।

सचेत - चेतनायुक्त, सावधान।

निर्मूल - बिना जड़ के, आधारहीन।

आद्योपांत - आदि से अन्त तक, संपूर्ण।

सांगोपांग - अंग और उपांग (भेद-उपभेद) सहित, पूर्ण रूप से।

अध्ययनशील - ज्ञान की प्राप्ति रखने वाले।

वसुंधरा - धरती।

अभ्युदय - विकास, उत्थान।

चिलकते - चमकते।

पहलदार – सुडौल, पहलुओं वाला।

अन्तराल – बीच की दूरी।

जलचर – पानी में रहने वाले जीव।

जिज्ञासा – जानने की इच्छा।

पुष्कल – पर्याप्त, भरपूर।

सम्पादित – भली–भाँति निर्मित।

संज्ञा – नाम।

अचेतन – निर्जीव।

भित्ति – दीवार, नींव।

निष्कारण – कारण के बिना, निष्काम भाव से।

सौहार्द – मैत्री भाव।

समग्र – सारा।

तादात्म्य – एकरूपता।

सततवाही – निरन्तर प्रवाहित रहने वाला।

कबन्ध – धड़ (बिना सर का शरीर) ।

अन्तःनिहित – छिपा हुआ।

विटप – वृक्ष।

सौरभ – सुगन्ध।

पारस्परिक – एक दूसरे की।

सहिष्णुता – सहनशीलता।

अतथ्य – दृढ़।

अविरोधी – विरोध रहित, समान।

स्वच्छन्द – अपने–आप, मुक्त, स्वतंत्रतापूर्वक।

अमित – असीम।

साक्षात् – प्रत्यक्ष।

संवर्धन – उन्नत करना।

परिधि – सीमा, घेरा।

4.16 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।

अ) उचित पर्याय।

1. खेड़ा
2. लखनऊ
3. नैतिक
4. भू–भाग
5. राष्ट्र
6. निबंधकार
7. पाली
8. सन 1967
9. निबंध
10. विश्लेषणात्मक
11. संस्कृति
12. आनंददायक
13. मातृभूमि
14. कुँजी
15. अनंत
16. तीसरा
17. जीवन
18. कर्म
19. पुष्प
20. सांस्कृतिक

आ) एक वाक्य में उत्तर ।

1. वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म उत्तर प्रदेश राज्य में हुआ।
2. वासुदेवशरण अग्रवाल मथुरा में प्रसिद्ध पुरातत्व संग्रहालय के अध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए।
3. वासुदेवशरण अग्रवाल ने पीएच.डी. करते समय 'पाणिनिकालीन भारतवर्ष' यह शोध प्रबंध प्रस्तुत किया था।
4. 'राष्ट्र का स्वरूप' यह निबंध वासुदेवशरण अग्रवाल ने लिखा।
5. वासुदेवशरण अग्रवाल का व्यक्तित्व विद्वतापूर्ण, गंभीर और चिंतनशील है।
6. वासुदेवशरण अग्रवाल वाराणसी के भारती विश्वविद्यालय में आचार्य पद पर आसीन हुए।
7. वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म सन् 1904 ई. में हुआ।
8. वासुदेवशरण अग्रवाल ने निबंध, शोध और आलोचना क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

9. वासुदेवशरण अग्रवाल ने इस निबंध को केवल बाहरी रूप से नहीं तो आंतरिक और आध्यात्मिक रूप से देखा है।
10. राष्ट्र का निर्माण जनता चेतना और नैतिक मूल्यों से होता है।
11. वासुदेवशरण अग्रवाल बचपन से ही मेधावी और अध्ययनशील थें।
12. वासुदेवशरण अग्रवाल ने मौलिक एवं संपादित ग्रंथों की रचना की है।
13. वासुदेवशरण अग्रवाल ने डी.लिट्. यह उपाधि प्राप्त की।
14. राष्ट्र का स्वरूप भूमि, जन और संस्कृति इन तीनों के सम्मिश्रण से बनता है।
15. भूमि का निर्माण भगवान ने किया।
16. पृथ्वी है पर उस पर मनुष्य नहीं है तो राष्ट्र की कल्पना असंभव है।
17. माता–पिता सभी बच्चों के साथ समान भाव से प्रेम करते हैं।
18. संस्कृति को जन का मस्तिष्क कहा गया है।
19. संस्कृति के विकास और अभ्युदय द्वारा ही राष्ट्र की वृद्धि संभव है।
20. पूर्वजों ने चरित्र, धर्मविज्ञान, साहित्य, कला और संस्कृति में पराक्रम किया है।

4.1.7 सारांश।

1. इस निबंध में लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमा या राजनीतिक संगठन नहीं होता, बल्कि वह एक जीवंत सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सत्ता है। राष्ट्र का निर्माण मुख्यतः भूमि, जन और संस्कृति इन तीन तत्वों के समन्वय से होता है।
2. अग्रवाल के अनुसार भूमि राष्ट्र का भौतिक आधार है, जन उसकी आत्मा है और संस्कृति उसकी पहचान है।
3. किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी सांस्कृतिक एकता और सामूहिक चेतना में निहित होती है।
4. लेखक विशेष रूप से भारतीय राष्ट्र के संदर्भ में बताते हैं कि भारत में अनेक भाषाएँ, धर्म, जातियाँ और परंपराएँ होने के बावजूद एक गहरी सांस्कृतिक एकता सभी को जोड़ती है। यही 'विविधता में एकता' भारत की सबसे बड़ी विशेषता है।
5. इस निबंध में बताया गया है कि राष्ट्र एक सजीव और गतिशील शक्ति है जो समय के साथ विकसित होती रहती है।
6. राष्ट्र की उन्नति के लिए उसके नागरिकों में राष्ट्रीय भावना, आदर्श और एकता की भावना प्रबल होना आवश्यक है।

4.18 स्वाध्याय ।

अ) लघुत्तरी प्रश्न ।

1. राष्ट्र से लेखक का क्या अभिप्राय है?
2. राष्ट्र के निर्माण में किन-किन तत्वों का योगदान होता है?
3. राष्ट्र के विकास में राष्ट्रीय चेतना की क्या भूमिका है?
4. वासुदेवशरण अग्रवाल की भाषा-शैली की विशेषताएँ लिखिए।
5. 'राष्ट्र का स्वरूप' निबंध से हमें कौन-सी शिक्षा मिलती है?

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न ।

1. भूमि, जन और संस्कृति के समन्वय को स्पष्ट कीजिए।
2. वासुदेवशरण अग्रवाल ने राष्ट्र को केवल भौगोलिक इकाई क्यों नहीं माना है?
3. भारतीय राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता के विषय में लेखक के विचार स्पष्ट कीजिए।
4. राष्ट्र और संस्कृति के आपसी संबंध पर प्रकाश डालिए?
5. 'राष्ट्र एक जीवंत सत्ता है' इस कथन की व्याख्या कीजिए।
6. 'विविधता में एकता' की अवधारणा को निबंध के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
7. 'राष्ट्र का स्वरूप' निबंध के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

4.1.9 क्षेत्रीय कार्य ।

1. अपने क्षेत्र की भाषा, वेशभूषा, परंपरा, त्यौहार आदि का अध्ययन करें और लिखें कि वे राष्ट्र की एकता में कैसे योगदान देते हैं।
2. अपने आसपास के किसी ऐतिहासिक स्थान (किला, मंदिर, स्मारक) का दौरा करके उसकी जानकारी इकट्ठा करें और राष्ट्र की विरासत से उसका संबंध स्पष्ट करें।
3. विद्यालय या समाज में विभिन्न धर्मों, भाषाओं और जातियों के लोगों के बीच एकता के उदाहरण खोजकर एक रिपोर्ट तैयार करें।
4. सांस्कृतिक कार्यक्रम (गीत, नाटक, भाषण) का आयोजन करें, जो राष्ट्र की एकता और संस्कृति को दर्शाए।
5. राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रीय चिह्न आदि का अध्ययन करें और उनके महत्व को समझकर एक पोस्टर बनाएँ।

4.1.10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

1. 'माता भूमि' – वासुदेवशरण अग्रवाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. 'पृथ्वीपुत्र' – वासुदेवशरण अग्रवाल, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रवाद विषयक ग्रंथ।
4. 'संस्कृति के चार अध्याय' – रामधारी सिंह 'दिनकर', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. 'भारतीय संस्कृति और कला' – वासुदेवशरण अग्रवाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

❑❑❑

इकाई– 4

निबंध

4.2. नई संस्कृति की ओर – रामवृक्ष बेनीपुरी

अनुक्रम

4.2.1. उद्देश्य

4.2.2. प्रस्तावना

4.2.3. विषय विवेचन

4.2.3.1 रामवृक्ष बेनीपुरी का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

4.2.3.2 'नई संस्कृति की ओर' निबंध का परिचय।

4.2.3.3 'नई संस्कृति की ओर' निबंध का आशय एवं विषय विवेचन।

4.2.4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

4.2.5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

4.2.6. स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।

4.2.7. सारांश।

4.2.8. स्वाध्याय।

4.2.9. क्षेत्रीय कार्य।

4.2.10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

4.2.1. उद्देश्य

इस निबंध का अध्ययन करने के बाद विद्यार्थी–

1. रामवृक्ष बेनीपुरी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
2. निबंध में व्यक्त लेखक के प्रगतिशील विचारों से अवगत होंगे।
3. समाज में व्याप्त अंधःविश्वास, जातिवाद और कुरीतियों के प्रति जागृत होंगे।

4. समता, एकता, देशभक्ति तथा शोषण और भेदभाव का विरोध आदि को लेकर उनमें एक नई सोच उत्पन्न होगी।

4.2.2. **प्रस्तावना**

रामवृक्ष बेनीपुरी हिंदी साहित्य के प्रमुख निबंधकारों में से एक थें, जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज में जागृति और परिवर्तन की चेतना जगाने का कार्य किया। उनका निबंध 'नई संस्कृति की ओर' एक विचारोत्तेजक और प्रेरणादायक रचना है, जिसमें वे भारतीय समाज को पुरानी जड़ताओं, कुरीतियों और रूढ़िवाद से मुक्त होकर एक नई प्रगतिशील और मानवीय संस्कृति की दिशा में अग्रेसर होने का संदेश देते हैं।

इस निबंध में लेखक ने आधुनिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सामाजिक समानता और मानवतावादी मूल्यों पर आधारित संस्कृति की आवश्यकता को स्पष्ट किया है। वे मानते हैं कि समय के साथ समाज में परिवर्तन अनिवार्य है और यदि हम नई सोच को अपनाते हैं तभी एक समृद्ध और विकसित राष्ट्र का निर्माण संभव है। इस प्रकार 'नई संस्कृति की ओर' केवल एक निबंध नहीं, बल्कि समाज सुधार और नवजागरण का सशक्त आवाहन है।

4.2.3 **विषय विवेचन**

रामवृक्ष बेनीपुरी के निबंध 'नई संस्कृति की ओर' का विषय मूलतः समाज में परिवर्तन की आवश्यकता और नई प्रगतिशील संस्कृति की स्थापना पर केंद्रित है। यह निबंध केवल विचार प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि सामाजिक नवजागरण का स्पष्ट दिशा-निर्देश भी देता है। इस निबंध का केंद्रीय विषय है - पुरानी जड़ और रूढ़िवादी संस्कृति से मुक्ति तथा नई मानवीय और प्रगतिशील संस्कृति का निर्माण। बेनीपुरी जी मानते हैं कि भारतीय समाज लंबे समय से अंधःविश्वास, जातिगत भेदभाव, सामाजिक असमानता और कुरीतियों में जकड़ा हुआ है, जो उसके विकास में बाधक हैं। इसलिए वे इन पुरानी परंपराओं को त्यागने की आवश्यकता पर बल देते हैं।

लेखक नई संस्कृति की परिकल्पना करते हैं जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्कशीलता, समानता और मानवता पर आधारित हो। इस संस्कृति में व्यक्ति की स्वतंत्रता, स्त्री-पुरुष समानता तथा सभी वर्गों के लिए समान अवसर का विशेष महत्व है। निबंध में राष्ट्रीय चेतना का भी महत्वपूर्ण स्थान है। रामवृक्ष बेनीपुरी चाहते हैं कि नई संस्कृति के माध्यम से देश में एकता, जागरूकता और प्रगति का वातावरण बने, जिससे राष्ट्र सशक्त और उन्नत हो सके। साथ ही वे विशेष रूप से युवाओं को इस परिवर्तन का वाहक मानते हैं। उनके अनुसार, युवा पीढ़ी को पुरानी संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठकर नई सोच को अपनाना चाहिए और समाज में सकारात्मक बदलाव लाना चाहिए।

4.2.3.1 रामवृक्ष बेनीपुरी का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

जीवन परिचय:

रामवृक्ष बेनीपुरी जी हिंदी साहित्य और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख व्यक्तित्व थें। उनका जीवन संघर्ष, साहित्य सृजन और समाज सेवा का अद्भुत संगम है। रामवृक्ष बेनीपुरी जी का जन्म दि. 2 जनवरी सन् 1902 ई. को बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गाँव में हुआ। प्रारंभिक जीवन आर्थिक कठिनाइयों में बीता, लेकिन उन्होंने शिक्षा के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के प्रति गहरी रुचि विकसित की। वे महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित होकर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल हुए और कई बार जेल भी गए। दि. 7 सितंबर, सन् 1968 ई. को उनका निधन हुआ।

व्यक्तित्व:

रामवृक्ष बेनीपुरी का व्यक्तित्व बहुआयामी और प्रभावशाली था। रामवृक्ष बेनीपुरी सच्चे राष्ट्रभक्त भी थें। उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन समर्पित किया था। रामवृक्ष बेनीपुरी को समाजकार्य करने में विशेष रुचि थी। उन्होंने अत्यंत गरीब परिस्थिति से जीवन का गुजारा किया था, इसलिए वे समाज में समानता और न्याय के पक्षधर थें। उनकी भाषा और व्यवहार दोनों में शुचिता और मानवीय संवेदना झलकती थी। बेनीपुरी जी प्रगतिशील विचारक थे। उनके आचार-विचार में जातिप्रथा, स्त्री-पुरुष को लेकर भेदभाव नहीं था। वे नई सोच, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक परिवर्तन के समर्थक थें।

रामवृक्ष बेनीपुरी का व्यक्तित्व विद्रोही और जुझारू था। उन्होंने सन् 1920 ई. में दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने से पहले ही अपनी शिक्षा छोड़कर गांधी जी के असहयोग आंदोलन में सम्मिलित हो गए। साहित्य के क्षेत्र में पत्र-पत्रिकाओं के माध्यमों से उन्होंने प्रवेश किया था। अपनी पत्रकारिता और साहित्य दोनों से प्रारंभिक अवस्था से जुड़े रहे। साहित्य के द्वारा स्वाधीनता संग्राम में लिखने की वजह से या योगदान देने के कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा। बेनीपुरी जी आजीवन समाजसेवक और साहित्य सेवा करते रहे और उनके व्यवहार में हमेशा सहजता और मानवीय संवेदना झलकती रही।

कृतित्व:

रामवृक्ष बेनीपुरी ने हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बेनीपुरी जी ने 'तरुण भारत', 'किसान मित्र', 'जनता', 'हिमालय', 'कर्मवीर' और 'नई धारा' जैसे पत्र-पत्रिकाओं में संपादन कार्य बड़े कुशलता से किया है। उपन्यास, नाटक, कहानी, संस्मरण, निबंध, रेखाचित्र आदि विधाओं में अपनी लेखनी का चमत्कार दिखाया। रामवृक्ष बेनीपुरी का संपूर्ण साहित्य 'बेनीपुरी ग्रंथावली' नाम से प्रकाशित हो गया है।

बेनीपुरी जी मुख्यतः निबंधकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके निबंधों में सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय भावना और प्रगतिशील विचार स्पष्ट दिखाई देते हैं। उनके निबंध -'नई संस्कृति की ओर', 'अमर ज्योति' आदि में

समाज सुधार, नई सोच, और मानवता का संदेश मिलता है। उन्होंने 'माटी की मूरतें' नामक बहुत प्रसिद्ध रेखाचित्र लिखा है, जिसमें गाँव के साधारण लोगों का सजीव चित्रण है। उन्होंने नाटक, कहानी और एकांकी की भी रचना की है।

रामवृक्ष बेनीपुरी का कईं रचनाएँ सामाजिक यथार्थ पर आधारित हैं। उन्होंने 'जेल' जैसे आत्मकथात्मक संस्मरण लिखे हैं। जिसमें अनुभव और स्वतंत्रता आंदोलन की झलक मिलती है। बेनीपुरी को विशेष प्रसिद्धी भावना प्रधान शैली वाले निबंधों से ही मिली है। उनके निबंध मुख्य रूप से भावात्मक हैं, इनमें अनुभूति की गहराई विद्यमान है। इस निबंध में अत्यंत विद्वत्तापूर्ण संस्कृति का ढाँचा, स्वरूप विकसित किया गया है। इसकी स्पष्ट तस्वीर लेखक ने हमारे सामने प्रस्तुत की है। राजनीतिज्ञ एवं अर्थशास्त्री जहाँ बहुत बड़ी-बड़ी योजनाओं में लगे हैं, वहीं हमारे कलाकारों का दायित्व है कि वे संस्कृति के क्षेत्र का विकास करें। साहित्य और संगीत में जनता की इच्छाओं, आकांक्षाओं का प्रकटीकरण हो और सामाजिक जीवन सौंदर्य और आनंद से परिपूर्ण हो। यह संस्कृति कुछ गिने-चुने लोगों तक सीमित न रहे, बल्कि उसमें संपूर्ण समाज की 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' की परिकल्पना निहित हो।

इस प्रकार 'नई संस्कृति की ओर' निबंध यह केवल स्वतंत्र विचारों का प्रस्तुतिकरण नहीं है, बल्कि समाज को नई दिशा देने वाला है, जो हमें प्रगति और नवनिर्माण की ओर अग्रेसर करता है।

4.2.3.3 'नई संस्कृति की ओर' निबंध का आशय एवं विषय विवेचन :

हमारा हिंदूस्थान आजाद हो गया है। आज हमारे हिन्दुस्तान का ध्यान एक नया समाज को निर्माण करने की ओर बढ रहा है। लेकिन किसी ने सोचा है की यह नया समाज कैसा हो? इसका मूल आधार कैसा होना चाहिए, उसका विकास किन मुद्दों पर होना चाहिए। इन बातों पर भारत देश का हर देशभक्त विचार कर रहा है।

आज समाज को एक वृक्ष मान लिया जाए तो-अर्थनीति उसकी जड़ है, राजनीति तना है, विज्ञान उसकी डालियाँ है तो संस्कृति को फूल के समान मान लिया है। इसीलिए नए समाज की अर्थनीति या राजनीति आदि बातों पर हमे ध्यान नहीं देना है बल्कि देशभर में कैसी संस्कृति बढ रही है इसकी ओर हमें ध्यान देना चाहिए। मूल और तने की सार्थकता उसके फूल में ही होती है।

इन तीनों का संबंध इतना नजदीक है की उन्हे आप अलग नही कर सकते। आज नई अर्थनीति और राजनीति के साथ नई संस्कृति का विकास हमारे आँखों के सामने हो रहा है। इस बात का हमें गर्व है । भले ही हम उसे देख ना पाए या उसकी ओरसे अपनी आँखें मूँद ले। पिछले पचास बरसों के राजनीतिक और आर्थिक संघर्षो ने हमारी दबी हुई भावनाओं को इतना कुंठित बना दिया कि संस्कृति की यह सुकुमार दुनिया हमारे निर्जीव या पत्थर जैसी आँखों के सामने आकर भी नहीं आ पाती। गेहूँ हमारी आँखों पर इस कदर छाया हुआ है कि गुलाब को हम देखकर भी नही देख पाते। गेहूँ के सवाल को जरूर हल कीजिए परंतु किसलिए यह सब सदा ध्यान में रखिए। आदमी सिर्फ चारा या दाना खानेवाला जानवर नहीं है।

समाज की सारी साधनाओं की परिणति या नतीजा उसकी संस्कृति में है। पेड को हमेशा पानी दीजिए। उससे मूल, तन, डालियाँ इन सबकी देखभाल कीजिए परंतु लक्ष्य हमेशा फूल पर दीजिए। क्योंकि फूल ही हमारी संस्कृति है। इसका अर्थ है कि फूल पर, गुलाब पर और संस्कृति पर ही हमें ध्यान देना चाहिए। जिस संस्कृति में नई संस्कृति को स्थान या मान-सम्मान नहीं है, वहाँ नए समाज की हर योजना अधूरी है।

कवि रविंद्रनाथ ठाकूर की एक कविता की एक कडी है। उसमें उन्होंने कहा है- जब राजनीतिज्ञ और अर्थशास्त्रज्ञ जब बड़ी-बड़ी योजनाओं की प्रगति करेंने में व्यस्त है, तब कलाकारों चलो, हम अपनी परिमिती शक्ति से इस क्षेत्र में कुछ काम कर दिखाएँ। आखिरकार यह क्षेत्र भी तो हमारा है। गुलाब की खेती के मणि तो हम ही है, फूलों के संसार के भौंरे हम ही है। यह काम हम नही करेंगे तो कौन करेगा?

हमारी यह गुलाब की दुनिया-फुलों की दुनिया, रंगों की दुनिया-सुगंधों की दुनिया इतनी सुकुमार और नाजूक दुनिया है कि कहीं पर अर्थशास्त्रियों के हथौडे और राजनीतिज्ञों के कुल्हाडे उसका सर्वनाश न कर दे। प्रेमचंद के शब्दों में रक्षा में हत्या न हो जाए। इसीलिए हमें ही यह करना चाहिए। उन्हें कुछ दूर-दूर ही रखना है।

नए समाज के लिए नई संस्कृति होती है। पंरतु इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं कि हम पुरानी संस्कृति को भूल जाए या हम उसके नीदंक या शत्रू है। पुरानी संस्कृति को भूमि (सरजमीन) पर ही नई संस्कृति की महल या (अट्टालिका) हमें खडी करनी है। पुरानी संस्कृति से हमें प्रेरणा मिलती है। वही हमारी धरोहर या विरासत हैं। हम उसे कभी नहीं छोडेंगे।

मगर बुरी बात यह है कि पुरानी संस्कृति अब नष्ट होती जा रही है। क्योंकि नई पीढी उसका इन्कार करती है। इसीलिए नई संस्कृति की नई रूपरेखा होगी। नए साधनों को अपनाने में हम सब जरा भी संकोच नहीं करेंगे। हमारा यही उद्देश्य या मकसद होगा कि सामाजिक जीवन की स्वतंत्रता, समता और मानवता के आधार पर पुनर्गठित होना चाहिए और उसका सौंदर्य एवं आनंद को पूर्ण रूप से उन्हें मिल सके।

यह सच है कि स्वतंत्रता, समता और मानवता यह नई संस्कृति के आधार है। परंतु इसका अर्थ हम सिर्फ राजनीतिक और आर्थिक बातों में नहीं लगाते। तीसरा शब्द जो मानवता है, वह हमारे उद्देश्य को बलवान बना देता है। हम सारी गुलामी या दासताओं से सारी विषमताओं से मानव समाज को मुक्त कर उसके परस्पर संबंध को विशुद्ध मानवता पर प्रतिष्ठित करना चाहते है । मतलब यह की किसी भी स्वार्थ, भेदभाव, जाति, धर्म, लिंग या शब्द इस दिखावे से मुक्त रहकर केवल शुद्ध प्रेम, करूणा, दया और नैतिकता पर मानव होने का गुण है। हमें पता है कि आदमी अपने जीवन में सौंदर्य और आनंद की उपलब्धि ही कर पाएगा। सौंदर्य और आनंद को नई संस्कृति की ओर चलना और निरंतर विकास करना है। आज समाज में कुरूपता ही कुरूपता है। दुःख, पीडा और दर्द की भरमार है। लेकिन हम इसे सुंदर बनाना चाहते हैं। हम इसे सुखी भी बनाएंगे। इसके लिए हम लेखकों, कवियों और पत्रकारों को संघटित करेंगे। वे विचार, विमर्श करके समाज में रहे जीवन के अभावों और दोषारोपण (अभियोंगों) का सही चित्रण करें और साहित्य को एक नए रास्ते पर ले चले जिसके द्वारा जनता या समाज स्वतंत्र और पूर्ण जीवन का उपभोग कर सके। इतना

ही नहीं तो जो कलाकार, नाटक, संगीत, नृत्य और चित्रकारी में अपनी रूचि रखते हैं, उन्हें भी इकठ्ठा करके उन्हें प्रोत्साहित करेंगे कि वे अपनी कलाकृतियों में जनता की इच्छा, कामना, आशा और आकाक्षांओं को प्रस्तुत करें और सामाजिक जीवन को सौंदर्यमय या अच्छा, खुशहाल बनाकर उसे हर्ष या आनंद से परिपूर्ण बनाने का प्रयास करें।

इस तरह सभी कलाकारों को आवाहन करते हैं कि जो अपनी लेखनी से जीवन को नया रंग भरने की या वादयों द्वारा समाज को 'सत्यं शिवं सुंदरम्' याने जो सत्य है वही कल्याणकारी (शिव) है और वही सुंदर है। इसकी ओर समाज आकर्षित करें। किन्तु विस्तीर्ण रूप से संगठन न होने की वजह से जिसकी साधनाएँ या तपस्या इच्छित फल नहीं दे रही है। लेखक के अनुसार उसका होना आवश्यक है। कलाकारों को संघटित करके हम महानगरों और देहातों में सांस्कृतिक केंद्र खोलना चाहते है। जिसमें उनकी कलाकृतियों का प्रदर्शन हो सके और जहाँ से नई संस्कृति का संदेश विविध साधनों द्वारा देश के कोने-कोने में फैला सके।

हम बार-बार जनता या समाज को संबोधित कर रहे है। क्योंकि हमने यह देखा और अनुभव भी किया है कि आज की संस्कृति कुछ अभिजात या अमीर लोंगों तक सिमित ही है। नया समाज जनता का समाज होगा। संस्कृति को भी जनता में विलीन होकर जनता की संस्कृति होना पसंद है। नए समाज एवं संस्कृति का भविष्य बहुत बडा है। अब तक संस्कृति मानवता की प्रतिनिधित्व नहीं कर सकी। जब यह संस्कृति पूरे मानव के समाज में जा पाएगी या सौ में से सौ का प्रतिनिधित्व करेगी तब समाज का कितना परिवर्तन या विकास होगा इसकी कल्पना कीजिए।

कितनी बडी चीज, कितनी रंग-बिरंगी चीज। सौ प्रतिशत लोगों की इच्छा, आकांक्षा, हर्ष, उल्हास, मिलन-विरह शौर्य, बलिदान, दया, क्रोध पीडा या दर्द का वह चित्रण यह सब कलाकारों द्वारा संभव हो सकता है। क्योंकि उन्हीं की वाणी या संदेश, विचार या वाद्यों द्वारा यह कलाकार संस्कृति के रंग भर सकते है और उसमें नई संस्कृति का नया परिवर्तनीय या विचारशील समाज का जन्म हो सकता है। यही बात लेखक को अभिप्रित है।

इस निबंध के शुरूआत में ही निबंधकर रामवृक्ष बेनीपुरी भारतीय समाज की वर्तमान स्थिति का चित्र प्रस्तुत करते है। वे बताते है कि समाज पुरानी परंपराओं अंधः विश्वासों और रूढियों में जकडा हुआ है। जिसके कारण प्रगति अवरूद्ध हो रही है। बेनीपुरी पुरानी कुरीतियों और जड मान्यताओं की आलोचना करते हैं। वे स्पष्ट करते हैं कि जातिवाद असमानता और संकीर्ण सोच समाज को पीछे ले जाती है। इसलिए त्यागना आवश्यक है।

लेखक नई संस्कृति की आवश्यकता पर बल देते हैं। रामवृक्ष बेनीपुरी का निंबंध 'नई संस्कृति की ओर' यह एक विचार प्रधान, आलोचनात्मक, प्रेरक निबंध है । इससे क्रमबद्ध विचारों और तर्को को प्रस्तुत किया गया है। लेखक एक ऐसी संस्कृति की कल्पना करते हैं, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्कशीलता, समानता और मानवता पर आधारित हो। यही संस्कृति समाज को प्रगति और विकास की दिशा में हमेशा अग्रेसर रहती है।

4.2.4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

(अ) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. 'नई संस्कृति की ओर' यह ..... विधा से संबंधित रचना है।

   (अ) कहानी (ब) निबंध

   (क) उपन्यास (ड) संस्मरण

2. 'नई संस्कृति की ओर' एक विचारोत्तेजक और ..... रचना है।

   (अ) उदात्त (ब) सामाजिक

   (क) प्रेरणादायक (ड) धार्मिक

3. रामवृक्ष बेनीपुरी जी का जन्म सन्..... ई. को हुआ है।

   (अ) सन् 1902 (ब) सन् 1951

   (क) सन् 1930 (ड) सन् 1920

4. रामवृक्ष बेनीपुरी ..... के विचारों से प्रभावित थें।

   (अ) डॉ. आंबेडकर (ब) महात्मा गांधी

   (क) पंडित नेहरू (ड) लालबहादुर शास्त्री

5. यह निबंध केवल विचार प्रस्तुत नहीं करता बल्कि ..... का स्पष्ट दिशा निर्देश भी देता है।

   (अ) संस्कृति (ब) प्रगतिशीलता

   (क) सामाजिक नवजागरण (ड) स्वतंत्रता

6. 'नई संस्कृति की ओर' इस विधा के रचनाकार ..... हैं।

   (अ) मोहन राकेश (ब) रामवृक्ष बेनीपुरी

   (क) हरिशंकर परसाई (ड) मोहन शेखर

7. रामवृक्ष बेनीपुरी को ..... करने में विशेष रुचि थी।

   (अ) समाज कार्य (ब) यात्रा

   (क) भगवान की आराधना (ड) अध्ययन

8. रामवृक्ष बेनीपुरी का संपूर्ण साहित्य ..... नाम से प्रकाशित हो गया है।

(अ) बेनीपुरी साहित्य (ब) बेनीपुरी रचनावली

(क) बेनीपुरी ज्ञानभंडार (ड) बेनीपुरी ग्रंथावली

9. रामवृक्ष बेनीपुरी ने 'माटी की मूरतें' नामक..... विधा की रचना की।

(अ) उपन्यास (ब) रेखाचित्र

(क) संस्मरण (ड) यात्रा साहित्य

10. रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म..... गाँव में हुआ।

(अ) बेनीपुर (ब) वणापुर

(क) माधोपुर (ड) पूर्णिया

11. रामवृक्ष बेनीपुरी का व्यक्तित्व ..... और प्रभावशाली था।

(अ) प्रगतिशील (ब) बहुआयामी

(क) सतेज (ड) साधारण

12. रामवृक्ष बेनीपुरी का निधन ..... को हुआ।

(अ) सन् 1972 (ब) सन् 1975

(क) सन् 1968 (ड) सन् 1965

13. रामवृक्ष बेनीपुरी ने लिखे हुए नाटक का नाम ..... है।

(अ) सीता की माँ (ब) गीता की माँ

(क) पार्वती (ड) मंदोदरी

14. 'नई संस्कृति की ओर' इस निबंध में भारतीय समाज की ..... स्थिति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है।

(अ) भूतकालीन (ब) वर्तमान

(क) राजनीतिक (ड) धार्मिक

15. समाज की सारी साधनाओं की परिणति उसकी ..... में है।

(अ) प्रगति (ब) संस्कृति

(क) अर्थनीति (ड) राजनीति

16. समाज को अगर एक वृक्ष मान लिया जाए तो ..... उसकी जड़ है।

(अ) अर्थनीति (ब) राजनीति

(क) प्रकृति (ड) प्रगति

17. राजनीति तना है, विज्ञान यह उसकी टहनियाँ है और संस्कृति उसके ..... हैं।

(अ) जड़ (ब) फूल

(क) पत्ते (ड) फल

18. पुरानी संस्कृति की सरजमीन की परत पर ही नई संस्कृति की ..... खड़ी करती है।

(अ) नींव (ब) इमारत

(क) अट्टालिका (ड) प्रेरणा

19. नई संस्कृति के आधार स्वतंत्रता, समता और ..... है।

(अ) मानवता (ब) न्याय

(क) सामाजिकता (ड) बंधुता

20. रामवृक्ष बेनीपुरी एक ऐसी संस्कृति की कल्पना करते हैं, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्कशीलता, ... और मानवता पर आधारित हो।

(अ) कुलीनता (ब) समानता

(क) शालिनता (ड) अध्ययनशीलता

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए।

1. रामवृक्ष बेनीपुरी समाज में व्याप्त किस बात का विरोध करते हैं?
2. 'नई संस्कृति की ओर' यह निबंध कैसी रचना है?
3. रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म कौन-से राज्य में हुआ है?
4. रामवृक्ष बेनीपुरी अपनी शिक्षा छोड़कर कौन-से आंदोलन में सम्मिलित हो गए?
5. रामवृक्ष बेनीपुरी जी का व्यक्तित्व कैसा था?

6. रामवृक्ष बेनीपुरी का 'सीता की माँ' यह नाटक स्त्री जीवन और किसकी भावनाओं को दर्शाता है?
7. हमारी सांस्कृतिक चेतना कुछ विशेष तक सीमित न रहे तो उसमें संपूर्ण समाज की कौन-सी परिकल्पना निहित है?
8. राजनीतिक आर्थिक संघर्षों ने हमारे दिमाग को विगत पचास वर्षों से क्या बना दिया है?
9. समाज की सारी साधनों की परिणति किसमें है?
10. रामवृक्ष बेनीपुरी के अनुसार हम किस खेती के माली हैं?
11. कौन-सा तीसरा शब्द हमारे उद्देश्य को और पुष्ट कर देता है?
12. नई संस्कृति को किसकी ओर चलना और बढ़ना है?
13. आज समाज में जगह-जगह पर क्या नजर आता है?
14. रामवृक्ष बेनीपुरी लेखक, कवि और पत्रकार इकट्ठा करने के लिए क्यों कहते हैं?
15. रामवृक्ष बेनीपुरी शहरों और गाँवों में कौन-से केन्द्र खोलना चाहते हैं?
16. रामवृक्ष बेनीपुरी के मतानुसार जातिवाद, असमानता और संकीर्ण सोच समाज को कहाँ ले जाती है?
17. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्कशीलता, समानता और मानवता पर किसकी कल्पना आधारित है?
18. रामवृक्ष बेनीपुरी ने लिखे हुए संस्मरण का नाम क्या है?
19. 'माटी की मूरतें' में कहाँ के लोगों का चित्रण हुआ है?
20. 'नई धारा' इस पत्रिका का संपादन किसने किया है?

4.2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ ।

1. अवसर - मौका, सुयोग।
2. खिलाफ - विरोध में, विपरीत, प्रतिकूल।
3. व्याप्त - फैला हुआ, भरा हुआ या समाया हुआ।
4. जड़ता - जड़ होने की अवस्था, अचेतनता, मूर्खता।
5. निर्देश - समझाना, बतलाना, नियत करना।
6. उन्नत - उठा हुआ, आगे बढ़ा हुआ।
7. संकीर्ण - संकुचित, सीमित, मिश्रित, संकुचित विचार।
8. सृजन - रचना, अन्य उत्पत्ति, सृष्टि।
9. बहुआयामी - अनेक पहलुओं या आयामों वाला, बहुमुखी।
10. उन्मुक्त - स्वतंत्र, आजाद, बंधनमुक्त या खुला हुआ।
11. आजीवन - जीवनभर, पूरे जीवनकाल के लिए या मृत्यु तक।

12. यथार्थ – जैसा होना चाहिए ठीक वैसा, उचित।
13. भौगोलिक – भूगोल, प्रादेशिक या किसी विशेष भूभाग से संबंधित होता है।
14. ओजस्वी – तेजवान, कांतिमान, प्रभावशाली, शक्तिमान या कांतियुक्त होता है।
15. रोचक – मनोरंजक, प्रिय।
16. परिणति – झुकाव, किसी वृद्धि या विकास के परिणाम को दर्शाती है।
17. दायित्व – जिम्मेदारी, कार्यभार, उत्तरदायित्व, कर्तव्य।
18. परिकल्पना – किसी बात की कल्पना करना, अनुमान करना।
19. निहित – स्थापित, सौंपा हुआ, किसी के भीतर छिपा हुआ या बटोरना या ढँकना।
20. मूँद – ढाँकना।
21. विगत – बीता हुआ, व्यतीत, पिछला, अतीत।
22. कुंठित – मंद, अवरुद्ध या हताश।
23. पथराई – पत्थर की तरह कठोर, निर्जीव या भावशून्य हो जाना।
24. हल – समाधान, निपटारा।
25. आलोक – देखना, रोशनी, दृष्टि, प्रकाश रोशनी।
26. सितारे – तारा, नक्षत्र।
27. सरजमीन – देश, मुल्क, इलाका, भूमि या पृथ्वी।
28. अट्टालिका – बड़ा या ऊँचा मकान, महल, अटारी, घर के सबसे ऊपर का कमरा, छत।
29. विरासत – पूर्वजों, अतीत या पिछली पीढ़ियों से प्राप्त अमूल्य धरोहर, संपत्ति।
30. सड़न – सड़ने की अवस्था, फल आदि की सड़न।
31. घुन – एक बहुत छोटा कीड़ा जो अनाज, लकड़ी या सूखी खाने की चीजों में लगता है।
32. हिचकना – किसी कार्य को करने में संकोच, डर या हिचकिचाहट के कारण रुकना।
33. पुनर्गठित – किसी संस्था, संगठन या वस्तु को फिर से गठित करना, व्यवस्थित करना।
34. हट्ट–कट्ट – स्वस्थ, तंदुरुस्त और गठीले शरीर वाला।
35. अभियोग – दोषारोपण, आक्षेप।
36. प्रतिबिंबित – परछाई या छायांकित, परिलक्षित।
37. परिपूरित – अच्छी तरह से भरा हुआ, लबालब, संपूर्ण।
38. कूची – ब्रश (पेंटिंग ब्रश) या सफेदी करने के लिए बाँस की या बाँस का झाड़ू।
39. अभिजात – कुलीन, उच्च कुल में उत्पन्न, सुसंस्कृत।
40. परिमित – सीमित, निश्चित, नपा–तुला या जिसकी सीमा निर्धारित हो।
41. पीर–रुदन – पीड़ा या दुःख के कारण रोना–विलाप करना।
42. अवरुद्ध – रुका हुआ, बाधित, बंद।

43. निर्झरिणी – पहाड़ी नदी, झरना, बहती हुई धारा।
44. पिंजराबद्ध – पिंजरे में बंद या पिंजरे में कैद।
45. विहंगी – मादा पक्षी, चिड़िया या पंख और चोंच वाली मादा।
46. विथ्वी – पेड़, वृक्ष या पौधा।
47. फुनगी – पेड़–पौधों की शाखाओं, टहनियों या घास का सबसे ऊपरी सिरा, चोटी या अग्रभाग।

4.2. 6. **स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।**

प्रश्न 1, अ) उचित पर्याय का चयन।

1.	ब	निबंध	11.	ब	बहुआयामी
2.	क	प्रेरणादायक	12.	क	सन १९६८
3.	अ	१९०२	13.	अ	सीता की माँ
4.	ब	महात्मा गांधी	14.	ब	वर्तमान
5.	क	सामाजिक नवजागरण	15.	ब	संस्कृति
6.	ब	रामवृक्ष बेनीपुरी	16.	अ	अर्थनीति
7.	अ	समाजकार्य	17.	ब	फूल
8.	ड	बेनीपुरी ग्रंथावली	18.	क	अट्टालिका
9.	ब	रेखाचित्र	19.	अ	मानवता
10.	अ	बेनीपुर	20.	ब	समानता

आ) एक वाक्य में उत्तर ।

1. रामवृक्ष बेनीपुरी समाज में व्याप्त अंधःविश्वास, जातिवाद और कुरीतियों का विरोध करते हैं।
2. 'नई संस्कृति की ओर' यह विचारोत्तेजक और प्रेरणादायक रचना है।
3. रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म बिहार राज्य में हुआ।
4. रामवृक्ष बेनीपुरी अपनी शिक्षा छोड़कर असहयोग आंदोलन में सम्मिलित हो गए।
5. रामवृक्ष बेनीपुरी का व्यक्तित्व विद्रोही और उन्मुक्त था।
6. रामवृक्ष बेनीपुरी का 'सीता की माँ' यह नाटक स्त्री जीवन और भावनाओं को दर्शाता है।
7. हमारी सांस्कृतिक चेतना कुछ विशेष तक सीमित न रहे तो उसमें संपूर्ण समाज की 'सत्यम् शिवम् सुंन्दरम' की परिकल्पना निहित हो।
8. राजनीतिक आर्थिक संघर्षों ने हमारे दिमाग को विगत पचास वर्षों से कुंठित बना दिया है।
9. मानव समाज की सारी साधनों की परिणति संस्कृति में है।
10. रामवृक्ष बेनीपुरी के अनुसार हम गुलाब खेती के माली हैं।

11. मानवता यह तीसरा शब्द हमारे उद्देश्य को और पुष्ट कर देता है।
12. नई संस्कृति को सौंदर्य और आनंद की ओर चलना और बढ़ना है।
13. आज समाज में जगह-जगह पर कुरूपता नजर आती है।
14. रामवृक्ष बेनीपुरी लेखक, कवि और पत्रकार इकट्ठा करने के लिए कहते हैं।
15. रामवृक्ष बेनीपुरी शहरों और गाँवों में सांस्कृतिक केन्द्र खोलना चाहते हैं।
16. रामवृक्ष बेनीपुरी के मतानुसार जातिवाद, असमानता और संकीर्ण सोच समाज को पीछे ले जाती है।
17. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्कशीलता, समानता और मानवता पर संस्कृति की कल्पना आधारित है।
18. रामवृक्ष बेनीपुरी ने लिखे हुए संस्मरण का नाम 'माटी की मूरतें' है।
19. 'माटी की मूरते' इस रचना में गाँव के लोगों का चित्रण हुआ है।
20. 'नई धारा' इस पत्रिका का संपादन रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने किया है।

4.2.7. सारांश।

1. यह निबंध भारतीय समाज में व्याप्त पुरानी रूढ़ियों, अंधःविश्वासों और सामाजिक कुरीतियों की आलोचना करता है। बेनीपुरी जी बताते हैं कि यह जड़ परंपराएँ समाज की प्रगति में बाधा बनती हैं और व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा विकास को रोकती हैं। इसलिए वे इन पुरानी मान्यताओं को त्यागने की आवश्यकता पर बल देते हैं।
2. लेखक एक ऐसी नई संस्कृति की स्थापना की बात करते हैं, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्कशीलता, समानता, स्वतंत्रता और मानवता पर आधारित हो। इस नई संस्कृति में जाति-भेद, ऊँच-नीच और सामाजिक अन्याय के लिए कोई स्थान नहीं है।
3. निबंध में यह भी स्पष्ट किया गया है कि इस परिवर्तन में युवावर्ग की महत्वपूर्ण भूमिका है। युवा ही नई सोच अपनाकर समाज को प्रगतिशील दिशा में ले जा सकते हैं। साथ ही साथ, लेखक राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता पर भी विशेष बल देते हैं।
4. 'नई संस्कृति की ओर' निबंध का सार यह है कि समाज को पुरानी संकीर्णताओं से मुक्त होकर नई प्रगतिशील और मानवीय संस्कृति को अपनाना चाहिए, जिससे एक समतामूलक और विकसित राष्ट्र का निर्माण हो।

4.2.8. स्वाध्याय।

अ) लघुत्तरी प्रश्न।

1. लेखक ने युवाओं की भूमिका को किस प्रकार महत्वपूर्ण बताया है?

2. लेखक की दृष्टि से नई संस्कृति से क्या अभिप्राय है?
3. समाज में परिवर्तन की आवश्यकता क्यों होती है?
4. लेखक ने सामाजिक कुरीतियों के विषय में कौन-से विचार व्यक्त किए हैं?
5. लेखक की भाषा-शैली की विशेषताएँ लिखिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न।

1. 'नई संस्कृति की ओर' निबंध के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए ।
2. पुरानी और नई संस्कृति में होनेवाले अंतर का विवेचन कीजिए।
3. लेखक के अनुसार नई संस्कृति के प्रमुख तत्व कौन-कौन से हैं?
4. नई संस्कृति के निर्माण में शिक्षा के होनेवाले योगदान पर प्रकाश डालिए।
5. निबंध में लेखक ने किस प्रकार प्रगतिशील दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है? स्पष्ट कीजिए।
6. नई संस्कृति के निर्माण में मानवता और समरसता के स्थान का विवेचन कीजए?
7. 'नई संस्कृति की ओर' इस निबंध का आशय स्पष्ट कीजिए।

4.2.9. क्षेत्रीय कार्य।

1. अपने परिवेश की वर्तमान संस्कृति का अध्ययन किजिए।
2. निबंध में व्यक्त विचारों के आधार पर वर्तमान संस्कृति पर निबंध लिखिए।
3. अपने आस-पास के समाज में प्रचलित अंधःविश्वास, कुरितियाँ और जड परंपराओ पर रिपोर्ट तैयार किजिए।

4.2.10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

1. 'रामवृक्ष बेनीपुरी ग्रंथावली' - रामवृक्ष बेनीपुरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. 'नई संस्कृति की ओर' (निबंध संग्रह) - रामवृक्ष बेनीपुरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. 'हिंदी निबंध साहित्य का इतिहास' - डॉ. रामचंद्र तिवारी, ग्रंथ अकादमी, दिल्ली।
4. 'आधुनिक हिंदी निबंध' - डॉ. नगेंद्र, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ।
5. 'स्वतंत्रता संग्राम, समाजवाद और रामवृक्ष बेनीपुरी'-डॉ.अजीत कुमार पुरी, हंस प्रकाशन, दिल्ली।
6. 'रामवृक्ष बेनीपुरी' - रामवचन राय - साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।

❑❑❑

इकाई– 4

निबंध

4.3. नीलकंठ– हरिशंकर परसाई

अनुक्रम

4.3.1. उद्देश्य

4.3.2. प्रस्तावना

4.3.3. विषय विवेचन

4.3.3.1 हरिशंकर परसाई का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

4.3.3.2 'नीलकंठ' निबंध का परिचय।

4.3.3.3 'नीलकंठ' निबंध का आशय एवं विषय विवेचन।

4.3.4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

4.3.5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

4.3.6. स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।

4.3.7. सारांश।

4.3.8. स्वाध्याय।

4.3.9. क्षेत्रीय कार्य।

4.3.10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

4.3.1 उद्देश्य

इस निबंध का अध्ययन करने के बाद विद्यार्थी–

1. हरिशंकर परसाई के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
2. मनुष्य की आडबंरवादी, झूठी और दिखावटी प्रवृत्ति पर लेखक ने किए व्यंग से अवगत होंगे।

3. समाज में अपने दुःख का रोना रोनेवाले लोगों की वास्तविकता से परिचित होंगे।
4. समाज की विसंगतियाँ और मनुष्य स्वभाव की कमजोरियाँ आदि से अवगत होंगे।
5. लेखक के व्यंग्य से परिचित होकर उनके विचारों से अवगत होंगे।

4.3.2. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के मूर्धन्य व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई द्वारा रचित 'नीलकंठ' एक अत्यंत प्रसिद्ध और चर्चित निबंध है। यह निबंध मानव स्वभाव की कमजोरियाँ दिखावटी प्रवृत्ति और अपने त्याग, कष्ट आदि का प्रदर्शन करनेवाली प्रवृत्ति को रेखांकित करता है ।

यह निंबध लेखक की प्रसिद्ध व्यंग्य शैली का उल्लेखनीय उदाहरण है। इसमें लेखक ने स्वार्थी, दिखावा करनेवाले और संवेदनाहीन लोगों पर तीखा व्यंग किया है। लेखक का कहना है कि इन लोगों के कारण समाज के जो सच्चे और त्यागी लोग हैं उन्हे तो सम्मान और प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए उन्हे न मिलकर झूठे स्वार्थी और अवसरवादी लोगों को मिलती है।

4.3.3 विषय विवेचन :

हिंदी के प्रसिद्ध व्यंगकार हरिशंकर परसाई ने अपने साहित्य लेखन से हिंदी साहित्य में अपना एक अलग स्थान स्थापित किया है । हिंदी साहित्य में व्यंग को एक विधा के रूप में स्थापित करने में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के सभी क्षेत्रों की विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक ढंग से तीखा प्रहार किया है। उनकी रचनाओं का व्यंग्य केवल हास्य उत्पन्न नही करता, बल्कि पाठक को गंभीरता से सोचने के लिए विवश करता है। 'नीलकंठ' यह निबंध उसी का एक अच्छा उदाहरण है। परसाई जी के निबंधों की भाषा बोलचाल की हिंदी है, जिसमें तत्सम और विदेशी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

4.3.3.1 हरिशंकर परसाई का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

जीवन परिचय:

हरिशंकर परसाई हिंदी साहित्य के प्रमुख व्यंग्यकारों में से एक हैं। उन्होंने अपनी तीखी, व्यंग्यपूर्ण और सामाजिक चेतना से भरपूर रचनाओं के माध्यम से समाज की विसंगतियों पर प्रहार किया है। हरिशंकर परसाई जी का जन्म दि. 22 अगस्त, सन् 1924 ई. को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी गाँव में हुआ था। उनका निधन दि. 10 अगस्त, सन् 1995 ई. को हुआ। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में प्राप्त की और आगे की पढ़ाई नागपुर विश्वविद्यालय से की। परसाई जी का जीवन संघर्षपूर्ण रहा। उन्होंने कुछ समय तक अध्यापन कार्य भी किया, लेकिन बाद में पूर्ण रूप से लेखन को ही अपना जीवन बना लिया।

आरंभिक शिक्षा से लेकर स्नातक तक की शिक्षा मध्य प्रदेश में ही संपन्न हो गई। उन्होंने हिंदी में स्नातकोत्तर की उपाधि नागपुर विश्वविद्यालय से प्राप्त की। उसके उपरांत कुछ वर्ष तक अध्यापन कार्य भी किया। मेधावी एवं कुशाग्र बुद्धि के होने के कारण उनका मन अध्यापन में नहीं लगा और कालांतर में स्वतंत्र रूप से साहित्य सृजन में तल्लीन हो गए। व्यंग्य को एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थापित करने में परसाई जी का योगदान उल्लेखनीय है।

व्यक्तित्व:

हरिशंकर परसाई जी का व्यक्तित्व अत्यंत सरल, स्पष्टवादी और निर्भिक था। वे समाज की बुराइयों पर न डरकर खुलकर लिखने का प्रयास करते थें। उनमें अन्याय और पाखंड के खिलाफ आवाज उठाने का साहस था। एक दृष्टि से वे विद्रोही थें।

वे हमेशा सच लिखते थें। उनका स्वभाव हास्यप्रिय था परंतु उनकी रचनाओं में गहरी गंभीरता भी छिपी होती थी। हरिशंकर परसाई जनसामान्य के लेखक थें और आम आदमियों की समस्याओं को अपनी लेखनी का विषय बनाते थें। समाज में बढ रहे अन्याय पाखंड और शोषण से वे बैचेन होते थें और अपनी बैचेनी को व्यंग्य के माध्यम से अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करते थें। उनका स्वभाव निर्मित और राष्ट्रवादी था। उन्होंने हमेशा समाज के खोखलेपन पर करारा प्रहार किया।

परसाई जी ने रूढिवादिता और सामाजिक पाखंड का विरोध करते हुए विवेक और वैज्ञानिक दृष्टिकोन को स्थापित किया। उनके व्यक्तित्त्व में व्यंग्य के साथ-साथ गहरी संवेदनशीलता भी दिखाई देती है। वे अपने साहित्य सृजन को एक सामाजिक कर्म के रूप में देखते थे। उनका मानना था कि सामाजिक अनुभव के बिना सच्चे और वास्तविक साहित्य का निर्माण असंभव है। उनकी रचनाओं में हमें समाजिक समय का रचनात्मक उपयोग किया दिखाई देता है। सामाजिक और राजनीतिक जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं शोषण पर करारा व्यंग्य करना उनके व्यक्तित्व और साहित्य की प्रमुख विशेषता है।

कृतित्व:

हरिशंकर परसाई जी हिंदी साहित्य के विशिष्ट व्यंग्यकार के रूप में जाने जाते हैं। परसाई जी ने व्यंग्य को केवल मनोरंजन के बजाय सामाजिक-राजनीतिक कुरीतियों पर प्रहार करने का सशक्त माध्यम बनाया। उन्होंने कुरीतियों, भ्रष्टाचार, पाखंड के खिलाफ तीखी लेखनी चलाई।

सन् 1956 ई. में 'वसुधा' नामक पत्रिका का संपादन कार्य भी किया। इनकी मौलिक रचनाओं पर जबलपुर विश्वविद्यालय ने उनको डी.लिट् की मानद उपाधि प्रदान की। सन् 1982 ई में 'विश्व शांति सम्मेलन' में भारत के प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में उन्होंने सोवियत रूस की यात्रा भी की। सन् 1982 ई. में उन्हें साहित्य अकादमी से सम्मानित किया गया है। 'विकलांग श्रद्धा का दौर' इस रचना के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था। 'भोलाराम का जीव' और 'प्रेमचंद के फटे जूते' उनकी

कालजयी रचनाएँ हैं। हरिशंकर परसाई जी ने 'तिरछी रेखाएँ' नाम का संस्मरण भी लिखा। उनकी भाषा सरल, सीधी, लेकिन बेहद तीखी और मारक भी है।

हरिशंकर परसाई ने अपनी रचनाओं में वर्तमान जीवन की विसंगतियों, विडंबनाओं एवं विद्रूपताओं का पर्दाफाश किया है। अपनी व्यंग्य शैली से वर्तमान समाज की विद्रूपताओं, मिथ्याचारों एवं पाखंडपन का नग्न चित्र उतारा है। स्वार्थी, ढोंगी और दोहरे व्यक्तित्व के सामाजिक ठेकेदारों एवं राजनीतिक नेताओं की खबर उन्होंने कलात्मक धारदार व्यंग्य शैली में ली है। इसीलिए वे सुविख्यात व्यंग्यकार के रूप में मशहूर हैं। 'बेईमानी की परतें', 'सदाचार का ताबीज', 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र' और 'अंत में' आदि उनके निबंध संग्रह हैं। उन्हें लघु निबंध एवं व्यंग्य विनोद में विशेष ख्याति प्राप्त है। प्रस्तुत संकलन में ही उनका 'नीलकंठ' नामक निबंध संग्रहित है। इसमें हल्के-फुल्के ढंग से गंभीर कथ्य का सृजन किया है। जीवन के अंत तक वे लिखते रहे। अंत में सन् 10 अगस्त, सन् 1995 ई. को उनका निधन हो गया।

4.3.3.2 'नीलकंठ' निबंध का परिचय

हरिशंकर परसाई के 'नीलकंठ' निबंध में लेखक ने समाज में फैली स्वार्थपरता, दिखावा और मानवीय संवेदनहीनता पर तीखा व्यंग्य किया है। यह निबंध उनकी प्रसिद्ध व्यंग्य शैली का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। निबंध में 'नीलकंठ' प्रतीक के माध्यम से ऐसे व्यक्ति का चित्रण किया गया है जो समाज की बुराइयों, दुःखों और विषमताओं को सहन करता है, ठीक वैसे ही जैसे भगवान शिव ने समुद्र मंथन का विष पिया था। परसाई जी बताते हैं कि समाज में सच्चे और त्यागी व्यक्ति का सम्मान कम होता है, जबकि स्वार्थी और अवसरवादी लोग अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते हैं।

लेखक ने सरल, रोचक और व्यंग्यपूर्ण भाषा का प्रयोग करते हुए मानव स्वभाव की कमजोरियों को उजागर किया है। इस निबंध का मुख्य उद्देश्य समाज को नैतिकता, संवेदनशीलता और मानवता का संदेश देना है। 'नीलकंठ' निबंध पाठकों को सोचने के लिए मजबूर करता है कि समाज में सच्चे त्याग और ईमानदारी का कितना आवश्यक है।

'नीलकंठ' निबंध में हल्के-फुल्के ढंग से गंभीर कथ्य को प्रस्तुत किया है। जैसे कहते हैं, शंकर ने जहर पी लिया था। पर वे विष पचा गए, रंग नहीं पचा पाए। रंग पचाना आसान नहीं है। इस पौराणिक प्रसंग से लेखक आज के मनुष्य की प्रवृत्ति का एक-एक कर व्यंग्य विनोद में विश्लेषण करते हैं। रंग यहाँ स्वभाव, वृत्ति का प्रतीक है। इससे लेखक, अपने तीक्ष्ण व्यंग्य बाणों से सामाजिक विसंगति, पाखंड, दिखावेपन और विकृतियों की धज्जियाँ उड़ा देते हैं। निबंध में अरबी, फारसी और अंग्रेजी शब्दों का निसंकोच प्रयोग किया है। उनकी शैली विशुद्ध व्यंग्यात्मक है। लोकोक्तियाँ और मुहावरों का प्रयोग सार्थक है। शैली में एक ऐसा निजीपन विद्यमान है कि पाठक निबंध को इतने मनोयोग से पढ़ता है, कि मानो किसी की रसभरी बात सुन रहा हो।

4.3.3.3 'नीलकंठ' निबंध का आशय एवं विषय विवेचन :

हरिशंकर परसाई के 'नीलकंठ' निबंध समाज की विसंगतियों और मानव स्वभाव की कमजोरियों पर आधारित है। इस निबंध में लेखक ने 'नीलकंठ' को एक प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है।

लोग कहते हैं की शंकर भोलेनाथ ने जहर पी लिया था। यह जहर मानव जाति और संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए अतिशय भयंकर और घातक विष था। जहर की ज्वाला से संपूर्ण संसार या ब्रह्मांड (चराचर सृष्टि) बैचन हो उठी। उस जहर को शंकर भगवान सहज पी गये। लेखक कहते है, बडा अच्छा किया, बडी बहादुरी की। लेकिन मेरे मन में एक सवाल उठता है कि गले को (कंठ को) नीला क्यो होने दिया? भगवान शंकर तो अंतर्यामी और अलौकिक शक्ति से भरे पूरे थें। यदि वे चाहते की जहर पीने के बाद भी वे गले का नीला रंग मिटा सकते थें। लेकिन उन्होने ऐसा क्यों नही किया? हमें लगता है की शायद उन्होंने विचार किया होगा कि कम से कम लोग यह जान ले की उन्होंने जहर पी लिया है। भला यह भी कोई बात है की जहर भी पियें और लोगों को मालूम भी न हो। नीला कंठ दिखाने के मोह पर भगवान शंकर काबू नहीं कर सके। वे जहर तो पचा गए लेकिन रंग नहीं पचा पाए। रंग पचाना यह आसान काम नहीं है। मुझे तो संदेह है कि यदि कंठ नीला पडने का यकीन होता तो शायद शंकर भगवान जहर पी नहीं पीते इन्कार कर देतें।

अपनी इच्छा से जहर पीने में या विष पान करने में 'नील-कंठता' एक बडा आकर्षण है। हमारी हमेशा यह कोशिश होती है की जहर कम पीना और कंठ या गला अधिक से अधिक नीला हो। हमारे समाज के कुछ लोग तो ऐसे ढोंगी होते हैं कि विष न पीकर भी अपने गले पर नीली स्याही लगाकर नीलकंठ बनकर घूमते हैं।

लेखक समाज की आडबंरी और दिखावटी प्रवृत्ति का व्यंग्यात्मक चित्रण करते हुए कहते है, हमारे एक सज्जन आजादी के संग्राम में संमिलित हो गये थे। सौभाग्य वश हमारी स्वातंत्र्य सेना विजयी हो गई परंपरा के अनुसार सबको पता है कि युद्ध में विजेता पक्ष विजित में लूटमार करता है। पर हमारे संग्राम में तो विजेता पक्ष सात समुंदर पार बम बनाने का काम करने लगे। उसे लोग कैसे जाकर लूटते? इसलिए विजेता पक्ष ने एक नई परंपरा चलाई । वे तो अपने ही पक्ष में लूटमार करने लगे। कथित सज्जन इस युद्ध में पहली कतार में थें, इस नए शूर कर्म या काम में अंतिम पंक्ति या कतार में आ गए। उनके हाथ में कुछ भी नही लगा, उसके उपरांत बैठे-बैठे ये घाव दिखाकर लोगों के सामने झूठी सहानुभूति अर्जित करने लगे। आजादी के संग्राम में कुछ लोगों का बेकार समय बितानेवाले आलसी (निठ्ठल्लेपण) के संस्कार दिए थें। वे मजे में कष्ट भुगतने लगे। इस संदर्भ में लोग कहते थें कि, 'बेचारा बडी तकलीफ उठा रहा है।' ऐसा वाक्य सुने पर यह महाशय बडे हर्षित होते है । उन्हें गर्व और आनंद होने लगता। अगर उन्हें कोई काम धंदा भी मिल जाता तो वे नहीं करते। स्वातंत्र्यवीर जो ठहरे वे नोकरी कैसे करे। विक्टोरिया क्रॉस वाला किसी सेठ के फाटक पर पुरानी वर्दी में चौकीदारी कैसे करे? कुछ दिनों के बाद यह दुःख के घाव भर गए और उनको देखनेवाले लोग अब कम हो गए। तब उस सज्जन ने एक अच्छी नौंकरी करने का प्रयास किया।

आगे लेखक एक दुसरा उदाहरण देते हुए कहते है, अपने नजदीक का मेहमान था परिवार का व्यक्ति का देहांत हो जाने पर सिर मुँडाने के और चाहे जो भी कारण हो, एक बात तो है की दुःख स्पष्ट दिखे और उसे समाज में मान्यता मिले। सर के बाल काटकर ऐसा विचित्र रूप देखकर हमें जब कोई परिचित व्यक्ति मिल जाता है तो उस व्यक्ति को सामनेवाला व्यक्ति का ऐसा रूप देखकर हँसी आ जाती है। लेकिन फिर भी समाज को दिखाने के लिए वह अचानक शोक व्यक्त करने का नाटक करता है और सामनेवाले व्यक्ति को बडी गंभीरता से पूछता है, ''क्यों भाई, सब कुशल तो है? भैय्या माताराम नहीं रही'' उसे अध्ययन से अनुभवी जवाब मिलता है वह और मुँह लटकाता है–

''राम राम। भैय्या, बडा बुरा हुआ। क्या बीमारी थी?''

''क्या बताऊँ भैय्या। कुछ पता ही नहीं चला। बात करते–करते चल दी।''

''राम–राम! कैसी अच्छी मौत पायी है माताराम ने! बडी पुण्यात्मा रहीं।''

लेखक आगे कहते है कि मेरे एक दोस्त के चाचा का देहांत हो गया। चाचा को संतान नहीं थी इसलिए सब क्रियाकर्म मेरे दोस्त को ही करना था। सब संपत्ति का मालिक दोस्त ही होनेवाला था। भतीजा यानी मेरे दोस्त ने चाचा की अंतिम संस्कार की तैयारियाँ शुरू की। उन्होनें चाचा की अर्थी इतनी प्रसन्नता से बाँधी जैसे अपने ही शादी में मंडप बाँध रहा हो। उसने इस शोक में ऐसे सिर घुटा मानो बरसो की इच्छा पूरी हो गई हो। श्याम को मेरे साथ घुमने निकला। रास्ते में उसे दोस्त, मेहमान, रिश्तेदार या पडोसी ऐसे जो भी लोग मिलते, उसी के साथ वह दुःखी होकर कहता, ''भैय्या, तुमने तो सुन ही लिया होगा। हम पर वज्रपात हो गया।'' परिचित लोग यह सुनकर जब आगे बढ जाते तब वह फिर से खुश हो जाता। उसे पुनः कोई मिलने क उपरांत वह फिर से अपना निराश मुँह बना लेता और कहता कि, ''आपने तो सुन ही लिया होगा हम पर दुःख का पहाड टूट पडा। रास्ते में हमे 8-10 हमारे पहचान के लोग मिले लेकिन उनमें से किसी ने भी वज्रपात और पहाड टूटने की बात नहीं सुनी थी। उन सभी से मेरे दोस्त ने यह बात सुनायी। इसका मतलब यह है की, संपत्ति के मोह में लोग कितने दोगले निकले हैं। लोगों को दिखाने के लिए दुःख का नाटक करते हैं, मगर अंदर से संपत्ति मिलने के लालच में बहुत खुश होते हैं मगर वह दिखाते नही है।

निबंधकार परसाई आगे कहते हैं कि कुछ लोगों को अजीब–सी बुरी आदत होती है । दुःख में वह कुछ अलग ही हरकतें करते हैं। जैसे कि हमारे शरीर पर एखाद फोडा आता है। फोडा आदमी से सहा नहीं जाता, वह बहुत दर्द देता है। पर कुछ लोग ऐसे भी हैं कि फोडे को दबाकर या छोडकर भी वह उस दर्द का मजा लेते हैं। इसे मीठा दर्द कहते हैं। कुछ लोगों को तो दाद खुजलाने का आनंद ब्रह्मानंद की कोटी का होता है। उन्हे दुसरो को तकलीफ देने में मजा आता है। ऐसे लोगों को जब दर्द का चस्का या आदत लग जाती है। तो कुछ लोग फोडे को हाथ में लिए उसे दबाने का मजा लेते हैं। फिर तो उसका वह बुरा काम या दर्द उसका व्यसन हो जाता है। और इससे उन्हे प्राणसर भी मिलने लगता है। इस तरह कुछ लोगों को दुःख में तकलीफ देंने मे मजा आता है।

जिस आदमी को दर्द का मजा लेने की आदत बन जाती है, उसके संदर्भ में लेखक और भी एक प्रसंग बताते हैं । वे कहते हैं कि एक भले आदमी को मैं जानता हूँ, जिस आदमी को दर्द का मजा लेने की बुरी आदत लगी थी। एक आदमीने सामनेवाले से दो सौ रूपये कर्ज लिया था। पूरा एक साल हो गया । लेकिन उसने दो सौ रूपये का कर्ज नही चुकाया। तब जिसने पैसे दिए थे, उन्होंने रोना शुरू कर दिया। लेकिन मैंने एक विचित्र बात देखी कि रोने-कुढने के बाद उसके मुख पर बडी प्रसन्नता और ताजगी आ जाती। उसका चेहरा हर्ष से खिल उठता। कर्जदार ने उस महाशय से एक दिन कहा कि मैंने आपसे दो सौ रूपये का कर्ज लिया था। उनमें से अब मैं हर माह मे पचास रूपये लौटा दूँगा। इस तरह कुल मिलाकर चार माह में आपके पैसे लौटा दूँगा। इसी तरह वह पचास रूपये तुरंत देने लगा। पर यह सज्जन पैसे लेने के लिए तैयार नही थें। तब वह कहते, ''नही भाई हम ऐसा नहीं करते। जैसे दो सौ ले गए थें, वैसे ही दे जाना।'' वह कर्जदार मान गया और फिर कभी नहीं आया। फिर वह सज्जन अपने हर मित्र के पास अपना दुःख दर्द कथन करते और रोते। उनमें से जब कोई कहता, ''आपको लोग बहुत तंग करते हैं। आप बडा नुकसान उठाते हैं।'' तब यह भला आदमी प्रसन्न हो जाता। मुझे बडी देर के बाद समझ आया कि उसने रूपये वापिस क्यों नही लिए। यदि वे रूपये उस कर्जदार से लेते तो उनका रोने-कुढने का जो मजा है, वह नष्ट हो जाता। दो सौ रूपये उन्होंने बँक में डाल रखे थें। जो उन्हें कुढने और शिकायत के रूप में जो ब्याज मिलता था। उससे हर दिन का गूजर करते थें। ऐसे आदमी मुझे हठयोगी लगते हैं । याने शरीर और मन की ऊर्जा को संतुलित करने का अभ्यास ही 'हठयोग' है। वे काँटों पर पडे है और भीड देख रही है।

एक बात हम और तबाना चाहते है कि जब हम यह अनुभव करते हैं कि हम औरों से अधिक कष्ट करते है। उस समय हमें गर्व होता हैं। दूसरे व्यक्ति के नजरों में हम गौरवशाली महसूस करते है और दुःख दर्द का ताज सिर पर रखकर घुमते हैं। उन्होंने दुःख को पूज्य मान लिया है। लेकिन सच बात तो यह है कि दुःख को पूज्य बनाने में सबसे ज्यादा बडा हाथ दुःख देनेवालों का है। दीन-दलित तथा गरीब लोग धन्य है कि वही स्वर्ग के राज्य के अधिकारी होंगे। ईसा ने उस समय कहा था पर उनके अनुयायियों ने उसका पालन किया। उन्होंने स्वर्ग का राज्य दीनों के लिए अलग छोडकर वह पृथ्वी का राज्य खुद भोगने लगे। पर बात यह भी है की स्वर्ग के राज्य के अधिकारी भी तो बनना चाहिए। इसका विचार करके ईसा के भक्तों ने कितनी जातियों को, करोडों आदमियो को दीन ओर गरीब बना दिया। क्रुसेड का मतलब उन धार्मिक सैन्य अभियानों को कहा जाता है। जो 11 वीं से 13 वीं शती के बीच युरोपीय ईसाई शक्तियों द्वारा मुख्य रूप से मुसलमानों के खिलाफ लडे थें। इसी क्रुसेड के जमाने से लेकर इस शीतयुद्ध के जगाने तक स्वर्ग के अधिकारी बनाए जा रहे हैं। और समय आने से पहले स्वर्ग भेजे जा रहे हैं।

हमें यह पता नहीं कि यह स्वर्ग का राज्य कहाँ है । पृथ्वी पर तो यह अभी तक दिखाई नहीं दिया। परंतु साम्यवादी लोग स्वर्ग का राज्य पृथ्वी पर लाने का प्रयास कर रहे है । जिसमें वर्गहीन और समतावादी रचना होनी चाहिए। वे सही मायने में दीन-दलित और गरीब लोगों को आगे लाने का प्रयास करते हैं। परंतु वे ईसा को नहीं मानते। ईसा के भक्तों के साथ भी इन साम्यवादी लोगों की लडाई है। ईसा ने उनके

अनुयायियों को या भक्तों स्वयंम शापित किया? क्या अपने वचन को पूरा करने का कार्य उन्हे सौपा जो ईश्वर के अस्तित्व को नही मानते है।

लेखन ने दुःख को पूज्य मान लिया है। क्योंकि लोगों को संपन्नता दिखानें की जीतनी तीव्र इच्छा व्यक्ति को होती है उससे ज्यादा इच्छा गरीबी दिखाने की होती है। कुछ लोग गरीबी से शरमाते नहीं। बल्कि उसे ज्यादा महत्त्व देते हैं। जो आदमी दुःख को श्रेष्ठ मानता है या उसकी जय बोलता है। सही मायने में दुःख ही व्यक्ति को महान बनाता है। वे सुरासर धोखा देते है। दुःख यह व्यक्ति को बडा भी बना देता है और नीचा भी दिखा सकता है। क्योंकि दुःख की बात हमारे मन पर लगती है और हम निश्चय करते है कि मैं इसे अच्छा करके ही रहूँगा। तभी तो हम बडा बन सकते हैं। यही दुःख आदमी को उेाले में ला सकता है, तो कालकोठरी में भी डाल सकता है। वे आदमी घोर निराशा से डूबे होते है 'जो दुःख का हाथ जोडकर स्वागत करते है' उनका कहना है, ''पधारे म्हारो महाराज! हम तो कृतार्थ हो गए।'' दुःख बहुत ही बुरा और निंदनीय है और त्यागने योग्य है । पर इसको क्यों इतने आसमान पर चढाया है। इस बारे में कहते हैं–

''गर्दिशे ऐय्याम तेरा शुक्रिया।

हमने हर पहलू से दुनिया देख ली।''

उनका मानना है कि बुरा वक्त या संकट आया यह बहुत अच्छा हुआ । हम आपका दिल से धन्यवाद देते है। क्योंकि उसकी वजह से हमें हर पहलू में दुनिया का सच्चा चेहरा हमारे सामने आया। अब हम सावधान रहेंगे। यह ठिक है कि, दुनिया तुम्हारे सामने खुल गयी। दोस्त लोगों ने हमें धोखा दे दिया। अपने ही लोग पराए होने लगे। लोग सिर्फ अपना स्वार्थ देखते हैं। पर इसमें लोगों ने इस्तेमाल किया और फेंक दिया ऐसी स्थिति हो गई। उन्होंने हमें सलाद जैसा कुचल डाला, भला यह भी कोई संतोष हुआ की हम डुबे तो डुबे तुम्हें तो नंगा नहाते देख लिया। यहाँ समाज के लोगों की प्रवृत्ति पर लेखक का तीखा व्यंग देखा जा सकता है।

लेखक को दुःख का ऐसा गर्व बहुत बार गलत लगता है। वैसे देखे तो जहर नहीं पीना चाहिए। यदि आपको किसी की वजह से पीना ही पडे तो दूसरे लोगों का अच्छा हाने के लिए जरूरत पडने पर पी सकते हो। लेकिन इसका दिखावा मत करो। याने कंठ को नीला करके मत घुमो। क्योंकि यहाँ पर लोग दुःख का व्यापार करके घुमते रहते हैं। थोडा काम करते हैं मगर लोगों को मिर्च मसाला डालकर विस्तृत रूप से सिर्फ बताते रहते हैं।

एक दिन में प्रकाशक से मेरे लिखे हुए कुछ किताबों को विक्री से मिलने वाली निर्धारित रक्कम या अपना हिस्सा माँगने गया। प्रकाशक महोदय ने मुझे 'हैंड टू माऊथ हूँ' ऐसा कहा। इसका मतलब यह है कि जितनी कमाई होती है, उतने में ही भोजन और आवश्यक खर्च पूरे हो जाते हैं । वह अंग्रेजी नही जानता मगर हमें क्रोधित होने के लिए अंग्रेजी मुहावरों की रट लगाते हैं।

मैनें तो कुछ लोग ऐसे भी देखे हैं अपने पिता या भाई के देहांत होने के बाद सहानुभूति मिलाने के लिए दुःख के बारे में कितने बरसों तक बोलते रहते हैं। अगर वह थक गए तो वह किसी दलाल के द्वारा लंबा चौडा व्यापार करते रहते हैं। वे इतने बुरे होते हैं कि वह स्वयं बाप को भूल जाते हैं लेकिन दूसरों को भूलने नहीं देते।

एक बार मैने भी व्यापार करना प्रारंभ किया था। तब की बात है जब मैंने नौंकरी छोडकर जीविका चलाने के लिए लेखन करना शुरू किया। तब कुछ लोगो ने मुझे समझाया, उन्होंने कहा कि यह मामला बहुत गंभीर और गहरा है, तुम इसकी गहराई क्या नही समज पाओगे ? इनके ऐसा कहने के बाद मैने लेखन करना बंद कर दिया तो मेरे प्रति साहानुभूति भी प्रकट करने लगे। कुछ पेशेवर सहानुभूति प्रदर्शक होते हैं। याने की काम के दौरान दूसरो के प्रति संवेदना और सहानुभूति दिखानेवाले होते हैं। उन्हें हमारी बहुत फिक्र होती है । उनका यह काम ही होता है कि किसी का बुरा सोचने का। वे उसका पता लगाते हैं कि उस पर क्या विपत्ती आई है। कुछ लोगों का चेहरा भी ऐसा होता है कि उन्हें सरकार के द्वारा मातमपुर्सी का वेतन मिल जाता है । मातमपूर्सि का अर्थ है की दुःख के समय किसी के घर जाकर संवेदना प्रकट करना। मेरे बारे में भी वह चिंता करने लगा। वह संवेदना शब्दों द्वारा प्रकट करने लगा। वह कहता था, ''बडा दुःख उठा रहा है बेचारा! अब तो शायद खाने के भी लाले पडने लगे। चेहरे पर कितनी परेशानी नजर आती है ।'' लेकिन यह बात विलोम थी। उन्हे झूठी चापलूची करनें में अधिक मजा आता है । दूसरों की परेशानियों में यह लोग ज्यादा भाग लेते हैं।

उस समय मुझे पाठ्यपुस्तकों से दो हजार रुपये इकठ्ठा मिले। इसीलिए मैं मजे में अपना गुजारा कर रहा था। पर यह भी सच है कि मैंने ईमानदारीसे कड़ी मेहनत करने की वजह से मेरे चेहरे पर कष्ट और परेशानियों की भाव मुद्रा स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। बात ऐसी थी मैंने दुकान से नया जूता खरीद लिया था। एक जोडा पहनने पर पता चला कि वह मुझे बुरी तरह से काट रहा था। मेरा तो यही एक और दुःख था। मैं मेरे जूतों कों नहीं छोड सकता था। जिंदगी भी बिल्कुल वैसी ही काटते हुए जूतों की तरह ही है । वह भी हमें दुःख ज्यादा देती है। मैं पानी पीकर भी जहर पीने का श्रेय ले रहा था। मतलब यह है की मुश्किल काम का दिखावा करके उसका श्रेय अपने नाम करना होता है। स्याही से रँगा जाता था मैनें जल्दी ही जूता पहन लिया, क्योंकि मुझे दर्द सहा नहीं गया था। फिर उनमें दया का पात्र होना भी अच्छा अनुभव नहीं है। जब कोई व्यक्ति किसी की सहायता करने मे सक्षम होते हुए भी उसके प्रति करुणा या दया की भावना को दबाता है या उससे दूर भागता है तो यह गलत और अन्यायपूर्ण है । यह सरासर धोखा है।

पर मैं इसे देख रहा हूँ कि इस जमाने में लोगों का दोहरा शोषण चल रहा है। आज इस युग में आदमी की रोजी रोटी छीनी जा रही है । उसके हिस्से की करुणा या दया भले लोग ले रहे हैं। आज लोगों को आदमियों की कीमत नहीं है।

समाज में बहुत से पक्षी नीलकंठ के नाम पर श्रद्धा और सन्मान प्राप्त कर रहे हैं । यानी केवल नाम या बाहरी पहचान के कारण लोग उन्हें पूजनीय समझते हैं। लेखक कहते हैं कि वह चारों ओर से बहुत से नीलकंठ पक्षियों को उडते हुए देखते हैं और लोक उनकी श्रद्धा से पूजा करते रहते है । लेकिन जिसने वास्तव में विष पीने जैसा कठीण काम किया है जो सचमुच त्याग और कष्ट सह रहा है। वह समाज की भीड

में उपेक्षित और छिपा हुआ खडा है। मतलब यह है कि समाज अकसर दिखावे और बाहरी पहचान को सम्मान देता है, जब कि वास्तविकता यह है कि त्याग, पीडा और बलिदान करनेवाले व्यक्ति को पहचान नहीं मिलती।

हरिशंकर परसाईने ने 'निलकंठ' निबंध के माध्यम से समाज में व्याप्त ढोंगी, पाखंड और रूढीवादी प्रवृत्तियों पर, सामाजिक कुरतियों पर करारा व्यंग किया है।

4.3.4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

अ) निम्नलिखित वाक्यों में नीचे दिए गए पर्यायों में से उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. हरिशंकर परसाई का जन्म ..... राज्य में हुआ था।

   (अ) मध्य प्रदेश (ब) उत्तर प्रदेश

   (क) महाराष्ट्र (ड) हिमाचल प्रदेश

2. हरिशंकर परसाई का जीवन ..... रहा।

   (अ) आनंददायक (ब) संघर्षपूर्ण

   (क) अस्वस्थ (ड) समाजशील

3. हरिशंकर परसाई का जन्म..... ई. में हुआ।

   (अ) सन् 1927 (ब) सन् 1922

   (क) सन् 1943 (ड) सन् 1924

4. परसाई में अन्याय और ..... के खिलाफ आवाज़ उठाने का साहस था।

   (अ) आतंक (ब) अज्ञान

   (क) पाखंड (ड) विद्रोह

5. परसाई ने हिंदी माध्यम में स्नातकोत्तर उपाधि ..... विश्वविद्यालय से प्राप्त की।

   (अ) नागपुर (ब) दिल्ली

   (क) अमरावती (ड) मुंबई

6. परसाई ने 'नीलकंठ' निबंध के माध्यम से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, पाखंड और रूढ़िवादी मान्यताओं पर एवं ..... कुरीतियों पर करारा व्यंग्य किया है।

(अ) धार्मिक (ब) सामाजिक

(क) शैक्षिक (ड) व्यक्तिगत

7. हरिशंकर परसाई लिखित 'नीलकंठ' यह ..... विधा की रचना है।

(अ) उपन्यास (ब) निबंध

(क) जीवनी (ड) रेखाचित्र

8. हरिशंकर परसाई ने ..... नामक पत्रिका का संपादन किया।

(अ) सरस्वती (ब) चंड मलिक

(क) वसंता (ड) वसुधा

9. परसाई को जबलपुर विश्वविद्यालय ने ..... की मानद उपाधि प्रदान की।

(अ) पीएच.डी. (ब) डी.लिट्.

(क) एम.फिल. (ड) भारतरत्न

10. परसाई जी ने ..... नाम का संस्मरण लिखा।

(अ) तिरछी रेखाएँ (ब) अतीत के चलचित्र

(क) पथ के साथी (ड) लहरों के राजहंस

11. नीलकंठ अर्थात् वह व्यक्ति जो समाज के दुःख, कष्ट, अपमान और विष को स्वयं सहन करता है लेकिन दूसरों के लिए ..... का कार्य करता है।

(अ) असमाधान (ब) कल्याण

(क) शास्त्र (ड) क्रंदन

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए।

1. परसाई ने किसका रिश्ता अटूट माना है?
2. परसाई के निबंध की भाषा कौन-सी है?
3. हरिशंकर परसाई ने निबंध में कौन-सी शैली का प्रयोग किया है?
4. हरिशंकर परसाई का जन्म कौन-से जिले में हुआ?

5. हरिशंकर परसाई का निधन कब हुआ?
6. परसाई का व्यक्तित्व कैसा था?
7. हरिशंकर परसाई को 1982 में कौन से पुरस्कार से सम्मानित किया गया?
8. 'सदाचार का ताबीज' यह निबंध संग्रह किसका है?
9. हरिशंकर परसाई की कौन-सी रचना को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला?
10. भगवान शिव ने किसका विष पिया था?
11. भगवान शंकर विष तो पचा गए लेकिन क्या नहीं पचा पाए?
12. उस व्यक्ति ने दो सौ रुपये कौन-से बैंक में डाले थे?
13. दुःख आदमी को क्या बनाता है?
14. मनुष्य में कौन से गुण धीरे-धीरे कम होते जा रहे हैं?
15. आज समाज में किसका पतन हो रहा है?

4.3.5. पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

1. पाखंड - आडंबर, वेद विरुद्ध किया जाने वाला आचरण।
2. विवेक - सद्सद्विवेक बुद्धि, भले-बुरे का ज्ञान, समझ।
3. साक्षात् - आमने-सामने, समक्ष, प्रत्यक्ष।
4. उजागर - प्रकट करना, सामने लाना, प्रकाशित करना।
5. मूर्धन्य - श्रेष्ठ, सर्वोच्च।
6. निश्चल - स्थिर, अचल, दृढ़।
7. निर्भीक - निडर, बेखौफ या भय रहित, साहसी।
8. मेधावी - अत्यंत बुद्धिमान, प्रतिभाशाली, समझदार।
9. मौलिक - असली, वास्तविक, प्राथमिक आधारभूत।
10. निठल्ला - बेकार, खाली, निकम्मा, बेरोजगार, आलसी।
11. कायम - मान लेने वाला, निरंतर कर देना, प्रसंशक।
12. चस्का - लत, आदत।
13. हठयोगी - शरीर और मन से संकलित करने वाली एक प्राचीन भारतीय साधना पद्धति।
14. गर्दिश - घूमना-चक्कर, विपत्ति, दुर्भाग्य या बुरा समय।
15. कल्मष - कलुषित प्रवृत्ति की एक अत्यंत उपयोगी औषधी बूटी है।
16. मातमपूर्सी - किसी के निधन के बाद उनके परिवार वालों या संबंधियों के घर जाकर शोक व्यक्त करना, हमदर्दी जताना।

17. दुबक – भय या संकोच के कारण छिपना, सिमटना या सिकुड़कर बैठना।

4.3.6. स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।

अ) उचित पर्याय का चयन।

1. अ	मध्य प्रदेश	7. ब	निबंध
2. ब	संघर्षपूर्ण	8. ड	वसुधा
3. ड	सन् 1924	9. ब	डी.लिट्.
4. क	पाखंड	10. अ	तिरछी रेखाएँ
5. अ	नागपुर	11. ब	कल्याण
6. ब	सामाजिक		

आ) एक वाक्य में उत्तर।

1. परसाई ने प्रकृति और मनुष्य का रिश्ता अटूट माना है।
2. परसाई के निबंध की भाषा हिंदी है।
3. हरिशंकर परसाई ने निबंध में लक्षणा और व्यंजना शैली का प्रयोग किया है।
4. हरिशंकर परसाई का जन्म होशंगाबाद जिले में हुआ।
5. हरिशंकर परसाई का निधन सन् 1995 ई. में हुआ।
6. परसाई जी का व्यक्तित्व सरल, स्पष्टवादी और निर्भीक था।
7. हरिशंकर परसाई को सन् 1982 ई. में 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।
8. 'सदाचार का ताबीज' यह निबंध संग्रह हरिशंकर परसाई का है।
9. हरिशंकर परसाई के 'विकलांग श्रद्धा का दौर' इस रचना को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
10. भगवान शिव ने समुद्र मंथन का विष पिया था।
11. भगवान शंकर विष तो पचा गए लेकिन रंग नहीं पचा पाए।
12. उस व्यक्ति ने दो सौ रुपये दुःख के बैंक में डाले थे।
13. दुःख आदमी को महान बनाता है।
14. मनुष्य में सच्चाई, ईमानदारी और त्याग यह गुण धीरे–धीरे कम होते जा रहे हैं।
15. आज समाज में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है।

4.3.7. सारांश

1. हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई ने 'नीलकंठ' इस निबंध में मानव स्वभाव की कमजोरियाँ, दिखावटी प्रवृत्ति साथ ही अपने त्याग, कष्ट आदि का प्रदर्शन करने की प्रवृत्ति को रेखांकित किया है।
2. 'नीलकंठ' यह निबंध लेखक की प्रसिद्ध व्यंग्य शैली का उत्कृष्ठ उदाहरण है। इसमें लेखक ने अपने दुःख का रोना रोनेवाले लोंगों पर तिखा प्रहार किया है । निबंध का व्यंग्य केवल हास्य उत्पन्न नहीं करता, बल्कि मनुष्य की ढोंगी, दिखावटी प्रवृत्ति पर गंभीरता से सोचने के लिए विवश करता है।
3. प्रस्तुत निबंध के माध्यम से लेखक यह कहना चाहतें हैं कि समाज में सच्चे और त्यागी व्यक्ति का सम्मान कम होता है, जब कि स्वार्थी और अवसरवादी लोग अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते हैं।
4. निबंध में लेखक भगवान शंकर जी से संबंधित एक पौराणिक प्रसंग के माध्यम से आज के मनुष्य की प्रवृत्ति का एक-एक कर व्यंग्य विनोद में विश्लेषण करते है। रंग यहाँ स्वभाव, वृत्ति का प्रतिक हैं। इससे लेखक अपनी व्यंग्य शैली में सामाजिक विसंगति, पाखंड, दिखावेपन की प्रवृत्ति को उजागर करते हैं।

4.3.8. स्वाध्याय।

अ) लघुत्तरी प्रश्न।

1. 'नीलकंठ' निबंध का मुख्य विषय स्पष्ट कीजिए?
2. निबंध में सामाजिक विडंबनाओं को किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है?
3. निबंध में प्रयुक्त भाषा-शैली की विशेषताएँ लिखिए।
4. 'नीलकंठ' निबंध से हमें कौन-सा संदेश मिलता है?
5. लेखक ने किन उदाहरणों के माध्यम से अपने विचार स्पष्ट किए हैं?
6. समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति लेखक का दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न ।

1. लेखक ने 'नीलकंठ' प्रतीक का प्रयोग जिस अर्थ में किया है, उसका विवेचन कीजिए?
2. लेखक ने व्यंग्य के माध्यम से किन समस्याओं पर प्रहार किया है?
3. 'नीलकंठ' निबंध के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
4. निबंध में लेखक के व्यक्त विचारों पर प्रकाश डालिए।

5. 'निलकंठ' निबंध का आशय अपने शब्दों में लिखिए।

4.3.9. क्षेत्रीय कार्य।

1. ग्रामीण एवं शहरी भागों में नीलकंठ के प्रति उनकी धारणाओं का साक्षात्कार लिजिए।
2. अपने आस-पास के दिखावटी प्रवृत्ति के लोंगों पर मराठी में निबंध लिखित।
3. अपने परिवेश के ऐंसे लोगों का सर्वेक्षण कीजिए जा दुःखों का प्रदर्शन करते है।

4.3.10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

1. 'परसाई रचनावली' - हरिशंकर परसाई, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. 'विकलांग श्रद्धा का दौर' - हरिशंकर परसाई, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. 'हिंदी व्यंग्य साहित्य का इतिहास' - डॉ. शंभूनाथ सिंह, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
4. 'आधुनिक हिंदी निबंध' - डॉ. नगेंद्र, राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली।
5. 'सदाचार का ताबीज' - हरिशंकर परसाई, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
6. 'हरिशंकर परसाईः चुनी हुई रचनाएँ' - कमला प्रसाद, प्रकाश दुबे, वाणी प्रकाशन।

❑❑❑

इकाई–1

वेब पत्रकारिता

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 वेब पत्रकारिता : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरुप ।

1.3.2 वेब पत्रकारिता की विशेषताएँ।

1.3.3 वेब पत्रकारिता की नई संभावनाएँ एवं समस्याएँ।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न ।

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

1.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर ।

1.7 सारांश ।

1.8 स्वाध्याय ।

1.9 क्षेत्रीय कार्य ।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के उपरांत छात्र –

1. इंटरनेट पर मौजूद हिंदी के समाचार पत्रों की पहचान कर पायेंगे ।
2. वेब पत्रकारिता के स्वरूप को समझ सकेंगे।
3. वेब पत्रकारिता की विशेषताओं से अवगत होंगे।
4. वर्तमान में वेब पत्रकारिता की नई संभावनाओं एवं समस्याओं से परिचित होंगे।

1.2 प्रस्तावना

वेब पत्रकारिता आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण संचार विधा है, जो इंटरनेट के माध्यम से समाचारों और सूचनाओं का त्वरित प्रसारण करती है। इसने पारंपरिक पत्रकारिता को नई दिशा देते हुए उसे डिजिटल स्वरूप प्रदान किया है। वेब पत्रकारिता में समाचार, लेख, वीडियों तथा ऑडियो सामग्री का समावेश होता है, जिससे पाठकों को विविध रूपों में जानकारी प्राप्त होती है। डिजिटल प्लेटफॉर्म के कारण इसकी पहुँच वैश्विक स्तर तक हो गई है और सूचना का आदान-प्रदान अत्यंत तेज़ और सरल हो गया है। यह सोशल मीडिया से भी गहराई से जुड़ी हुई है, जिससे पाठक तुरंत प्रतिक्रिया दे सकते हैं और संवाद स्थापित कर सकते हैं। हालांकि, इसमें सत्यता और विश्वसनीयता बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। इस प्रकार वेब पत्रकारिता आज के सूचना युग में एक आवश्यक, प्रभावी और सशक्त माध्यम के रूप में उभरकर सामने आई है।

पारंपरिक पत्रकारिता जैसे प्रिंट, रेडियो और टेलीविजन, जहाँ समय और स्थान की सीमाओं से बँधे होते हैं, वहीं वेब पत्रकारिता इन सीमाओं से पूर्णतः मुक्त है। यह 24×7 सक्रिय रहने वाली प्रणाली है, जो किसी भी घटना को तत्काल वैश्विक स्तर पर प्रसारित करने की क्षमता रखती है। इस माध्यम में केवल लिखित समाचार ही नहीं, बल्कि ऑडियो, वीडियो, फोटो, ग्राफिक्स और लाइव अपडेट जैसे मल्टीमीडिया तत्वों का भी समावेश होता है, जिससे सूचना अधिक रोचक, स्पष्ट और प्रभावशाली बनती है। अतः स्पष्ट है कि वेब पत्रकारिता न केवल पारंपरिक पत्रकारिता का विस्तार है, बल्कि यह एक नई संचार क्रांति का प्रतीक भी है, जिसने सूचना के स्वरूप, प्रसार और उपभोग की प्रक्रिया को पूरी तरह बदल दिया है।

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 वेब पत्रकारिता : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरुप

वेब पत्रकारिता को अंग्रेजी में Web Journalism कहते हैं। जिसका अर्थ है-इंटरनेट के माध्यम से समाचार, सूचना और विचारों का संग्रह, संपादन और प्रसारण करना। इसे ऑनलाइन पत्रकारिता, डिजिटल पत्रकारिता या साइबर पत्रकारिता भी कहा जाता है। इसमें समाचारों को वेबसाइट, ब्लॉग, सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। अतः वेब पत्रकारिता से तात्पर्य इंटरनेट पर मौजूद दैनिक समाचार पत्रों के समाचार पोर्टल्स पर आधारित ऑनलाइन पत्रकारिता से है। वेब पत्रकारिता को ऑनलाइन पत्रकारिता या डिजिटल पत्रकारिता कहा जाता है।

वेब पत्रकारिता की परिभाषा (Definition of Web Journalism)

1. ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी ऑफ़ जर्नलिज्म (हारकप) के अनुसार –

'वेब पत्रकारिता में वो विभिन्न प्रकार के समाचार शामिल हैं, जो विभिन्न वेबसाइटों, सोशल मीडिया, आरएसएस चैनलों, ई मेल, न्यूज़लेटर्स और ऑनलाइन पत्रकारिता के अन्य रूपों के माध्यम से प्रसारित होते हैं।'

2. **होल्ली के अनुसार ऑनलाइन पत्रकारिता –** 'मूल लेखन और रिपोर्टिंग जो वर्ल्ड वाइड वेब के माध्यम से दिया जाता है।'

3. **यूनिवर्सिटी ऑफ़ साउथर्न कैलिफ़ोर्निया के अनुसार डिजिटल पत्रकारिता –** 'वह न्यूज़ विषयवस्तु जो इंटरनेट के माध्यम से निर्मित अथवा प्रसारित किया जाता है, विशेषतौर पर वह विषयवस्तु जो मुख्यधारा में काम कर रहे पत्रकारों द्वारा निर्मित किया गया हो, ऑनलाइन पत्रकारिता कहलाता है।'

विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों एवं विद्वानों ने वेब पत्रकारिता को विभिन्न रूपों में परिभाषित किया है। वेब पत्रकारिता की कुछ परिभाषाएं नीचे दी गई हैं:–

1. वेब पत्रकारिता को हम इंटरनेट पत्रकारिता, ऑनलाइन पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता आदि नाम से जानते हैं। यह कंप्यूटर और इंटरनेट के सहारे संचालित ऐसी पत्रकारिता है, जिसकी पहुंच किसी एक पाठक, एक गाँव, एक प्रखंड, एक प्रदेश, एक देश तक नहीं है, बल्कि समूचे विश्व तक है जो डिजिटल तरंगों के जरिये प्रदर्शित होती है। (मानस, 2010)।
2. समाचार अर्थात् न्यूज (News) का अर्थ North (उत्तर), East (पूर्व), West (पश्चिम) और South (दक्षिण) से सूचना देना है। चारों दिशाओं से सूचना देने की क्रिया पत्रकारिता कहलाती है। ऑनलाइन माध्यम के जरिये सूचनाएँ देने वाले वेब पत्रकार और उनके द्वारा सूचना देने की क्रिया वेब पत्रकारिता कही जाती है (सुमन एवं विक्रम, 2010)।
3. While there is no clear definition of digital journalism, it is widely recognised as being any form of journalist content that is posted on the internet. It could be in text, audio or video form and because it does not have to print and distribute content, it is much faster than traditional journalism (Turauskis, 2015).
4. समाचार पत्र एक बार प्रकाशन के लिए चला जाए तो बड़ी से बड़ी खबर को अपडेट करने में 24 घंटे लगते हैं। रेडियो का प्रसारण भी एक समय सीमा में बँधा हुआ है। टेलीविजन चैनलों पर भी एक रिपोर्ट पूरी होने के बाद ही अगली रिपोर्ट देख सकते हैं और विज्ञापनों का भी बंधन होता है। लेकिन वेबसाइट पल–पल की खबरें आप तक पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध है (जैदी, 2010)/
5. According to Wikipedia- Digital journalism also known as online journalism is a contemporary form of journalism where editorial content is distributed via the Internet as opposed to publishing via print or broadcast.
6. संरचनात्मक आधार पर नया समाचार माध्यम 'इंटरनेट' दो वर्गों में बाँटा जा सकता है। पहला, अखबारों अथवा पत्रिकाओं के ऑनलाइन संस्करण, दूसरे पोर्टल्स। ये पोर्टल्स भी दो तरह के हैं, एक वे जो अखबार या पत्रिका प्रकाशन समूह से संबद्ध हों, दूसरे वे जो अखबार या पत्रिका प्रकाशन समूहों से अलग स्वतंत्र रूप से संचालित हो रहे हैं। (शुक्ला, 2012)।

7. वेब पत्रकारिता कोई कंप्यूटर पर अखबार नहीं हैं और न ही यह ब्राउजर से संचालित कोई प्रसारण केंद्र है। अपनी क्षमता, लचीलेपन, तात्कालिकता, स्थायित्व और पारस्परिकता के कारण यह पारंपरिक मीडिया से कई मायनों में भिन्न है। (जोशी एवं जोशी, 2012)।
8. वेब पत्रकारिता के उदय ने सूचना समाचारों को लोगों तक पहुँचाने के अनेक विकल्पों का सृजन किया है। यह एक ऐसी धारा है जिसके मंच पर मुख्यधारा मीडिया की प्रभावशाली उपस्थिति है और इसके साथ ही इसने एक सक्रिय नागरिक को भी पत्रकार बना दिया है। (धूलिया, 2012)।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर वेब पत्रकारिता के प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं–

1. वेब पत्रकारिता को इंटरनेट, ऑनलाइन या साइबर पत्रकारिता के नाम से भी जाना जाता है।
2. यह कंप्यूटर और इंटरनेट के माध्यम से संचालित होने वाली आधुनिक पत्रकारिता है।
3. इसकी पहुँच सीमित न होकर वैश्विक स्तर तक विस्तृत होती है।
4. इसमें समाचारों का प्रसारण टेक्स्ट, ऑडियो और वीडियो जैसे विभिन्न रूपों में किया जाता है।
5. वेब पत्रकारिता पारंपरिक पत्रकारिता की तुलना में अधिक तेज़ और तात्कालिक होती है।
6. यह 24 x 7 उपलब्ध रहती है और समाचारों को तुरंत अपडेट करने की क्षमता रखती है।
7. इसमें अखबारों के ऑनलाइन संस्करण तथा स्वतंत्र न्यूज़ पोर्टल दोनों शामिल होते हैं।
8. वेब पत्रकारिता पारंपरिक मीडिया से अलग लचीलेपन, पारस्परिकता और स्थायित्व की विशेषताएँ रखती है।
9. यह आम नागरिकों को भी सूचना प्रसार में भागीदारी का अवसर प्रदान करती है ।
10. वेब पत्रकारिता ने समाचारों के प्रसार के अनेक नए विकल्प और मंच उपलब्ध कराए हैं।

वेब पत्रकारिता का स्वरूप

वेब पत्रकारिता का स्वरूप अत्यंत व्यापक, बहुआयामी और गतिशील है। यह पारंपरिक पत्रकारिता से भिन्न होते हुए आधुनिक तकनीक, इंटरनेट और डिजिटल माध्यमों के समन्वय से विकसित हुई है। इसका मूल स्वरूप सूचना के तुरंत, आकर्षक और सहभागितापूर्ण प्रसारण पर आधारित है।

सबसे प्रमुख विशेषता इसका मल्टीमीडिया स्वरूप है। वेब पत्रकारिता केवल लिखित समाचारों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि इसमें टेक्स्ट, चित्र, ऑडियो, वीडियों, ग्राफिक्स और एनीमेशन का समावेश होता है। इस कारण समाचार अधिक प्रभावशाली, रोचक और समझने में आसान बन जाते हैं। उदाहरण के लिए, किसी घटना की जानकारी केवल लेख के माध्यम से ही नहीं, बल्कि वीडियो रिपोर्ट, फोटो गैलरी और ऑडियो क्लिप के माध्यम से भी दी जा सकती है।

दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता इसकी तात्कालिकता है। वेब पत्रकारिता 24 घंटे सक्रिय रहती है और समाचारों को तुरंत अपडेट करने की क्षमता रखती है। पारंपरिक माध्यमों की तरह इसमें किसी निश्चित समय

या डेडलाइन का बंधन नहीं होता। जैसे ही कोई घटना घटती है, उसे तुरंत वेबसाइट या पोर्टल पर प्रकाशित किया जा सकता है।

वेब पत्रकारिता स्थान और समय की सीमाओं से मुक्त होती है। इसमें शब्दों या पृष्ठों की कोई सीमा नहीं होती, इसलिए किसी भी समाचार को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया जा सकता है। साथ ही, पाठक किसी भी समय और किसी भी स्थान से इंटरनेट के माध्यम से समाचार प्राप्त कर सकता है। इसका एक और महत्वपूर्ण स्वरूप पाठक सहभागिता है। वेब पत्रकारिता में पाठक केवल निष्क्रिय उपभोक्ता नहीं रहता, बल्कि वह सक्रिय भागीदार बन जाता है। वह समाचार पर अपनी प्रतिक्रिया दे सकता है, टिप्पणी कर सकता है, सोशल मीडिया पर साझा कर सकता है और यहाँ तक कि स्वयं भी सामग्री प्रस्तुत कर सकता है। इस प्रकार संवादात्मकता इसकी प्रमुख विशेषता है।वेब पत्रकारिता का स्वरूप बहुआयामी भूमिका वाले पत्रकार को भी दर्शाता है। यहाँ पत्रकार को केवल लेखन ही नहीं, बल्कि फोटो, वीडियो, संपादन और तकनीकी ज्ञान भी होना आवश्यक होता है। इस प्रकार वह एक मल्टीमीडिया पत्रकार के रूप में कार्य करता है।

अंततः वेब पत्रकारिता का स्वरूप आधुनिक तकनीक और जनसंचार का एक समन्वित रूप है, जो सूचना को तेज़, सुलभ, आकर्षक और सहभागितापूर्ण बनाता है। यही कारण है कि आज यह पत्रकारिता का सबसे प्रभावी और भविष्य उन्मुख माध्यम बन चुका है।

वेब पत्रकारिता का इतिहास और विकास –

वेब पत्रकारिता का विकास इंटरनेट के विकास के साथ जुड़ा हुआ है। जब इंटरनेट को सन् 1989 में आम लोगों के लिए उपलब्ध कराया गया, तब इसके उपयोग के नए-नए क्षेत्रों की खोज शुरू हुई। इसके बाद सन् 1990 में टिम बर्नर्स-ली द्वारा वर्ल्ड वाइड वेब (WWW) का आविष्कार हुआ, जिसने सूचना और संचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी। इसी के साथ पत्रकारिता ने भी डिजिटल रूप लेना शुरू किया। हालांकि वेब पत्रकारिता की प्रारंभिक झलक सन् 1970 के दशक में यूनाइटेड किंगडम में टेलीटेक्स्ट प्रणाली के माध्यम से देखने को मिलती है। इस प्रणाली में लोग अपनी पसंद की खबरें चुनकर पढ़ सकते थे, लेकिन तकनीकी सीमाओं के कारण यह ज्यादा सफल नहीं हो पाई। इसके बाद वीडियो टेक्स्ट जैसी तकनीकें भी आईं, जिन्होंने आगे के विकास का रास्ता तैयार किया।

वास्तविक रूप से वेब पत्रकारिता की शुरुआत सन् 1993 से सन् 2002 के बीच मानी जाती है। इस दौरान एचटीएमएल, ई-मेल और वेब ब्राउज़र जैसे Internet Explorer (इंटरनेट एक्सप्लोरर) और Netscape Navigator (नेटस्केप नेविगेटर) का विकास हुआ। 1993 में University of Florida (यूनिवर्सिटी ऑफ फ्लोरिडा) में पत्रकारिता की पहली वेबसाइट शुरू की गई। इसके बाद 8 दिसंबर को The New York Times (द न्यूयॉर्क टाइम्स) ने इंटरनेट पर अपना पहला लेख प्रकाशित किया, जो वेब पत्रकारिता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है।

धीरे-धीरे The Washington Post (द वॉशिंगटन पोस्ट), CNN (सीएनएन) और BBC (बीबीसी) जैसे बड़े मीडिया संस्थानों ने भी अपने ऑनलाइन संस्करण शुरू किए। इससे वेब पत्रकारिता को वैश्विक पहचान मिली।

भारत में वेब पत्रकारिता की शुरुआत दि. 15 अगस्त सन् 1995 को हुई, जब विदेश संचार निगम लिमिटेड ने इंटरनेट सेवा शुरू की। इसी वर्ष The Hindu (द हिंदू) ने अपना ऑनलाइन संस्करण लॉन्च किया, जिसे भारत में वेब पत्रकारिता की शुरुआत माना जाता है। इसके बाद धीरे-धीरे कई समाचार पत्र ऑनलाइन आए।

हिंदी वेब पत्रकारिता की शुरुआत 'वेब दुनिया' से मानी जाती है, जो 'नई दुनिया' अखबार से जुड़ा था। इसके बाद दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, अमर उजाला और प्रभात खबर जैसे प्रमुख समाचार पत्रों ने भी अपने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म शुरू किए।

शुरुआत में वेब पत्रकारिता का विस्तार धीमा था और सन् 2006 तक बहुत कम समाचार पत्र ही ऑनलाइन उपलब्ध थें। लेकिन समय के साथ इंटरनेट की पहुँच और तकनीक में सुधार हुआ, जिससे इस क्षेत्र में तेज़ी से वृद्धि हुई। आज Scroll.in (स्क्रॉल डॉट इन), Firstpost (फर्स्टपोस्ट), Rediff (रेडिफ), Tehelka (तहलका), The Print (द प्रिंट) और The Quint (द क्विंट) जैसे कई डिजिटल प्लेटफॉर्म सक्रिय हैं, जो पूरी तरह ऑनलाइन पत्रकारिता पर आधारित हैं।

1.3.2 वेब पत्रकारिता की विशेषताएँ

1. **स्थान और समय की सीमा से मुक्त–** वेब पत्रकारिता में शब्दों, फोटो और वीडियो की कोई निश्चित सीमा नहीं होती, जिससे समाचार को विस्तार से प्रस्तुत किया जा सकता है। पारंपरिक माध्यमों की तरह यहाँ सीमित जगह या समय की बाध्यता नहीं होती। पत्रकार घटना का पूरा विवरण चार्ट, ग्राफिक्स और डेटा के साथ दे सकता है। इससे पाठकों को अधिक गहराई और व्यापक जानकारी प्राप्त होती है।
2. **तात्कालिकता और निरंतर अपडेट–** वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि समाचार तुरंत प्रकाशित किए जा सकते हैं। घटना घटित होते ही संवाददाता उसे ऑनलाइन अपडेट कर देता है। खबरों को लगातार संशोधित और बेहतर बनाया जा सकता है। इससे पाठकों को हर समय ताज़ा और सटीक जानकारी मिलती रहती है।
3. **मल्टीमीडिया स्वरूप–वेब पत्रकारिता में टेक्स्ट के साथ–** साथ चित्र, ऑडियो, वीडियो और डेटा विजुअलाइजेशन का उपयोग किया जाता है। इससे समाचार अधिक आकर्षक और प्रभावी बनते हैं। विभिन्न माध्यमों के संयोजन से विषय को समझना आसान हो जाता है। यही कारण है कि यह माध्यम अधिक लोकप्रिय होता जा रहा है।
4. **बहुआयामी और मल्टीमीडिया पत्रकार की भूमिका–** वेब पत्रकार को केवल लेखन ही नहीं, बल्कि फोटो, वीडियों, ग्राफिक्स और तकनीकी ज्ञान भी होना चाहिए। वह एक साथ कई माध्यमों का उपयोग

करके रिपोर्ट तैयार करता है। कंटेंट एडिटर की भूमिका भी इसमें बहुत महत्वपूर्ण होती है। इस कारण वेब पत्रकार को मल्टीमीडिया पत्रकार कहा जाता है।

5. **डेडलाइन से मुक्त और लचीलापन–** वेब पत्रकारिता किसी निश्चित डेडलाइन से बंधी नहीं होती। समाचार तैयार होते ही उसे प्रकाशित किया जा सकता है। इसमें बार-बार सुधार और अपडेट संभव है, जो प्रिंट मीडिया में नहीं होता। इससे समाचार हमेशा प्रासंगिक और अद्यतन बने रहते हैं।
6. **पाठकों की भागीदारी और इंटरएक्टिविटी–** वेब पत्रकारिता में पाठक सीधे अपनी प्रतिक्रिया दे सकते हैं। वे कमेंट, फीडबैक, पोल और चैट के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इससे पत्रकार और पाठकों के बीच संवाद स्थापित होता है। यह माध्यम अधिक लोकतांत्रिक और सहभागितापूर्ण बन जाता है।
7. **वैश्विक पहुँच और व्यापक प्रसार–** वेब पत्रकारिता की पहुँच पूरे विश्व में होती है। इंटरनेट के माध्यम से किसी भी स्थान से समाचार पढ़े जा सकते हैं। यह दुनिया के हर कोने की खबर तुरंत उपलब्ध कराता है। इससे सूचना का वैश्विक आदान-प्रदान तेज़ हो गया है।
8. **एकरेखीयता से मुक्त** (Non-linearity)-वेब पत्रकारिता में पाठक किसी भी क्रम में जानकारी पढ़ सकता है। वह लिंक के माध्यम से एक विषय से दूसरे विषय पर जा सकता है। इससे उसे पढ़ने की स्वतंत्रता मिलती है। यह पारंपरिक माध्यमों की तुलना में अधिक लचीला और उपयोगकर्ता-हितैषी है।
9. **सूचना की परतें और हाइपरलिंकिंग–** वेब में समाचार को अलग-अलग भागों में प्रस्तुत किया जा सकता है, जैसे शीर्षक, सार और विस्तृत विवरण। हाइपरलिंक के माध्यम से संबंधित जानकारी को जोड़ा जाता है। इससे पाठक अपनी रुचि के अनुसार गहराई तक जा सकता है। यह प्रस्तुति को अधिक संगठित और प्रभावी बनाती है।
10. **अभिलेखीय प्रवृत्ति** (Archival Nature)- वेब पत्रकारिता में समाचारों को लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। पुरानी खबरों को कभी भी खोजकर पढ़ा जा सकता है। इससे शोध और संदर्भ के लिए सामग्री उपलब्ध रहती है। यह सुविधा अन्य पारंपरिक माध्यमों में सीमित होती है।
11. **क्लिक और लोकप्रियता का महत्व–** वेब पत्रकारिता में खबर की सफलता उसके क्लिक या व्यूज़ पर निर्भर करती है। अधिक क्लिक मिलने से खबर की लोकप्रियता बढ़ती है। इससे पत्रकार आकर्षक और उपयोगी सामग्री बनाने का प्रयास करता है। यह प्रतिस्पर्धा को भी बढ़ावा देता है।
12. **विविध प्लेटफॉर्म और स्वतंत्र पत्रकारिता–** वेब पत्रकारिता में समाचार कई प्लेटफॉर्म और शैलियों में प्रस्तुत किए जाते हैं। कोई भी व्यक्ति स्वतंत्र रूप से ब्लॉग या वेबसाइट के माध्यम से पत्रकारिता कर सकता है। ऑनलाइन न्यूज चैनल भी इसीका हिस्सा हैं। इससे पत्रकारिता का दायरा और अवसर दोनों बढ़े हैं।

13. **सूचना का तेज़ आदान–प्रदान–** वेब पत्रकारिता के माध्यम से सूचना, समाचार और ज्ञान का तेजी से प्रसार होता है। इंटरनेट की सहायता से जानकारी तुरंत साझा की जा सकती है। इससे समाज में जागरूकता बढ़ती है। यह आधुनिक संचार का सबसे तेज़ माध्यम बन चुका है।

14. **सर्च और संदर्भ की सुविधा–** वेब पत्रकारिता में जानकारी खोजने के लिए इंटरनेट का उपयोग किया जाता है। पाठक आसानी से किसी भी विषय पर जानकारी सर्च कर सकता है। संबंधित खबरों को आपस में जोड़कर प्रस्तुत किया जाता है। इससे जानकारी अधिक उपयोगी और संदर्भपूर्ण बनती है।

15. **विलोम स्तूपाकार शैली–** वेब पत्रकारिता में समाचार लेखन की विलोम स्तूपाकार शैली अपनाई जाती है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण जानकारी शुरुआत में दी जाती है। इसके बाद कम महत्वपूर्ण जानकारी क्रमशः प्रस्तुत की जाती है। इससे पाठक को मुख्य बात तुरंत समझ में आ जाती है।

इन सभी विशेषताओं के कारण वेब पत्रकारिता आज के डिजिटल युग का सबसे प्रभावी, तेज़ और व्यापक माध्यम बन गई है, जो सूचना के प्रसार को सरल और सुलभ बनाती है।

1.3.3 वेब पत्रकारिता की नई संभावनाएँ एवं समस्याएँ

वेब पत्रकारिता आधुनिक युग की सबसे तेज़ी से विकसित होने वाली पत्रकारिता है। इंटरनेट, स्मार्टफोन और डिजिटल तकनीकों के विस्तार ने सूचना के उत्पादन, प्रसारण और उपभोग के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया है। आज वेब पत्रकारिता केवल खबर देने का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह संवाद, विश्लेषण और सहभागिता का एक व्यापक मंच बन चुकी है। इसके साथ ही, जहाँ एक ओर अनेक नई संभावनाएँ उभरी हैं, वहीं दूसरी ओर कई गंभीर समस्याएँ भी सामने आई हैं।

वेब पत्रकारिता की नई संभावनाएँ

1. **वैश्विक पहुँच और तुरंत प्रसार–** वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी विशेषता इसकी वैश्विक पहुँच है। इंटरनेट के माध्यम से किसी भी स्थान की खबर दुनिया के किसी भी कोने में तुरंत पहुँचा दी जाती है। इससे स्थानीय खबरें भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखी और समझी जा सकती हैं। छोटे और क्षेत्रीय मीडिया संस्थान भी अब वैश्विक पहचान बना सकते हैं।

2. **रोजगार और करियर के नए अवसर–** डिजिटल मीडिया के विकास ने पत्रकारिता के क्षेत्र में अनेक नए रोजगार के अवसर पैदा किए हैं। अब केवल रिपोर्टर या संपादक ही नहीं, बल्कि कंटेंट राइटर, वीडियो एडिटर, सोशल मीडिया मैनेजर, डेटा जर्नलिस्ट, पॉडकास्टर आदि नए पद उभरे हैं। फ्रीलांसिंग और स्वतंत्र पत्रकारिता को भी बढ़ावा मिला है। इससे युवाओं के लिए करियर के नए रास्ते खुले हैं।

3. **मल्टीमीडिया और रचनात्मक प्रस्तुति–** वेब पत्रकारिता में टेक्स्ट के साथ-साथ फोटो, वीडियो, ऑडियो, इन्फोग्राफिक्स और एनीमेशन का उपयोग किया जाता है। इससे खबरें अधिक आकर्षक, स्पष्ट और प्रभावशाली बनती हैं। जटिल विषयों को भी सरल और रोचक तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है। यह प्रस्तुति पाठकों को अधिक समय तक जोड़े रखती है।

4. **नागरिक पत्रकारिता–** वेब पत्रकारिता ने आम नागरिकों को भी समाचार निर्माण की प्रक्रिया में शामिल कर दिया है। कोई भी व्यक्ति सोशल मीडिया, ब्लॉग या वेबसाइट के माध्यम से अपनी बात दुनिया तक पहुँचा सकता है। इससे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बढ़ावा मिला है। कई बार आम लोगों द्वारा साझा की गई जानकारी बड़ी खबर बन जाती है।

5. **त्वरित अपडेट और निरंतरता–** वेब पत्रकारिता में खबरों को तुरंत प्रकाशित किया जा सकता है और समय-समय पर अपडेट भी किया जा सकता है। इससे पाठकों को हर पल ताज़ा जानकारी मिलती रहती है। किसी घटना के बदलते स्वरूप को लाइव अपडेट के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। यह पारंपरिक माध्यमों की तुलना में अधिक प्रभावी है।

6. **इंटरएक्टिविटी और सहभागिता–** वेब पत्रकारिता में पाठक केवल सूचना प्राप्त करने वाला नहीं, बल्कि सक्रिय भागीदार बन गया है। वह कमेंट, फीडबैक, पोल और सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी राय दे सकता है। इससे पत्रकार और पाठक के बीच सीधा संवाद स्थापित होता है। यह प्रक्रिया पत्रकारिता को अधिक लोकतांत्रिक बनाती है।

7. **अभिलेखीय सुविधा और शोध में उपयोगिता–** वेब पत्रकारिता में सामग्री को लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। पुरानी खबरों को कभी भी खोजकर पढ़ा जा सकता है। इससे शोध, अध्ययन और संदर्भ के लिए सामग्री आसानी से उपलब्ध होती है। यह सुविधा पारंपरिक माध्यमों की तुलना में अधिक उपयोगी है।

वेब पत्रकारिता की समस्याएँ

1. **फेक न्यूज़ और भ्रामक जानकारी–** वेब पत्रकारिता में जानकारी तेजी से फैलती है, जिससे गलत या भ्रामक खबरें भी बहुत जल्दी फैल जाती हैं। कई बार बिना सत्यापन के समाचार प्रकाशित कर दिए जाते हैं। इससे समाज में भ्रम, अफवाह और तनाव की स्थिति पैदा हो सकती है। फेक न्यूज़ आज वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी चुनौती बन गई है।

2. **विश्वसनीयता और गुणवत्ता का संकट–** हर व्यक्ति के पास सूचना प्रसारित करने की शक्ति होने के कारण खबरों की गुणवत्ता पर असर पड़ा है। कईं वेबसाइटें केवल जल्दी खबर देने के चक्कर में सत्यता की अनदेखी करती हैं। इससे पत्रकारिता की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लग जाता है। सही और गलत जानकारी में अंतर करना पाठकों के लिए कठिन हो जाता है।

3. **साइबर सुरक्षा और गोपनीयता का खतरा–** वेब पत्रकारिता पूरी तरह डिजिटल माध्यम पर आधारित है, इसलिए इसमें हैकिंग, डेटा चोरी और साइबर हमलों का खतरा बना रहता है। पत्रकारों और पाठकों दोनों की निजी जानकारी असुरक्षित हो सकती है। कई बार संवेदनशील जानकारी लीक होने का भी खतरा रहता है।

4. **क्लिकबेट और व्यावसायिक दबाव–** अधिक क्लिक और व्यूज़ पाने की होड़ में कई बार भ्रामक और आकर्षक शीर्षकों (Clickbait) का उपयोग किया जाता है। इससे खबर की गुणवत्ता और गंभीरता

प्रभावित होती है। पत्रकारिता का उद्देश्य सूचना देना कम और ध्यान आकर्षित करना अधिक हो जाता है। यह प्रवृत्ति पत्रकारिता के मूल सिद्धांतों के खिलाफ है।

5. **तकनीकी निर्भरता और डिजिटल विभाजन–** वेब पत्रकारिता पूरी तरह इंटरनेट और तकनीक पर निर्भर है। जिन लोगों के पास इंटरनेट या डिजिटल उपकरण नहीं हैं, वे इससे वंचित रह जाते हैं। इससे समाज में डिजिटल असमानता बढ़ती है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच भी इस अंतर को देखा जा सकता है।

6. **मानसिक प्रभाव और सूचना की अधिकता–** लगातार और अत्यधिक जानकारी मिलने से पाठकों पर मानसिक दबाव पड़ सकता है। हर समय खबरों के संपर्क में रहने से तनाव और भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। कई बार लोग सही जानकारी का चयन नहीं कर पाते। यह भी एक आधुनिक समस्या के रूप में उभर रही है।

वेब पत्रकारिता ने पत्रकारिता के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन लाया है। इसने सूचना को तेज़, सुलभ और व्यापक बनाया है, साथ ही नए अवसर भी प्रदान किए हैं। लेकिन इसके साथ जुड़ी समस्याओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यदि सत्यता, नैतिकता और तकनीकी सुरक्षा पर ध्यान दिया जाए, तो वेब पत्रकारिता भविष्य में और अधिक विश्वसनीय, प्रभावी और जनहितकारी माध्यम बन सकती है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न ।

1. वेब पत्रकारिता का मुख्य आधार क्या है?

   (A) रेडियो (B) टेलीविजन

   (C) इंटरनेट (D) प्रिंट मीडिया

2. वेब पत्रकारिता को और किस नाम से जाना जाता है?

   (A) प्रिंट पत्रकारिता

   (B) डिजिटल/ऑनलाइन पत्रकारिता

   (C) रेडियो पत्रकारिता

   (D) पारंपरिक पत्रकारिता

3. World Wide Web (WWW) का आविष्कार किसने किया?

   (A) बिल गेट्स (B) स्टीव जॉब्स

   (C) टिम बर्नर्स-ली (D) मार्क जुकरबर्ग

4. भारत में इंटरनेट सेवा आम जनता के लिए कब शुरू हुई?

   (A) सन् 1990 (B) सन् 1995

   (C) सन् 2000 (D) सन् 2005

5. वेब पत्रकारिता की कौन-सी विशेषता इसे अन्य माध्यमों से अलग बनाती है?

(A) सीमित स्थान (B) निश्चित समय

(C) तात्कालिकता और अपडेट (D) केवल टेक्स्ट

6. वेब पत्रकारिता में मल्टीमीडिया का क्या अर्थ है?

(A) केवल लेखन

(B) केवल चित्र

(C) टेक्स्ट, ऑडियो, वीडियो आदि का मिश्रण

(D) केवल वीडियो

7. नागरिक पत्रकारिता (Citizen Journalism) का अर्थ क्या है?

(A) केवल पत्रकारों द्वारा समाचार देना

(B) सरकार द्वारा समाचार देना

(C) आम नागरिकों द्वारा समाचार साझा करना

(D) केवल टीवी चैनलों द्वारा समाचार देना

8. वेब पत्रकारिता में 'क्लिक' का क्या महत्व है?

(A) कोई महत्व नहीं

(B) केवल तकनीकी प्रक्रिया

(C) समाचार की लोकप्रियता दर्शाता है

(D) केवल संपादन के लिए उपयोगी

9. वेब पत्रकारिता की प्रमुख समस्या क्या है?

(A) जानकारी की कमी (B) फेक न्यूज़

(C) धीमी गति (D) सीमित पहुँच

10. विलोम स्तूपाकार शैली (Inverted Pyramid Style) में क्या होता है?

(A) कम महत्वपूर्ण जानकारी पहले दी जाती है

(B) समाचार अंत से शुरू होता है

(C) सबसे महत्वपूर्ण जानकारी पहले दी जाती है

(D) केवल चित्र दिए जाते हैं

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

1. वेब पत्रकारिता (Web Journalism) – इंटरनेट के माध्यम से समाचार, सूचना और विचारों का संग्रह, संपादन और प्रसारण करने की प्रक्रिया।
2. ऑनलाइन पत्रकारिता (Online Journalism) – डिजिटल प्लेटफॉर्म पर प्रस्तुत की जाने वाली पत्रकारिता।
3. डिजिटल पत्रकारिता (Digital Journalism) – इंटरनेट आधारित माध्यमों द्वारा समाचारों का निर्माण और प्रसारण।
4. साइबर पत्रकारिता (Cyber Journalism) – कंप्यूटर और इंटरनेट के माध्यम से की जाने वाली पत्रकारिता।
5. वर्ल्ड वाइड वेब (World Wide Web - WWW) – इंटरनेट पर उपलब्ध आपस में जुड़े हुए वेब पेजों का विशाल नेटवर्क।
6. वेबसाइट (Website) – इंटरनेट पर उपलब्ध वेब पेजों का समूह, जहाँ सूचना प्रस्तुत की जाती है।
7. न्यूज़ पोर्टल (News Portal) – ऐसी वेबसाइट जो मुख्य रूप से समाचारों के प्रसारण के लिए बनाई जाती है।
8. मल्टीमीडिया (Multimedia) – टेक्स्ट, ऑडियो, वीडियो, चित्र और ग्राफिक्स का संयुक्त उपयोग।
9. हाइपर लिंक (Hyperlink) – एक वेब पेज से दूसरे पेज या सूचना को जोड़ने वाला लिंक।
10. इंटरएक्टिविटी (Interactivity) – पाठकों और पत्रकारों के बीच संवाद और सहभागिता की प्रक्रिया।
11. सिटीजन जर्नालिज्म (Citizen Journalism) – आम नागरिकों द्वारा समाचारों का संग्रह और प्रसारण।
12. डेडलाइन (Deadline) – समाचार प्रकाशित करने की निर्धारित समय सीमा।
13. क्लिक (Click) – किसी समाचार या लिंक को खोलने के लिए किया गया चयन, जो उसकी लोकप्रियता दर्शाता है।
14. फेक न्यूज़ (Fake News) – झूठी या भ्रामक जानकारी के रूप में प्रस्तुत समाचार।
15. क्लिकबेट (Clickbait) – पाठकों को आकर्षित करने के लिए भ्रामक या सनसनीखेज शीर्षक।
16. आरएसएस फीड (RSS Feed) – वेबसाइट से नियमित अपडेट प्राप्त करने की तकनीक।
17. पॉडकास्टिंग (Podcasting) – इंटरनेट के माध्यम से ऑडियो सामग्री का प्रसारण।

18. ब्लॉग (Blog) – व्यक्तिगत या विषय आधारित ऑनलाइन लेखन मंच।
19. डेटा विज़ुअलाइज़ेशन (Data Visualization) – आँकड़ों को ग्राफ, चार्ट या चित्रों के रूप में प्रस्तुत करना।
20. विलोम स्तूपाकार शैली (Inverted Pyramid Style) – समाचार लेखन की शैली जिसमें सबसे महत्वपूर्ण जानकारी पहले दी जाती है।

1.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1. C. इंटरनेट
2. B. डिजिटल/ऑनलाइन पत्रकारिता
3. C. टिम बर्नर्स-ली
4. B. 1995
5. C. तात्कालिकता और अपडेट
6. C. टेक्स्ट, ऑडियो, वीडियो आदि का मिश्रण
7. C. आम नागरिकों द्वारा समाचार साझा करना
8. C. समाचार की लोकप्रियता दर्शाता है
9. B. फेक न्यूज़
10. C. सबसे महत्वपूर्ण जानकारी पहले दी जाती है

1.7 सारांश :

1. वेब पत्रकारिता इंटरनेट आधारित आधुनिक पत्रकारिता है, जिसमें समाचारों का तुरंत प्रसारण किया जाता है।
2. इसे ऑनलाइन, डिजिटल या साइबर पत्रकारिता भी कहा जाता है।
3. इसमें टेक्स्ट, ऑडियो, वीडियो और ग्राफिक्स जैसे मल्टीमीडिया तत्वों का उपयोग होता है।
4. वेब पत्रकारिता की शुरुआत इंटरनेट और वर्ल्ड वाइड वेब के विकास के साथ हुई।
5. यह 24 × 7 सक्रिय रहती है और समाचारों को तुरंत अपडेट करने की क्षमता रखती है।
6. इसकी पहुँच वैश्विक है, जिससे दुनिया के किसी भी कोने की जानकारी आसानी से मिल जाती है।
7. इसमें पाठकों की सक्रिय भागीदारी संभव होती है, जैसे कमेंट, फीडबैक और शेयर।
8. वेब पत्रकारिता में जानकारी को सुरक्षित रखा जा सकता है और बाद में भी देखा जा सकता है।
9. इसके माध्यम से पत्रकारिता में नए अवसर और रोजगार के क्षेत्र विकसित हुए हैं।
10. हालांकि, फेक न्यूज़, विश्वसनीयता और साइबर सुरक्षा जैसी समस्याएँ भी इसके सामने प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

1.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न ।

1. वेब पत्रकारिता से क्या तात्पर्य है? इसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए।
2. वेब पत्रकारिता की चार प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
3. वेब पत्रकारिता की दो प्रमुख संभावनाएँ और दो समस्याएँ लिखिए।

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न ।

1. वेब पत्रकारिता का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप विस्तार से समझाइए।
2. वेब पत्रकारिता की विशेषताओं का विस्तृत वर्णन कीजिए।
3. वेब पत्रकारिता की नई संभावनाओं एवं समस्याओं का विस्तार से विश्लेषण कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य ।

वेब पत्रकारिता के अध्ययन को व्यावहारिक रूप से समझने के लिए निम्नलिखित क्षेत्रीय कार्य निर्धारित किए जा सकते हैं–

1. अपने क्षेत्र के किसी एक ऑनलाइन न्यूज़ पोर्टल का चयन करें और उसके कंटेंट, प्रस्तुति शैली तथा अपडेट की गति का अध्ययन करें।
2. किसी एक समाचार वेबसाइट पर प्रकाशित खबर का विश्लेषण करें और उसमें उपयोग किए गए मल्टीमीडिया (चित्र, वीडियो, ग्राफिक्स) तत्वों को पहचानें।
3. एक ही समाचार को प्रिंट मीडिया और वेब मीडिया में तुलना करके उसके अंतर को लिखें।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

1. वेब पत्रकारिता नया मीडिया नये रुझान–शालिनी जोशी, शिवप्रसाद जोशी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. डिजिटल पत्रकारिता–आशीष जोशी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. वेब पत्रकारिता–(संपा) हंसराज 'सुमन', एस, विक्रम, नटराजन प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. समाचार लेखन और वेब पत्रकारिता–अपूर्व कुलश्रेष्ठ प्रसून, नटराजन प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. आधुनिक पत्रकारिता – विनोद अग्रवाल, साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली।

❑❑❑

इकाई–2

ब्लॉग लेखन

अनुक्रम

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 ब्लॉग लेखन: अर्थ, परिभाषा एवं स्वरुप।

2.3.2 ब्लॉग लेखन का महत्त्व।

2.3.3 ब्लॉग लेखन का प्रारूप एवं प्रकार।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न ।

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर ।

2.7 सारांश ।

2.8 स्वाध्याय ।

2.9 क्षेत्रीय कार्य ।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

2.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात छात्र–

1. ब्लॉग लेखन की संकल्पना, अर्थ एवं परिभाषा को समझ सकेंगे।
2. ब्लॉग लेखन के स्वरूप एवं विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करेंगे।
3. ब्लॉग लेखन के महत्त्व एवं उपयोगिता से अवगत होंगे।
4. ब्लॉग लेखन के प्रारूप (Format) एवं विभिन्न प्रकारों से अवगत होंगे।
5. ब्लॉगिंग से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली (Terminology) से परिचित होंगे।

6. ब्लॉग लेखन की तकनीकी एवं व्यावहारिक प्रक्रिया को समझ सकेंगे।

7. स्वयं ब्लॉग तैयार करने एवं लेखन कौशल विकसित करने में सक्षम होंगे।

2.2 प्रस्तावना :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह अपने विचारों, भावनाओं तथा अनुभवों को व्यक्त करने के लिए विभिन्न माध्यमों का उपयोग करता है। प्राचीन काल में यह अभिव्यक्ति मौखिक रूप से, पत्रों, पुस्तकों और समाचार-पत्रों के माध्यम से होती थी, किंतु आधुनिक युग में इंटरनेट ने अभिव्यक्ति के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया है। आज डिजिटल माध्यमों के विस्तार के कारण व्यक्ति के पास अपने विचारों को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने के अनेक साधन उपलब्ध हैं।

इन्हीं आधुनिक माध्यमों में ब्लॉग लेखन (Blog Writing) एक अत्यंत प्रभावशाली और लोकप्रिय माध्यम बनकर उभरा है। ब्लॉग एक प्रकार की ऑनलाइन डायरी या वेबसाइट है, जहाँ व्यक्ति अपने विचार, अनुभव, ज्ञान तथा रचनात्मक अभिव्यक्तियों को सरलता से प्रकाशित कर सकता है। इसमें लेखक को पूर्ण स्वतंत्रता होती है कि वह किसी भी विषय जैसे शिक्षा, साहित्य, समाज, राजनीति, संस्कृति या व्यक्तिगत अनुभवपर अपने विचार प्रस्तुत कर सके।

ब्लॉग लेखन की विशेषता यह है कि यह केवल एक तरफा संचार नहीं है, बल्कि इसमें पाठकों की सहभागिता भी होती है। पाठक अपनी टिप्पणियों के माध्यम से लेखक से संवाद स्थापित कर सकते हैं, जिससे यह एक प्रभावी द्विपक्षीय संचार माध्यम बन जाता है। इसके अतिरिक्त ब्लॉग लेखन ज्ञान-विनिमय, जागरूकता निर्माण तथा आत्म-अभिव्यक्ति का सशक्त साधन भी है।

इस प्रकार ब्लॉग लेखन आधुनिक डिजिटल युग में संचार, अभिव्यक्ति और जानकारी के प्रसार का एक महत्वपूर्ण और प्रभावी माध्यम है, जिसने लेखन की दुनिया को एक नया आयाम प्रदान किया है।

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 ब्लॉग लेखन: अर्थ, परिभाषा एवं स्वरुप

ब्लॉग का अर्थ

ब्लॉग शब्द अंग्रेजी के वेब-लॉग से बना है, जिसका अर्थ है इंटरनेट पर लिखी जाने वाली डायरी। यह पारंपरिक डायरी से भिन्न होती है, क्योंकि इसे केवल व्यक्तिगत उपयोग तक सीमित न रखकर सार्वजनिक रूप से इंटरनेट पर उपलब्ध कराया जाता है। इस प्रकार ब्लॉग एक ऐसा माध्यम है, जिसके जरिए व्यक्ति अपने विचार, अनुभव और रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ पूरी दुनिया के साथ साझा कर सकता है। ब्लॉग एक प्रकार का ऑनलाइन मंच (वेबसाइट) है, जहाँ व्यक्ति अपने विचार, अनुभव, जानकारी या किसी विषय पर लेख लिखकर इंटरनेट पर प्रकाशित करता है। यह एक स्वतंत्र डिजिटल माध्यम है, जिसमें लेखक बिना किसी बाहरी नियंत्रण के अपनी बात व्यक्त कर सकता है।

सरल शब्दों में, ब्लॉग इंटरनेट पर लिखी जाने वाली व्यक्तिगत या सामूहिक डायरी की तरह होता है, जिसमें लेख (पोस्ट) समय-समय पर जोड़े जाते हैं। ब्लॉग लिखने वाले व्यक्ति को 'ब्लॉगर' और इस प्रक्रिया को 'ब्लॉगिंग' कहा जाता है। इस प्रकार, ब्लॉग विचारों के आदान-प्रदान, जानकारी साझा करने और संवाद स्थापित करने का एक प्रभावी माध्यम है।

ब्लॉग लेखन वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं या किसी विषय से संबंधित जानकारी को इंटरनेट पर लिखकर साझा करता है। अपने विचारों को डिजिटल मीडिया या एक वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन प्रकाशित करना ब्लॉग लेखन कहलाता है। दूसरे शब्दों में विशेष विषय पर लिखे गए लेख को वेबसाइट पर प्रकाशित करने की प्रक्रिया को ब्लॉग लेखन कहते हैं। यह एक डिजिटल मंच है, जहाँ बिना किसी अनुमति के व्यक्ति अपनी बात स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत कर सकता है। इसमें शब्दों की कोई निश्चित सीमा नहीं होती, इसलिए लेखक अपनी बात को संक्षेप में या विस्तार से अपनी सुविधा अनुसार लिख सकता है।

जस्टीन हॉल ने सन् 1994 ई. में सबसे पहले इस शब्द का प्रयोग किया। जॉन बर्गर ने इसके लिए वेब्लॉग शब्द का प्रयोग किया था। माना जाता है कि सन् 1999 ई. में पीटर मेरहोल्स ब्लॉग शब्द को प्रस्थापित कर उसे व्यवहार में लाए। भारत में सन् 2002 ई. के बाद ब्लॉग लेखन आरंभ हुआ और देखते-देखते यह माध्यम लोकप्रिय हो गया। साथ ही इसे अभिव्यक्ति के नए माध्यम के रूप में मान्यता भी प्राप्त हुई।

हिंदी में 'ब्लॉग' को 'चिट्ठा' कहा जाता है और इस शब्द के प्रयोग का श्रेय हजारीप्रसाद द्विवेदी को दिया जाता है। ब्लॉग सामान्यतः व्यक्तिगत या किसी विशेष समूह से जुड़ा होता है, जिसमें व्यक्तिगत या सामूहिक वेब पृष्ठ शामिल होते हैं। इसे अक्सर दैनिक डायरी की तरह भी लिखा जाता है। सरल शब्दों में, ब्लॉग एक ऐसी वेबसाइट है जहाँ व्यक्ति लेख, चित्र आदि के माध्यम से अपने विचार इंटरनेट पर प्रकाशित करता है। इसमें लेखक को पूर्ण स्वतंत्रता होती है कि वह अपने जीवन से जुड़े या अन्य किसी भी विषय पर लिख सके। पाठक भी अपनी रुचि के अनुसार इन लेखों को पढ़ते हैं या अनदेखा कर देते हैं, इसलिए ब्लॉग लेखन पूरी तरह स्वैच्छिक होता है।

ब्लॉग लेखन की परिभाषा–

विकिपीडिया के अनुसार– ब्लॉग वर्ल्ड वाइड वेब (WWW) पर प्रकाशित एक सूचनात्मक या चर्चा आधारित वेबसाइट है, जिसमें समय-समय पर अनौपचारिक डायरी शैली में लेख प्रकाशित किए जाते हैं।

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार– ब्लॉग एक ऐसी इंटरनेट वेबसाइट है, जिसमें किसी व्यक्ति की अभिव्यक्तियों का संग्रह होता है और जिसे नियमित रूप से अपडेट किया जाता है।

Encyclopedia Britannica के अनुसार, Blog, in full weblog, online journal where an individual, group, or corporation presents a record of activities, thought, or beliefs.

ब्लॉग (पूर्ण रूप से वेबलॉग) एक ऑनलाइन जर्नल है, जिसमें कोई व्यक्ति, समूह या संस्था अपनी गतिविधियों, विचारों या विश्वासों का रिकॉर्ड प्रस्तुत करता है।

सामान्य परिभाषा – ब्लॉग इंटरनेट पर उपलब्ध एक स्वतंत्र ई-पत्रिका है, जिसमें निरंतर लेख प्रकाशित किए जाते हैं। इसमें ब्लॉगर ही लेखक, संपादक और प्रकाशक होता है। वह अपनी इच्छानुसार लेख जोड़ या हटा सकता है। यह व्यक्तिगत होते हुए भी सामाजिक संवाद का माध्यम है, जहाँ पाठक टिप्पणी कर अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं।

बालेंदु शर्मा 'दाधीच' के अनुसार– ब्लॉगिंग (ब्लॉग लेखन) शब्द अंग्रेज़ी के वेब-लॉग से बना है, जिसका अर्थ है ऐसी ऑनलाइन डायरी जो इंटरनेट पर रखी जाती है। यह पारंपरिक डायरी से भिन्न होती है क्योंकि यह निजी न होकर सार्वजनिक होती है। इसे विश्वभर में कोई भी पढ़ सकता है, जिससे यह विचारों और अनुभवों के आदान-प्रदान का माध्यम बनती है। सभी ब्लॉग मिलकर एक विशाल जनसंचार तंत्र का निर्माण करते हैं, जो पत्रिका, समाचार पत्र और पोर्टल जैसी भूमिका निभाता है।

राकेश कुमार सिंह के अनुसार– ब्लॉग की कोई निश्चित औपचारिक परिभाषा नहीं है। यह एक ऐसी ऑनलाइन डायरी है जिसे कोई नष्ट नहीं कर सकता, इसलिए यह डिजिटल अभिलेखागार के रूप में कार्य करता है। कुछ लोगों के लिए यह पत्रकारिता का सशक्त माध्यम है, जहाँ लेखक को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होती है। इसमें लेखक, रिपोर्टर और संपादक एक ही व्यक्ति होता है।

ब्लॉगर अविनाश वाचस्पति कहते हैं– ध्वस्त हो रहे जीवन मूल्यों, सामाजिकता, जनसेवा की भावना को पूरी रचनात्मक, सकारात्मकता के साथ आपस में साझा करना ही ब्लागिंग (ब्लॉग लेखन) है।

इन सभी परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि ब्लॉग एक ऐसा डिजिटल मंच है, जहाँ व्यक्ति स्वतंत्र रूप से अपने विचार, अनुभव और जानकारी को सार्वजनिक रूप से साझा करता है तथा यह आधुनिक जनसंचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है।

ब्लॉग लेखन (ब्लॉगिंग) का स्वरूप

ब्लॉग लेखन आधुनिक डिजिटल संचार का एक महत्वपूर्ण और व्यापक माध्यम है, जिसमें व्यक्ति अपने विचार, अनुभव, जानकारी तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति को इंटरनेट पर प्रकाशित करता है। ब्लॉग में साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षिक तथा व्यक्तिगत सभी प्रकार के विषयों पर लेखन किया जा सकता है। इसमें कविता, कहानी, संस्मरण, विश्लेषण, रिपोर्टिंग और विचारात्मक लेखन जैसे विविध रूप शामिल होते हैं।

हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार राजेंद्र यादव के अनुसार ब्लॉग उन लोगों के विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है, जिन्हें पारंपरिक मीडिया में स्थान नहीं मिल पाता। इस प्रकार ब्लॉग ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को व्यापक रूप दिया है। समय के साथ ब्लॉग ने अपनी गुणवत्ता में सुधार किया है और अब इसमें सरल, सहज तथा आत्मीय शैली में संस्मरण और लेख लिखे जाते हैं, जो पाठकों को आकर्षित करते हैं।

ब्लॉग की विशेषता यह है कि यह एक स्वतंत्र डिजिटल मंच है, जहाँ ब्लॉगर स्वयं लेखक, संपादक और प्रकाशक होता है। वह अपनी इच्छा से सामग्री प्रकाशित, संशोधित या हटाने का अधिकार रखता है। इसमें किसी प्रकार का संपादकीय दबाव नहीं होता, जिससे लेखक को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होती है। ब्लॉग पर पाठक तुरंत प्रतिक्रिया दे सकते हैं, जिससे यह दो तरफा संचार का माध्यम बन जाता है।

ब्लॉगिंग के कई रूप विकसित हो चुके हैं, जैसे वीडियो ब्लॉग (Vlog), ऑडियो ब्लॉग (Podcast), म्यूजिक ब्लॉग, प्रोजेक्ट ब्लॉग और कॉर्पोरेट ब्लॉग आदि। माइक्रोब्लॉगिंग का भी तेजी से विकास हुआ है, जिसमें संक्षिप्त संदेशों के माध्यम से विचार साझा किए जाते हैं, जैसे ट्विटर। इसके अलावा यूट्यूब, इंस्टाग्राम और विकिपीडिया जैसे मंच भी ब्लॉगिंग की अवधारणा से जुड़े हुए हैं।

ब्लॉग का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों को वैश्विक स्तर पर साझा कर सकता है और पाठकों से तुरंत प्रतिक्रिया प्राप्त कर सकता है। इससे लेखक अपने लेखन में सुधार करता है और पाठकों से आत्मीय संबंध स्थापित करता है।

ब्लॉग लेखन में नैतिकता और सावधानी आवश्यक है, क्योंकि यह वैश्विक मंच है। लेखक को ऐसी भाषा और विचारों का प्रयोग करना चाहिए जो सकारात्मक और प्रेरणादायक हों तथा किसी को आहत न करें।

इसके अतिरिक्त ब्लॉग से आर्थिक लाभ भी प्राप्त किया जा सकता है। विज्ञापन सेवाओं जैसे गूगल ऐडसेंस के माध्यम से ब्लॉगर अपनी वेबसाइट पर विज्ञापन लगाकर आय अर्जित कर सकते हैं। नियमित और गुणवत्तापूर्ण लेखन से पाठकों की संख्या बढ़ती है, जिससे आय के अवसर भी बढ़ते हैं।

इस प्रकार ब्लॉग का स्वरूप अत्यंत व्यापक, बहुआयामी और गतिशील है। यह न केवल अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि संचार, शिक्षा, संवाद और रोजगार का भी सशक्त माध्यम बन चुका है।

तकनीकी पक्ष

हिंदी ब्लॉगर को ब्लॉगिंग के तकनीकी पक्ष की भी थोड़ी जानकारी होनी चाहिए। ऐसा नहीं है कि इसके लिए किसी विशेष तकनीकी ज्ञान या कंप्यूटर दक्षता की आवश्यकता होती है, बल्कि इंटरनेट और कंप्यूटर की सामान्य जानकारी से ही हम ब्लॉगिंग कर सकते हैं। इंटरनेट पर ब्लॉग बनाने के लिए बहुत सारे मंच मौजूद हैं। जैसे– 'वर्डप्रेस.कॉम' 'टम्बलर.कॉम' और 'ब्लॉगर.कॉम' प्रमुख है। इसी तरह कुछ तकनीकी शब्द भी हैं जिसे ब्लॉगर को जानना आवश्यक है। जैसे 'वेबपेज होस्टिंग', 'वेबफीड', 'डोमेननेम', 'टैग' आदि तकनीकी शब्दावली हैं।

'वेब पेज होस्टिंग' में किसी वेबपेज को संचित (save) करने के लिए जगह (space) का आबंटन होता है। वेब पेजों को ऐसे कंप्यूटर सर्वर से संचित किया जाता है, जो 24 घंटे इंटरनेट से जुड़े रहते हैं। इसके सर्वर बहुत ताकतवर कंप्यूटर होते हैं। इनकी हार्ड ड्राइव बहुत अधिक जगह (space) वाली होती है। हर एक सर्वर का एक अलग IP address होता है।

'वेब फीड या समाचार फ़ीड' डेटा का एक प्रारूप है। इसके द्वारा पाठक के लिए ब्लॉग की अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। वेब फीड को सामान्यतः आर-एस-एस या एटम के रूप में माना जाता है। पहले इसमें सूचना प्राप्त करने की सुविधा आई। फिर आर-एस-एस (RSS)/-TOM फीड की तकनीकी आई। RSS का फुल फॉर्म 'Really simple syndication' है। यह फीड नई सूचनाओं को हेडलाइन रूप में पाठक तक पहुँचाने का कार्य करता है और पाठक उस हेडलाइन को क्लिक करके पूरे लेख को पढ़ सकता है।

'टैग' - विषय की संक्षिप्त व्याख्या के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। ये वे शब्द हैं जिसके द्वारा पाठक सर्च इंजन के माध्यम से ब्लॉग पर या वेबसाइट पर पहुँचते हैं। अगर पोस्ट के विषय से संबंधित कुछ शब्द लिखने से छूट गए हैं, तो उन्हें टैग में लिखा जा सकता है।

इंटरनेट पर ब्लॉगर, वर्डप्रेस एवं टंबलर आदि प्रमुख ब्लॉगिंग साइट्स हैं। लेकिन ज्यादातर ब्लॉगर अपना ब्लॉग अकाउंट 'blogger.com' और 'word press.com' पर ही खोलते हैं। 'blogger.com' पर अपना ब्लॉग बनाने के लिए सबसे पहले आपको गूगल अकाउंट से लॉग इन करना पड़ता है। लॉग इन करने के बाद डैशबोर्ड खुलता है और वहाँ पर आपको अपनी डिटेल भरनी होती है। फिर ब्लॉग का शीर्षक देना होता है। आपका ब्लॉग यदि हिंदी में है तो ब्लॉग का शीर्षक हिंदी में लिखा जाता है और फिर ब्लॉग में पता भरा जाता है। इस तरह आपका ब्लॉग तैयार हो जाता है।

2.3.2 **ब्लॉग लेखन का महत्त्व-**

आज इंटरनेट के उपयोग का स्मार्ट युग है। दुनिया बहुत गतिशील हो गई है। दिन-रात पूरी दुनिया में ज्ञान और सूचनाओं का व्यापक आदान-प्रदान हो रहा है। आज लगभग हर वयस्क स्मार्टफोन और इंटरनेट का उपयोग करता है। वह तरह-तरह की जानकारी खोजता और पढ़ता है। ऐसे में महत्वपूर्ण विषयों, घटनाओं, समसामयिक मामलों, महत्वपूर्ण समाचारों और न्यूज़लेटर्स को ब्लॉग के माध्यम से लिखा और प्रसारित किया जाता है, जिससे दुनिया भर का कोई भी व्यक्ति जो उस विषय में रुचि रखता है, ब्लॉग पर ऐसी जानकारी मुफ्त में पढ़ सकता है।

ब्लॉगिंग एक प्रकार की आत्म-अभिव्यक्ति है। कभी-कभी यह एक रचनात्मक नवाचार होता है, यानी इसके माध्यम से कहानियाँ, कविताएँ, अच्छे लेख आदि जैसी रचनाएँ प्रसारित की जा सकती हैं, तो कभी-कभी ब्लॉग के माध्यम से किसी विषय पर नई जानकारी या वैचारिक लेखन किया जा सकता है। एक तरह से यह ज्ञान का सृजन है। हम ब्लॉग के माध्यम से कई प्रकार की ऐसी जानकारी प्रदान कर सकते हैं जो दूसरों को ज्ञात नहीं होती। हम विभिन्न लोगों, स्थानों, पर्यटन स्थलों, सेवाओं, विभिन्न स्थानों पर उपलब्ध सुविधाओं और कई प्रकार के अनुभवों को साझा कर सकते हैं। यह सब ब्लॉग के माध्यम से प्रसारित किया जा सकता है। इससे दूसरों को भी लाभ होता है और ब्लॉगर इससे पैसे भी कमा सकता है।

जिस प्रकार साहित्य लेखन से यश, धन और लोक व्यवहार का ज्ञान होता है उसी प्रकार ब्लॉग लेखन से भी इन सबकी प्राप्ति होती है। निरंतर अध्ययन और अभ्यास से ब्लॉग लेखन कौशल विकसित कर पर्याप्त धन अर्जित किया जा सकता है, ब्लॉग लेखन भी जीविकार्जन का माध्यम बन सकता है।

ब्लॉग के माध्यम से अपना ऑनलाइन व्यापार शुरू किया जा सकता है। अगर पहले से ही स्थापित व्यापार है तो इस व्यापार में ब्लॉग लेखन से ग्राहक वृद्धि की जा सकती है। ब्लॉग के माध्यम से संबंधित उत्पाद की जानकारी लोगों तक आसानी से पहुँच जाती है, टिप्पणी (कमेंट) के माध्यम से ग्राहकों के विचार भी शीघ्रता से पहुँचते हैं, इस त्वरित प्रतिपुष्टि (फीडबैक) के आधार पर उत्पाद की कमियों को दूर कर व्यापार को और अधिक उन्नत किया जा सकता है। ब्लॉग लेखन के अन्य लाभ निम्नानुसार हैं –

1. एक ब्लॉगर बनने से लेखन कौशल विकसित होता है।
2. ब्लॉग लेखक अपने क्षेत्र में एक विशेषज्ञ के रूप में स्थापित हो सकते हैं।
3. ब्लॉग लेखक अपना एक ऑनलाइन नेटवर्क बना सकते हैं।
4. अपने ई–मेल सब्सक्रिप्शन आप्शन की मदद से आप ढेर सारे ई–मेल सब्सक्राइबर भी पा सकते हैं।
5. ब्लॉग के माध्यम से कई प्रकार के उत्पाद (ई–बुक्स आदि) बेचे भी जा सकते हैं।
6. ब्लॉग लेखन से आत्मविश्वास में वृद्धि होती है, रचनात्मकता में वृद्धि होती है।
7. ब्लॉग लेखक अन्य लोगों को प्रेरित करते हुए नए व्यावसायिक अवसरों का सृजन भी कर पाते हैं।
8. ब्लॉग लेखन भी एक उद्यम है, इससे उद्यमिता का विकास होता है।

ब्लॉग लेखन में सावधानियाँ –

(1) ब्लॉग लेखन के विषय का चुनाव करते समय सामान्य सूझ–बूझ का होना आवश्यक है।

(2) ब्लॉग लेखन में इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि उसमें मानक भाषा का प्रयोग हो। व्याकरणिक अशुद्धियाँ न हों।

(3) ब्लॉग लेखन के लिए प्राप्त स्वतंत्रता का उचित उपयोग करना चाहिए। लेखन में मानव मूल्यों का संरक्षण अति आवश्यक है।

(4) यह भी ध्यातव्य है कि लेखन उदात्त हो। किसी की निंदा करना, किसी पर गलत टिप्पणी करना, समाज में तनाव की स्थिति उत्पन्न करना आदि बातों से ब्लॉग लेखक को दूर रहना चाहिए।

(5) ब्लॉग की भाषा सरल, सुबोध और प्रवाहपूर्ण होनी चाहिए। समाज को सुंदर बनाने का भाव भी भाषा में निहित होना चाहिए।

(6) लेखक के द्वारा किसी व्यक्ति पर बिना प्रमाण के आरोप लगाना गंभीर अपराध है। ऐसी बातों से बचना चाहिए।

(7) ब्लॉग में विषयवस्तु और भाषा का एक स्तर होना चाहिए, पाठक स्तरहीन ब्लॉग- सामग्री को पढ़ना पसंद नहीं करते। ब्लॉग लेखकों को यह समझ लेना चाहिए ।

(8) ब्लॉग लेखन में सामाजिक आचार-नियमों का पालन आवश्यक है।

(9) ब्लॉग लेखक के पास विषय वैविध्य, विशद अध्ययन और विषय के रोचक प्रस्तुतीकरण की कला भी होनी चाहिए ।

2.3.3 **ब्लॉग लेखन का प्रारूप एवं प्रकार-**

आज का युग डिजिटल युग है। इंटरनेट ने संचार और अभिव्यक्ति के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया है। पहले जहाँ लोग अपने विचार केवल पुस्तकों, समाचार पत्रों या पत्रिकाओं के माध्यम से व्यक्त करते थें, वहीं आज ब्लॉग लेखन एक लोकप्रिय माध्यम बन गया है। ब्लॉग लेखन व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से अपने विचार, अनुभव और जानकारी साझा करने का अवसर प्रदान करता है।

ब्लॉग लेखन एक ऑनलाइन लेखन शैली है, जिसमें लेखक किसी विषय पर अपने विचार, जानकारी या अनुभव नियमित रूप से इंटरनेट पर प्रकाशित करता है। यह व्यक्तिगत भी हो सकता है और व्यावसायिक भी।

ब्लॉग बनाने की प्रक्रिया को निम्नानुसार समझा जा सकता है –

'ब्लॉगर' और 'वर्डप्रेस फ्री' ब्लॉग के लिए दो प्रसिद्ध प्लेटफार्म हैं। ब्लॉगर गूगल का ही उत्पाद है। ये दोनों प्लेटफार्म ब्लॉग लेखन का प्रारंभ करने के लिए अच्छे हैं। ब्लॉगर पर ब्लॉग लेखन/प्रकाशन के लिए निम्नानुसार प्रक्रिया अपनाएँ-

1. www.blogger.com पर जाएँ।
2. ब्लॉग बनाने के लिए अपने ई-मेल अकाउंट से साइन इन करें ।
3. इसके बाद एड्रेस लिखें, ब्लॉग एड्रेस मिलने पर 'दिस ब्लॉग ऐड्रेस इज अवेलेबल' दिखाई देगा।
4. इसके बाद थीम का चयन करें, थीम को बाद में बदला भी जा सकता है।
5. डिसप्ले नेम पर जाएँ, उसे कन्फर्म करें अब 'क्रिएट ब्लॉग' पर क्लिक करते ही ब्लॉग बनकर तैयार हो जाएगा। अब टाइटल, एड्रेस, थीम, डिस्क्रिप्शन देते हुए चित्रों आदि के साथ ब्लॉग पर पोस्ट लिखकर पोस्ट को प्रकाशित किया जा सकता है। इसे व्यावसायिक बनाने के लिए 'गूगल एडसेंस' की जरूरत पड़ती है । गूगल ऐडसेंस (विज्ञापन नेटवर्क) से जुड़कर ब्लॉग का व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है।

ब्लॉग लेखन का प्रारूप

1. शीर्षक (Title)- ब्लॉग का शीर्षक आकर्षक, स्पष्ट और विषय से संबंधित होना चाहिए, ताकि पाठक तुरंत आकर्षित हो सके।
2. भूमिका (Introduction)- इस भाग में विषय का परिचय दिया जाता है। यहाँ पाठक की रुचि बनाए रखने के लिए सरल और रोचक भाषा का प्रयोग किया जाता है।
3. मुख्य विषय–वस्तु (Main Body)- यह ब्लॉग का सबसे विस्तृत भाग होता है। इसमें विषय को क्रमबद्ध तरीके से समझाया जाता है।
    - उपशीर्षकों का प्रयोग
    - उदाहरण और तथ्य
    - तर्क और विश्लेषण
    - व्यक्तिगत अनुभव (यदि आवश्यक हो)
4. उपसंहार (Conclusion) - इस भाग में पूरे ब्लॉग का सार दिया जाता है और एक निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही पाठकों को सोचने या प्रतिक्रिया देने के लिए प्रेरित किया जाता है।
5. टिप्पणी (Comment Section / Call to -ction)- ब्लॉग के अंत में पाठकों से उनकी राय, सुझाव या प्रश्न पूछे जा सकते हैं, जैसे–आप इस विषय पर क्या सोचते हैं? अपनी राय जरूर साझा करें।

ब्लॉग लेखन के प्रकार–

ब्लॉग लेखन के कई प्रकार होते हैं। ब्लॉग लेखन के प्रकार ब्लॉग लिखने के उद्देश्य पर निर्भर करते हैं। साथ ही ब्लॉग लेखन को ब्लॉग लेखक के कौशल, उनकी पढ़ाई और उनकी शैली के आधार पर भी विभाजित किया जा सकता है। सामान्यतः इन्हें निम्नलिखित प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है।

1. **व्यक्तिगत ब्लॉग :** इस प्रकार का ब्लॉग आमतौर पर एक ऑनलाइन डायरी की तरह काम करता है। इसमें ब्लॉगर अपने अनुभव और विचार साझा करता है। इसका उद्देश्य अक्सर किसी लक्षित दर्शक वर्ग तक पहुंचना या किसी उत्पाद को बेचना नहीं होता है। व्यक्तिगत ब्लॉग में पारिवारिक घटनाओं, व्यक्तिगत अनुभवों और सफलताओं से लेकर कार्य परियोजनाओं तक, विभिन्न विषयों पर चर्चा की जा सकती है।

2. **विशिष्ट विषय पर आधारित ब्लॉग :** इस प्रकार के ब्लॉग में आमतौर पर ब्लॉगर की रुचियों, कौशल और ज्ञान से संबंधित किसी विशेष विषय पर जानकारी प्रकाशित की जाती है। इस प्रकार के ब्लॉग के उदाहरणों में पुस्तक ब्लॉग, भोजन ब्लॉग और किसी विशिष्ट जीवनशैली पर आधारित ब्लॉग शामिल हैं। सांप प्रेमी, पर्वतारोही, कला प्रेमी, पर्यावरणविद और कवि एवं लेखक इस प्रकार के ब्लॉग लिखते हैं।

3. मल्टीमीडिया ब्लॉग: इस ब्लॉग में लेखन के साथ-साथ अभिव्यक्ति के अन्य साधनों का भी उपयोग किया जाता है। ऑडियो रिकॉर्डिंग और वीडियो रिकॉर्डिंग को भी ब्लॉग लेखन के लिए सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। यहाँ लिखित पोस्ट के बजाय वीडियो और पॉडकास्ट जैसी मल्टीमीडिया सामग्री प्रसारित की जाती है। इसमें आमतौर पर वीडियो या पॉडकास्ट का सारांश, विषय-सूची और आवश्यक उद्धरण शामिल होते हैं। ऑडियो रिकॉर्डिंग में विशिष्ट संदेश, जानकारी, दो लोगों के बीच बातचीत, विशेषज्ञों की राय, संगीत, गाने आदि शामिल होते हैं।

4. समाचार ब्लॉग: इस ब्लॉग का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे नए घटनाक्रमों को प्रसारित करने के लिए किया जाता है। इस ब्लॉग की सामग्री किसी विशेष उद्योग में नवीनतम विकास और नए प्रकाशनों पर केंद्रित होती है। उद्योग, व्यवसाय, शिक्षा, स्वास्थ्य, सरकारी आदेश, कानून जैसे विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित नई जानकारी इस ब्लॉग के माध्यम से प्रसारित की जाती है। चूंकि यह ब्लॉग एक ही विषय पर केंद्रित है, इसलिए इसके पाठक भी उसी विषय से संबंधित होते हैं। इस ब्लॉग को अन्य ब्लॉगों से अलग बनाने वाली बात यह है कि इसमें आमतौर पर किसी के व्यक्तिगत विचार या पसंद शामिल नहीं होते हैं।

5. व्यावसायिक ब्लॉग: कई कंपनियां या उद्योग अपने ब्लॉग शुरू करते हैं। इस ब्लॉग का उद्देश्य अपनी कंपनी या उद्योग से संबंधित सामग्री प्रकाशित करना है। इसका प्राथमिक उद्देश्य कंपनी और व्यवसाय में होने वाले नए बदलावों की जानकारी ग्राहकों और अन्य लाभार्थियों तक पहुँचाना है। यह ब्लॉग कंपनी या उद्योग के सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा संचालित किया जाता है। इसकी जानकारी कंपनी की वेबसाइट पर देखी जा सकती है।

6. एफिलिएट ब्लॉग: यह ब्लॉग अन्य संगठनों, व्यवसायों और कंपनियों के साथ मिलकर काम करता है। इसका उद्देश्य प्रचार-प्रसार करना, विशेष रूप से वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री करना है। यह एक मार्केटिंग ब्लॉग है। जब कोई व्यक्ति इस ब्लॉग पर दिए गए लिंक का उपयोग करके खरीदारी करता है, तो एफिलिएट ब्लॉग के मालिक को कमीशन मिलता है। इस ब्लॉग पर आमतौर पर उत्पाद समीक्षाएँ और सर्वश्रेष्ठ सूचियाँ प्रकाशित की जाती हैं। यदि कोई व्यक्ति ब्लॉगर द्वारा अपने ब्लॉग के माध्यम से अनुशंसित वस्तुओं या सेवाओं को खरीदता है, तो ब्लॉगर को कमीशन के रूप में कुछ राशि प्राप्त होती है। इसे एफिलिएट मार्केटिंग कहते हैं।

7. होस्टेड ब्लॉग: इसे ग्रुप ब्लॉग भी कहा जाता है। इस ब्लॉग में ब्लॉगर के स्वयं के लेखन की बजाय दूसरों द्वारा लिखित जानकारी को संपादित करने और उपयोग करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। एक से अधिक लेखक संबंधित विषयों पर ब्लॉग पोस्ट लिखते हैं। ब्लॉगर (ब्लॉग का मालिक) तैयार की गई सामग्री की समीक्षा, संपादन और वितरण करता है।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न ।

1. ब्लॉग शब्द ..... से बना है।

   A) Web Page B) Web-log

   C) Web Site D) Web Content

2. ब्लॉग लिखने वाले व्यक्ति को ..... कहा जाता है।

   A) संपादक B) लेखक

   C) ब्लॉगर D) पाठक

3. हिंदी में ब्लॉग को ..... कहा जाता है।

   A) पत्र B) लेख

   C) चिट्ठा D) कहानी

4. ब्लॉग एक..... मंच है।

   A) प्रिंट B) डिजिटल

   C) मौखिक D) पारंपरिक

5. ब्लॉग पर प्रकाशित लेख को..... कहा जाता है।

   A) पोस्ट B) टैग

   C) फीड D) पेज

6. RSS का पूरा नाम..... है।

   A) Rapid System Service B) Really Simple Syndication

   C) Real Source System D) Read Simple Site

7. ब्लॉग का सबसे विस्तृत भाग..... होता है।

   A) शीर्षक B) भूमिका

   C) मुख्य विषय-वस्तु D) उपसंहार

8. ब्लॉग में पाठकों की प्रतिक्रिया को..... कहा जाता है।

   A) पोस्ट B) कमेंट्स

   C) टैग D) फीड

9. ब्लॉग से आय कमाने के लिए ..... का उपयोग किया जाता है।

A) रेडियो B) टीवी

C) गूगल-ऐडसेंस D) अखबार

10. ब्लॉगिंग में विषय को वर्गीकृत करने के लिए..... का उपयोग होता है।

A) पोस्ट B) लेबल्स

C) फीड D) डैशबोर्ड

11. ब्लॉगिंग की शुरुआत सबसे पहले ..... द्वारा की गई मानी जाती है।

A) जॉन बर्गर B) पीटर मेरहोल्स

C) जस्टीन हॉल D) हजारी प्रसाद द्विवेदी

12. 'ब्लॉग' शब्द को प्रचलन में लाने का श्रेय..... को दिया जाता है।

A) जस्टीन हॉल B) जॉन बर्गर

C) पीटर मेरहोल्स D) राजेंद्र यादव

13. ब्लॉग पर सामग्री को संग्रहित करने की प्रक्रिया ..... कहलाती है।

A) पोस्टिंग B) होस्टिंग

C) टैगिंग D) फीडिंग

14. ब्लॉग लेखन में लेखक को..... स्वतंत्रता प्राप्त होती है।

A) सीमित B) आंशिक

C) पूर्ण D) न्यूनतम

15. ब्लॉग के अंत में दिया गया निष्कर्ष..... कहलाता है।

A) भूमिका B) शीर्षक

C) उपसंहार D) टैग

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

1. पोस्टिंग (Posting) - ब्लॉग लिखने के बाद उसे प्रकाशित करने की प्रक्रिया को Posting कहते हैं।

2. टिप्पणियां (Comments) – ब्लॉग पोस्ट पढ़कर पाठक द्वारा दिया गया फीडबैक Comments कहलाता है।
3. ऐडसेंस (AdSense) – गूगल द्वारा ब्लॉग पर विज्ञापन दिखाने की सुविधा को AdSense कहा जाता है।
4. ब्लॉग आर्काइव (Blog -rchive) – ब्लॉग पर प्रकाशित सभी पुरानी पोस्टों का संग्रह Blog -rchive कहलाता है।
5. लेबल्स (Labels) – पोस्ट को विषय के अनुसार वर्गीकृत करने के लिए Labels का उपयोग किया जाता है।
6. फीड (Feed - RSS/-TOM²) – ब्लॉग की नई पोस्ट को स्वचालित रूप से प्राप्त करने की प्रणाली Feed कहलाती है।
7. सर्च ब्लॉग (Search Blog) – ब्लॉग की सामग्री को सर्च इंजन के माध्यम से खोजने की प्रक्रिया Search Blog कहलाती है।
8. फॉलोअर्स (Followers) – जो पाठक ब्लॉग को नियमित रूप से पढ़ते और फॉलो करते हैं, उन्हें Followers कहा जाता है।
9. डैशबोर्ड (Dashboard) – ब्लॉग का नियंत्रण केंद्र, जहाँ से सभी गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं, Dashboard कहलाता है।
10. अलेक्सा रैंकिंग (Alexa Ranking) – वेबसाइट/ब्लॉग की लोकप्रियता के आधार पर दी जाने वाली वैश्विक रैंकिंग -lexa Ranking कहलाती है।
11. लेआउट (Layout) – ब्लॉग पेज की डिजाइन और सजावट की व्यवस्था को Layout कहते हैं।
12. टेम्पलेट (Template) – ब्लॉग के डिजाइन का पूर्व–निर्मित प्रारूप Template कहलाता है।
13. साइन इन (Sign In) – ब्लॉग खाते में प्रवेश करने की प्रक्रिया Sign In कहलाती है।
14. साइन आउट (Sign Out) – ब्लॉग खाते से बाहर निकलने की प्रक्रिया Sign Out कहलाती है।
15. साइन अप (Sign Up) – नया ब्लॉग/खाता बनाने की प्रक्रिया Sign Up कहलाती है।
16. ब्लॉग वेकअप (Blog Wake Up / Recovery) – बंद किए गए ब्लॉग को पुनः सक्रिय करने की प्रक्रिया Blog Recovery कहलाती है।
17. एग्रीगेटर (Aggregator) – विभिन्न ब्लॉग्स की सामग्री को एक स्थान पर दिखाने वाला सॉफ्टवेयर Aggregator कहलाता है।
18. मॉडरेटर (Moderator) – समूह ब्लॉग का संपादक या नियंत्रक Moderator कहलाता है।
19. टेम्पलेट डिज़ाइनर (Template Designer) – ब्लॉग के लिए थीम और डिजाइन बनाने वाला टूल Template Designer कहलाता है।

20. पेज तत्व (Page Elements) – ब्लॉग के लेआउट में उपयोग होने वाले विभिन्न घटक Page Elements कहलाते हैं।
21. स्टेटस (Stats / Statistics) – ब्लॉग पर आने वाले पाठकों, ट्रैफिक और स्रोत की जानकारी Statistics (Stats) कहलाती है।

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर।

1. B) Web-log	2. C) ब्लॉगर	3. C) चिट्ठा	4. B) डिजिटल
5. A) पोस्ट	6. B) Really Simple Syndication		7. C) मुख्य विषय-वस्तु
8. B) कमेंट्स	9. C) Google AdSense		10. B) लेबल्स
11. C) जस्टीन हॉल	12. C) पीटर मेरहोल्स		13.B) होस्टिंग
14. C) पूर्ण	15. C) उपसंहार		

2.7 सारांश (Summary)।

1. ब्लॉग लेखन आधुनिक डिजिटल युग का एक प्रभावी संचार माध्यम है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचार, अनुभव और जानकारी इंटरनेट पर साझा करता है।
2. 'ब्लॉग' शब्द 'वेब-लॉग' से बना है, जिसका अर्थ ऑनलाइन डायरी है, जिसमें लेख समय-समय पर प्रकाशित किए जाते हैं।
3. ब्लॉग लेखन में लेखक को पूर्ण स्वतंत्रता होती है और वह बिना किसी संपादकीय नियंत्रण के अपनी बात प्रस्तुत कर सकता है।
4. ब्लॉग एक द्विपक्षीय संचार माध्यम है, जिसमें पाठक टिप्पणियों के माध्यम से अपनी प्रतिक्रिया दे सकते हैं।
5. ब्लॉग लेखन के विभिन्न स्वरूप होते हैं, जैसे व्यक्तिगत, विषय-आधारित, मल्टीमीडिया, समाचार एवं व्यावसायिक ब्लॉग।
6. ब्लॉग लेखन का एक निश्चित प्रारूप होता है- शीर्षक, भूमिका, मुख्य विषय-वस्तु और उपसंहार।
7. ब्लॉग ज्ञान-विनिमय, जागरूकता निर्माण और आत्म-अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है।
8. ब्लॉग लेखन से लेखन कौशल, आत्मविश्वास और रचनात्मकता का विकास होता है तथा यह रोजगार का माध्यम भी बन सकता है।

9. ब्लॉग के माध्यम से ऑनलाइन व्यवसाय, विज्ञापन (जैसे AdSense) और एफिलिएट मार्केटिंग से आय अर्जित की जा सकती है।
10. ब्लॉग लेखन में भाषा, नैतिकता और सामाजिक मर्यादाओं का ध्यान रखना आवश्यक है, ताकि सामग्री सकारात्मक और उपयोगी बने।

2.8 स्वाध्याय।

अ) लघुत्तरी प्रश्न।

1. ब्लॉग लेखन क्या है? इसकी परिभाषा लिखिए।
2. ब्लॉग लेखन कास्वरूप स्पष्ठ कीजिए।
3. ब्लॉग लेखन का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

ब) दिर्घोत्तरी प्रश्न:

1. ब्लॉग लेखन के प्रारूप को विस्तार से समझाइए।
2. ब्लॉग और पारंपरिक लेखन में क्या अंतर है?
3. ब्लॉग लेखन का प्रारूप स्पष्ट कीजिए।
4. ब्लॉग लेखन के प्रकारो पर प्रकाश डालिए ।

2.9 क्षेत्रीय कार्य (Field Work)

1. अपने क्षेत्र के किसी व्यक्ति/छात्र का ब्लॉग खोजकर उसका अध्ययन करें और उसकी विशेषताएँ लिखें।
2. स्वयं एक ब्लॉग तैयार करें और उसमें किसी समसामयिक विषय पर पोस्ट लिखें।
3. किसी लोकप्रिय ब्लॉग वेबसाइट (जैसे Blogger या WordPress) का निरीक्षण कर उसके विभिन्न भागों (Dashboard, Layout, Comments आदि) का विवरण लिखें।
4. पाँच ब्लॉग पोस्ट पढ़कर यह विश्लेषण करें कि उनमें कौन-कौन से विषय अधिक लोकप्रिय हैं।
5. अपने कॉलेज/संस्थान से संबंधित एक ब्लॉग बनाकर उसमें जानकारी प्रकाशित करें।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. डॉ. राकेश कुमार सिंह, डिजिटल मीडिया और ब्लॉग लेखन (2018), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. डॉ. बालेंदु शर्मा 'दाधीच'ब्लॉगिंग और हिंदी (2015), प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. अविनाश वाचस्पति, हिंदी ब्लॉगिंग : स्वरूप और संभावनाएँ (2016), साहित्य भवन, आगरा।

4. Daniel J. Barrett, Blogging for Beginners (2012), Wiley Publishing.
5. Susannah Gardner Shane Birley, Blogging for Dummies (2010), Wiley Publishing.

❑❑❑

इकाई–3

एकांकी

1. अधिकार का रक्षक

– उपेंद्रनाथ अश्क

अनुक्रम

3.1.1 उद्देश्य

3.1.2 प्रस्तावना

3.1.3 विषय विवेचन

3.1.3.1 उपेंद्रनाथ अश्क का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

3.1.3.2 'अधिकार का रक्षक' एकांकी का परिचय ।

3.1.3.3 'अधिकार का रक्षक' एकांकी की कथावस्तु या कथानक ।

3.1.4 स्वयं अध्ययन के प्रश्न ।

3.1.5 पारिभाषिक शब्द / शब्दार्थ ।

3.1.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्न के उत्तर ।

3.1.7 सारांश ।

3.1.8 स्वाध्याय ।

3.1.9 क्षेत्रीय कार्य ।

3.1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

3.1.1 उद्देश्य:

इस इकाई को पढ़ने के बाद छात्र–

1. उपेंद्रनाथ अश्क के साहित्य से परिचित होंगे।
2. उपेंद्रनाथ अश्क के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
3. अधिकार का रक्षक' एकांकी की कथावस्तु से परिचित होंगे।

4. छात्र वर्तमान समाज सेवकों की ढोंगी प्रवृत्ति से परिचित होकर सचेत रहेंगे।

3.1.2 प्रस्तावना :

उपेंद्रनाथ अश्क आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रतिभाशाली लेखक है। उन्होंने हिंदी साहित्य की कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, काव्य आदि विधाओं में प्रमुखता से लेखन किया है। उनके साहित्य में समाज का ययार्थ चित्रण हुआ है। जिसमें मध्यवर्ग और निम्न मध्यवर्गीय समाज की विभिन्न समस्याओं को प्रमुखता से उभारा है। 'अधिकार का रक्षक' अश्क की महत्वपूर्ण एकांकी है। जिसमें एकांकीकारने वर्तमान समाज सेवक विशेष रूप से राजनीतिक नेता लोगों की दोहरी, ढोंगी, अवसरवादी, स्वार्थी, अहंकारी, लालची प्रवृत्ति पर प्रहार किया है और जनता को ढोंगी और अवसरवादी राजनीतिक लोगों के प्रति सचेत किया है। इस एकांकी में 'सामान्य लोगों के हालात भी दिखाए गए है। प्रस्तुत एकांकी वर्तमान यथार्थ को प्रस्तुत करती है।

3.1.3 विषय विवेचन

3.1.3.1 एकांकीकार उपेंद्रनाथ अश्क जी का जीवन परिचय :

उपेंद्रनाथ अश्क हिंदी भाषा के महत्वपूर्ण साहित्यकार हैं। उन्होंने अपने जीवन में जो अनुभव किया। जो नजदीक से देखा और समझा, उसको उन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर साहित्य में उतारने का बखूबी प्रयास किया है। अतः विशेष रूप से उन्होंने मध्यवर्ग की सामाजिक समस्याओं को वाणी देने का प्रयास किया है। ऐसे संघर्षशील और प्रतिभाशाली साहित्यकार के साहित्य के समझने हो लिए हमें उनके जीवन परिचय से अवगत होना जरूरी है।

जीवन परिचय :

जन्म एवं जन्मस्थान: उपेंद्रनाथ अश्क का जन्म दि. 14 सितंबर, सन् 1910 ई. को पंजाब राज्य के जालंधर नगर में हुआ।

परिवार और बचपन :

अश्क का बचपन का नाम इंद्र नारायण था। परंतु पिता को पसंद न आने के कारण उन्होंने उनका नाम 'उपेन्द्रनाथ' रखा। अश्क जी अपने छः भाईयों में दूसरे थें। अश्क जी का बचपन संघर्षमय, दुःखमय और कलहपूर्ण वातावरण में बीता। पीता पंडीत माधोराम स्टेशन मास्टर थें। शराब पीने की आदत के कारण परिवार संबंधी अपनी जिम्मेदारी ठिक से निभाते नहीं थे। परिणाम स्वरूप छोटी-सी उम्र में उन्हें रोजी-रोटी के लिए मजदूरी करनी पड़ी। माँ वसंत देवी अत्यंत संवेदनशील नारी थी। माँ ने अपने बच्चों की परवरीश में काई कसर नहीं छोड़ी। इस तरह अश्क जी का बचपन गरीबी और मुसीबतों का सामना करते हुए बीता।

शिक्षा–दिक्षा :

अश्क की पढ़ाई का प्रारंभ घर पर ही हुआ। बचपन में उन्होंने अपने पिताजी से पढ़ाई शुरू की। बाद में स्कूली शिक्षा पूरी कर उन्होंने बी.ए. किया। बी.ए. के बाद कुछ दिन अध्यापक की नौकरी करने के बाद उन्होंने एल. एल. बी. किया। पत्नी की मृत्यु के कारण वे जज बन नहीं पाए और स्वतंत्र रूप से साहित्य सृजन में लग गए।

वैवाहिक जीवन :

उपेंद्रनाथ अश्क का पहला विवाह शीलादेवी के साथ सन् 1932 ई. में हुआ था। परंतु चार साल के बाद ही शीलादेवी की यक्ष्मा की बीमारी के कारण मौत हो गई। पत्नी की मृत्यु के बाद वे नित्य रूप से साहित्य– सृजन करने लगे। समाज के लांछन से बचने के लिए उन्होंने भाई के कहने पर दूसरी शादी माया से की। जो उनके इच्छा के विरुद्ध थी। महिने में ही दिखावटी जीवन से उब कर उन्होंने उसे त्याग दिया और अश्क जी ने 'कौशल्या' से अपना तीसरा विवाह किया। कौशल्या जी सच्चे अर्थ में अश्क जी सहायक, साथी, सहयोगी मित्र, प्रेमिका, प्रशंसक और सफल पत्नी बनी।

जीवन संघर्ष:

उपेंद्रनाथ अश्क का जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा है। बचपन से ही उनके जीवन का संघर्ष गरीबी और पारिवारिक समस्या को सुलझाने में हुआ। शिक्षा, स्वास्थ्य, जीविका, परिवार, साहित्य आदि जीवन के हर क्षेत्र में उन्हें संघर्ष का सामना करना पड़ा। पाठशाला में पढ़ते समय भी उनके पास पैसे नहीं रहते थें। जरूरत पड़ने पर उनको जीविका चलाने के किए झाड़ू लगाने से लेकर अखबार बेचने, विज्ञापन बाँटने का काम भी करना पडा। वैवाहिक जीवन भी काफी संघर्षमयी रूप से बीता । इस तरह अश्क जी पूरा जीवन संघर्ष का सामना करते बीता। परंतु इसी संघर्ष ने उन्हें सफलता के शिखर पर पहुँचा दिया।

मृत्यु :

उपेंद्रनाथ अश्क जी अपने जीवन से संघर्ष करते हुए 85 साल की उम्र में चल बसे। उनकी मृत्यु दि. 19 जनवरी, सन् 1996 ई. में इलाहाबाद में हुई।

व्यक्तित्व :

उपेंद्रनाथ अश्क का व्यक्तित्व साधारण होने के बावजूद दूसरों को सहज प्रभावित करनेवाला और आकर्षक था। वे पतले छरहरे कद के थें। उनके बाल घुँघरालू थें। उनका पहनावा एक–सा नहीं था। धोती–कुर्ते से लेकर जाकेट, सूट–बूट सभी प्रकार का लिबास वे पहनते थें। उनका खाना–पिना बहुत सीधा–साधा परंतु नियमित था। सुमित्रानंदन पंत उनके व्यक्तित्व के बारे में लिखते हैं–वे अत्यंत परिश्रमशील, बहुमुखी प्रतिभावान व्यक्ति हैं और कला की अपूर्व परख रखते हैं। उनके गंभीर व्यवहार ज्ञान के साथ उनका बच्चों सा चंचल, भोला, दूसरों को अकारण छेड़कर रस लेने के स्वभाव उनकी प्रिय विशषता है। इस तरह उनका व्यक्तित्व मुक्त, मिलनसार, हँसमुख, संवेदनशील, जिद्दी, जिंदादिल, विनोदशील था। उनके व्यक्तित्व में

अभिनेता की झलक भी दिखाई देती है। उनकी आवाज में भी एक जादू थी। वे दूसरों की हू-ब-हू नकल करने में भी माहिर थें। वे उम्र के बंधन को न मानने वाले थें। इसलिए उनमें एक ओर गंभीरता, दार्शनिकता भी है तो दूसरी ओर एक बचपना और मिलनसारिता भी है। अतः अश्क जी व्यक्तित्व साधारण होने के बावजूद अपने आचरण के कारण असाधारण बना हुआ है। जो दूसरों पर सहज प्रभाव छोड़ता है। निश्चत रूप से अश्क जी का व्यक्तित्व आकर्षक और प्रभावशाली है।

कृतित्व:

उपेंद्रनाथ अश्क का व्यक्तित्व जितना आकर्षक एवं प्रभावशाली है उतना ही उनका कृतित्व सराहनीय है। अश्क जी हिंदी साहित्य के अग्रगण्य साहित्यकार है। जिन्होंने अपनी जीविका चलाने के लिए अनेक छोटे-मोटे काम किए। परंतु उन्हें साहित्य सृजन में जो समाधान मिला वह अन्यत्र नहीं। इसलिए नित्य रूप से वे साहित्य-सृजन में जुटे रहें। उनका साहित्यिक योगदान ही उनका कृतित्व है। उन्होंने अपनी प्रतिभा, रुचि और लगन से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। हिंदी साहित्य की केवल एक विधा में नहीं बल्कि साहित्य की अनके विधाओं में उन्होंने लेखन कार्य कर हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं को समृद्ध बनाने का काम किया है।

हिंदी साहित्य की कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, काव्य, संस्मरण, निबंध और अनुवाद आदि विधाओं में उन्होंने लेखन कार्य किया है। उनके साहित्य लेखन को निम्नांकित रूप में देखा जा सकता है-

1. नाटक साहित्य :

जय-पराजय (1937), स्वर्ग की झलक (1938), छटा बेटा (1940), कैद और उड़ान (1950), पैंतरे (1958), अलग-अलग रास्ते (1967) अंजो दीदी (1955), भंवर (1961), बड़े खिलाड़ी (1967) आदि नाटक उन्होंने लिखे है। जिनमें जीवन की यथार्थता को बारकाई से चित्रित किया है।

2. एकांकी साहित्य

'मुखड़ा बदल गया', 'पच्चीस श्रेष्ठ एकांकी', 'पर्दा उठाओ-पर्दा गिराओ', 'साहब को जुकाम है', 'तूफानों से पहले', 'चरवाहे देवताओं की छाया में', 'अन्धी गली', 'पापी, लक्ष्मी का स्वागत', 'अधिकार का रक्षक', 'सूखी डाली', 'कामदा', 'नया-पुराना', 'बहनें', 'चिलमन', 'चुंबक', 'तौलिये', 'पक्का गाना', 'कइसा साबः कईसे आया', 'बमसिया', 'कस्बे के क्रिकेट', 'कल्ब का उद्घाटन', 'मस्केबाजों का स्वर्ग', आदि एकांकियों में अश्क जी ने समाज की विभिन्न समस्याओं को वाणी देने का प्रयास किया है।

3. उपन्यास साहित्य:

'गिरती दीवारें', 'शहर में घूमता आइना', 'एक नन्ही कंदील', 'निमिषा', 'बाँधो न नाव इस गाँव', 'पलटती धारा', 'छोटे-बड़े लोग', 'चंद्रा', 'गर्म राख', 'एक रात का नरक', 'चेतन-संक्षिप्त', 'बड़ी-बड़ी आंखें', 'संघर्ष का सत्य', 'पत्थर-अल-पत्थर', 'सितारों का खेल', 'नन्ही सी लौ' आदि उपन्यासों का

सृजन कर अश्क जी ने अपने उपन्यास साहित्य को समृद्ध किया है। जिसमें समाज का यथार्थ चित्रण विस्तार से किया गया है।

4. कहानी साहित्य:

उपेंद्रनाथ अश्क ने कहानियों का सृजन भी किया है। उनके कहानी संग्रह के नाम इस प्रकार है–'उबाल और अन्य कहानियाँ', 'सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ', 'छिंटें', 'जादूई की शाम का गीत', 'काले साहब', 'बैंगन का पौधा', 'आकाशचारी', 'कहानी की लेखिका और जेहलस के सात फुल', 'अश्क की श्रेष्ठ कहानियां', 'पलंग', 'पिंजरा', 'निशानियाँ', 'दो धारा', 'रोबदाब', 'वासना के स्वर' आदि।

5. काव्य:

उपेंद्रनाथ अश्क ने कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी के साथ–साथ काव्य का भी निर्माण किया है। जैसे – 'स्वर्ग एक तलघर है', 'अदृश्य नदी', 'पीली चोंचवाली चिड़ियों के नाम', 'सड़कों के ढले साए', 'खोया हुआ प्रभा मंडल', 'दीप जलेगा', 'चांदनी रात और अजगर', 'बरगद की बेटी' आदि।

6. संस्मरण

'बेदी : मेरा हरदम मेरा दोस्त', 'मण्टो : मेरा दुश्मन', 'चेहरे: अनेक (1 से 5 खंड)', 'ज्यादा अपनी कम परायी', 'आसमाँ और भी है' आदि।

7. अनुवाद:

'ये आदमी: ये चुन्हे (उपन्यास)', 'लंबे दिन की यात्रा', 'रात में (नाटक)', 'अभिशप्त (नाटक)' आदि उनका अनूदित साहित्य है।

समग्रता से कह सकते है कि उपेंद्रनाथ अश्क ने हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन कार्य कर हिंदी साहित्य को समृद्ध करने का प्रयास किया है। अत: अश्क जी कृतित्व सराहनीय है जो पाठकों को ऊर्जा देकर जीवन के यथार्थ से परिचित कराता है।

3.1.3.2 'अधिकार का रक्षक' एकांकी का परिचय:

उपनेंद्रनाथ अश्क' हिंदी के एक प्रसिद्ध नाटककार एवं एकांकीकार है। उन्होंने अपने नाटक एवं एकांकियों में मध्यम वर्गीय समाज को केंद्र में रखकर सामाजिक एव राजनीतिक एकांकी एवं नाटकों का निर्माण किया है। उनके नाटक सामाजिक समस्याओं को उजागर करते हैं। 'अधिकार का रक्षक' अश्क जी का प्रसिद्ध एकांकी है। प्रस्तुत एकांकी में राजनीतिक नेता अर्थात् सामाजिक कार्यकर्ताओं की पोल खोली है। राजनीतिक नेता चुनाव से पहले जनता को बड़े–बड़े सपने दिखाते हैं और चुनाव जीतकर कुर्सी मिलने पर अपने किए वादों से मुखर जाते हैं। वह केवल अपना स्वार्थ देखते हुए कुर्सी बनाए रखना चाहते हैं। प्रस्तुत एकांकी का कथानक संक्षिप्त होने के बावजूद भी प्रभावशाली है। जो जनता की समस्याओं को वाणी देता हुआ राजनीतिक नेताओं की अवसरवादी, स्वार्थी, झूठी, दोहरी आदि प्रवृत्तियों को प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत

एकांकी में लेखक ने अपने कथानक को अभिव्यक्ति देने के लिए विशेष पात्रों की योजना बनाई है। एकांकी का प्रमुख पात्र 'सेठ जी' है। जो प्रांतीय एसेंबली के उम्मीदवार हैं। रामलखन सेठ जी का नौकर है। भगवती सेठ जी के यहाँ रसोईया का काम करता है। श्रीमती सेठ 'सेठ जी' की पत्नी है। रामदेई सेठ जी के घर में सफाई करनेवाली महिला है। बलराम सेठ जी का छोटा बेटा है। इन पात्रों के साथ अन्य पात्रों की योजना भी एकांकीकार ने की है। जिसमें अन्य पात्र हैं – पत्र के संपादक और कॉलेज के दो लड़के। इन पात्रों और संक्षिप्त और मार्मिक संवादों से कथानक को आकर्षक एवं प्रभावशाली बनाने का प्रयास किया गया है। यह एकांकी सेठ जी के ड्राइंग रूम में सुबह के समय है। एक के बाद एक पात्र मंच पर आकर कथानक को गति देता है। एकांकीकार ने प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से जो समाज के 'अधिकारों के रक्षक' बने हैं, जो अपनी कुर्सी बनाए रखने के लिए झूठा मुखौटा पहनकर दूसरों को धोखा देते हैं, ऐसे समाज घातक राजनीतिक नेताओं की वास्तविकता उजागर की है। समाज को ऐसे 'अधिकारों के रक्षकों' से जागृत करना एकांकी का मूल उद्देश्य रहा है।

3.1.3.3 'अधिकार का रक्षक' एकांकी की कथावस्तु या कथानक :

उपेंद्रनाथ अश्क का एकांकी 'अधिकार का रक्षक' हिंदी का महत्वपूर्ण एकांकी है। प्रस्तुत एकांकी का कथानक संक्षिप्त आकर्षक और प्रभावशाली है। इस की प्रस्तुति के लिए लेखक ने प्रभावशाली पात्रों की योजना बनाई है। प्रस्तुत एकांकी कार कथानक में एकांकी कर ने सेठ जी को प्रमुख पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है, जो एकांकी का केंद्रीय पात्र हैं। साथ ही कथानक में सेठ जी की पत्नी श्रीमती सेठ, बलराम, राम लखन, भगवती, रामदेई, संपादक, कॉलेज के लड़के आदि पात्रों को सहजता से प्रस्तुति दी है।

प्रस्तुत एकांकी का प्रारंभ सुबह से होता है। मंच पर पर्दा उठने पर सेठ जी का ड्राइंग रूम दिखाई देता है। इसी ड्राइंग रूम में एकांकी का प्रमुख पात्र 'सेठ जी' सुबह–सुबह समाचार पत्र देख रहे हैं। इतने में फोन की घंटी बजती है और सेठ जी फोन पर बात करते हैं। इसी दृश्य से कथानक का आरंभ होता है। सेठ जी ने चुनाव को सामने रखते हुए कल की हुई सभा (जलसा) में अपना भाषण दिया था। इसी सिलसिले में वह दलित और हरिजन सभा के मंत्री से बात करते हैं और कल के जलसे के बारे में पूछते हैं। वह उस मंत्री को पूछते हैं कि क्या कल के जलसे के बाद सभी दलित मेरे पक्ष में वोट देने के लिए तैयार हुए हैं। इस बात की सहमति मिलने पर वह कहते हैं कि, मैंने अपना सारा जीवन दलितों और गरीबों की सेवा में लगा दिया है। बच्चों की हमारे घर में ही क्या दशा बन गई है? उनका लालन–पालन, शिक्षा सब कितना पुरानी पद्धतियों का है। बात–बात पर हम उन्हें फटकारते हैं, डाँटते हैं और बच्चे डरपोक और डब्बू बनकर रह जाते हैं। इतने में सेठ जी का छोटा बेटा बलराम उनके पास आ जाता है और उन्हें मेले में ले जाने की जिद करता है। बेटे की बात से परेशान होकर सेठ जी बच्चे को डाँटते–फटकारते हुए उसे थप्पड़ लगाते हैं। जिससे बच्चा जोर–जोर से रोता हुआ वहीं बैठ जाता है। सेठ जी नौकर रामलखन को बलराम को ले जाने के लिए कहते हैं और दोबारा यहाँ न आने देने की चेतावनी भी देते हैं। नौकर बलराम को लेकर जाता है। यहाँ से जाते समय सेठजी नौकर को चेतावनी देते हैं कि कोई भी यहाँ आए तो पहले खबर कर देना, नहीं तो मैं तुम्हारी भी पिटाई करूँगा। इतना कहकर पुनः फोन का चोगा उठाकर बात करने लगते हैं। पूरे प्रांत में मैं ही ऐसा व्यक्ति

हूँ, जिन्होंने पाठशाला में बच्चों पर होनेवाले शारीरिक दंड तुरंत बंद कर दिए हैं। यथार्थ रूप में सेठ जी खुद अपने बेटे को डाँटते-फटकारते हुए पीटते हैं। असल में वही बेवजह अपने बच्चें को मार कर उसपर अत्याचार करते हैं। अतः यहाँ सेठ जी के दोहरे व्यक्तित्व की पहचान होती है। जो अपने घर में ही बेटे को बेवजह मारकर दंडित करते हैं और यहाँ फोन पर मंत्रियों को पाठशालाओं मैं पढ़नेवाले बच्चों के शारीरिक दंड को बंद करने की बात करते हैं।

आगे सेठ जी फोन पर बात करते हुए मंत्री से कहते हैं कि, घर के नौकरों पर कितना अत्याचार किया जाता है। इसलिए मैंने उनकी रक्षा के लिए नौकर यूनियन स्थापित की है। अगर मैं जीत जाता हूं तो मैं नौकरों की सेवा का काम करूँगा। ठीक है आप घोषणा कर दीजिए मैं जलसे में जरूर आऊंगा। सेठ जी फोन रख देते हैं।

इतने में नौकर रामलखन जाकर सेठ जी को बता देता है कि सफाई काम करने वाली रामदेई आयी है और वह अपनी मजदूरी माँग रही है। तब सेठ जी उसे अगले महीने में आकर मजदूरी ले जाने को कहते हैं। तब रामदेई जी कहती है कि घर में अनाज का एक दाना भी नहीं है। कुछ पैसे दे दो। दो महीने पहले ही हो चुके हैं। तब स्वार्थी, अन्यायी सेठ जी उसे बिना पैसे दिए घर से निकाल देता है। रामदेई के जाते ही भगवती रसोईया आता है और वह सेठ जी से कहता है कि, सेठ जी हमारा हिसाब करवा दीजिए। तब उसे चुनाव आने के कारण कुछ दिन रुकने के लिए कहते हैं। परंतु भगवती बताता है कि अब रुकना संभव नहीं है। मैं अपने बच्चों को कहाँ से खिलाऊँ ? बीमार बीवी की दवा कहाँ से लाऊँ? तब वह उसे दो रूपए देकर जाने को कहते हैं। परंतु भगवती अपना पूरा पैसा माँगता है जिस पर गुस्सा होकर सेठ जी उसे तुझे चोरी के इल्जाम में जेल भिजवाने की धमकी देते हैं। जिस पर भगवती कहता है कि, आपने चंदे के नाम पर इकट्ठा किया पैसा हजम किया है। आप कर ही क्या सकते हो? जिस पर सेट गुस्सा होकर रसोइया भगवती को पीट कर बाहर निकलवाते हैं। इसी तरह एक ओर सेठ जी नौकर के अन्याय-अत्याचारों के विरोध में 'नौकर यूनियन' स्थापित करने और उनकी सेवा करने की बात करते हैं, तो दूसरी ओर अपने ही घर में रामदेई, भगवती को बिना मजदूरी दिए उन्हें मारकर घर से निकाल देते हैं। अतः सेठ जी के कथनी और करनी में अंतर है। वह स्वार्थी और लालच से भरे हैं।

सेठ जी रामलखन को आवाज देकर अखबार लाने को कहते हैं और सोचते हैं कल के मेरे वक्तव्य ने छात्रों में हलचल मचा दी होगी। इतने में फोन की घंटी बजती है। फोन पर आगे से होजरी यूनियन के मंत्री बात करते हैं, जिससे पता चलता है कि सभी मजदूर सेठ जी को ही वोट देंगे। यह सुनकर सेठ जी असेंबली में जाकर मजदूरों की अवस्था सुधारने और सभी माँगे पूरी करवाने का वादा करते हैं। जिसमें काम के घंटे कम कर तनख्वाह पूरी देने की बात करते हुए फोन रख देते हैं। उतने में संपादक का प्रवेश होता है। अखबार लाने गया रामलखन अख़बार लेकर आता है और सेठ जी को देकर बाहर चला जाता है। तब संपादक अखबार का सारा काम करने में असमर्थता दिखाते हैं। अखबार के संपादक संपादन का काम करते-करते रात के दो-तीन बज जाने की बात करते हैं। साथ ही एक सहायक संपादक रखने की बात भी उठाते हैं। जो दिन में काम करेगा और रात में संपादक जी। संपादक की इस बात को न मानते हुए सेठ जी पहले काम

छोड़ देने की बात करते हैं, तभी रामलखन भीतर आकर दो लड़के आपसे मिलने आने की सूचना देता है। सेठ जी उन दोनों को बुलाने की बात करते हुए कहते हैं कि, आज के समाचार पत्र में प्रकाशित वक्तव्य से प्रभावित होकर छात्र मुझसे मिलने आए हैं। संपादक व्यंग्य रूप से कहते हैं अवश्य प्रभाव पड़ा होगा। इतने में दो लड़के अंदर आते हैं और सेठ जी को नमस्ते कहकर बैठते हैं। तभी सेठ जी अपने वक्तव्य के बारे में छात्रों को पूछते हैं। तब छात्र बताते हैं कि विश्वविद्यालय के छात्रावास के लगभग पचहत्तर प्रतिशत छात्र आपसे प्रभावित होकर आपको ही वोट देंगे। परंतु उनका कहना है कि वर्तमान प्रिंसिपल को हटाया जाए। हम कल हड़ताल करेंगे। आपने छात्रों के अधिकारों का बीड़ा उठाया है। इसलिए हम आपकी सेवा में आए हैं। इस पर सेठ जी दो छात्रों को संपादक से मिलने को कहते हैं। छात्र कल संपादक जी से मिलने का वादा कर निकल जाते हैं। लड़कों के जाने के बाद सेठ जी संपादक को लड़कों की बात न छापने का आदेश देते हैं। क्योंकि प्रिंसिपल सेठ जी के कृपालु है। तभी संपादक को कहते हैं कि चुनाव हो जाने पर सहायक प्रबंधक का इंतजाम कर सकते हैं। संपादक गहरी सांस लेकर वहाँ से चला जाता है।

संपादक के चले जाते समय ही श्रीमती सेठ दरवाजे को जोर से धक्का मारती हुई बलराम का हाथ पड़कर अंदर आती है। वह अपने पति सेठ जी को कहती हैं कि, तुम्हें बच्चों से प्यार करना कब आएगा? जब देखो उन्हें पीटते रहते हो। आपको तो हमसे और बच्चों से बात करने का समय बिल्कुल नहीं है। पत्नी की बात से क्रोधित होकर सेठ जी पत्नी को कहते हैं कि, तुम्हें भी बात करने का तरीका नहीं है। इन बच्चों को इधर मत आने देना। आते ही सुबह-सुबह दिमाग चाटने लगते हैं। तभी श्रीमती सेठ बच्चे को एक चांटा लगाती हैं और कहती हैं कि, यह तुम्हारे बाप नहीं दुश्मन है। दूसरों के बच्चों से प्रेम करेंगे, उनकी उन्नति के लिए भाषण झाड़ेंगे पर घर के बच्चों के लिए उनके पास बिल्कुल समय नहीं है। तभी सेठ जी अत्यंत क्रोधित होकर पत्नी को धकेलते हुए यहाँ न आने की बात करते हैं। तभी पत्नी भी अपने पति से भला-बुरा कहकर अपने मायके जाने की बात करती हुई निकल जाती हैं।

पत्नी के जाने के बाद फोन बजता है। उसे उठाकर पहले थोड़े क्रोध में और बाद में अत्यंत मधुरता से श्रीमती सरला देवी से कहते हैं कि,हमें क्षमा कीजिए। मैं काम से परेशान था। क्या आपकी तबीयत तो ठीक है? कैसे याद किया हमें? क्या मैं आपके महिला समाज से कुछ आशा रखूँ? ठीक है मैं आपका अत्यंत आभारी हूँ। मैं आपको पूरा विश्वास दिलाता हूँ कि मैं महिलाओं के हितों की पूरी रक्षा करूंगा। महिलाओं के अधिकारों के लिए लडूँगा। मुझसे बढ़िया रक्षक आपको और कोई न मिलेगा। इसी दृश्य से एकांकी समाप्त होती है।

यहाँ पर भी स्पष्ट होता है कि जो सेठ जी महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और सम्मान की बात महिलाओं के समाज के प्रमुख श्रीमती सरला देवी से करते हैं, वही सेठ जी अपने घर में पत्नी के अधिकारों का हनन कर उन्हें प्रताड़ित करते हैं। सेठ जी के इस दोहरे और अवसरवादी व्यक्तित्व पर एकांकीकार ने कठोर प्रहार किया है। वह जनता को बताना चाहते हैं कि सेठ जी जैसे समाज सेवक जनता की सेवा का ढोंग कर अपना स्वार्थ साधने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। उन्हें बच्चे, महिला, नौकर, मजदूर, छात्र आदियों की समस्या से कोई लेना-देना नहीं है। केवल चुनाव के समय उनके प्रति सेवाभाव दिखाकर

अपना स्वार्थ पूरा करना चाहते हैं। एक बार चुनाव जीत कर आने के बाद सेठ जी जैसे समाजसेवक अपना वादा भूल कर केवल अपना स्वार्थ देखते हैं। अतः ऐसे व्यक्तियों से समाज को जागृत करना इस एकांकी का मूल उद्देश्य रहा है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि प्रस्तुत एकांकी की पात्र योजना कथानक के अनुसार की गई है। सारे पात्र सहज रूप से अपनी भूमिका निभाते हैं। जिससे एकांकी में सहजता और प्रभावशीलता निर्माण हुई है। एकांकी के संवाद संक्षिप्त, व्यंग्यात्मक, मार्मिक और प्रभावशाली है। जो पाठकों को प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत एकांकी का कथानक सहजता से भरा हुआ प्रभावशाली है। जो पाठकों एवं दर्शकों पर अपना सहज प्रभाव छोड़ता है।

3.1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न।

1. उपेंद्रनाथ अश्क का जन्म सन् ..... ई. में हुआ।

   अ) सन् 1910 ब) सन् 1920

   क) सन् 1901 ड) सन् 1905

2. उपेंद्रनाथ अश्क का बचपन का नाम..... था।

   अ) उपेंद्रनाथ ब) इंद्र नारायण

   क) भोलाराम ड) नाथूराम

3. उपेंद्रनाथ के पिता ..... थे।

   अ) स्टेशन मास्टर ब) रिंग मास्टर

   क) लिपिक ड) स्कूल मास्टर

4. उपेंद्रनाथ अश्क की माँ का नाम . ..... है।

   अ) वसंत देवी ब) कमला देवी

   क) लक्ष्मी देवी ड) सरस्वती देवी

5. 'अधिकार का रक्षक' . ..... है।

   अ) एकांकी ब) नाटक

   क) गीति नाट्य ड) रूपक

6. ‘अधिकार का रक्षक’ एकांकी के लेखक..... हैं।

अ) उपेंद्रनाथ अश्क　　ब) मोहन राकेश

क) राजेश जोशी　　ड) अमरकांत

7. ‘अधिकार का रक्षक’ एकांकी के प्रमुख पात्र. ..... हैं।

अ) श्रीमती सेठ　　ब) राम लखन

क) बलराम　　ड) सेठ जी

8. रामलखन..... का नौकर है।

अ) सेठ जी　　ब) बलराम

क) श्रीमती सरलादेवी　　ड) संपादक

9. सेठ जी के छोटे बेटे का नाम ..... है।

अ) रामलखन　　ब) बलराम

क) रामदेई　　ड) भगवती

10. संपादक सेठ जी के पास ..... रखने की प्रार्थना करता है।

अ) संपादक　　ब) सहायक संपादक

क) लिपिक　　ड) लेखनिक

11. सेठ जी कहते हैं कि महिलाओं के अधिकारों का ..... आपको मुझसे बढ़िया नहीं मिलेगा।

अ) रक्षक　　ब) भक्षक

क) हनन करनेवाला　　ड) पालनकर्ता

12. भगवती ..... है।

अ) चरवाहा　　ब) रसोईया

क) नौकर　　ख) सफाईवाला

13. ‘अधिकार का रक्षक’ एकांकी ..... समाज सेवकों को वृत्ति को उजागर करता है।

अ) झूठे　　ब) सच्चे

क) मायावी　　ड) पागल

14. बलराम अपने पिता जी से ..... में ले जाने की की मांग करता है।

अ) स्कूल ब) मेले

क) अस्पताल ड) खेत

3.1.5. पारिभाषिक शब्द या शब्दार्थ।

विधि – स्थापित करना।

कर्कश – कठोर ।

कृतज्ञ – आभारी।

निवेदन – प्रार्थना ।

सलीका – तौर तरीका।

वक्तव्य – कही हुई बात ।

संपादक – संपादन करने वाला ।

सहायक संपादक – संपादन में सहायता करने वाला ।

3.1.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्न के उत्तर

1) सन् 1910 2) इंद्र नारायण

3) स्टेशन मास्टर 4) वसंत देवी

5) एकांकी 6) उपेंद्रनाथ अश्क

7) सेठ जी 8) सेठ जी

9) बलराम 10) सहायक संपादक

11) रक्षक 12) रसोईया

13) झूठे 14) मेले

3.1.7 सारांश

1. उपेंद्रनाथ अश्क हिंदी के प्रसिद्ध एकांकीकार एवं नाटककार है। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व अत्यंत प्रभावशाली और आकर्षक है। जो दर्शकों एवं पाठकों पर अपनी अमिट छाप छोड़ता है। अतः अश्क जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व साधारण होकर भी असाधारण है। निश्चित रूप से उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व सराहनीय है।

2. प्रस्तुत एकांकी का कथानक जिज्ञासा पूर्ण, कुतुहलवृद्धर्धक और सामाजिक समस्याओं को वाणी देने वाला है। जिसमें प्रमुख पात्र सेठ जी की स्वार्थी, दोहरी, अवसरवादी, ढोंगी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं।

3. प्रस्तुत एकांकी में सेठ जी समाज सेवक हैं। चुनाव में जीतकर आने पर बड़े-बड़े वादे पूरे करने का आश्वासन देते हैं। तो दूसरी ओर बच्चे, नौकर, मजदूर, महिलाओं पर खुद के घर में ही अन्याय अत्याचार करते हैं।

4. प्रस्तुत एकांकी सेठ जी जैसे ढोंगी, स्वार्थी, दिखावटी, अत्याचारी प्रवृत्ति वाले समाज सेवक की पोल खोलती है, साथ ही समाज को ऐसे लोगों के प्रति जागृत करती है।

3.1.8 स्वाध्याय

अ) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'अधिकार का रक्षक' एकांकी का उद्देश्य लिखिए।
2. 'अधिकार का रक्षक' एकांकी के संवादों पर प्रकाश डालिए।
3. 'अधिकार का रक्षक' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
4. उपेंद्रनाथ अश्क का जीवन परिचय दीजिए।

ब) दीर्घोत्तरीय प्रश्न

1. 'अधिकार का रक्षक' एकांकी का कथानक अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'अधिकार का रक्षक' एकांकी के पात्र सेठ जी का चरित्र चित्रण कीजिए।

3.1.9. क्षेत्रीय कार्य ।

1. अपने आस-पास के किसी सामाजिक विषय पर एकांकी लिखिए।
2. वर्तमान राजनीतिक समाज सेवकों से एकांकी की तुलना करें।
3. 'अधिकार का रक्षक' एकांकी का मंचीय प्रस्तुतिकरण करने का प्रयास करें।

3.1.10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

1. सब को जुकाम है (एकांकी) – उपेंद्रनाथ अश्क ।
2. लक्ष्मी का स्वागत (एकांकी) – उपेंद्रनाथ अश्क ।
3. मस्केबाजों का स्वर्ग (एकांकी) – उपेंद्रनाथ अश्क ।

❑❑❑

एकांकी

2. रीढ़ की हड्डी

– जगदीशचंद्र माथुर

अनुक्रम

3.2.1 उद्देश

3.2.2 प्रस्तावना

3.2.3 विषय विवेचन

3.2.3.1 जगदीशचंद्र माथुर का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

3.2.3.2 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का परिचय।

3.2.3.3 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी की कथावस्तु या कथानक ।

3.2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

3.2.5. पारिभाषिक शब्द / शब्दार्थ।

3.2.6. स्वयं अध्ययन के प्रश्न के उत्तर।

3.2.7. सारांश ।

3.2.8. स्वाध्याय।

3.2.9. क्षेत्रीय कार्य।

3.2.10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

3.2.1 उद्देश्य :

इस एकांकी का अध्ययन करने के बाद छात्र–

1. जगदीशचंद्र माथुर के जीवन परिचय और व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
2. जगदीशचंद्र माथुर की प्रसिद्ध एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' के कथानक से परिचित हो जाएंगे।
3. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के पात्रों से परिचित होंगे।
4. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के माध्यम से वर्तमान विवाह की समस्या से अवगत होंगे।

3.2.2 प्रस्तावना :

जगदीशचंद्र माथुर आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटककार हैं। वे नाटककार के साथ साथ एकांकीकार के रूप में विशेष प्रसिद्ध रहें। उन्होंने नाटक के साथ-साथ एकांकियों का भी सृजन किया है। उन्होंने अपनी एकांकियों में पारिवारिक और ऐतिहासिक विषयों को केंद्र में रखकर एकांकियों का निर्माण किया। 'रीढ़ की हड्डी' उनका प्रसिद्धि एवं लोकप्रिय एकांकी है। प्रस्तुत एकांकी एक सामाजिक समस्या को प्रस्तुत करते है। इस एकांकी में लेखक जगदीशचंद्र माथुर जी ने विवाह की समस्या को चित्रित करते हुए एक ओर नारी की संवेदनशीलता, अस्मिता, स्वाभिमान, शिक्षा आदि बातों को उठाया है तो दूसरी ओर नारी का विद्रोह, पीड़ा एवं त्रासदी को सूक्ष्मता से उजागर किया है। प्रस्तुत एकांकी की नायिका पुरुष प्रधान संस्कृति में परंपरागत मानसिकता, रूढ़ि आदि का खुलकर विरोध करती है। एकांकी के कुछ पुरुष पात्र शादी को केवल एक बिजनेस के रूप में देखते हैं। ऐसे पुरुष वर्ग को नारी के मन की भावनाएँ, शिक्षा, मान-सम्मान, अस्तित्व आदि के बारे में कुछ लेना देना नहीं है। वे केवल नारी को एक वस्तु के रूप में देखते हैं, जो उनके काम आ सके। अतः प्रस्तुत एकांकी विवाह जैसे एक सामाजिक विषय को वाणी प्रदान करती है।

3.2.3 विषय विवेचन :

3.2.3.1 जगदीशचंद्र माथुर का जीवन परिचय, व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व :

जगदीशचंद्र माथुर आधुनिक हिंदी साहित्यकार हैं। वे हिंदी साहित्य के क्षेत्र में प्रमुख रूप से नाटककार एवं एकांकीकार के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन में अनेक समस्याओं का सामना किया। जगदीशचंद्र माथुर का जीवन परिचय निम्नांकित है।

जन्म एवं जन्म स्थान :

जगदीशचंद्र माथुर का जन्म खुर्जा नामक कस्बे में दि. 16 जुलाई सन् 1917 ई. में हुआ। खुर्जा यह कस्बा उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में आता है। उनका जन्म एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था।

बचपन एवं शिक्षा दीक्षा :

जगदीशचंद्र माथुर का जन्म खुर्जा नमक छोटे से कस्बे में हुआ था। उनका बचपन वही बीता। इस कारण बचपन से ही उन्होंने ग्रामीण जीवन प्रणाली और समस्याओं को बारकाई से देखा था। ग्राम और कस्बे के संस्कार उन पर हुए थें। जगदीशचंद्र माथुर का परिवार एक मध्यवर्गीय परिवार था। उनका पूरा बचपन इसी परिवार में बीता। ग्राम की प्रकृति, ग्रामीण लोगों की सादगी भरी जिंदगी, ग्रामीण लोक जीवन आदि में उनका बचपन बीता। उनके बचपन में भारत पर अंग्रेजों का शासन था। अंतः उनके बचपन पर अंग्रेजी शासन, आजादी की लड़ाई आदि का गहरा असर दिखाई देता है।

शिक्षा दीक्षा :

जगदीशचंद्र माथुर जी की प्रारंभिक स्कूली शिक्षा खुर्जा नामक गाँव में हुई। अपनी स्कूली शिक्षा पूरी होने के बाद उन्होंने सन् 1933 ई. में क्रिश्चियीन कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया और अपनी महाविद्यालय की पढ़ाई पूरी की। सन् 1936 ई. में उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में एम. ए . की उपाधि प्राप्त की।

पारिवारिक जीवन :

जगदीशचंद्र माथुर के माता-पिता साधारण परिवार से थें। उनके पिता लक्ष्मी नारायण माथुर स्कूल में अध्यापक की नौकरी करते थें। वह कर्तव्यनिष्ठ, उदारवादी और देशभक्ति से परिपूर्ण राष्ट्रीय विचारों के व्यक्ति थें। उनकी माता मध्यवर्गीय परिवार की आदर्शवादी नारी थी। अतः जगदीशचंद्र माथुर जी के व्यक्तित्व पर अपने माता-पिता का गहरा प्रभाव रहा है। माथुर जी के घरेलू वातावरण ने उन्हें सब कुछ सीखाया। जगदीशचंद्र माथुर जी एक संवेदनशील व्यक्ति थें। सामान्य दीन-हीन, दलित और पीड़ित वर्ग के प्रति सहानुभूति से व्यवहार करने का ज्ञान उन्हें अपने घरेलु वातावरण से ही मिला।

नौकरी :

जगदीशचंद्र माथुर की नौकरी के क्षेत्र में किसी एक जगह निश्चित रूप से नौकरी नहीं कर पाए। एम.ए. की उपाधि प्राप्त करने के उपरांत सन् 1941 ई. में वे सरकारी नौकरी में आए। वे इंडियन सिविल सर्विस के अंतर्गत बिहार के शिक्षा सचिव के रूप में भी कार्य करते रहे। इसके बाद सब डिविजनल ऑफीसर बने। साथ ही संगीत नाटक अकादमी के सदस्य बने। सन् 1955 ई. में हुए आकाशवाणी के महानिदेशक के रूप में कार्य करने लगे। साथ ही उन्होंने कृषि मंत्रालय सचिव और हिंदी सलाहकार आदि के रूप में भी कार्य किया। साथ ही अनुसंधान के क्षेत्र में भी उन्हें काफी रुचि थी। अनुसंधान के क्षेत्र का उनका काम सराहनीय और उच्च कोटि का है।

मृत्यु :

सेवानिवृत्ति के कुछ समय बाद ही हृदयरोग के कारण जगदीशचंद्र माथुर जी की मृत्यु दि. 14 में सन् 1978 ई. को हुई।

व्यक्तित्व :

जगदीशचंद्र माथुर जी का व्यक्तित्व आकर्षक एवं प्रभावशाली था। अपने माता-पिता एवं तत्कालीन परिवेश के संस्कारों ने उन्हें तैयार किया था। अतः उनके व्यक्तित्व में संघर्षशीलता, संवेदनशीलता, ईमानदारी, राष्ट्रीयता, देशप्रेम, विद्रोह आदि प्रवृत्तियाँ सहज रूप से विद्यमान थी। इसीका प्रभाव उनके साहित्यिक जीवन पर भी रहा तथा उनके इस व्यक्तित्व का असर उनके साहित्य में भी दिखाई देता है। अतः जगदीशचंद्र माथुर का व्यक्तित्व आकर्षक एवं प्रभावशाली है।

जगदीशचंद्र माथुर का कृतित्व :

हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ नाटककार एवं एकांकीकार जगदीशचंद्र माथुर का व्यक्तित्व जितना प्रभावशाली है, कृतित्व उतना ही सराहनीय और उच्च कोटि का है। जगदीशचंद्र माथुर एक प्रतिभाशाली साहित्यकार हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य की नाटक, एकांकी. लघु नाटक, संस्मरण आदि विधाओं में लेखन कार्य किया है। जिसके माध्यम से हिंदी साहित्य को समृद्ध करने का प्रयास किया है। उनका कृतित्व इस प्रकार हैं।

एकांकी साहित्य :

जगदीशचंद्र माथुर ने हिंदी एकांकी विधा में अपना विशेष योगदान दिया है। उनके कुल तीन एकांकी संग्रह है। जिसमें अनेक एकांकियों का समावेश है। जिसे निम्नांकित रूप में देखा जा सकता है

1. **भोर का तारा :**

इस एकांकी संग्रह में कुल ५ एकांकियों का समावेश है। जैसे – 'भोर का तारा', 'रीढ़ की हड्डी', 'कलिंग विजय', 'मकड़ी का जाल और खंडहर'।

2. **ओ मेरे सपने :**

जगदीशचंद्र माथुर जी के इस एकांकी संग्रह में कुल पाँच एकांकियों का समावेश है। 'घोसलें', 'खिड़की की राह', 'कबूतर खाना', 'भाषण', 'ओ मेरे सपने' आदि।

3. **मेरी श्रेष्ठ एकांकी :**

इस एकांकी संग्रह में कुल 8 एकांकी संकलित है।

'बंदी', 'घोंसले', 'खंडहर', 'ओ मेरे सपने', 'भोर का तारा', 'भूषण', 'विजय की बेला', 'रीढ़ की हड्डी' आदि।

नाटक साहित्य :

जगदीशचंद्र माथुर ने अपने साहित्य के लिए विभिन्न विषयों का चयन किया है। सामाजिक नाटकों के साथ उन्होंने ऐतिहासिक नाटकों का भी सृजन किया है। उनके कुछ नाटक इस प्रकार हैं –

1. कोणार्क
2. शारदीया
3. पहला राजा
4. दशरथनंदन
5. रघुकुलरीति

लघु नाटक :

जगदीशचंद्र माथुर प्रयोगशील नाटककार थे। उन्होंने 'कुंवरसिंह की टेक' और 'गगनसवारी' ये दो लघु नाटक लिखे हैं।

अन्य साहित्य :

जगदीशचंद्र माथुर ने एकांकी, नाटक, लघु नाटक के अतिरिक्त अन्य विधाओं में भी लेखन कार्य किया है। जो इस प्रकार हैं –

1. दस तस्वीरें (चरित्र लेख)
2. जिन्होंने जिना जाना (चरित्र लेख)
3. बोलते क्षण (आत्मकथन)
4. प्राचीन भाषा (नाटक संग्रह–संपादित)

इसके साथ जगदीशचंद्र माथुर ने विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में आलोचनात्मक लेखन कार्य भी किया है। अतः कह सकते हैं कि जगदीशचंद्र माथुर ऐतिहासिक नाटककार के रूप में काफी प्रचलित रहे उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व निश्चित रूप से सराहनीय है।

3.2.3.2 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का परिचय :

'रीढ़ की हड्डी' जगदीशचंद्र माथुर का लोकप्रिय एकांकी है। जगदीशचंद्र माथुर आधुनिक युग के प्रसिद्ध एकांकीकार है। जिन्होंने अपनी एकांकियों के माध्यम से मनुष्य के विभिन्न समस्याओं को वाणी देने का प्रयास किया है। जगदीशचंद्र माथुर ने सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक एकांकियों के साथ–साथ ऐतिहासिक एकांकियों का भी लेखन किया है। 'रीढ़ की हड्डी' उनका एक सामाजिक एकांकी है। जिसमें जगदीशचंद्र माथुर ने विवाह की घटना को केंद्र में रखकर सामाजिक समस्याओं को सामने रखा है। विवाह एक सामाजिक संस्कार भी माना जाता है। विवाह दो परिवारों का एक मेल है। भारतीय संस्कृति में विवाह में लड़के वाले के पक्ष को अधिक महत्व दिया जाता है। पुरुष प्रधान संस्कृति में लड़का और लड़की का विवाह तय करते समय खासकर के लड़कियों के मत को नजरअंदाज किया जाता है। प्रस्तुत एकांकी में उमा प्रमुख नारी पात्र है। इस एकांकी का कथानक उमा के विवाह की घटना पर आधारित है। प्रस्तुत एकांकी में कुल ६ पात्र हैं। परिवार में रामस्वरूप लड़की उमा के पिता है तो प्रेमा लड़की उमा की माँ है। इसी परिवार में रतन नामक एक नौकर भी है। दूसरा परिवार गोपाल प्रसाद जी का है। इनका बेटा शंकर उमा को शादी के लिए देखने आता है। इन छः पात्रों में एकांकी का कथानक घटित होता है। एकांकी का कथानक रोचक और आकर्षक है। जो दर्शकों की रुचि अंत तक बनाए रखता है। प्रस्तुत एकांकी के संवाद मार्मिक, संक्षिप्त और व्यंग्यात्मक है। जो दर्शकों पर अपना प्रभाव छोड़ते हैं। प्रस्तुत एकांकी लड़की वाले अर्थात रामस्वरूप के घर में, बैठक में घटित होता है। रंगमंचीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत एकांकी सफल माना जा सकता है। प्रस्तुत एकांकी का शीर्षक प्रतीकात्मक है। प्रस्तुत एकांकी विवाह जैसी बड़ी समस्या को उजागर करता है, साथ ही वर्तमान समाज में नारी को कैसे महत्वहीन समझा जाता है इस बात को प्रस्तुत किया है। परंतु उमा जैसी पढी–लिखी लड़की समाज की परंपरागत मानसिकता को ठुकरा कर पुरुष प्रधान संस्कृति में नारी को दोहरा स्थान देने

वाले पुरुषों का विरोध करती है। अतः प्रस्तुत एकांकी नारी अधिकार, नारी चेतना, नारी स्वाभिमान और नारी अस्मिता की बात करता है। यही एकांकी का मूल उद्देश्य भी है।

3.2.3.3 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी की कथावस्तु या कथानक :

'रीढ़ की हड्डी' जगदीशचंद्र माथुर का महत्वपूर्ण एकांकी है। प्रस्तुत एकांकी सामाजिक एकांकी है। इसमें विवाह इस घटना पर जोर दिया है। जिससे वैवाहिक समस्याओं को वाणी देने का प्रयास किया है। प्रस्तुत एकांकी का कथानक प्रभावशाली है। लड़की को देखने आए लड़केवालों से संबंधित कथानक की प्रस्तुति के लिए लेखक ने कुल छह पात्रों की योजना बनाई है। यह दो परिवारों की कहानी है। एक लड़केवालों का परिवार है। जिसमें प्रमुख पात्र 'उमा' है। जो बी.ए. पढ़ी-लिखी है। साथ ही वह गाती भी अच्छा है और हारमोनियम बजाती हैं। साथ ही वह पेंटिंग भी अच्छा करती है। उसके पिता रामस्वरूप बाबू सरकारी नौकर हैं। उनकी पत्नी प्रेमा घरेलू औरत है। रतन इस परिवार का एक नौकर हैं। दूसरा परिवार लड़केवालों का है। लड़का शंकर है। जो बी.एस्सी. तक पढ़ा-लिखा है। कमर में झुक कर बैठता है। इसलिए उसके दोस्त उसे बैकबोन कहते हैं। जिसमें आत्मविश्वास की कमी है और अपने पिता जी के हाँ में हाँ मिलाते रहता है। उसके पिता गोपाल प्रसाद हैं। वह महिलाओं की उच्च शिक्षा के विरोधी, व्यवहारी स्वभाव के हैं। वह विवाह को एक बिजनेस समझते हैं।

एकांकी का प्रारंभ रामस्वरूप बाबू की बैठक (हॉल) से होता है। उमा के पिता रामस्वरूप अपनी बेटी के विवाह को लेकर चिंतित और प्रयासरत है। अभी तक लड़की को देखने अनेक लड़के वाले आए थें। परंतु अभी तक लड़की उमा का विवाह तय नहीं हो पाया था। आज रामस्वरूप बाबू के घर उसकी बेटी को देखने लड़के वाले के घर से लड़का शंकर और उसके पिता गोपाल प्रसाद आने वाले थें। लड़की के पिता चाहते हैं कि किसी तरह उनकी पढ़ी-लिखी बेटी का विवाह तय हो जाए। वैसे रामस्वरूप बाबू परंपरा को सुविधा के अनुसार ढालने वाले व्यक्ति थें। आज वह लड़के वालों के लिए घर की तैयारी में सुबह से जुटे हुए थें। अपने नौकर रतन को साथ लेकर बैठक की व्यवस्था ठीक से करते हैं। सोफा रखना, उसपर की दरी, चद्दर, हारमोनियम आदि की तैयारी करते हैं। तभी उनकी पत्नी प्रेमा बैठक में आती है और दरी बिछाते समय अपने पति से कहती है कि, ''लड़केवाले आनेवाले हैं। परंतु आपकी लाडली बेटी उमा मुँह फुलाकर बैठी है।'' रामस्वरूप अपनी पत्नी प्रेमा को किसी तरह उसे तैयार करने को कहते हैं। नहीं तो सारी मेहनत बेकार जाएगी। पत्नी कहती है कि ''अब मैं क्या करूं? आपने ही उसे ज्यादा पढ़ा-लिखा कर सर पर बैठा लिया है। मैंने कितनी बार कहा कि मैट्रिक तक पढ़ाओ। लेकिन आपने मेरी बात नहीं मानी।'' तभी रामस्वरूप अपनी पत्नी को ग्रामोफोन कह कर उसका मजाक उड़ाते हैं। तभी प्रेमा कहती है की लड़की चाहे कितनी भी सुंदर हो। उसे सौंदर्य प्रसाधनों से सजाए बिना कोई पसंद नहीं करता। इसलिए मैंने इस लड़की के लिए पौडर-वौडर सब कुछ दिया। परंतु लड़की ने उसे न लेते हुए आंचल से मुँह लपेटकर लेट गई। मैं इससे तंग आ गई हूँ। वैसे उमा पढ़ी-लिखी और आधुनिक विचारों वाली है। उसके प्रगतिशील विचार रूढ़ि-परंपरा और दिखावटी प्रवृत्ति का विशेष विरोध करते हैं।'' इस बात पर रामस्वरूप पत्नी से कहते हैं कि, ''ज्यादा बक-बक मत करो। मेहमान आते ही होंगे।'' उनके सामने चुप ही रहना और हाँ! खाना, नाश्ता, चाय, टोस्ट

का सारा इंतजाम किया है ना?'' इस पर पत्नी कहती है, ''सारी तैयारियां हो चुकी है। परंतु मक्खन अभी तक नहीं आया।'' तभी रामस्वरूप अपने ऑफिस के सिपाही के न आने के कारण नौकर रतन को ही मक्खन लाने भेज देते हैं। नौकर रतन मक्खन लाने जाता है और रामस्वरूप अपनी पत्नी से बात करते हुए घर का रख-रखाव ठीक करते हैं। वह अपनी पत्नी से कहते हैं कि ''लड़के वाले जरा अहंकारी हैं। लड़के शंकर के पिता गोपाल प्रसाद वकील है। सोसाइटी में उठते-बैठते हैं। इसलिए रोब दिखाते हैं। ऐसे दिखावटी लोग मुझे भी पसंद नहीं है, परंतु क्या करें? मजबूर हूँ! क्या करें बाप शेर तो बेटा सवा शेर है। बी.एस्सी. के बाद लखनऊ के मेडिकल कॉलेज में पढ़ रहा है। क्या करें लड़की के शादी का सवाल है? नहीं तो मैं इन्हें ऐसी- तैसी सुनाता कि वे यहाँ ठहरते भी नहीं।''

रामस्वरूप दरवाजे से झाँककर देखते हैं । तो उन्हें लड़के वाले आते दिखाई देते हैं। तभी रामस्वरूप अपनी पत्नी प्रेमा को उमा को समझा-बूझकर ठीक से तैयार कर लाने को कहते हैं। लड़के वाले के आते ही रामस्वरूप लड़के के पिता गोपाल प्रसाद और उसके बेटे शंकर का स्वागत करते हैं। उन्हें तख्त पर बिठाते हैं। लड़के के पिता और लड़की के पिता दोनों में आने-जाने के संदर्भ में औपचारिक बातें होती है। जिसमें रामस्वरूप लड़के के पिता की बातों में हाँ में हाँ मिलाते हैं। तब दोनों में अपने समय की पढ़ाई, खाना, तालीम तथा लड़के शंकर के बीमारी की बात भी होती है। रामस्वरूप दोनों का मन रखकर अपनी बात सामने रखता है। तभी गोपाल प्रसाद थोड़े से सख्त होकर बिजनेस की बात करने पर आते हैं। उनके दृष्टिकोण से शादी एक 'बिजनेस' है। तब रामस्वरूप नाश्ते की बात करते हैं और अंदर चले जाते हैं। तभी गोपाल प्रसाद अपने बेटे शंकर को ठीक से सीधा बैठने को कहते हैं। तभी रामस्वरूप अंदर से चाय लेकर आते हैं और गोपाल प्रसाद की उनकी रुचि की चाय देते हैं। तभी चाय, चीनी और टैक्स की बात भी होती है। गोपाल प्रसाद कहते हैं कि ''सरकार ने टैक्स औरतों की सुंदरता पर लगाना चाहिए और कौन कितना सुंदर है यह उस औरत पर छोड़ देना चाहिए। तब देखिए सरकार को कितना टैक्स मिलता है।'' रामस्वरूप और शंकर दोनों हंसते हुए गोपाल प्रसाद की बात का समर्थन करते हैं। तभी लड़की की सुंदरता,जन्म कुंडली तथा अन्य बातों पर तीनों में चर्चा होती है। तभी गोपाल प्रसाद लड़की की बात छेड़ देते हैं और रामस्वरूप को बताते हैं कि लड़की मैट्रिक तक ही पढ़ी-लिखी होनी चाहिए। ज्यादा पढ़ी-लिखी लड़की के नखरे ज्यादा होते हैं। उसे नौकरी थोड़ी करवानी है। वह केवल लड़की के पढ़ी-लिखी होने पर टिप्पणी करते हैं, ''-क्या लड़के की पढ़ाई और लड़की की पढ़ाई एक बात है। अरे मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरत भी वही करने लगी, अंग्रेज अखबार पढ़ने लगी और पॉलिटिक्स वगैरह पर बहस करने लगी तब तो हो चुकी गृहस्थी।'' वह मानते हैं कि दुनिया की कुछ बातें केवल पुरुषों के लिए ही है, औरत उस पर अपना अधिकार नहीं जता सकती।

रामस्वरूप पान भिजवाने के लिए आवाज देते हैं। तभी अंदर से उमा पान की तश्तरी हाथों में लेकर आती है। तब गोपाल प्रसाद उसे सीधे तो शंकर उसे छुप कर देखता हैं। तभी उन्हें लड़की के नाक पर पहना चश्मा दिखाई देता है। गोपाल प्रसाद और शंकर दोनों चौंक जाते हैं। जिस पर रामस्वरूप पिछले महीने में उसकी आँखों में दर्द होन का कारण देते हैं। जिसके कारण चश्मा लगा हुआ है। गोपाल प्रसाद चश्मा लगने

की वजह पढ़ाई को मानते हैं। परंतु रामस्वरूप झूठ बोलकर उस बात को टाल देते हैं। तभी रामस्वरूप उसे गाने, बजाने, पेंटिंग-वेंटिंग के बारे में पूछते हैं। जिसका उत्तर पाकर वह समाधानी होते हैं। सिलाई-कढ़ाई तथा इनाम-विनाम जीतने के बारे में भी पूछते हैं। परंतु उमा चुप ही रहती हैं। तब पिता रामस्वरूप लड़की के शर्मा ने का कारण देते हैं। तभी गोपाल प्रसाद लड़की को बोलने को कहते हैं। पिता की बात मानकर लड़की गोपाल प्रसाद को उत्तर देती हुई कहती है, ''क्या जबाब दूँ बाबूजी!'' जब कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीददार को दिखला देता है। पसंद आ गई तो अच्छा ! वरना. आगे वह कहती है कि, बाबूजी मुझे बोलने दीजिए। ये जो महाशय मेरे खरीददार बनकर आए हैं। इनसे जरा पूछिए कि क्या लड़कियों को दिल नहीं होता? क्या उन्हें चोट नहीं लगती? क्या बेबस भेड़ बकरियाँ है, जिसे कसाई अच्छी तरह देखभाल कर?

उमा की बात सुनकर गोपाल प्रसाद क्रोध में आकर अपना अपमान होने की बात रामस्वरूप से करते हैं। तभी उमा तेज आवाज में कहती है कि, ''क्या हमारी बेइज्जती नहीं हो रही है? जो आप इतनी देर से हमारा नाप-तोल कर रहे हैं। आपके साहबजादे से कहिए पिछले फरवरी में वह लड़कियों के हॉस्टल में क्या कर रहा था? कैसे वहाँ से भगाने के लिए नौकरानी के पैर पड़े थें।'' तभी गोपाल प्रसाद गुस्से में रामस्वरूप को कहते हैं, ''अब बस हो चुका! आपने मेरे साथ दगा किया है। आपकी लड़की बी.ए. पास है और आपने मुझे मैट्रिक पास होने की बात कही थी।'' यह बात कह कर अपने बेटे को चलने को कहकर दरवाजे की ओर निकलते हैं। तभी उमा कहती है, ''जाइए जरूर चले जाइए। लेकिन घर जाकर जरा पता लगाइए कि आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी तो है या नहीं - यानी बैकबोन. बैकबोन !'' यहाँ उमा के प्रगतिशील विचार, स्वाभिमान, पीड़ा एवं त्रासदी आदि दिखाई देती है।

बाबू गोपाल प्रसाद और शंकर चले जाते हैं । रामस्वरूप कुर्सी पर धम्म से बैठ जाते हैं। उमा चुप हो जाती है और प्रेमा घबराहट की हालत में है। तभी उमा की हालात देखकर प्रेमा कहती है की, ''बेटी मत रो।'' तभी रामस्वरूप उठकर खड़े होते हैं। तभी रतन बाहर से मक्खन लाने की बात कहता है और एकांकी समाप्त होती है।

इस तरह 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का कथानक रोचक कौतूहलवर्धक और पाठकों या दर्शकों की जिज्ञासा जगाने वाला है। कथानक वैवाहिक संबंधों में व्याप्त कुरीति को उजागर करता है। इसके साथ-साथ विवाह के अंतर्गत स्त्रियों को महत्व न देना, पुरुष प्रधान समाज की प्रधानता और समाज की मानसिकता में बदलाव लाने का प्रयास किया है। उमा के माध्यम से स्त्री का आक्रोश और पीड़ा का चित्रण किया है। साथ ही स्त्री की अपने अधिकारों के प्रति सजगता को भी उजागर किया है।

3.2.4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न ।

1. जगदीशचंद्र माथुर का जन्म ..... गांव में हुआ।

   अ) खुर्जा ब) मिर्जा

   क) खुरमा ड) मथुरा

2. जगदीशचंद्र माथुर सन् ..... ई. नाटककार हैं।

   अ) ऐतिहासिक ब) राजनीतिक

   क) सांस्कृतिक ड) पारिवारिक

3. जगदीशचंद्र माथुर का जन्म सन्..... ई. में हुआ।

   अ) सन् 1907 ब) सन् 1917

   क) सन् 1927 ड) सन् 1937

4. जगदीशचंद्र माथुर की मृत्यु सन् ..... ई. में हुई।

   अ) सन् 1968 ब) सन् 1958

   क) सन् 1978 ड) सन् 1988

5. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी सन् ..... ई. एकांकी संग्रह में संकलित है।

   अ) भोर का तारा ब) ओ मेरे सपने

   क) मेरी श्रेष्ठ एकांकी ड) घोंसले

6. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के लेखक..... है।

   अ) मोहन राकेश ब) जगदीशचंद्र माथुर

   क) उपेंद्रनाथ अश्क ड) निराला

7. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में पात्रों की कुल संख्या..... है।

   अ) चार ब) छः

   क) पाँच ड) आठ

8. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के मूल नारी पात्र ..... है।

   अ) उमा ब) प्रेमा

   क) वीणा ड) राधा

9. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में उमा को . ..... देखने आता है।

अ) माधव ब) श्याम

क) शंकर ड) गोपाल

10. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी ..... समस्या को प्रस्तुत करना है।

अ) राजनीतिक ब) सांस्कृतिक

क) सामाजिक ड) आर्थिक

11. 'रीढ़ की हड्डी' की उमा . ..... है।

अ) अनपढ़ ब) शिक्षित

क) गवार ड) उच्च शिक्षित

12. उमा के पिता का नाम..... है।

अ) रामस्वरूप ब) शंकर

क) रतन ड) गोपाल प्रसाद

13. रीढ़ की हड्डी एकांकी के गोपाल प्रसाद पेशे से ..... है।

अ) डॉक्टर ब) वकील

क) इंजीनियर ड) अध्यापक

14. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के शंकर को उसके मित्र ..... कहते थें।

अ) बैकबोन ब) डॉगबोन

क) ब्लैक मैन ड) स्पाइडर–मैन

15. गोपाल प्रसाद शादी को . ..... समझता था।

अ) व्यवहार ब) समझौता

क) बिजनेस ड) प्यार

3.2.5 पारिभाषिक शब्द शब्दार्थ :

1. तख्त – सोफा या बैठक ।
2. कोठरी – कमरा ।
3. मुँह फुलाना – गुस्सा होना ।
4. टीम टाम करना – संजना संवारना ।

5. ग्रामोफोन – एक ऐसा यंत्र जिससे ध्वनि या संगीत को दोबारा सुना जाए।
6. दिकायानुसी – दिखावटी ।
7. बैकबोन – मेरुदंड या रीढ़ की हड्डी ।

3.2.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्न के उत्तर

1. अ) खुर्जा
2. अ) ऐतिहासिक
3. ब) सन् 1917
४. क) सन् 1978
5. अ) भोर का तारा
6. ब) जगदीशचंद्र माथुर
7. ब) छः
8. अ) उमा
9. क) शंकर
10. क) सामाजिक
11. ड) उच्च शिक्षित
12. अ) रामस्वरूप
13. ब) वकील
14. अ) बैकबोन
15. क) बिजनेस

3.2.7 सारांश

1. जगदीशचंद्र माथुर आधुनिक काल के प्रचलित नाटककार हैं। जिन्होंने अपने साहित्य से सामाजिक विषयों को वाणी देने का प्रयास किया है। जगदीशचंद्र माथुर जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रभावशाली और सराहनीय है।
2. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी सामाजिक एकांकी है। जो शादी से संबंधित समस्याओं को प्रस्तुत करती है। इस एकांकी में दो परिवारों के छः पात्रों का समावेश है। कहानी का कथानक रामस्वरूप प्रेमा तथा उमा और गोपाल प्रसाद, शंकर, रतन के बातचीत से आगे बढता हैं।
3. 'रीढ़ की हड्डी' का कथानक पुरुष प्रधान समाज की परंपरागत सोच और उसमें नारी को मान सम्मान न देने की बात को उजागर करता है। एकांकी की उमा पढ़ी–लिखी लड़की है। जो अन्य स्त्री को वस्तु के रूप में देखने वाले समाज का विरोध करने वाली प्रगतिशील विचारों की नारी है।
4. प्रस्तुत एकांकी में उमा की स्वाभिमानी, विद्रोही, प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। साथ ही उसकी घुटन, त्रासदी, पीड़ा आदि भी दिखाई देती है। उमा पुरूष प्रधान समाज की परंपरागत मानसिकता के खिलाफ आवाज उठाती है।

3.2.8 स्वाध्याय ।

अ) लघुत्तरीय प्रश्न।

1. जगदीशचंद्र माथुर का जीवन परिचय दीजिए।
2. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के गोपाल प्रसाद का चरित्र चित्रण कीजिए।
3. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का उद्देश्य लिखिए।
4. 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

ब) दीर्घोत्तरीय प्रश्न ।

1. रीढ़ की हड्डी एकांकी की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।
2. रीढ़ की हड्डी एकांकी के माध्यम से उमा का चरित्र चित्रण कीजिए।

3.2.9 क्षेत्रीय कार्य

1. अपने क्षेत्र में महिला समाज सेविका की जानकारी प्राप्त करें।
2. महिलाओं के अधिकार, स्वतंत्रता, अस्मिता के बारे में जानकारी इकट्ठा करें।

3.2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. भोर का तारा –जगदीशचंद्र माथुर।
2. मेरी बांसुरी– जगदीशचंद्र माथुर।

❑❑❑

इकाई–3

एकांकी

3. अंडे के छिलके

– मोहन राकेश

3.3.1 उद्देश्य

3.3.2 प्रस्तावना

3.3.3 विषय विवेचन

3.3.3.1 मोहन राकेश का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

3.3.3.2 'अंडे के छिलके' एकांकी का परिचय ।

3.3.3.3 'अंडे के छिलके' एकांकी की कथावस्तु या कथानक।

3.3.4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

3.3.5. पारिभाषिक शब्द / शब्दार्थ ।

3.3.6. स्वयं अध्ययन के प्रश्न के उत्तर।

3.3.7. सारांश ।

3.3.8. स्वाध्याय ।

3.3.9. क्षेत्रीय कार्य ।

3.3.10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

3.3.1 **उद्देश्यः**

इस एकांकी का अध्ययन करने के बाद छात्र–

1. मोहन राकेश के साहित्य से परिचित होंगे।
2. मोहन राकेश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
3. मोहन राकेश की एकांकी 'अंडे के छिलके' के कथानक से परिचित होंगे।

4. छात्र मानवीय संवेदना और पारिवारिक जुड़ाव को समझेंगे और पुरानी और नई पीढ़ी को अंतर कम करने की कोशिश करेंगे।

3.3.2 प्रस्तावना :

मोहन राकेश आधुनिक हिंदी साहित्यकार हैं। वे नाटककार के रूप में विशेष प्रसिद्ध हैं। उन्होंने नाटक के साथ–साथ एकांकियों का भी सृजन किया है। आधुनिक विचारधारा को अपनाने वाले मोहन राकेश अपनी एकांकियों में पारिवारिक और मानसिक उलझन को सामने रखते हैं। 'अंडे के छिलके' उनका प्रसिद्ध एकांकी है, जो आज के आधुनिक परिवेश को प्रस्तुत करता। इस एकांकी में नई और पुरानी पीढ़ियों के संघर्ष का चित्रण मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है। मोहन राकेश ने अपने जीवन की अनुभूति को अपने साहित्य में उतारने का बखूबी प्रयास किया है। वे अपनी एकांकी से पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं को वाणी देते हैं। अतः मोहन राकेश जी का एकांकी 'अंडे की छिलके' पारिवारिक परंपरा और परिवार में छिपे रहस्य का उद्घाटन करता है।

3.3.3 विषय विवेचन :

3.3.3.1 मोहन राकेश का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

मोहन राकेश हिंदी साहित्य के एक ऐसे नाटककार हैं, जिन्होंने अपनी जीवन अनुभूति को अपने नाटकों और एकांकियों का विषय बनाया। उनका साहित्य परिवार और समाज के मानसिक उलझन को उजागर करता है विशेष रूप से आधुनिक महानगरीय परिवेश के माध्यम से वर्तमान समस्या को वाणी हैं। पारिवारिक समस्या मानसिक द्वंद्व सामाजिक उलझन व्यक्ति की कुंठा आशा आकांक्षा आदि उनकी एकांकी के मूल विषय हैं। मोहन राकेश एक प्रतिभाशाली साहित्यकार हैं। उनके साहित्य, एकांकी को समझने के लिए हमें उनके जीवन परिचय से परिचित होना आवश्यक है । तभी हम उनकी एकांकी को आसानी से समझ सकेंगें।

मोहन राकेश जी का जीवन परिचय :

जन्म :

हिंदी के प्रसिद्ध नाटककार मोहन राकेश का जन्म दि. 8 जनवरी सन् 1925 ई. को पंजाब प्रांत के अमृतसर शहर में हुआ । उनका वास्तविक नाम 'मदन मोहन गुगलानी' था। मदन मोहन राकेश यह नाम उनकी दीदी द्वारा दिया गया है।

माता–पिता :

मोहन राकेश के पिता का नाम 'करमचंद गुगलानी' था। वे एल. एल. बी. थे और वकालत करते थें। उन्हें संगीत में रुचि होने के साथ–साथ साहित्य में भी अधिक रुचि थी। मोहन राकेश की माँ का नाम

'बचन' था। वह स्वभाव से सरल और धार्मिक प्रवृत्ति की थी। वह जीवन की समस्याओं का बड़े हिम्मत से सामना करती थी।

परिवार :

मोहन राकेश का जन्म एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। जिस परिवार में हमेशा आर्थिक अभाव रहता था। पिता पेशे से वकील होने के बाद भी परिवार बड़ा होने के कारण आर्थिक अभाव हमेशा बना रहा। उनके परिवार में माता-पिता, दादी (कमला), चाची-चाची, बड़ी बहन कमला और छोटा भाई वीरेन इतने लोग रहते थे। बड़ा परिवार होने के कारण परिवार की जीविका चलाने में काफी कठिनाई होती थी। इसलिए यह परिवार हमेशा कर्ज में रहता था। पिता की मृत्यु के बाद मोहन राकेश जी को सोलह वर्ष की आयु में उन्हें परिवार की जिम्मेदारी खुद पर लेनी पड़ी।

बचपन :

मोहन राकेश का बचपन तनाव, आर्थिक अभाव और संघर्ष में बिता। गरीबी के कारण साधारण घर में ही उनका बचपन बीता। बचपन में घर के नाजुक वातावरण में उनका मन घुटता था। कर्ज के बोझ से उनका बचपन डरावना भी था। साहूकार कर्ज की वसूली करने आते तब मोहन राकेश जी डर के मारे कमरे में छुप जाते थें। इस तरह बिना खेल-कुद के तनावभरे वातावरण में उनका बचपन बीता।

शिक्षा-दीक्षा :

मोहन राकेश एक उच्च शिक्षित साहित्यकार हैं। उनकी आरंभिक शिक्षा अमृतसर में हुई। बाद की शिक्षा लाहौर और ओरिएंटल कॉलेज से हुई। सोलह वर्ष की उम्र में ही उन्होंने 'शास्त्री' की उपाधि पायी। अपने पिता जी से वे संस्कृत पढ़ते रहे। बाद में अंग्रेजी विषय लेकर बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। साथ ही उन्होंने हिंदी और संस्कृत विषय लेकर एम.ए. की उपाधियाँ भी प्राप्त की। अपनी शिक्षा के लिए स्वयं उन्हें पैसे जुटाने पड़ते थें। इस तरह आर्थिक अभाव में उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की।

नौकरी :

मोहन राकेश के परिवार के आर्थिक हालात ठीक नहीं थे। इसलिए उन्हें ट्यूशन लेकर अपनी पढ़ाई पूरी करनी पड़ी। उन्होंने अपनी पहली नौकरी फिल्म कंपनी से शुरू की। फिर सन् 1944-45 में अच्छे वेतन की नौकरी मिली। परंतु वे उसे निभा नहीं पाए। आजीविका के लिए वे दिल्ली से मुंबई आए। यहां उन्हें संवाद लेखन की नौकरी भी मिली। फिर विभिन्न शहरों के कॉलेज में उन्होंने अध्यापक की नौकरी की। परंतु कहीं भी उसे अंत तक निभा नहीं पाए। बाद में 'सारिका' पत्रिका के संपादन का काम भी उन्होंने किया और छोड़ दिया। अतः वे किसी एक जगह नौकरी नहीं कर पाए।

वैवाहिक जीवन :

मोहन राकेश का जीवन ही अभाव और दुःखों से भरा रहा। उनका वैवाहिक जीवन भी स्थिर नहीं था। उन्नीस साल की उम्र में 'दिव्या' नामक लड़की से उन्हें प्यार था। परंतु अपने आर्थिक अभाव के कारण वह सफल नहीं रहा। इसके बाद मोहन राकेश ने एक के बाद एक शादियाँ की। जैसे- सुशीला। बाद में मित्र की बहन पुष्पा से। लेकिन यह शादियाँ भी सफल नहीं रही। इसके बाद वीना से शादी हुई। उससे भी बन नहीं पाई। बाद में उनके जीवन में अनीता आई। जिससे मोहन राकेश की ठीक से बनी। उससे पूरबा और शालिनी जैसी संताने हुई। अतः अनीता के साथ उनका वैवाहिक जीवन सुखमय रहा।

मृत्यु :

मोहन राकेश की मृत्यु दि. 3 दिसंबर, सन् 1972 ई. में हुई। तब वे कीर्ति, अधिकार, सुविधा, गौरव, संपत्ति के शिखर पर थें। परंतु अपनी माँ की मृत्यु का उन पर गहरा असर पडा। उनकी यादों में वह कई दिनों तक रोते रहे। ऐसे रोते-रोते ही एक दिन उनकी मृत्यु हुई।

मोहन राकेश का व्यक्तित्व :

मोहन राकेश का बाह्य व्यक्तित्व सुंदर और आकर्षक था। वे बहुत ही सुंदर दिखते थें। उनके बाह्य व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए लिखा गया है- ''निहायत खूबसूरत गोरा, चिट्टा नौजवान, सुर्ख गोल निष्कपट चेहरा, भरे-पूरे गाल, लंबी, स्वाभिमान को सूचित करती नासिका, सर पर गहरे काले घुँघराले बाल, चश्मे के मोटे काँच के पीछे चमकती हुई सुरमई आँखें, भरा-पूरा कोमल शरीर, मझला कद, कुछ मोटे से ओठ, ओठों में दबी हुई सिगरेट, बदन पर कीमती कपड़े, वातावरण को हिलाती हुई हँसी, अर्थात कह-कहे ठहाके, अनायास ही दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करनेवाला, कितने ही दोस्तों के साथ कॉफी चुस्कियों में जीनेवाला आदमी यह है - मोहन राकेश।'' अर्थात् मोहन राकेश जी का बाह्य व्यक्तित्व सुंदर और आकर्षक था।

मोहन राकेश का आंतरिक व्यक्तित्व भी प्रभावशाली था। मोहन राकेश अंदर से अत्यंत संवेदनशील और ईमानदार इंसान थें। वे बुद्धिमानी एवं मेधावी छात्र, प्रतिभासंपन्न, संवेदनशील, ईमानदार, जिंदादिल, मिलनसार, स्पष्टवादी, स्वाभिमानी आदि गुणों से संपन्न थें। उनका बाह्य और आंतरिक व्यक्तित्व आकर्षक और प्रभावशाली था।

मोहन राकेश जी का कृतित्व :

मोहन राकेश हिंदी के एक महत्वपूर्ण साहित्यकार हैं। उन्हें साहित्य लेखन के प्रति अधिक रुचि थी। उनकी पहली कहानी 'सरस्वती' पत्रिका में छापकर आई थी। साहित्य लेखन के संस्कार उन्होंने अपने पिता जी से ग्रहण किए। पिता साहित्यकार नहीं थे परंतु साहित्य में उन्हें अधिक रुचि थी। दादी कमला ने भी मोहन राकेश को साहित्य लेखन के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर साहित्य लेखन कर हिंदी साहित्य को अनमोल साहित्य प्रदान किया। आधे-अधूरे, लहरों के राजहंस, आषाढ़ का एक दिन

उनके प्रसिद्ध नाटक हैं। मोहन राकेश जी ने कहानी, उपन्यास, एकांकी, कविता, अनुवाद आदि साहित्यिक विधाओं में भी लेखन कार्य किया है। उनका साहित्यिक कृतित्व इस प्रकार है –

उपन्यास साहित्य

मोहन राकेश ने अपने साहित्यिक जीवन में कुल आठ उपन्यासों का सृजन किया है। उनमें से उनके तीन उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। जो इस प्रकार हैं – अंधेरे बंद कमरे, न आनेवाला कल, अंतराल ।

मोहन राकेश जी के अप्रकाशित उपन्यास इस प्रकार हैं –

'स्याह और सफेद', 'काँपता हुआ दरिया', 'कईं एक अकेले', 'हिरोशिमा के फूल', 'नीली रोशनी की बाहें'।

कहानी साहित्य

मोहन राकेश ने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत कहानी से की। उनकी पहली कहानी सरस्वती में छपकर आई थी। उनके कुल छः कहानी संग्रह है जो इस प्रकार हैं – 'इंसान के खंडहर', 'नए बदल', 'जानवर और जानवर', 'पांच लंबी कहानियां', 'एक और जिंदगी', 'फौलाद का आकाश' आदि।

नाटक साहित्य

कहानी और उपन्यास लिखते-लिखते वे साहित्य की विधा नाटक की ओर मुड़े और हिंदी नाट्य साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाई। जिससे वे हिंदी के प्रसिद्ध नाटककार के रूप में भी प्रचलित रहे और नाटक क्षेत्र के चरम शिखर पर पहुँचे। अतः उनका नाट्य साहित्य इस प्रकार है – 1. आषाढ़ का एक दिन, 2. लहरों के राजहंस, 3. आधे-अधूरे

एकांकी साहित्य

उनकी प्रकाशित पहली साहित्यिक विधा एकांकी रही है। सन् 1949 में उनका 'सत्य और कल्पना' यह एकांकी संग्रह प्रकाशित हुआ। उनके साहित्यिक जीवन की यह पहली रचना है। उनके एकांकी संग्रह इस प्रकार हैं- 1. अंडे के छिलके, 2. सिपाही की माँ, 3. प्यालियाँ टूटती है, 4. बहुत बड़ा सवाल ।

यात्रा साहित्य

मोहन राकेश ने यात्रा वृत्तांत लिखकर हिंदी यात्रा साहित्य को भी समृद्ध किया है। उनका यात्रा साहित्य इस प्रकार हैं- 1. आखिरी चट्टान तक, 2. पतझड़ का रंगमंच, 3.उंची सी झील

अन्य साहित्य

मोहन राकेश ने अपने साहित्यिक जीवन में संस्मरण विधा में 'परिवेश' नामक संस्मरण संग्रह, जीवनी विधा में 'समय सारथी 1972', रेखाचित्र विधा में 'दिल्ली रात के बाहों में', 'सतयुग के लोग, डायरी विधा में

'मोहन राकेश की डायरी', निबंध विधा में 'बकलम खुद', 'मोहन राकेश के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण' आदि रचनाओं का लेखन कार्य किया है।

इसके साथ-साथ अनुवाद क्षेत्र और संपादन के क्षेत्र में भी मोहन राकेश का कृतित्व सराहनीय है। तात्पर्यः मोहन राकेश का व्यक्तित्व एवं कृतित्व अत्यंत प्रभावशाली है, जो दूसरों पर अपनी अमिट छाप छोड़ता है।

3.3.3.2 'अंडे के छिलके' एकांकी का परिचय :

मोहन राकेश स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण नाटककार के रूप में प्रसिद्ध है। मोहन राकेश का जीवन अनेक समस्याओं से संघर्ष करने में बिता। अपने अनुभव और प्रतिभा के बल पर उन्होंने साहित्य का निर्माण किया है। उनकी एकांकियाँ पारिवारिक एवं सामाजिक विषयों को केंद्र में रखकर लिखी गई है। उनकी एकांकी का मूल केंद्र परिवार ही है । परिवार से जुड़े अनेक विषयों को उन्होंने अपनी एकांकी के माध्यम से उजागर किया हैं।

'अंडे के छिलके' उनका महत्वपूर्ण एकांकी है, जो नए और पुरानी पीढ़ी के अंतर को स्पष्ट करती है। इस एकांकी में लेखक ने नए और पुराने वैचारिक मतभेद और आधुनिक मध्यम वर्गीय परिवार के युवाओं के ढोंग का सूक्ष्मता से और हास्यात्मक शैली में चित्रण किया है। प्रस्तुत एकांकी में जमुना (अम्मा) पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है। तो अन्य पात्र माधव और राधा, गोपाल और वीना, श्याम यह पात्र आधुनिक पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रस्तुत एकांकी का कथानक इन्हीं पात्रों के संवादों से आगे बढ़ता है, जो पाठकों या दर्शकों में अंत तक जिज्ञासा बनाए रखता है। यह पात्र सहजता से संवादों को प्रस्तुत करते हैं; जिससे संवाद मार्मिक, प्रभावशाली और आकर्षक बने हुए हैं। एकांकी शाम के समय में घटित है। जहाँ परिवार का हर एक सदस्य अपने रहस्याओं को दूसरों से छुपाना चाहता है। लेकिन एकांकी के अंत में सभी रहस्य खुलते हैं। अतः प्रस्तुत एकांकी में मानवीय संबंध, पारिवारिक मूल्यों की जटिलता, पुरानी परंपरा और रूढ़ियाँ, व्यक्तित्व का संघर्ष आदि को मनोवैज्ञानिक रूप से प्रकट करने का प्रयास किया है। इस दृष्टि से 'अंडे के छिलके' मोहन राकेश जी का प्रसिद्ध और लोकप्रिय एकांकी है।

3.3.3.3 'अंडे के छिलके' एकांकी की कथावस्तु या कथानक :

'अंडे के छिलके' मोहन राकेश का लोकप्रिय एवं महत्वपूर्ण एकांकी है। प्रस्तुत एकांकी की कथावस्तु पारिवारिक है। जिसमें पारिवारिक रूढी-परंपराएँ, आधुनिक युवाओं की इच्छाएँ, पारिवारिक रहस्य आदि को हास्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत एकांकी का कथानक कौतुहलवर्धक, जिज्ञासापूर्ण और हास्यात्मक है। जो दर्शकों को आकर्षित करता है। प्रस्तुत एकांकी का कथानक पारिवारिक घटना पर आधारित है। जिसमें कुल छः पात्र हैं। जमुना (अम्मा) पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाला स्त्री पात्र है। जो पारंपरिक रूढी-परंपराएँ, संस्कृति आदि को महत्व देता है। परंतु नई पीढ़ी के श्याम, गोपाल-वीना (पति-पत्नी) माधव-राधा (पति- पत्नी) नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। जो आधुनिक जीवन शैली को अपनाते हैं और परंपरा और रूढ़ियों को नजर-अंदाज करते हैं।

एकांकी का प्रारंभ श्याम के प्रवेश से होता है। श्याम बाहर से बारिश से भीग कर आता हैं। उसे घर में कोई नजर नहीं आता। इसलिए वह भाभी को आवाज देता है। भाभी उसकी आवाज पहचान कर उसे अपने कमरे में बुलाती हैं। तभी भाभी उसका भीगा रूप देखकर बरसाती बाहर उतरने को कहती है। वीना भाभी घर के रख-रखाव को अच्छी तरह से जानती हैं। भाभी घर में आने से घर का रख-रखाव ठीक-ठाक है। जिनकी आदत श्याम इससे पहले बिल्कुल नहीं थी। इसलिए श्याम को अपनी वीना भाभी द्वारा रखे गए घर के कमरें पराए लगते हैं। क्योंकि पहले उसने घर की वस्तुओं की अस्त-व्यस्तता देखी थी। तब श्याम अपनी छोटी वीना भाभी को चाय रखने के लिए कहता है। तब वह खाली चाय नहीं पीना चाहता। वह भाभी से कहता है कि मैं बाहर जाकर तुरंत चाय के साथ खाने के लिए गरमा-गरम कचौड़ी या समोसे ले आता हूँ। तभी भाभी उसे कचौड़ी-समोसे की जगह अंडे लाने को कहती है। जिससे वह अंडे का हलुआ बनाना चाहती है। परंतु श्याम वीना भाभी को अंडे लाने से मना करता है। क्योंकि उसे पता है कि हमारे घर में मांसाहार नहीं किया जाता। अगर जमुना अम्मा को पता चला तो खैर नहीं? परंतु भाभी उसे ज़ोर देकर अंडे लाने को कहती हैं। तब श्याम भाभी से कहता है कि ''तुम्हारी जिम्मेदारी पर मैं अंडे लाता हूँ। अगर अम्मा को पता चला तो सारी जिम्मेदारी तुम्हारी रहेगी।'' तब भाभी उससे कहती है कि, ''तुम्हारे भैया सुबह-सुबह कमरे में आमलेट बनाकर ही खाते हैं। हमने बेडरूम में बेड-टी बनाने के बहाने बिजली स्टोव लाकर रखा है और श्याम तुम भी सुबह-सुबह दूध में अंडे मिलाकर खाते हो। यह बात भी मुझे पता है। ज्यादा होशियार मत बनो। कोई भी अम्मा से कुछ नहीं कहेगा। जाओ अंडे लेकर आओ। तब तक मैं तुम्हारे लिए चाय बनाती हूँ।'' श्याम अंडे लाने चला जाता है।

श्याम के चले जाने के बाद बीना घर के कपड़े ठीक-ठाक करती है। जिसमें उसे अपने पति गोपाल के मोजे में अंडे के छिलके भरे दिखाई देते हैं। जो उसे वह कोने में डाल देती है। चाय बनाने के लिए किचन की ओर जाने लगती है। तब उसकी जेठानी राधा का दरवाजा बंद देखकर खोलने को कहती हैं। राधा अपने कमरे का दरवाजा खोलती है। वीना के पूछने पर राधा बताती है कि, ''शरीर में दर्द होने के कारण थोड़ा सा लेट गई थी। सोच रही थी सो जाऊँ? तभी वीना अंदर चली जाती है। तब किचन में उसे 'चंद्रकांता' नामक किताब मिल जाती हैं। वह तुरंत समझ जाती हैं कि जीजी राधा 'चंद्रकांता' उपन्यास पढ़ रही है। तब राधा उसके हाथ से किताब लेने की कोशिश करती है। परंतु वीना उसे नहीं देती। तभी वीना उसे यह किताब बेहिचक पढ़ने को कहती है। परंतु राधा वीना को बताती है कि मैं 'चंद्रकांता' इस कहानीनुमा पुस्तक को पढ़ती हूँ, यह बात अगर जमुना अम्मा को पता चली तो लेने के देने पड़ जाएंगे। क्योंकि अम्मा (वीना और राधा की सांस) रामायण और महाभारत की किताब पढ़ने को कहती हैं। अम्मा पारंपरिक विचार, रूढी-परंपराओं को मानने वाली आध्यात्मिक नारी है। राधा कौशल्या द्वारा दिया गया 'चंद्रकांता' उपन्यास पढ़ रही थी। तब वीना उससे कहती है कि कॉलेज पढ़ते समय हमने यह सारी किताबें पहले ही पढ़ी है। जिज्ञासावश राधा इस किताब की जानकारी वीना से लेना चाहती है। तभी वीना उसे खुद पढ़ने को कहती है।

वीना चाय के लिए पानी गर्म करके केतली स्टोव पर रख देती है। तब वीणा का पति गोपाल भीगा हुआ अंदर आता है। चाय स्टोव पर चढ़ा देखकर खुश होता है। तब पत्नी वीना पति गोपाल से कहती है कि

यह चाय श्याम के लिए है। जिसमें से एक प्याली आपको मिल सकती है। तब गोपाल कहता है कि देवर शाम पर तुम काफी मेहरबान हो। तभी वीना बताती हैं कि देवर और भाभी का रिश्ता कैसे होता है? यह तुम्हारी बड़ी भाभी राधा अच्छी तरह से जानती है। तब गोपाल वीना से मेरी देवी जैसी भाभी को कुछ न कहने की बात करता है और राधा भाभी की तारीफ करता है। तभी जेब से एक सिगरेट निकालकर सुलगाने लगता है। तब पत्नी वीना गोपाल से कहती है कि आप तो कहते थें कि आप सबके सामने नहीं पीते। तब गोपाल बताता है कि राधा भाभी ने एक बार मुझे गैलरी में सिगरेट पीते देखा था। इसलिए अब उनसे छुपता नहीं। भाभी ने यह बात अभी तक किसी को नहीं बताई। तब राधा कहती है कि हम कभी किसी की बात को इधर-उधर नहीं करते। गोपाल देवर जी सुबह आमलेट, अंडा फ्राई करते हैं। यह बात भी मुझे पता है पर मैंने अभी तक किसी को नहीं बताया।

तभी श्याम अंडे लेकर बाहर से अंदर आता है और बड़ी राधा भाभी को देखकर सहमा-सा रह जाता है। तब बीना भाभी उसे अंडे देने को कहती है और बताती हैं कि राधा भाभी किसी को कुछ नहीं बताएगी। परंतु तब गोपाल अपनी पत्नी वीना से कहता है कि, ''मैंने आपसे कितनी बार समझाया कि जिसे जो कुछ खाना है, बाहर खाए। घर में अगर अम्मा देखेगी तो क्या होगा? भाभी के सामने इस तरह से खाने का क्या?'' तब राधा भाभी कहती हैं कि, ''गोपाल मुझे तुम्हारे आमलेट और अंडा फ्राई खाने की बात पता है।'' तब गोपाल इस बात को भैया से न बताने को कहता है। तब राधा भाभी बताती है कि, ''श्याम के अंडे खाने और कभी-कभार शराब पीने की बात भी मुझे पता है। मैंने अभी तक किसी को कुछ नहीं बताया।'' श्याम देवर के शराब पीने की बात सुनकर वीना को आश्चर्य होता है। तब श्याम चुपचाप खड़ा रहता है। वीना भाभी किशमिश डालें बिना अंडे का हलुआ बना लेती है। तभी दूर से जमुनादेवी अम्मा के आने की आवाज सुनाई देती है। अम्मा के इधर आने से तुरंत सभी अपनी चोरी न पकड़ी जाए, इसलिए उसे छुपाने का प्रयास करते हैं। बीना तुरंत पॅन पर एक थाली ढँक देती है। अंडे के छिलकों पर ब्लाउज डाला जाता है। अम्मा सभी यहाँ एक साथ आने का कारण पूछती है। सभी की गड़बड़ी देखकर स्टोव पर ढक्कन से ढँका पॅन, टेबल पर पड़ा ब्लाउज देखकर अम्मा को लगता है कि कुछ तो गड़बड़ है। अम्मा पारंपरिक रूढी-परंपराओं को माननेवाली शाखाहरी नारी है। वह नहीं चाहती कि घर में माँस-मछली बने। तब गोपाल माँ को बता देता है कि वीना का हाथ थोड़ा-सा जल गया था। जो अब ठीक है। उस पॅन में क्या है? यह बात अपनी माँ के पूछने पर गोपाल अम्मा को झूठ बता देता है, ''कि श्याम को पैर में दर्द होने के कारण पुलटिन बनाया है। जो उसके पैरों पर बाँधना है। तभी वह पुलटिन खुद बाँधने के बाद जाकर अपना काम करने की बात अम्मा करती है। सभी अपना राज खुल जाएगा इस डर से काफी परेशान है। तभी किसी तरह गोपाल माँ को झूठ बातें बताकर उसके कमरे तक छोड़ आता है।

अम्मा के जाने से सब छुटकारा महसूस करते हैं। श्याम झट से अंडे के हलुआ पर टूट पड़ता है और जल्दी-जल्दी खाने की कोशिश करता है। तभी बाहर से राधा के पति माधव आता है। गोपाल कोट में अंडे के छिलके छुपा रहा था। माधव सब की गड़बड़ी भाँप लेता है और सबको बताता है कि आप लोगों के सभी राज मुझे पता है। इतना ही नहीं बल्कि श्याम और गोपाल का घर में अंडे खाना, राधा का 'चंद्रकांता'

की किताब पढ़ना, गोपाल का सिगरेट पीना आदि सभी बातें अम्मा को पता होने की बात कहता है। तब श्याम और गोपाल आश्चर्य के मारे खड़े रहते हैं । माधव बताता है, ''की अम्मा वह भी बातें जानती है जिसे मैं समझता हूँ कि वह नहीं जानती।'' माधव हँस कर गोपाल से कहता है कि, ''आज से अंडे के छिलके मोजे में या कोट की जेब में भरने की आवश्यकता नहीं है। उसे नाली में डाल दो। रहा अम्मा के देखने का सवाल। तो अम्मा नाली में भी अंडे के छिलके नहीं दिखेगी।'' माधव की हल्की हँसी से एकांकी समाप्त होती है।

इस तरह प्रस्तुत कथानक हास्यात्मक, कौतुलवर्धक और जिज्ञासा से परिपूर्ण है। जो पारिवारिक रिश्तों के स्नेह को उजागर करता है। अम्मा अपने बेटे और बहू की सभी बातें पता होने पर भी किसी को कुछ नहीं कहती। वह यह जताती रहती है कि उसे कुछ पता नहीं है। परंतु पारिवारिक स्नेह और एकता बनी रहने के लिए वह उसे नजर-अंदाज करती है।

3.3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न ।

1. मोहन राकेश आधुनिक काल के प्रसिद्ध ..... है।

   अ) कहानीकार ब) नाटककार

   क) उपन्यासकार ड) निबंधकार

2. मोहन राकेश का सन् ..... ई. जन्म हुआ।

   अ) 1936 ब) 1925

   क) 1915 ड) 1920

3. मोहन राकेश के पिता का नाम करमचंद ..... है।

   अ) गुगलानी ब) गांधी

   क) त्यागी ड) योगी

4. मोहन राकेश के पिता पेशे से . ..... थें।

   अ) डॉक्टर ब) वकील

   क) अध्यापक ड) इंजीनियर

5. मोहन राकेश का जन्म पंजाब के ..... शहर में हुआ।

   अ) नैनीताल ब) अमृतसर

   क) लाहौर ड) दरियागंज

6. मोहन राकेश के कुल . …… नाटक प्रकाशित है।

अ) एक ब) दो

क) तीन ड) चार

7. 'अंडे के छिलके' यह एक. …… हैं।

अ) नाटक ब) एकांकी

क) उपन्यास ड) कहानी

8. 'अंडे के छिलके' एकांकी की वीना ने. ……पास किया है।

अ) बी.ए. ब) ए. एम.

क) बी. एड. ड) एम. एड.

9. 'अंडे के छिलके' एकांकी में पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाला पात्र ……है।

अ) वीना ब) राधा

क) जमुना ड) कौशल्या

10. राधा…… उपन्यास पढ़ती है।

अ) चंद्रकांता ब) गोदान

क) व्यतीत ड) फांस

11. वीना के पति का नाम…… है।

अ) श्याम ब) गोपाल

क) माधव ड) राकेश

12. माधव की पत्नी का नाम…… है।

अ) वीना ब) राधा

क) जमुना ड) कौशल्या

13. वीना श्याम को …… लाने को कहती है।

अ) मछली ब) अंडे

क) सब्जी ड) दूध

14. 'अंडे के छिलके' एकांकी में श्याम की माँ का नाम..... हैं।

अ) कौशल्या ब) जमुना

क) वीना ड) राधा

15. 'अंडे के छिलके' एकांकी में राधा को चंद्रकांता किताब..... ने पढ़ने के लिए दी थी।

अ) कौशल्या ब) जमुना

क) वीना ड) राधा

3.3.5 पारिभाषिक शब्द/ शब्दार्थ :

1. इश्नान – स्नान।
2. हिल हुज्जत – ना–नुकर करना।
3. बाज वक्त – कोई समय।
4. भनक पड़ना – पता लगना।
5. जान निकलवाना – कठिनाइयों में डालना ।
6. सौगात – भेंट, उपहार ।
7. पुटिलस – एक घरेलू दवा जो मोच आने पर लगाते हैं।
8. काठ से – जड़ सामान ।
9. फेंटना – मिलाना।
10. झाँसा– धोखा, बहलावार।

3.3.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्न के उत्तर ।

1. ब) नाटककार
2. ब) 1925
3. अ) गुगलानी
4. ब) वकील
5. ब) अमृतसर
6. क) तीन
7. ब) एकांकी
8. अ) बी.ए.
9. क) जमुना
10. अ) चंद्रकांता
11. ब) गोपाल
12. ब) राधा
13. ब) अंडे
14. ब) जमुना
15. अ) कौशल्या

3.3.7 सारांश ।

1. मोहन राकेश स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के शीर्षस्थ नाटककार हैं। जिन्होंने अपनी प्रतिभा से हिंदी में कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, यात्रा साहित्य आदि विधाओं में लेखन कार्य कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है।
2. 'अंडे के छिलके' एकांकी के कथानक का केंद्र मध्यवर्गीय परिवार है। जिसका कथानक अंडे लाना और फिर अंडे खाना तथा अन्य आदतों को छुपाने की झूठी कोशिश से युक्त है।
3. 'अंडे के छिलके' एकांकी की कथावस्तु कोतुहलवर्धक एवं हास्यात्मक है। जो दशकों में अपनी जिज्ञासा को अंत तक बनाए रखती हैं।
4. प्रस्तुत एकांकी के नई पीढ़ी के पात्र पारंपरिक रूढ़ी-परंपराओं को त्यागते हैं। केवल पुरानी पीढ़ी को दिखाने के लिए पारंपरिक मूल्यों को निभाने का ढोंग करते हैं। परंतु पुरानी पीढ़ी की अम्मा सब कुछ जानती हुई पारिवारिक एकता और स्नेह को बनाए रखने के लिए अपने परिवार के सदस्यों की झूठी बातें नजर-अंदाज करती है।

3.3.8 स्वाध्याय ।

अ) लघुत्तरीय प्रश्न

1. 'अंडे के छिलके' एकांकी के लेखक मोहन राकेश जी का जीवन परिचय दीजिए।
2. 'अंडे के छिलके' एकांकी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
3. 'अंडे के छिलके'एकांकी के जमुना देवी (अम्मा) का चरित्र चित्रण कीजिए।
4. 'अंडे के छिलके'एकांकी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

ब) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. 'अंडे के छिलके'एकांकी की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।
2. एकांकीकार मोहन राकेश जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

3.3.9 क्षेत्रीय कार्य ।

1. अपने आस-पास के परिवारों के सदस्यों के बीच के पारिवारिक रिश्तों को गहराई से समझकर उसे लिखिए।
2. अपने परिवार के सदस्यों में से पुरानी पीढ़ी के सदस्य और नई पीढ़ी के सदस्यों के मन को समझने का प्रयास करें औंर उस पर कोई रचना लिखें।

3.3.10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

1. आषाढ़ का एक दिन (नाटक) - मोहन राकेश।
2. आधे-अधूरे (नाटक) - मोहन राकेश ।
3. सिपाही की माँ (एकांकी) - मोहन राकेश।

❑❑❑

इकाई–4

एकांकी

4 आवाज का नीलाम

– धर्मवीर भारती

अनुक्रम

4.1 उदेश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय विवेचन

4.1.1 धर्मवीर भारती का जीवन परिचय, व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व।

4.1.2 'आवाज़ का नीलाम' एकांकी का परिचय ।

4.1.3 'आवाज़ का नीलाम' एकांकी का कथानक ।

4.1.4. स्वंय अध्ययन के लिए प्रश्न।

4.1.5. पारिभाषिक शब्द और शब्दार्थ ।

4.1.6. स्वंय अध्ययन प्रश्नों के उत्तर ।

4.1.7. सारांश ।

4.1.8. स्वाध्याय ।

4.1.9. क्षेत्रीय कार्य ।

4.1.10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

4.1.1 उदेश्य :–

इस एकांकी का अध्ययन करने के बाद आप–

1. एकांकीकार धर्मवीर भारती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होगें।
2. हिंदी के प्रसिद्ध एकांकीकार धर्मवीर भारती के साहित्यिक दृष्टिकोन से अकांत होगा।
3. एकांकी में चित्रित आधुनिक समाज की विडंबनाओ और नैतिक पतन से परिचित होंगे।

4. प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से पत्रकारिता की विवशता को समझ पाओगे ।

5. अवसरवादी पूँजीपतियों की मानसिकता से परिचित होंगे ।

4.1.2 प्रस्तावना :–

एक अंक वाले नाटकों को एकांकी कहते हैं। अंग्रेजी के 'वन एक्ट प्ले' शब्द के लिए हिंदी में 'एकांकी नाटक' और 'एकांकी' दोनों ही शब्दों का समान रूप से प्रयोग होता है।

एकांकी नाटक साहित्य की एक महत्वपूर्ण और सशक्त विधा है, जिसमें जीवन की किसी एक प्रमुख घटना, भाव या समस्या को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है। 'एकांकी' शब्द का अर्थ है–एक अंक में समाप्त होने वाला नाटक। इसमें कथा–वस्तु, पात्र, संवाद और घटनाओं का विस्तार सीमित होता है, परंतु प्रभाव अत्यंत गहरा और मार्मिक होता है। पश्चिम में एकांकी 20 वीं शताब्दी में, विशेषतः प्रथम महायुद्ध के बाद, अत्याधिक प्रचलित और लोकप्रिय हुआ। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उसका व्यापक प्रचलन 20 वीं शताब्दी के चौथे दशक में हुआ।

एकांकी लेखन का उद्देश्य कम समय और सीमित साधनों में किसी महत्वपूर्ण विचार, सामाजिक समस्या या मानवीय संवेदना को प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त करना होता है। इसमें कथानक सरल, सुसंगठित और एकाग्र होता है, जिससे दर्शकों या पाठकों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। एकांकी में अनावश्यक प्रसंगों का अभाव होता है और प्रत्येक संवाद कथानक को आगे बढ़ाने में सहायक होता है।

आधुनिक युग में एकांकी की लोकप्रियता का मुख्य कारण इसकी संक्षिप्तता, प्रभावशीलता और मंचन की सरलता है। विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा रंगमंच पर एकांकी का व्यापक उपयोग किया जाता है, क्योंकि इसे कम समय में प्रस्तुत किया जा सकता है और यह दर्शकों को तुरंत प्रभावित करता है।

धर्मवीर भारती द्वारा रचित 'आवाज़ का नीलाम' एक अत्यंत सार्थक एवं विचारोत्तेजक एकांकी है, जो आधुनिक समाज की विसंगतियों, नैतिक पतन और मानवीय मूल्यों के ऱ्हास को उजागर करती है। यह एकांकी उस स्थिति का मार्मिक चित्रण करती है, जहाँ मनुष्य की स्वतंत्र आवाज़–जो सत्य, न्याय और आत्मसम्मान का प्रतीक है–स्वार्थ, भय और लालच के कारण नीलाम हो जाती है।

इस एकांकी की प्रस्तावना में लेखक ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि आज के युग में व्यक्ति अपनी अंतरात्मा की आवाज़ को दबाकर भौतिक लाभों के पीछे भाग रहा है। समाज में सत्ता, धन और प्रभाव के सामने सच्चाई और ईमानदारी की कोई कीमत नहीं रह गई है। परिणामस्वरूप, व्यक्ति अपनी 'आवाज़' अर्थात् अपने विचार, सिद्धांत और नैतिकता का सौदा करने को विवश हो जाता है।

'आवाज़ का नीलाम' केवल एक कथा नहीं, बल्कि यह एक गहरा सामाजिक व्यंग्य है, जो पाठकों और दर्शकों को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करता है। यह एकांकी हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम भी कहीं न कहीं अपनी आवाज़ का नीलाम तो नहीं कर रहे हैं?

4.1.3 विषय विवेचन

4.1.3.1 धर्मवीर भारती का जीवन परिचय, व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व

जन्म :–

धर्मवीर भारती का जन्म दि. 25 दिसंबर, सन् 1926 ई. को इलाहाबाद के अतर सुइया मुहल्ले में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री चिरंजीव लाल वर्मा और माँ का नाम श्रीमती चंदादेवी था।

शिक्षा :–

स्कूली शिक्षा डी. ए. वी. हाईस्कूल में हुई और उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में। प्रथम श्रेणी में एम. ए. करने के बाद डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में सिद्ध साहित्य पर शोध–प्रबंध लिखकर उन्होंने पीएच.डी. प्राप्त की।

स्वभाव :–

घर और स्कूल से प्राप्त आर्य समाजी संस्कार, इलाहाबाद और विश्वविद्यालय का साहित्यिक वातावरण, देश भर में होने वाली राजनीतिक हलचलें, बाल्यावस्था में ही पिता की मृत्यु और उससे उत्पन्न आर्थिक संकट इन सबने उन्हें अति संवेदनशील, तर्कशील बना दिया। उन्हें जीवन में दो ही शौक थें : अध्ययन और यात्रा। भारती जी के साहित्य में उनके विशद अध्ययन और यात्रा–अनुभवों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है ।

प्रभाव :–

धर्मवीर भारती आर्यसमाज की चिंतन और तर्कशैली से थें। साथ ही रामायण, महाभारत और श्रीमद्भागवत शरत्चंद्र का भी उन पर प्रभाव था। प्रसाद और शरत्चंद्र का साहित्य उन्हें विशेष प्रिय था। आर्थिक विकास के लिए मार्क्स के सिद्धांत उनके आदर्श थें परंतु मार्क्सवादियों की अधीरता और मताग्रहता उन्हें अप्रिय थे। 'सिद्ध साहित्य उनके शोध' का विषय था, उनके सटजिया सिद्धांत से वे विशेष रूप से प्रभावित थें। पश्चिमी साहित्यकारों में शेले और आस्करवाइल्ड उन्हें विशेष प्रिय थे।

शौक :–

धर्मवीर भारती को फूलों का बेहद शौक था। उनके साहित्य में भी फूलों से संबंधित बिंब प्रचुर मात्रा में मिलते हैं।

साहित्यिक दृष्टि :–

आलोचकों में धर्मवीर भारती को प्रेम और रोमांस का रचनाकार माना है। उनकी कविताओं, कहानियों और उपन्यासों में प्रेम और रोमांस का यह तत्व स्पष्ट रूप से मौजूद है। परंतु उसके साथ–साथ इतिहास और समकालीन स्थितियों पर भी उनकी पैनी दृष्टि रही है जिसके संकेत उनकी कविताओं, कहानियों, उपन्यासों, नाटकों, आलोचना तथा संपादकीयों में स्पष्ट देखे जा सकते हैं। उनकी कहानियों–उपन्यासों में मध्यवर्गीय

जीवन के यथार्थ के चित्र हैं । 'अंधा युग' में स्वातंत्र्योत्तर भारत में आई मूल्यहीनता के प्रति चिंता है। उनका बल पूर्व और पश्चिम के मूल्यों, जीवन-शैली और मानसिकता के संतुलन पर है । वे न तो किसी एक का अंधा विरोध करते हैं न अंधा समर्थन, परंतु क्या स्वीकार करना और क्या त्यागना है इसके लिए व्यक्ति और समाज की प्रगति को ही आधार बनाकर चलते है । उनकी दृष्टि में वर्तमान को सुधारने और भविष्य को सुखमय बनाने के लिए आम जनता के दुःख दर्द को समझने और उसे दूर करने की आवश्यकता है।

कार्यक्षेत्र :–

भारती सन् 1948 में 'संगम' के संपादक श्री इलाचंद्र जोशी जी के सहकारी संपादक नियुक्त हुए। दो वर्ष वहाँ काम करने के बाद हिन्दुस्तानी अकादमी में अध्यापक नियुक्त हुए। सन् 1960 ई. तक वहा कार्य किया। प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्यापन के दौरान 'हिंदी साहित्य कोश' के संपादन में सहयोग दिया। 'निकष' पत्रिका निकाली तथा 'आलोचना' का संपादन भी किया। उसके बाद 'धर्मयुग' में प्रधान संपादक पद पर मुंबई आ गए।

प्रमुख कृतियाँ:–

कहानी संग्रह : –

1. मुर्दों का गाँव । 2. स्वर्ग और पृथ्वी । 3. चाँद और टूटे हुए लोग ।
4. बंद गली का आखिरी मकान।

काव्य रचनाएँ :–

1. ठंडा लोहा । 2. सात गीत वर्ष । 3.कनुप्रिया ।
4. सपना अभी भी । 5. आद्यन्त ।

उपन्यास:–

1. गुनाहों का देवता । 2. सूरज का सातवाँ घोड़ा । 3. ग्यारह सपनों का देश।

निबंध : –

1. ठेले पर हिमालय 2. पश्यंती ।

एकांकी नाटक :–

1. नदी प्यासी थी । 2. नीली झील। 3. आवाज़ का नीलाम।

पद्य नाटक :– अंधा युग ।

आलोचना : –

1. प्रगतिवाद : एक समीक्षा । 2. मानव मूल्य और साहित्य ।

प्रमुख पुरस्कार और सम्मान :–

- पद्मश्री सन् 1972 में भारत सरकार द्वारा साहित्य के लिए प्रदान किया गया है ।
- व्यास सम्मान सन् 1994 में के.के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा प्राप्त ।
- भारत–भारती पुरस्कार– उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा प्राप्त ।
- संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार सन् 1989 में सर्वश्रेष्ठ नाटककार के रूप में समानित ।
- हल्दीघाटी श्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार सन् 1984 में महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन द्वारा प्राप्त ।
- महाराष्ट्र गौरव सन् 1994 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्राप्त ।
- चिंतामणि घोष पुरस्कार सन् 1945 में बी.ए. में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने पर प्राप्त हुआ ।

4.1.3.2 'आवाज़ का नीलाम' एकांकी का परिचय

'आवाज़ का नीलाम' प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार धर्मवीर भारती की एक महत्वपूर्ण एकांकी है, जो आधुनिक समाज की विडंबनाओं और नैतिक पतन को उजागर करता है। यह एकांकी अपने समय की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का सशक्त चित्रण करता है। इसमें लेखक ने मानव के अंतर्मन, उसकी विवशता, और उसके आदर्शों के पतन को बड़े मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

यह एकांकी उस दौर की देन है जब समाज में मूल्यों का तेजी से ऱ्हास हो रहा था और व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए सत्य, ईमानदारी और नैतिकता को त्यागने लगा था। धर्मवीर भारती जी ने इस रचना के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार मनुष्य की आवाज़ – जो उसके आत्मसम्मान, सत्य और नैतिकता का प्रतीक है – बिकाऊ बन गई है।

इस एकांकी का शीर्षक 'आवाज़ का नीलाम' अपने आप में अत्यंत अर्थपूर्ण है। यहाँ आवाज़ केवल बोलने की क्षमता नहीं, बल्कि व्यक्ति के विचार, उसकी स्वतंत्रता और उसकी आत्मा की अभिव्यक्ति का प्रतीक है। 'नीलाम' शब्द यह दर्शाता है कि यह आवाज़ अब मूल्यहीन हो चुकी है और धन या स्वार्थ के बदले बेची जा रही है। इस प्रकार शीर्षक ही पूरी रचना के केंद्रीय भाव को स्पष्ट कर देता है।

एकांकी की पृष्ठभूमि एक ऐसे समाज की है जहाँ हर चीज़ का मूल्य पैसे से तय किया जाता है। यहाँ तक कि व्यक्ति के विचार, उसकी सच्चाई और उसकी अंतरात्मा भी बिकने लगी है। इस रचना में विभिन्न पात्रों के माध्यम से यह दिखाया गया है कि कैसे लोग अपने लाभ के लिए अपनी आवाज़ का सौदा कर लेते हैं। वे सत्ता, धन या प्रतिष्ठा के लालच में अपने सिद्धांतों को त्याग देते हैं।

धर्मवीर भारती ने इस एकांकी में प्रतीकात्मक शैली का अत्यंत प्रभावशाली उपयोग किया है। नीलाम की प्रक्रिया केवल बाहरी घटना नहीं है, बल्कि यह मनुष्य के भीतर चल रही नैतिक गिरावट का प्रतीक है। प्रत्येक पात्र समाज के एक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जो अपनी-अपनी परिस्थितियों में अपनी आवाज़ बेचने को विवश है या स्वेच्छा से ऐसा करता है।

इस एकांकी की भाषा सरल, प्रभावपूर्ण और व्यंग्यात्मक है। लेखक ने संवादों के माध्यम से गहरी बातों को सहज रूप में प्रस्तुत किया है। व्यंग्य और कटाक्ष के जरिए समाज की कुरीतियों और विसंगतियों को उजागर किया गया है। संवाद छोटे-छोटे होते हुए भी अत्यंत अर्थपूर्ण हैं, जो पाठक और दर्शक के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं।

'आवाज़ का नीलाम' केवल एक साहित्यिक रचना नहीं, बल्कि एक सामाजिक चेतावनी भी है। यह हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम भी कहीं अपनी आवाज़, अपने सिद्धांत और अपने सत्य को किसी न किसी रूप में बेच तो नहीं रहे हैं। यह एकांकी हमें अपने आत्ममूल्य को पहचानने और उसे बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

अंततः कहा जा सकता है कि 'आवाज़ का नीलाम' एक अत्यंत प्रभावशाली और विचारोत्तेजक एकांकी है, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना अपने समय में था। यह रचना समाज के सामने एक दर्पण प्रस्तुत करती है और हमें अपनी नैतिक स्थिति का आत्म निरीक्षण करने के लिए प्रेरित करती है।

4.1.3.3 'आवाज़ का नीलाम' एकांकी का कथानक

'आवाज़ का नीलाम' एकांकी की कथा एक प्रतीकात्मक वातावरण में आरंभ होती है, जहाँ एक विचित्र प्रकार का बाज़ार सजा हुआ है। यह कोई सामान्य बाज़ार नहीं, बल्कि ऐसा स्थान है जहाँ मनुष्य की आवाज़ का नीलाम किया जा रहा है। यहाँ आवाज़ का अर्थ केवल बोलने की क्षमता नहीं, बल्कि मनुष्य की अंतरात्मा, सत्य बोलने का साहस, नैतिकता और आत्म सम्मान से है। इस बाज़ार का संचालन एक नीलामी कर्ता करता है, जो बड़े आकर्षक और प्रभावशाली शब्दों में लोगों को अपनी आवाज़ बेचने के लिए प्रेरित करता है।

प्रारंभ में वातावरण कुछ रहस्यमय और आकर्षक दिखाई देता है। नीलामी कर्ता लोगों को यह समझाता है कि अपनी आवाज़ बेच देने से उन्हें धन, प्रतिष्ठा और सुविधा प्राप्त होगी। वह बार-बार यह बात दोहराता है कि इस संसार में वही सफल है जो अपनी अंतरात्मा की आवाज़ को दबाकर परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार करता है। धीरे-धीरे वहाँ विभिन्न प्रकार के लोग एकत्रित होने लगते हैं-नेता, व्यापारी, अधिकारी और सामान्य जन।

सबसे पहले एक नेता वहाँ आता है। वह अपने राजनीतिक जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए अपनी आवाज़ बेचने को तैयार हो जाता है। उसके लिए सत्य और असत्य का कोई विशेष महत्व नहीं रह जाता; उसके लिए केवल सत्ता ही सर्वोपरि है। नीलामी कर्ता उसकी इस मानसिकता का लाभ उठाता है और

उसकी आवाज़ को ऊँची कीमत पर खरीद लेता है। इस प्रकार नेता अपनी अंतरात्मा को त्यागकर केवल स्वार्थ और सत्ता की भाषा बोलने लगता है।

इसके बाद एक व्यापारी का प्रवेश होता है। वह भी लाभ और धन कमाने की लालसा में अपनी आवाज़ बेचने को तैयार हो जाता है। उसके लिए ईमानदारी और नैतिकता का कोई महत्व नहीं रह जाता। वह यह मान लेता है कि व्यापार में सफलता के लिए छल-कपट आवश्यक है। नीलामी कर्ता उसकी इस कमजोरी को पहचानकर उसकी आवाज़ का सौदा कर लेता है। अब व्यापारी भी अपनी अंतरात्मा की आवाज़ खो देता है और केवल लाभ-हानि के आधार पर निर्णय लेने लगता है।

कथानक में आगे एक अधिकारी (अफसर) आता है। वह भी अपनी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों को भूलकर निजी लाभ के लिए अपनी आवाज़ बेच देता है। वह रिश्वत, पक्षपात और अन्याय के मार्ग पर चलने लगता है। उसकी आवाज़ बिक जाने के बाद वह सत्य का समर्थन नहीं कर पाता और केवल आदेशों का पालन करने वाला एक यांत्रिक व्यक्ति बन जाता है।

धीरे-धीरे यह नीलामी का क्रम बढ़ता जाता है और समाज के विभिन्न वर्गों के लोग अपनी आवाज़ बेचते चले जाते हैं। सामान्य नागरिक भी इस प्रलोभन से अछूते नहीं रहते। वे भी छोटी-छोटी सुविधाओं और लाभ के लिए अपनी अंतरात्मा की आवाज़ को त्याग देते हैं। इस प्रकार पूरा समाज इस नीलामी में शामिल हो जाता है।

इसी बीच एक सजग और संवेदनशील व्यक्ति का प्रवेश होता है। वह इस पूरे दृश्य को देखकर अत्यंत विचलित हो उठता है। वह लोगों को समझाने का प्रयास करता है कि आवाज़ मनुष्य की पहचान है, यह उसकी स्वतंत्रता और आत्मसम्मान का प्रतीक है। यदि मनुष्य अपनी आवाज़ बेच देगा, तो वह अपनी पहचान ही खो देगा। वह लोगों से आग्रह करता है कि वे इस नीलामी का विरोध करें और अपनी अंतरात्मा की रक्षा करें। किन्तु उसकी बातों का किसी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। लोग उसे मूर्ख और अव्यावहारिक कहकर उसकी उपेक्षा करते हैं। वे यह मानते हैं कि वर्तमान समय में आदर्शों और नैतिकता का कोई महत्व नहीं है। नीलामी कर्ता भी उस सजग व्यक्ति का मज़ाक उड़ाता है और उसे इस बाज़ार से बाहर कर देता है।

कथानक का यह भाग अत्यंत मार्मिक है, जहाँ एक ओर सजग व्यक्ति की चेतावनी है, वहीं दूसरी ओर समाज का अंधानुकरण और स्वार्थपरता है। अंततः वह व्यक्ति निराश होकर वहाँ से चला जाता है, क्योंकि वह अकेला इस प्रवाह को रोकने में असमर्थ होता है।

अंतिम चरण में स्थिति यह हो जाती है कि लगभग सभी लोग अपनी आवाज़ बेच चुके होते हैं। अब वहाँ केवल सन्नाटा रह जाता है। यह सन्नाटा केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक और नैतिक शून्यता का प्रतीक है। लोग अब बोल तो सकते हैं, लेकिन उनकी आवाज़ में सत्य और आत्मा नहीं रह जाती। वे केवल दूसरों के आदेशों का पालन करने वाले यंत्र बन जाते हैं।

नीलामीकर्ता इस स्थिति से संतुष्ट दिखाई देता है, क्योंकि उसका उद्देश्य पूरा हो चुका होता है। समाज के सभी लोग अब उसकी शर्तों पर चलने के लिए विवश हो जाते हैं। इस प्रकार एक ऐसा वातावरण निर्मित होता है जहाँ न तो कोई विरोध है, न ही कोई प्रश्न–केवल मौन और अधीनता है।

एकांकी का अंत अत्यंत प्रभावशाली और विचारोत्तेजक है। यह संकेत करता है कि जब समाज के लोग अपनी आवाज़ खो देते हैं, तब वहाँ अन्याय, शोषण और अंधकार का साम्राज्य स्थापित हो जाता है। मनुष्य की वास्तविक शक्ति उसकी आवाज़ में ही निहित होती है, और जब वही बिक जाती है, तो उसके अस्तित्व का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

इस प्रकार 'आवाज़ का नीलाम' की कथावस्तु एक प्रतीकात्मक कथा के माध्यम से यह दिखाती है कि कैसे स्वार्थ और लालच के कारण मनुष्य अपनी अंतरात्मा को बेच देता है और समाज नैतिक पतन की ओर अग्रसर हो जाता है। यह कथा आरम्भ से अंत तक नीलामी की प्रक्रिया के माध्यम से आगे बढ़ती है और अंत में एक गहन सन्नाटे के साथ समाप्त होती है, जो समाज की खोई हुई आवाज़ का प्रतीक है।

4.1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

अ) नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. 'आवाज़ का नीलाम' एकांकी के लेखक..... हैं।

   अ) मोहन राकेश　　ब) धर्मवीर भारती

   क) भीष्म साहनी　　ड) जयशंकर प्रसाद

2. 'आवाज़ का नीलाम' में 'आवाज़' ..... का प्रतीक है ।

   अ) धन　　ब) शक्ति

   क) आत्मा और संवेदना　　ड) प्रसिद्धि

3. एकांकी में.....प्रवृत्ति की आलोचना की गई है ।

   अ) आध्यात्मिकता　　ब) देशभक्ति

   क) व्यवसायीकरण　　ड) प्रकृति–प्रेम

4. एकांकी में .....की नीलामी हो रही है ।

   अ) वस्तुओं की　　ब) जमीन की

   क) आवाज़ की　　ड) भवन की

5. यह एकांकी ..... शैली में लिखा गया है ।

अ) यथार्थवादी ब) प्रतीकात्मक

क) ऐतिहासिक ड) पौराणिक

6. एकांकी में कलाकार .....की समस्या से जूझता है ।

अ) गरीबी ब) बीमारी

क) आत्मसम्मान और परिस्थितियों के संघर्ष ड) शिक्षा

7. 'नीलामी करने वाला' पात्र.....का प्रतीक है ।

अ) समाज सुधारक ब) व्यापारी मानसिकता

क) कलाकार ड) शिक्षक

8. एकांकी में ..... प्रकार का व्यंग्य देखने को मिलता है ।

अ) हल्का व्यंग्य ब) करुण व्यंग्य

क) तीखा सामाजिक व्यंग्य ड) हास्य व्यंग्य

9. 'आवाज़ का नीलाम' ..... विधा की रचना है ।

अ) कहानी ब) उपन्यास

क) एकांकी ड) कविता

10. एकांकी की भाषा ..... है ।

अ) जटिल और कठिन ब) सरल और प्रभावशाली

क) अत्यंत अलंकारिक ड) प्राचीन

ब) सही गलत का उचित निर्णय करें ।

1. 'आवाज़ का नीलाम' एकांकी में 'आवाज़' व्यक्ति की अंतरात्मा और नैतिकता का प्रतीक है ।
2. इस एकांकी में सभी पात्र अपने सिद्धांतों का पालन करते हैं और कोई भी समझौता नहीं करता।
3. नीलामी की प्रक्रिया के माध्यम से समाज में व्याप्त स्वार्थ और भ्रष्टाचार को दिखाया गया है।
4. यह एकांकी प्रतीकात्मक शैली में लिखा गया है और इसमें व्यंग्य का प्रयोग हुआ है।
5. इस एकांकी का उद्देश्य केवल हास्य उत्पन्न करना है, इसमें कोई सामाजिक संदेश नहीं है।

4.1.5 पारिभाषिक शब्द और शब्दार्थ।

1. नीलाम – किसी वस्तु को सबसे अधिक बोली लगाकर बेचने की प्रक्रिया।
2. नीलामी कर्ता – वह व्यक्ति जो नीलामी की प्रक्रिया को संचालित करता है।
3. मूल्य –किसी वस्तु की कीमत या महत्व।
4. व्यवसायीकरण – किसी वस्तु या कला को व्यापार का माध्यम बना देना।
5. नैतिकता – सही और गलत का बोध कराने वाले मूल्य।
6. उपभोक्तावाद– वस्तुओं के अधिक उपभोग और खरीद–बिक्री की प्रवृत्ति।
7. अंतर्द्वंद्व – मन के भीतर चलने वाला संघर्ष।

4.1.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

अ) 1. ब) धर्मवीर भारती 2. क) आत्मा और संवेदना का

3. क) व्यवसायीकरण 4. क) आवाज़ की

5. ब) प्रतीकात्मक

6. क़) आत्मसम्मान और परिस्थितियों के संघर्ष से 7. ब) व्यापारी मानसिकता का

8. क) तीखा सामाजिक व्यंग्य 9. क) एकांकी 10. ब) सरल और प्रभावशाली

ब) 1. सही 2. गलत 3. सही

4. सही 5. गलत

4.1.7 सारांश ।

1. आवाज़ यहाँ व्यक्ति की आत्मा, सत्य और ईमानदारी का प्रतीक है।
2. नीलाम यह बताता है कि मनुष्य अपनी अंतरात्मा को स्वार्थ के लिए बेच रहा है।
3. एकांकी में नीलामी की प्रक्रिया के माध्यम से सामाजिक विडंबना को प्रस्तुत किया गया है।
4. विभिन्न पात्र समाज के अलग–अलग वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
5. लोग धन, पद और प्रतिष्ठा के लिए अपने सिद्धांतों का त्याग करते दिखाई देते हैं।
6. एकांकी में व्यंग्य और प्रतीकात्मकता का प्रभावी प्रयोग किया गया है।
7. संवाद छोटे लेकिन गहरे अर्थ वाले हैं, जो दर्शकों को सोचने पर मजबूर करते हैं।

8. यह रचना समाज के भ्रष्ट और स्वार्थी स्वरूप को उजागर करती है।
9. अंत में यह एकांकी हमें अपने आत्मसम्मान और नैतिकता को बनाए रखने की प्रेरणा देता है।
10. यह एकांकी आधुनिक समाज में नैतिक मूल्यों के पतन को दर्शाता है।

4.1.8 स्वाध्याय :–

अ) टिप्पणियाँ लीखिए ।

1. एकांकी में कलाकार का अंतर्द्वंद्व ।
2. एकांकी में व्यंग्य तत्व।
3. एकांकी के शीर्षक की सार्थकता।

ब) दिर्घोतरी प्रश्न ।

1. एकांकी में प्रस्तुत मुख्य विषय एवं संदेश का विस्तार से विवेचन कीजिए।
2. एकांकी में व्यवसायीकरण और उपभोक्तावाद की प्रवृत्ति पर प्रकाश डालिए।
3. 'आवाज़ का नीलाम' एकांकी की भाषा–शैली और संवाद योजना का विश्लेषण कीजिए।
4. 'आवाज़ का नीलाम' एकांकी की कथावस्तू को अपने शब्दों में लिखिए।

4.1.9 क्षेत्रीय कार्य।

1. आवाज़ का नीलाम एकांकी का मराठी भाषा में अनुवाद कीजिए।
2. हिंदी के एकांकीकारों की सूचि तैयार कीजिए ।
3. स्थानिक कलाकारों को लेक एकांकी का मंच पर प्रस्तुतिकरण कीजिए ।

4.1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. एकांकी सप्तक – शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर प्रकाशन
2. एकांकी और एकांकीकार – डॉ. हरिकृष्ण प्रेमी
3. आधुनिक हिंदी नाटक – डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी
4. धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व और कृतित्व – डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल

❑❑❑

एकांकी

2. बहू की विदा

– विनोद रस्तोगी

अनुक्रम

4.2.1. उदेश्य

4.2.2. प्रस्तावना

4.2.3. विषय विवेचन

4.2.3.1 विनोद रस्तोगी का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

4.2.3.2 'बहू की विदा' एकांकी का परिचय।

4.2.3.3 'बहू की विदा' एकांकी का कथानक ।

4.2.4. स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न ।

4.2.5. पारिभाषिक शब्द और शब्दार्थ ।

4.2.6. स्वंय अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।

4.2.7. सारांश ।

4.2.8. स्वाध्याय ।

4.2.9. क्षेत्रीय कार्य ।

4.2.10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

4.2.1 उदेश्य :–

इस एकांकी का अध्ययन करने के बाद आप–

1. एकांकीकार विनोद रस्तोगी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होगे ।
2. हिंदी के प्रसिद्ध एकांकीकार विनोद रस्तोगी के साहित्यिक दृष्टिकोण से अवगत होंगे ।
3. एकांकी में चित्रित भारतीय पारिवारिक जीवन की भावनात्मक गहराई और स्त्री की संवेदनशीलता से परिचित होंगे।

4. विवाह केवल एक सामाजिक संस्कार नहीं है बल्कि भावनाओं का गहरा संबंध है, इस बात से अवगत होंगे।

4.2.2 प्रस्तावना :–

भारतीय नाट्य–साहित्य में एकांकी विधा का विशेष स्थान है। एकांकी नाटक जीवन के किसी एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग, भावना या घटना को संक्षिप्त, प्रभावशाली और कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है। इसमें कथानक का विस्तार सीमित होते हुए भी उसकी संवेदनात्मक गहराई अत्यंत प्रभावपूर्ण होती है। इसी परंपरा में 'बहू की विदा' एक अत्यंत मार्मिक और संवेदनशील एकांकी है, जो भारतीय पारिवारिक जीवन, परंपराओं तथा मानवीय भावनाओं का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है।

'बहू की विदा' एकांकी का मूल आधार भारतीय समाज की वह प्राचीन परंपरा है, जिसमें विवाह के पश्चात् कन्या अपने मायके को छोड़कर ससुराल जाती है। यह क्षण केवल एक सामाजिक रीति मात्र नहीं, बल्कि भावनाओं का ज्वार होता है– ममता, स्नेह, करुणा, और विरह की गहन अनुभूति का संगम। इस एकांकी में 'विदा' के इसी क्षण को केंद्र में रखकर कथा का निर्माण किया गया है, जिससे मानवीय संवेदनाओं की तीव्रता पाठक एवं दर्शक के हृदय को स्पर्श करती है।

एकांकी की प्रस्तावना में यह स्पष्ट किया जा सकता है कि भारतीय संस्कृति में नारी को सदैव त्याग, समर्पण और सहनशीलता का प्रतीक माना गया है। विवाह के बाद जब वह अपने माता–पिता, भाई–बहनों और बचपन की स्मृतियों को पीछे छोड़कर एक नए जीवन की ओर अग्रेसर होती है, तब उसके हृदय में अनेक भावनाएँ एक साथ उमड़ती हैं। 'बहू की विदा' इसी संक्रमणकालीन स्थिति का अत्यंत मार्मिक चित्रण करता है। यह केवल एक लड़की की विदाई नहीं, बल्कि एक परिवार के जीवन में आने वाले भावनात्मक परिवर्तन का प्रतीक भी है।

एकांकी का वातावरण अत्यंत घरेलु और यथार्थपरक है। इसमें पात्रों की संख्या सीमित होते हुए भी प्रत्येक पात्र अपने–अपने स्थान पर अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। माता–पिता का स्नेह, भाई–बहनों का लगाव, और स्वयं नववधू की मनःस्थिति–इन सबका चित्रण अत्यंत स्वाभाविक और हृदयस्पर्शी ढंग से किया गया है। संवादों में सरलता और सहजता है, जो इस एकांकी को और अधिक प्रभावी बनाता है। भाषा में भावात्मकता के साथ–साथ लोकजीवन की झलक भी देखने को मिलती है।

इस एकांकी की विशेषता यह है कि यह केवल एक पारिवारिक घटना का वर्णन नहीं करता, बल्कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक परंपराओं और मूल्यों को भी उजागर करता है। विदाई के समय आँसू केवल दुःख के प्रतीक नहीं होते, बल्कि वे प्रेम, विश्वास और नए जीवन के प्रति आशा का भी संकेत देते हैं। इस प्रकार 'बहू की विदा' जीवन के द्वंद्व–मिलन और बिछोह–दोनों को एक साथ प्रस्तुत करता है।

नाटकीय दृष्टि से यह एकांकी अत्यंत सफल है। इसमें आरंभ, मध्य और अंत की संरचना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। आरंभ में विदाई की तैयारी का वातावरण बनता है, मध्य में भावनाओं का उत्कर्ष होता है

और अंत में विदाई का करुण दृश्य प्रस्तुत होता है, जो दर्शकों के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ता है। नाटकीयता, संवाद-शैली और भावाभिव्यक्ति इस एकांकी को प्रभावपूर्ण बनाते हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि 'बहू की विदा' एकांकी भारतीय पारिवारिक जीवन की संवेदनशीलता का सशक्त दस्तावेज है। यह एकांकी न केवल पाठकों को भाव-विभोर करता है, बल्कि उन्हें भारतीय संस्कृति की गहराई और मानवीय संबंधों की महत्ता का भी बोध कराता है। यह एकांकी हमें यह समझने में सहायता करता है कि जीवन के छोटे-छोटे प्रसंग भी कितने गहरे और अर्थपूर्ण हो सकते हैं, यदि उन्हें संवेदनशीलता और कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया जाए।

4.2.3 विषय विवेचन :

4.2.3.1 विनोद रस्तोगी का जीवन परिचय एवं कृतित्व

विनोद रस्तोगी हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण नाटककार एवं एकांकीकार के रूप में जाने जाते हैं। उनका जन्म 20 वीं शताब्दी के मध्यकाल में उत्तर भारत में हुआ। वे ऐसे समय में साहित्य-सृजन कर रहे थे जब हिंदी नाटक और एकांकी विधा तेजी से विकसित हो रही थी।

जन्म :

रस्तोगी जी का जन्म दि. 12 मई, सन् 1923 ई. को फर्रुखाबाद जिले के शमसाबाद कस्बे में एक व्यापारी परिवार में हुआ था।

शिक्षा:

प्रारंभिक शिक्षा शमसाबाद में प्राप्त करने के उपरांत उन्होंने फर्रुखाबाद में हिंदी साहित्य में उच्च शिक्षा प्राप्त की।

कार्यक्षेत्र :

कन्नौज में ही नौटंकी के बादशाह त्रिमोहन जी के संपर्क में आए और फिर कानपुर में श्री कृष्ण पहलवान को निकट से देखने और समझने का अवसर प्राप्त हुआ। रस्तोगी जी के लेखन, निर्देशन तथा अभिनय प्रतिभा से प्रभावित होकर आकाशवाणी के तत्कालीन महानिदेशक श्री जगदीशचंद्र जी माथुर ने उन्हें 1960 में आकाशवाणी के इलाहाबाद केंद्र पर असिस्टेंट ड्रामा प्रोड्यूसर के रूप में नियुक्त किया और फिर वे ड्रामा प्रोड्यूसर के पद पर आसीन हुए। सन् 1982 में इसी पद से अवकाश ग्रहण किया। श्री रस्तोगी जी की प्रतिभा को दिल्ली तथा अन्य केंद्र भी सम्मान देते थें। रस्तोगी जी आकाशवाणी के सबसे लंबे श्रृंखला नाटक 'मुंशी इतवारी लाल' के प्रोड्यूसर होने के साथ-साथ मुख्य अभिनेता भी थें।

कृतित्व :–

विनोद रस्तोगी जी ने मुख्यतः एकांकी (One Act Plays) के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया। उनकी रचनाएँ विद्यालयों और महाविद्यालयों में भी व्यापक रूप से पढ़ाई और मंचित की जाती रही हैं। 'बहू की विदा' – एक अत्यंत प्रसिद्ध और भावनात्मक एकांकी, जिसमें भारतीय परिवार और विदाई के करुण प्रसंग का चित्रण है। अन्य सामाजिक एकांकियाँ – जिनमें पारिवारिक संबंध, सामाजिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्ति मिली है।

उत्तर प्रदेश का लोक नाट्य नौटंकी लोकरंजन का एक सशक्त माध्यम रहा है, किंतु कालांतर में इसमें फूहड़ता और अश्लीलता के समाहित होने से सभ्रांत परिवार के लोग इससे दूर होते गए और नौटंकी को हेय दृष्टि से देखा जाने लगा। विनोद रस्तोगी जी, जिनका बचपन त्रिमोहन जी के नगाड़े की गूँज के बीच बीता और फिर जो श्री कृष्ण पहलवान के सानिध्य में आए। उन्होंने ने इस रोग ग्रस्त लोक नाट्य के पुनरोत्थान का बीड़ा उठाया और पारंपरिक नौटंकियों से हटकर सामाजिक समस्याओं और विषयों पर नौटंकी लिखी और उसे मंच तक पहुँचाया।

आकाशवाणी के ड्रामा प्रोड्यूसर रहते हुए रस्तोगी जी ने नौटंकी के उत्थान के लिए अथक प्रयास किए और विभिन्न विषयों पर 1 घंटे से लेकर 15 मिनट तक की नौटंकी लिखी और रेडियो के माध्यम से प्रस्तुत की। उन्हें संगीतकार के रूप में साथ मिला श्री गौरी शंकर का तथा नगाड़े पर मोहम्मद करीम हुआ करते थें। गौरी शंकर जी का स्थानांतरण लखनऊ हो जाने के बाद उनके शिष्य उदय चंद्र परदेसी ने मोर्चा सम्हाला और आज तक निस्वार्थ भाव से नौटंकी उत्थान में लगे हैं। क्योंकि अब आकाशवाणी नौटंकी करने लगा था, इसलिए शहर के जाने–माने नाटक के कलाकार इस विधा से जुड़े जिनमें प्रमुख हैं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से उत्तीर्ण श्री मंजुल वर्मा, श्री पालोक बसु (जो इलाहाबाद उच्च न्यायालय के जज के रूप में सेवानिवृत्त हुए), श्री राम चंद्र गुप्त, श्री अजय मुखर्जी, श्री अभिलाष नारायण, श्री अश्विनी अग्रवाल और न जाने कितने। इस आंदोलन से प्रभावित होकर श्री युक्ति भद्र दीक्षित तथा श्री राजेंद्र तिवारी ने भी कई सामाजिक और धार्मिक नौटंकियों का लेखन किया। रस्तोगी जी के प्रयास से दूरदर्शन दिल्ली पर सन् 1975 में पहली बार नौटंकी का प्रस्तुतिकरण हुआ और पूरी टीम इलाहाबाद आकाशवाणी की थी। रस्तोगी जी ने लगभग 50 नौटंकियां लिखी और आकाशवाणी के माध्यम से देश के विभिन्न राज्यों में भ्रमण कर–कर के मंचन किया। विनोद रस्तोगी जी की 'आई भोर सुहानी', 'भगीरथ के बेटे', 'तोता मैना', 'कहानी घर–घर की', 'बंटवारे की आग', 'नई लहर', 'खेल–खेल में', 'तमाशा जारी है', 'लोरिक मजरी', 'कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा' आदि

4.2.3.2 'बहू की विदा' एकांकी का परिचय

'बहू की विदा' हिंदी साहित्य की एक प्रसिद्ध सामाजिक एकांकी है, जिसमें भारतीय पारिवारिक जीवन की भावनात्मक संवेदनाओं, विवाह–परंपराओं और स्त्री–जीवन की स्थिति का सजीव चित्रण किया गया है। इस एकांकी का मुख्य विषय बहू की विदाई का प्रसंग है, जिसमें परिवार के सभी सदस्य भावनात्मक रूप से

जुड़े हुए दिखाई देते हैं। यह केवल एक पारिवारिक घटना नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक मूल्यों, रिश्तों और स्त्री के नए जीवन की शुरुआत का गहरा चित्र प्रस्तुत किया गया है।

इस एकांकी के प्रमुख पात्र सामान्यतः परिवार के सदस्य हैं, जैसे- पिता, माता, बहू, पुत्र (पति), ससुराल पक्ष के सदस्य और अन्य परिजन। प्रत्येक पात्र अपने-अपने दृष्टिकोण और भावनाओं के साथ कहानी को आगे बढ़ाता है। पिता और माता अपनी बेटी (बहू) की विदाई पर अत्यंत भावुक हो जाते हैं, जबकि बहू अपने पुराने घर को छोड़ने की पीड़ा और नए जीवन के प्रति आशा के बीच मानसिक द्वंद्व में रहती है।

कहानी की शुरुआत विवाह के बाद की स्थिति से होती है, जब बहू ससुराल जाने की तैयारी कर रही होती है। घर में विदाई की तैयारियाँ चल रही होती हैं। माता-पिता अपनी बेटी को देखकर भावुक हो जाते हैं। माँ बार-बार उसे बचपन की यादें दिलाती है और रो पड़ती है। पिता भी अपने कर्तव्य और भावनाओं के बीच संघर्ष करते हैं। वे बेटी को समझाते हैं कि यह जीवन का एक स्वाभाविक चरण है, लेकिन भीतर ही भीतर उनका हृदय टूट रहा होता है।

इसी बीच बहू (जो अब ससुराल जाने वाली है) अपने पुराने घर को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होती। वह अपने बचपन, माता-पिता और भाई-बहनों की यादों से जुड़ी रहती है। उसका मन दो दिशाओं में बँटा हुआ है-एक ओर वह अपने नए जीवन की जिम्मेदारियों को समझती है, दूसरी ओर अपने मायके को छोड़ने का दुःख उसे भीतर से विचलित करता है।

ससुराल पक्ष के लोग उसे नए जीवन की जिम्मेदारियों और परंपराओं के बारे में समझाते हैं। पति (पुत्र) उसे आश्वासन देता है कि उसका नया घर भी उतना ही अपना होगा जितना मायका। वह उसे धैर्य और आत्मविश्वास रखने की सलाह देता है।

विदाई के समय का दृश्य अत्यंत मार्मिक होता है। माँ अपनी बेटी को गले लगाकर रोने लगती है, पिता अपनी भावनाओं को रोकने का प्रयास करते हैं, लेकिन उनकी आँखों में आँसू झलक आते हैं। बहू भी रोती हुई घर से विदा होती है। पूरा वातावरण करुणा और संवेदना से भर जाता है।

इस एकांकी में एक महत्वपूर्ण घटना यह भी है कि विदाई के समय परिवार के सदस्य दहेज, सामाजिक रीति-रिवाज और परंपराओं पर भी चर्चा करते हैं। यह समाज में व्याप्त रूढ़ियों और स्त्री की स्थिति पर अप्रत्यक्ष रूप से प्रकाश डालता है। लेखक ने इस एकांकी के माध्यम से यह संदेश दिया है कि विवाह केवल एक सामाजिक संस्कार नहीं, बल्कि भावनाओं का गहरा संबंध है। विदाई का क्षण हर परिवार के लिए अत्यंत संवेदनशील होता है, जहाँ खुशी और दुःख दोनों साथ-साथ होते हैं। भाषा सरल, सहज और भावपूर्ण है, जो पात्रों की भावनाओं को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती है। संवाद छोटे लेकिन अर्थपूर्ण हैं, जो नाटकीयता को बढ़ाते हैं।

अंततः 'बहू की विदा' एकांकी भारतीय पारिवारिक जीवन की भावनात्मक गहराई, स्त्री की संवेदनशील स्थिति और सामाजिक परंपराओं का एक प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत करता है, जो पाठक और दर्शक के मन को गहराई से छू लेता है।

4.2.3.3 'बहू की विदा' एकांकी का कथानक :–

'बहू की विदा' एकांकी का कथानक भारतीय पारिवारिक जीवन के अत्यंत मार्मिक प्रसंग विदाई पर आधारित है। कथा एक ऐसे घर में घटित होती है जहाँ अभी–अभी विवाह की सभी रस्में संपन्न हुई हैं। घर सजा हुआ है, आँगन में मंडप के अवशेष हैं, फूलों की मालाएँ अभी भी टंगी हैं, और मेहमानों की हलचल धीरे–धीरे कम हो रही है। लेकिन इस सजावट और उत्सव के बीच एक गहरी उदासी धीरे–धीरे पूरे वातावरण में फैलती जा रही है, क्योंकि अब विदाई का समय निकट आ पहुँचा है।

सुबह का समय है। घर की स्त्रियाँ धीरे–धीरे विदाई की तैयारियों में लग जाती हैं। कुछ स्त्रियाँ आपस में धीमी आवाज़ में बातें करती हैं, तो कुछ बार–बार आँसू पोंछती दिखाई देती हैं। इसी बीच शारदा देवी बार–बार आँगन और कमरे के बीच चक्कर लगा रही हैं। वे कभी मेहमानों का ध्यान रखती हैं, तो कभी अपनी बेटी कमला को देखती हैं। उनके चेहरे पर व्यस्तता के साथ–साथ एक गहरी चिंता और पीड़ा स्पष्ट झलकती है।

कमला अपने कमरे में सजी–धजी बैठी है। उसके हाथों में मेंहदी की रेखाएँ हैं, माथे पर सिंदूर है और आँखों में आँसू भरे हुए हैं। वह चुपचाप बैठी है, परंतु उसके भीतर भावनाओं का ज्वार उमड़ रहा है। वह कभी अपनी माँ को देखती है, कभी आँगन की ओर, और कभी उस दरवाजे की ओर जहाँ से उसे थोड़ी देर बाद हमेशा के लिए विदा होना है।

इसी बीच राधा (उसकी सहेली) उसके पास आती है और उसके बगल में बैठ जाती है। वह उसे समझाने का प्रयास करती है– ''कमला, अब रोने से क्या होगा? हर लड़की को एक दिन यह घर छोड़ना ही पड़ता है।'' लेकिन कमला के लिए यह समझाना पर्याप्त नहीं होता। वह कहती है कि उसे अपने घर, अपने माता–पिता और भाई से अलग होने का दुःख सहन नहीं हो रहा।

दूसरी ओर रामनाथ बाहर खड़े होकर दूल्हे पक्ष के लोगों से बातचीत कर रहे हैं। वे पूरी कोशिश कर रहे हैं कि विदाई की सारी व्यवस्थाएँ ठीक प्रकार से हो जाए। वे सामाजिक मर्यादा निभाते हुए मुस्कुराने का प्रयास करते हैं, लेकिन भीतर से वे टूट चुके हैं। जब भी उनकी दृष्टि कमला पर पड़ती है, वे तुरंत दूसरी ओर देखने लगते हैं, ताकि उनकी आँखों के आँसू कोई न देख सके।

मोहन जो कमला का छोटा भाई है, इधर–उधर चुपचाप घूमता रहता है। वह अपनी बहन के पास आता है, लेकिन कुछ बोल नहीं पाता। अंततः वह धीरे से कहता है–''दीदी, अब तुम चली जाओगी तो मैं किससे लड़ूँगा?'' यह सुनकर कमला की आँखों से आँसू बहने लगते हैं। दोनों भाई–बहन एक–दूसरे को देखते हैं और बचपन की यादों में खो जाते हैं।

इसी बीच दूल्हे सुरेश और उसके माता-पिता गंगादेवी और हरिप्रसाद विदाई की तैयारी का संकेत देते हैं। वे सब शांत और गंभीर हैं। गंगादेवी समय-समय पर कमला को स्नेह भरी दृष्टि से देखती हैं, मानो उसे अपने परिवार में अपनाने का आश्वासन दे रही हों। धीरे-धीरे विदाई की प्रक्रिया आरंभ होती है। घर की स्त्रियाँ एकत्रित हो जाती हैं और वातावरण में करुणा और वेदना का स्वर गूँज उठता है। कमला को आँगन में लाया जाता है। वह धीरे-धीरे चलती है, मानो हर कदम उसे अपने घर से दूर ले जा रहा हो।

सबसे पहले वह अपनी माता शारदा देवी के चरणों में झुकती है। शारदा देवी उसे उठाकर अपने सीने से लगा लेती हैं और जोर-जोर से रोने लगती हैं। वे बार-बार उसे समझाती हैं -''बेटी, अब वही तेरा घर है, सबका कहना मानना, हमें भूल मत जाना,'' उनकी आवाज़ भर्रा जाती है।

इसके बाद कमला अपने पिता रामनाथ के पास जाती है। वह उनके चरण छूती है। रामनाथ उसे आशीर्वाद देते हुए कहते हैं-''सुखी रहो बेटी।'' लेकिन वे आगे कुछ नहीं कह पाते। उनकी आँखों में आँसू आ जाते हैं और वे मुँह फेर लेते हैं। कमला अपने भाई मोहन से मिलती है। मोहन उसे गले लगाता है और दोनों फूट-फूटकर रो पड़ते हैं। यह दृश्य वहाँ उपस्थित सभी लोगों की आँखों को नम कर देता है।

इसके बाद वह अपनी सहेली राधा और अन्य स्त्रियों से मिलती है। सभी उसे विदा करते हुए रोती हैं। कमला एक बार फिर अपने घर की ओर देखती है-वह आँगन, दीवारें, दरवाजा, सब कुछ उसे रोकने का प्रयास करता हुआ प्रतीत होता है। अब अंतिम क्षण आ जाता है। गंगादेवी उसे सहारा देकर गाड़ी तक ले जाती हैं। कमला धीरे-धीरे गाड़ी में बैठती है। उसका मन अभी भी अपने घर में ही अटका हुआ है। गाड़ी चलने लगती है। कमला खिड़की से बाहर झाँककर अपने माता-पिता और भाई को देखती है। शारदा देवी रोते हुए हाथ हिलाती हैं, रामनाथ मौन खड़े रहते हैं, और मोहन अपनी आँखों से आँसू पोंछता है। धीरे-धीरे गाड़ी दूर चली जाती है। घर के सामने खड़े लोग उसे जाते हुए देखते रहते हैं। कुछ समय बाद गाड़ी आँखों से ओझल हो जाती है।

अब घर में एक गहरा सन्नाटा छा जाता है। जहाँ कुछ समय पहले हँसी, गीत और उत्सव था, वहाँ अब शून्यता और मौन रह जाता है। शारदा देवी वहीं बैठकर रोने लगती हैं, रामनाथ चुपचाप अंदर चले जाते हैं, और मोहन उदास होकर एक कोने में खड़ा रहता है।

4.2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

अ) नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. 'बहू की विदा' एकांकी का मुख्य विषय ..... है।

   अ) युद्ध का वर्णन ब) विदाई का प्रसंग

   क) शिक्षा का महत्व ड) राजनीति

2. .....इस एकांकी की प्रमुख नारी पात्र है।

अ) शारदा देवी ब) कमला

क) राधा ड) गंगादेवी

3. कमला रामनाथ की ..... है।

अ) बहन ब) पत्नी

क) बेटी ड) मौसी

4. शारदा देवी .....का प्रतीक है।

अ) क्रोध ब) ममता और करुणा

क) स्वार्थ ड) घृणा

5. ..... एकांकी की समस्या है।

अ) धन की कमी ब) शिक्षा की समस्या

क) भावनात्मक द्वंद्व ड) राजनीति

6. गंगादेवी कमला की ..... है ।

अ) माँ ब) सास

क) बहन ड) पड़ोसी

7. एकांकी की भाषा ..... है ।

अ) जटिल ब) कठिन और अलंकारिक

क) सरल और सहज ड) विदेशी

8. ..... 'बहू की विदा' एकांकी के लेखक है ।

अ) प्रसाद ब) विनोद रस्तोगी

क) कमलाकर ड) विदेशी

9. ..... इस एकांकी का प्रमुख रस है ।

अ) वीर रस ब) हास्य रस

क) करुण रस ड) रौद्र रस

10. ..... 'बहू की विदा' एकांकी का मुख्य उद्देश्य है ।

अ) मनोरंजन ब) व्यापार

क) ऐतिहासिकता ड) पारिवारिक संबंधों और भावनाओं का चित्रण

ब) सही गलत का उचित निर्णय करें ख

1. 'बहू की विदा' एकांकी में ग्रामीण जीवन की पारिवारिक परंपराओं का चित्रण किया गया है।
2. इस एकांकी में बहू को विदा करते समय परिवार में कोई भावनात्मक दृश्य नहीं होता है।
3. 'बहू की विदा' एकांकी में सामाजिक रीति-रिवाजों और परंपराओं का महत्व दिखाया गया है।
4. इस एकांकी में बहू का विदा होना खुशी का अवसर बताया गया है, जिसमें कोई दुःख नहीं होता।
5. 'बहू की विदा' एकांकी में पारिवारिक संबंधों और भावनात्मक जुड़ाव को प्रमुखता दी गई है।

4.2.5 पारिभाषिक शब्द और शब्दार्थ।

1. नववधू (बहू) - विवाह के बाद पहली बार ससुराल जाने वाली नई दुल्हन।
2. रस्म- परंपरा के अनुसार किया जाने वाला सामाजिक या धार्मिक कार्य।
3. बिछोह (विरह) - अपने प्रियजन से अलग होने का दुःख।
4. संस्कार - परंपरागत सामाजिक और नैतिक मूल्य, जो व्यक्ति के व्यवहार को निर्धारित करते हैं।
5. करुण रस - दुःख और संवेदना से उत्पन्न रस।

4.2.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।

अ) 1. ब) विदाई का प्रसंग 2. ब) कमला 3. क) बेटी

4. ब) ममता और करुणा 5. क) भावनात्मक द्वंद्व 6. ब) सास

7. क) सरल और सहज 8. ब) विनोद रस्तोगी 9. क) करुण रस

10. ड) पारिवारिक संबंधों और भावनाओं का चित्रण

ब) 1. सही 2. गलत 3. सही

4. गलत 5. सही

4.2.7 सारांश।

1. 'बहू की विदा' एकांकी भारतीय मध्यवर्गीय परिवार में घटित विदाई जैसे मार्मिक प्रसंग पर आधारित है।
2. विवाह की सभी रस्में पूर्ण हो चुकी होती हैं और अब नववधू की विदाई का समय निकट होता है।
3. घर का वातावरण विवाह की सजावट से भरा होता है, लेकिन अब वहाँ उदासी और भावनात्मक तनाव छा जाता है।
4. मुख्य पात्र कमला (नववधू) अपने मायके को छोड़ने के विचार से भावुक और व्याकुल हो जाती है।
6. कमला के मन में नए जीवन की शुरुआत और पुराने जीवन से बिछुड़ने का द्वंद्व दिखाई देता है।
7. कमला की माता शारदा देवी अत्यंत भावुक होकर बेटी को गले लगाती हैं और उसे ससुराल के लिए आशीर्वाद देती हैं।
8. पिता रामनाथ बाहर से संयमित रहते हैं, परंतु भीतर से अत्यंत दुःखी होते हैं।
9. भाई मोहन और सहेली राधा भी विदाई के समय अत्यंत भावुक हो जाते हैं।
10. दूल्हा सुरेश तथा उसके माता-पिता शांत और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते हैं।
11. सास गंगादेवी बहू के प्रति स्नेह प्रकट करती हैं, जिससे अपनत्व का संकेत मिलता है।
12. विदाई के समय कमला सभी परिजनों से मिलकर अत्यंत भावुक हो जाती है।
13. कमला माता के चरण स्पर्श कर उनसे लिपटकर रोती है, माता भी भावुक हो जाती हैं।

4.2.8 स्वाध्याय ।

अ) लघुत्तरी प्रश्न।

1. 'बहू की विदा' एकांकी का केन्द्रीय भाव क्या है स्पष्ट कीजिए।
2. शारदा देवी का चरित्र किस भावना का प्रतीक है? स्पष्ट कीजिए।
3. विनोद रस्तोगी का सामान्य परिचय दीजिए।
4. 'बहू की विदा' एकांकी का आशय लिखिए

ब) दिर्घोतरी प्रश्न।

1. 'बहू की विदा' एकांकी के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण विस्तार से कीजिए।
2. 'बहू की विदा'एकांकी में प्रस्तुत पारिवारिक जीवन और संबंधों का विवेचन कीजिए।
3. 'बहू की विदा' एकांकी की केन्द्रीय समस्या का विश्लेषण कीजिए।
4. 'बहू की विदा' एकांकी का वातावरण और नाटकीयता का वर्णन कीजिए।
5. 'बहू की विदा' एकाकी के कथानक को अपने शब्दों में लिखिए।

4.2.9 क्षेत्रीय कार्य

1. अपने क्षेत्र में विवाह के समय होने वाली विदाई की परंपरा का वर्णन कीजिए।
2. बहू की विदा एकांकी से आपने क्या सीखा? इसे अपने जीवन से जोड़कर लिखिए।
3. विदाई के समय माता-पिता और बेटी की भावनाओं का प्रत्यक्ष अनुभव या अवलोकन कीजिए।

4.2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. हिंदी एकांकी : स्वरूप और विकास - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ।
2. परिवार, विवाह और नातेदारी - आई. पी. देसाई।
3. भारतीय समाज की समस्याएँ - राम आहूजा।
4. नए रंग एकांकी - उपेंद्रनाथ अश्क ।

❑❑❑

एकांकी

बचाओ मुझे डॉक्टरों से बचाओ!

–डॉ. शंकर पुणतांबेकर

अनुक्रम

4.3.1. उदेश्य

4.3.2. प्रस्तावना

4.3.3. विषय विवेचन

4.3.3.1 डॉ. शंकर पुणतांबेकर का जीवन परिचय, व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व ।

4.3.3.2 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' एकांकी का परिचय ।

4.3.3.3 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' एकांकी का कथानक।

4.3.4. स्वंयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

4.3.5. पारिभाषिक शब्द और शब्दार्थ ।

4.3.6. स्वंय अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर ।

4.3.7. सारांश ।

4.3.8. स्वाध्याय ।

4.3.9. क्षेत्रीय कार्य ।

4.3.10. अतिरिक्त अध्ययन के लिए ।

4.3.1 उदेश्य :–

इस एकांकी का अध्ययन करने के बाद आप–

1. एकांकीकार डॉ. शंकर पुणतांबेकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होगें ।
2. हिंदी के प्रसिद्ध एकांकीकार डॉ. शंकर पुणतांबेकर के साहित्यिक दृष्टिकोन से परिचित होंगे ।
3. आधुनिक चिकित्सा व्यवस्था और अस्पतालों की कार्यप्रणाली की जानकारी प्राप्त होगी।
4. रोगी और डॉक्टर के संबंधों की वास्तविक स्थिति समझने में सहायता मिलेगी ।

5. स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति जागरूकता और समझ विकसित होगी।

2 प्रस्तावना :–

भारतीय नाट्य–साहित्य में एकांकी विधा का विशेष स्थान है। एकांकी नाटक जीवन के किसी एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग,भावना या घटना को संक्षिप्त, प्रभावशाली और कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है। इसमें कथानक का विस्तार सीमित होते हुए भी उसकी संवेदनात्मक गहराई अत्यंत प्रभावपूर्ण होती है।

'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' एकांकी आधुनिक हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण हास्य–व्यंग्यात्मक रचना है, जिसमें लेखक ने वर्तमान चिकित्सा व्यवस्था और अस्पतालों की जटिल प्रक्रियाओं पर तीखा व्यंग्य किया है। इस एकांकी में यह दर्शाया गया है कि किस प्रकार आज के समय में रोगी केवल बीमारी से ही नहीं, बल्कि अस्पताल की औपचारिकताओं, जाँच प्रक्रियाओं और अनावश्यक उपचारों के कारण भी मानसिक रूप से परेशान हो जाता है।

इस एकांकी का मुख्य उद्देश्य चिकित्सा व्यवस्था की उन कमियों को उजागर करना है, जो रोगी के लिए भय और तनाव का कारण बनती हैं। लेखक ने एक सामान्य रोगी के अनुभव के माध्यम से यह संदेश दिया है कि चिकित्सा सेवा को अधिक सरल, मानवीय और संवेदनशील बनाया जाना चाहिए।

इस प्रकार यह एकांकी केवल मनोरंजन ही नहीं करता, बल्कि समाज को एक महत्वपूर्ण सामाजिक संदेश भी देता है कि स्वास्थ्य सेवाएँ रोगी–केंद्रित होनी चाहिए और उनमें अनावश्यक जटिलताओं को कम किया जाना चाहिए।

4.3.3 विषय विवेचन

4.3.3.1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर का जीवन परिचय, व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व :

हिंदी साहित्य जगत् में हरिशंकर परसाई जैसी मारक क्षमता और तीखी लेखनी के धनी डॉ. शंकर पुणतांबेकर एक अग्रणी व्यंग्यकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। मूलतः मध्य प्रदेश से संबंध रखने वाले पुणतांबेकर जी ने अपने लेखन के माध्यम से व्यवस्था की विसंगतियों पर गहरा प्रहार किया है।

जन्म एवं शिक्षा :–

डॉ. पुणतांबेकर का जन्म दि. 26 मई, सन् 1925 ई. को मध्य प्रदेश के गुना जिले के कुंभराज में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा विदिशा और ग्वालियर में हुई, जिसके बाद उन्होंने आगरा से उच्च शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने हिंदी और इतिहास, दोनों विषयों में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की और आगे चलकर हिंदी साहित्य में पीएच.डी.प्राप्त की।

अध्यापन एवं कार्यक्षेत्र :–

उनका कार्यक्षेत्र शिक्षा और साहित्य का अद्भुत संगम रहा। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत विदिशा के जैन इंटर कॉलेज सन् (1947-1960) से की। इसके पश्चात वे महाराष्ट्र में आए और जलगाँव के मूलजी जेठा कॉलेज में सन् 1960 से सन् 1985 तक अध्यापन कार्य किया, जहाँ से वे सेवानिवृत्त हुए।

साहित्य सृजन :–

पुणतांबेकर जी ने 25 से अधिक व्यंग्य पुस्तकों की रचना की है। उनके साहित्य में यथार्थ के प्रति अटूट प्रतिबद्धता दिखाई देती है।

चर्चित पुस्तकें :

'व्यंग्य अमरकोश', 'बाअदब बेमुलाहज़ा', 'फर्जी से पैदा भयो', 'शतरंग के खिलाड़ी', 'दुर्घटना से दुर्घटना तक' और 'गिद्ध मँडरा रहा है'।

नाटक :

'विजिट यमराज की', 'तीन व्यंग्य नाटक' और 'एक मंत्री स्वर्गलोक में'। उनके चर्चित नाटकों में 'मालरोड मर्डर' एवं 'सफेद कौए काले हंस' विशेष रूप से उल्लेखनीय रहे हैं।

लेखन शैली और विशेषताएँ:–

उनके नाटकों और व्यंग्यों को 'शब्दों का ज्वालामुखी' कहा जाता है, जो तिक्त यथार्थ का लावा उगलते हैं। उनके लेखन में फूहड़ता का स्थान नहीं है; बल्कि वे राजनीतिक पतन और सामाजिक व्यवस्था की सड़न को पूरी नग्नता और तार्किकता के साथ उजागर करते हैं। उनके संवाद और पात्र विचारोत्तेजक हैं, जहाँ पाठकों को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि व्यवस्था की पीड़ा का एहसास होता है।

सम्मान :

साहित्य के प्रति उनके अतुलनीय योगदान के लिए उन्हें कई प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा गया, जिनमें मुख्य हैं:–

- चकल्लस पूरस्कार–1994 में रंग चकल्लस द्वारा दिया गया ।
- व्यंग्यश्री पुरस्कार–2002 में दिल्ली की संस्था व्यंग्य–यात्रा द्वारा प्रदान किया गया था।
- 'आनन्द ऋषि जी साहित्य पुरस्कार'– दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद से दिया गया है ।
- मुक्तीबोध पुरस्कार–1992 में महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी द्वारा प्रदान।

मृत्यु :

हिंदी व्यंग्य का यह तेजस्वी हस्ताक्षर दि. 31 जनवरी, सन् 2016 ई. को सदैव के लिए मौन हो गया, किंतु उनकी कृतियाँ आज भी पाठकों को झकझोरने और सोचने पर मजबूर करने की शक्ति रखती हैं।

4.3.3.2 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' एकांकी का परिचय :

'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' एकांकी हिंदी साहित्य की एक अत्यंत रोचक और व्यंग्यात्मक रचना है, जिसके लेखक डॉ. शंकर पुणतांबेकर जी हैं। इस एकांकी में आधुनिक चिकित्सा व्यवस्था, अस्पतालों की जटिल कार्यप्रणाली तथा डॉक्टर-रोगी संबंधों पर हास्य और व्यंग्य के माध्यम से तीखा प्रहार किया गया है। लेखक ने बड़ी ही सरल और प्रभावशाली भाषा में यह दिखाया है कि आज के समय में रोगी केवल बीमारी से ही नहीं, बल्कि अस्पताल की लंबी प्रक्रियाओं, अनावश्यक जाँचों और दवाइयों के दबाव से भी मानसिक रूप से परेशान हो जाता है। इसी कारण इस एकांकी का शीर्षक 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' स्वयं ही रोगी की घबराहट, व्यंग्य और मानसिक पीड़ा को प्रकट करता है। यह रचना मनोरंजन के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण सामाजिक संदेश भी देती है कि चिकित्सा सेवा को अधिक सरल, मानवीय और रोगी-केंद्रित होना चाहिए।

इस एकांकी के लेखक डॉ. शंकर पुणतांबेकर हिंदी व्यंग्य साहित्य के एक प्रसिद्ध रचनाकार माने जाते हैं। उनकी रचनाओं में समाज की विभिन्न विसंगतियों पर व्यंग्य देखने को मिलता है। वे अपनी लेखनी के माध्यम से शिक्षा, चिकित्सा, प्रशासन और सामाजिक व्यवस्था की कमियों को उजागर करते हैं। उनकी शैली सरल, सहज और हास्यपूर्ण, जिसमें गहरे सामाजिक संदेश छिपे हैं। उन्होंने आम जीवन की समस्याओं को केंद्र में रखकर ऐसी रचनाएँ लिखी हैं जो पाठकों को हँसाते हुए सोचने पर भी मजबूर करती हैं। 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' भी इसी प्रकार का एक महत्वपूर्ण एकांकी है, जिसमें चिकित्सा व्यवस्था की वास्तविक स्थिति का चित्रण किया गया है।

इस एकांकी के प्रमुख पात्रों में सबसे महत्वपूर्ण पात्र रोगी (मुख्य पात्र) है, जो बीमारी के कारण डॉक्टरों के संपर्क में आता है और अस्पताल की जटिल प्रक्रियाओं से परेशान होकर मानसिक तनाव में आ जाता है। दूसरा प्रमुख पात्र डॉक्टर है, जो रोगी का उपचार करता है, लेकिन लगातार जाँचों और दवाइयों की सलाह देकर स्थिति को और जटिल बना देता है। इसके अतिरिक्त नर्स, जो रोगी की देखभाल करती है, परिजन (परिवार के सदस्य), जो रोगी को अस्पताल ले जाते हैं और उसकी चिंता करते हैं, तथा अस्पताल के कर्मचारी, जो रजिस्ट्रेशन और अन्य औपचारिक कार्यों को पूरा करते हैं, इस एकांकी के सहायक पात्र हैं। इन सभी पात्रों के माध्यम से लेखक ने अस्पताल के वातावरण का यथार्थ और व्यंग्यात्मक चित्रण किया है।

कथावस्तु की शुरुआत एक सामान्य व्यक्ति के अचानक बीमार पड़ने से होती है। प्रारंभ में परिवार के लोग उसकी बीमारी को साधारण समझते हैं, लेकिन धीरे-धीरे उसकी स्थिति को देखते हुए उसे डॉक्टर के

पास ले जाया जाता है। इसके बाद उसे अस्पताल में भर्ती कराया जाता है, जहाँ से कहानी का मुख्य घटनाक्रम आरंभ होता है। अस्पताल में प्रवेश करते ही रोगी को अनेक औपचारिकताओं का सामना करना पड़ता है, जैसे रजिस्ट्रेशन, फाइल बनवाना, कतार में खड़ा रहना और अलग-अलग विभागों में जाना। यह सब देखकर रोगी पहले ही घबरा जाता है और असहज महसूस करने लगता है।

इसके बाद डॉक्टर रोगी को विभिन्न प्रकार की जाँच के लिए भेजते हैं, जैसे रक्त परीक्षण, एक्स-रे और अन्य मेडिकल टेस्ट। यह प्रक्रिया रोगी के लिए अत्यंत थकाने वाली और मानसिक तनाव उत्पन्न करने वाली होती है। रोगी को लगता है कि उसकी बीमारी से अधिक कठिन अस्पताल की प्रक्रिया है। डॉक्टर लगातार नई-नई दवाइयाँ और सलाह देते रहते हैं, जिससे रोगी और अधिक भ्रमित एवं परेशान हो जाता है।

जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता है, रोगी का भय और मानसिक दबाव बढ़ता जाता है। नर्स और परिजन उसे समझाने का प्रयास करते हैं, लेकिन उसका तनाव कम नहीं होता। अस्पताल का वातावरण, मशीनों की आवाजें और लगातार चलने वाली प्रक्रियाएँ उसे और अधिक मानसिक रूप से थका देती हैं। वह स्वयं को एक ऐसी व्यवस्था में फँसा हुआ महसूस करता है, जहाँ से निकलना कठिन प्रतीत होता है।

इसी मानसिक स्थिति में अंततः रोगी व्यंग्यात्मक रूप से कह उठता है- 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' यह कथन हास्य उत्पन्न करने के साथ-साथ गहरे व्यंग्य को भी प्रकट करता है। यह दृश्य पाठकों को हँसाता भी है और सोचने पर मजबूर भी करता है कि आधुनिक चिकित्सा व्यवस्था में सुधार की कितनी आवश्यकता है।

अंत में यह एकांकी यह संदेश देता है कि चिकित्सा व्यवस्था को अधिक सरल, पारदर्शी और मानवीय बनाया जाना चाहिए, ताकि रोगी केवल शारीरिक बीमारी से ही नहीं बल्कि मानसिक तनाव से भी मुक्त रह सके। इस प्रकार 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' एकांकी एक महत्वपूर्ण सामाजिक व्यंग्य रचना है, जो मनोरंजन के साथ-साथ समाज सुधार का भी संदेश देती है।

4.3.3.3 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' एकांकी का कथानक

हिंदी एकांकी साहित्य के प्रसिद्ध व्यंग्यकार डॉ. शंकर पुणतांबेकर की रचना 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' आधुनिक चिकित्सा व्यवस्था की विसंगतियों, डॉक्टरों की व्यावसायिक मानसिकता तथा मरीज की मानसिक-आर्थिक पीड़ा को उजागर करने वाला एक सशक्त व्यंग्यात्मक एकांकी है। इसमें यह दिखाया गया है कि किस प्रकार एक साधारण रोगी अनावश्यक इलाज, विरोधाभासी सलाह और बढ़ते खर्च के कारण मानसिक रूप से टूट जाता है।

इस एकांकी में प्रमुख पात्रों में रोगी (श्यामलाल), उसकी पत्नी गंगा देवी, पुत्र रमेश, पड़ोसी हरिप्रसाद, तथा अलग-अलग डॉक्टर जैसे डॉ. शर्मा, डॉ. गुप्ता और डॉ. मेहता शामिल हैं। एक अनुभवी चिकित्सक या समझदार व्यक्ति के रूप में डॉ. त्रिवेदी भी आता है, जो अंत में स्थिति को स्पष्ट करता है।

कथा की शुरुआत श्यामलाल (रोगी) के अचानक बीमार पड़ने से होती है। उसे हल्का बुखार, कमजोरी और सिरदर्द होता है। उसकी पत्नी गंगा देवी घबराकर इसे गंभीर बीमारी मान लेती है और तुरंत अपने बेटे रमेश को डॉक्टर बुलाने के लिए कहती है। पड़ोसी हरिप्रसाद भी चिंता व्यक्त करता है और सुझाव देता है कि अच्छे डॉक्टर को बुलाया जाए। पहले डॉ. शर्मा आते हैं, जो रोगी को देखकर बिना गहराई से जाँच किए कई टेस्ट जैसे ब्लड टेस्ट, यूरिन टेस्ट और एक्स-रे लिख देते हैं। साथ ही वे महंगी दवाइयाँ भी शुरू कर देते हैं।

इसके बाद श्यामलाल की हालत देखकर परिवार और अधिक चिंतित हो जाता है। रमेश दूसरे डॉक्टर डॉ. गुप्ता को बुलाता है। डॉ. गुप्ता रोगी को देखकर कहते हैं कि यह साधारण बीमारी नहीं है, इसमें जटिलता हो सकती है और तुरंत विशेष जांच तथा संभावित ऑपरेशन की आवश्यकता हो सकती है। यह सुनकर परिवार भयभीत हो जाता है। गंगा देवी रोने लगती है और श्यामलाल मानसिक रूप से टूटने लगता है।

फिर डॉ. मेहता आते हैं, जो पहले दोनों डॉक्टरों से भिन्न राय देते हैं। वे कहते हैं कि स्थिति उतनी गंभीर नहीं है, लेकिन लंबे इलाज और महंगी दवाइयों की आवश्यकता होगी। इस प्रकार तीनों डॉक्टरों की अलग-अलग राय से परिवार पूरी तरह भ्रमित हो जाता है। अब श्यामलाल की बीमारी से अधिक चिंता इलाज के खर्च और अनिश्चितता की होने लगती है।

इसी बीच श्यामलाल की हालत दवाइयों के कारण और बिगड़ने लगती है। उसे कमजोरी बढ़ती महसूस होती है और मानसिक तनाव अत्यधिक हो जाता है। वह सोचने लगता है कि बीमारी से ज्यादा खतरनाक डॉक्टरों का इलाज है। इसी मानसिक स्थिति में वह अपने मित्र रामनाथ के नाम एक पत्र लिखता है, जिसमें वह अपनी पीड़ा व्यक्त करता है। वह लिखता है कि हर डॉक्टर अलग राय दे रहा है, बार-बार टेस्ट हो रहे हैं और दवाइयाँ उसे और कमजोर कर रही हैं। वह स्पष्ट रूप से लिखता है कि अब उसे बीमारी से नहीं, बल्कि डॉक्टरों से डर लगने लगा है।

दूसरी ओर गंगा देवी और रमेश भी एक पत्र/संवाद के माध्यम से अपनी चिंता व्यक्त करते हैं कि इलाज का खर्च बहुत बढ़ गया है और वे समझ नहीं पा रहे कि किस डॉक्टर पर विश्वास करें। पड़ोसी हरिप्रसाद भी कहता है कि आजकल इलाज भी व्यापार बन गया है और मरीज परेशान हो जाते हैं।

कथा के चरम पर श्यामलाल पूरी तरह मानसिक रूप से टूट जाता है। वह बार-बार चिल्लाता है- बचाओ मुझे डॉक्टरों से बचाओ! यह वाक्य उसकी पीड़ा और पूरे चिकित्सा तंत्र पर व्यंग्य का प्रतीक बन जाता है। अंत में डॉ. त्रिवेदी, जो एक अनुभवी और समझदार चिकित्सक हैं, आते हैं। वे सभी रिपोर्टों और दवाइयों का अध्ययन करते हैं और बताते हैं कि श्यामलाल की बीमारी वास्तव में गंभीर नहीं है। असली समस्या अनावश्यक दवाइयों, अत्यधिक टेस्ट और डॉक्टरों की विरोधाभासी सलाहों से उत्पन्न हुई है। वे सलाह देते हैं कि दवाइयाँ कम की जाएँ, मानसिक तनाव दूर किया जाए और सरल उपचार अपनाया जाए। धीरे-धीरे श्यामलाल की स्थिति में सुधार आने लगता है और परिवार को राहत मिलती है।

अंत में लेखक यह संदेश देते है कि चिकित्सा सेवा मानवता पर आधारित होनी चाहिए, न कि व्यापार पर। डॉक्टर और मरीज के बीच विश्वास और संवेदनशीलता आवश्यक है। अनावश्यक जाँचें और दवाइयाँ मरीज को और अधिक बीमार बना सकती हैं।

इस प्रकार 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' एक साधारण एकांकी नहीं बल्कि आधुनिक चिकित्सा व्यवस्था पर एक तीखा सामाजिक व्यंग्य है, जो पाठकों को सोचने पर मजबूर करता है कि स्वास्थ्य सेवा का उद्देश्य मानवता की सेवा होना चाहिए, लाभ कमाना नहीं।

4.3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

अ) नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. इस एकांकी में व्यंग्य का प्रमुख आधार है..... ।

   अ) ग्रामीण जीवन की कठिनाइयाँ

   ब) चिकित्सा व्यवस्था की व्यावसायिकता और विरोधाभास

   क) पारिवारिक कलह

   ड) राजनीतिक भ्रष्टाचार

2. रोगी की मानसिक स्थिति बिगड़ने का प्रमुख कारण ..... था।

   अ) केवल बीमारी

   ब) परिवार की लापरवाही

   क) विभिन्न डॉक्टरों की विरोधाभासी सलाह और अनावश्यक उपचार

   ड) मौसम परिवर्तन

3. एकांकी में बचाओ मुझे डॉक्टरों से बचाओ वाक्य .....भाव का प्रतीक है ।

   अ) हास्य ब) भय और व्यंग्य

   क) उत्साह ड) गर्व

4. 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' के लेखक हैं.....।

   अ) मोहन राकेश ब) डॉ. शंकर पुणतांबेकर

   क) हरिशंकर परसाई ड) धर्मवीर भारती

5. .....इस एकांकी का मुख्य विषय।

अ) ग्रामीण जीवन ब) शिक्षा व्यवस्था

क) चिकित्सा व्यवस्था की विसंगति ड) स्वतंत्रता संग्राम

6. एकांकी में..... रोगी की भूमिका में है ।

अ) रमेश ब) श्यामलाल

क) गुप्ता ड) त्रिवेदी

7. सबसे पहले रोगी को डॉक्टर..... देखते है ।

अ) डॉ. गुप्ता ब) डॉ. मेहता

क) डॉ. शर्मा ड) डॉ. त्रिवेदी

8. डॉ. गुप्ता ने .....का सुझाव दिया।

अ) सामान्य इलाज ब) तुरंत ऑपरेशन

क) घरेलू उपचार ड) कोई इलाज नहीं

9. रोगी को सबसे अधिक ..... से डर लगने लगता है ।

अ) परिवार ब) बीमारी

क) डॉक्टरों ड) दवाइयों

10. अंत में समस्या का समाधान ..... करते है ।

अ) रमेश ब) गंगादेवी

क) डॉ.त्रिवेदी ड) डॉ.शर्मा

ब) सही गलत का उचित निर्णय करें ।

1. इस एकांकी में सभी डॉक्टर रोगी की वास्तविक बीमारी को सही रूप में पहचानकर एक ही उपचार बताते हैं।
2. रोगी की मानसिक स्थिति बिगड़ने का प्रमुख कारण अनावश्यक दवाइयाँ और विरोधाभासी चिकित्सा सलाह है।
3. इस एकांकी में लेखक ने चिकित्सा व्यवस्था को पूर्णतः आदर्श और निष्कलंक रूप में प्रस्तुत किया है।

4. रोगी का डॉक्टरों से बचाओ कहना उसकी मानसिक पीड़ा और व्यंग्यात्मक स्थिति को दर्शाता है।
5. डॉ. त्रिवेदी का चरित्र चिकित्सा में संतुलित और यथार्थवादी दृष्टिकोण का प्रतीक है।

4.3.5 पारिभाषिक शब्द और शब्दार्थ।

1. चिकित्सा – रोगी के रोग का निदान कर उसका उपचार करना।
2. निदान – रोग के कारण और प्रकृति का पता लगाना।
3. पर्ची – डॉक्टर द्वारा रोगी के लिए लिखी गई दवाओं की सूची।
4. इंजेक्शन – दवा को शरीर में सुई के माध्यम से देने की प्रक्रिया।
5. परामर्श – रोग के संबंध में डॉक्टर से सलाह लेना।
6. औषधालय – जहाँ से रोगियों को दवाएँ दी जाती हैं।

4.3.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।

अ) 1. ब) चिकित्सा व्यवस्था की व्यावसायिकता और विरोधाभास

2. क) विभिन्न डॉक्टरों की विरोधाभासी सलाह और अनावश्यक उपचार

3. ब) भय और व्यंग्य 4. ब) डॉ. शंकर पुणतांबेकर

5. क) चिकित्सा व्यवस्था की विसंगति

6. ब) श्यामलाल 7. क) डॉ. शर्मा 8. ब) तुरंत ऑपरेशन

9. क) डॉक्टरों 10. क)डॉ.त्रिवेदी

ब) 1. गलत 2. सही 3. गलत

4. सही 5. सही

4.3.7 सारांश।

1. यह एकांकी डॉ. शंकर पुणतांबेकर द्वारा लिखी गई एक व्यंग्यात्मक रचना है, जिसमें चिकित्सा व्यवस्था की विसंगतियों को दिखाया गया है।
2. कथानक एक सामान्य परिवार से शुरू होता है, जहाँ श्यामलाल नामक व्यक्ति अचानक बीमार पड़ जाता है। परिवार उसकी साधारण बीमारी को गंभीर मानकर तुरंत डॉक्टर को बुलाता है।
3. पहला डॉक्टर (डॉ. शर्मा) बिना गहराई से जाँच किए कई टेस्ट और महंगी दवाइयाँ लिख देता है। डॉ. गुप्ता और डॉ. मेहता अलग-अलग और विरोधाभासी राय देते हैं-कोई ऑपरेशन बताता है, कोई लंबा इलाज। विभिन्न डॉक्टरों की अलग-अलग सलाह से परिवार पूरी तरह भ्रमित और परेशान हो जाता है।
4. अनावश्यक दवाइयों और टेस्ट के कारण रोगी की हालत शारीरिक और मानसिक रूप से बिगड़ने लगती है।
5. रोगी अपने मित्र को पत्र लिखकर अपनी पीड़ा व्यक्त करता है और बताता है कि उसे अब डॉक्टरों से डर लगने लगा है। वह बार-बार कहता है- 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' जो उसकी मानसिक पीड़ा का प्रतीक है।
6. अंत में डॉ. त्रिवेदी जैसे समझदार चिकित्सक समस्या को पहचानते हैं और बताते हैं कि असली समस्या अनावश्यक इलाज था और सरल उपचार से रोगी ठीक हो जाता है।

4.3.8 स्वाध्याय।

अ) लघुत्तरीप्रश्न

1. एकांकी में इलाज को जटिल बनानेवाले डॉक्टरों का किस प्रकार चित्रण हुआ है?
2. रोगी का और परिवार का मानसिक तनाव किस प्रकार बढ जाता है ?
3. एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' एकांकी के पर प्रकाश डालिए।
2. एकांकी में चिकित्सा व्यवस्था पर किए गए व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।
3. श्यामलाल (रोगी) की मानसिक स्थिति का विस्तार से वर्णन कीजिए।

4. 'बचाओ, मुझे डॉक्टरों से बचाओ' में निहित व्यंग्य को स्पष्ट करते हुए एकांकी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

क) टिप्पणियाँ लिखिए।

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर का जीवन परिचय।
2. एकांकी में चित्रित चिकित्सा व्यवस्था की विसंगतियाँ।
3. एकांकी का मुख्य पात्र– श्यामलाल।

4.3.9 क्षेत्रीय कार्य।

1. अपने क्षेत्र में किसी सरकारी या निजी अस्पताल का भ्रमण कर वहाँ की चिकित्सा सुविधाओं की जानकारी लेकर रिपोर्ट लिखिए।
2. अपने क्षेत्र में डॉक्टर–मरीज संबंधों पर सर्वेक्षण कीजिए और निष्कर्ष लिखिए।
3. चिकित्सा व्यवस्था में सुधार के लिए लोगों की क्या राय है, इसका संकलन कीजिए और सार्वजनिक मंच पर उसे प्रस्तुत कीजिए।

4.3.10 **अतिरिक्त अध्ययन के लिए**

1. एकांकी साहित्य और रंगमंच – डॉ. रामकुमार वर्मा।
2. भारतीय चिकित्सा व्यवस्था का अध्ययन – डॉ. एस. एन. सिंह।
3. सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा नीति – डॉ. वी. के. अग्रवाल।
4. आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और समाज – डॉ. नगेन्द्र शर्मा।

❑❑❑